

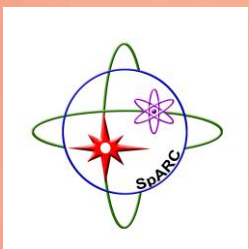


भाग- 3

## दिव्य शक्तियाँ

अव्यक्त वाणी संकलन (1969-2015)

SpARC Wing



अधिक जानकारी के लिए संपर्क : बी. के. नलिमा (9869131644, 8422960681)



## शुभकामनाएँ एवं आशीर्वचन



### परम आदरणीय नलिनीदीदी जी, संचालिका, घाटकोपर सबझोन

हर शक्ति का पूजन होता है – जैसे सरस्वती को विशेष विद्या की देवी कह करके मानते हैं और पूजते हैं। लक्ष्मी को धन देवी कह करके पूजते हैं। जैसे निर्भयता की शक्ति का स्वरूप 'काली देवी' है। सामना करने की शक्ति का स्वरूप 'दुर्गा' है। संतुष्ट रहना और करने की शक्ति है तो 'संतोषी' माता के रूप में गायन होता है।

जब भी हलचल आती है तब ज्ञान को पाइन्ट के रूप में न धारण कर शक्ति के रूप में धारण कर सकते हैं। ज्ञान को अंदर ही अंदर मनन करने से मनन शक्ति आती है। दिव्य शक्तियाँ भाग 1 इस पुस्तिका में नालेज, मनन, परखने, निर्णय, समेटने, सहयोग आदि शक्तियों का अभ्यास कर सकते हैं।

एकाग्रता अनेक तरफ का भटकाना सहज ही छुड़ा देती है। सूक्ष्म शक्तियों के ऊपर कंट्रोल करने की पावर अर्थात् मन-बुद्धि को, संस्कारों को जब चाहें, जहाँ चाहे, जैसे चाहें, जितना समय चाहें उतना लगा सकते हैं। दिव्य शक्तियाँ भाग 2 इस पुस्तिका में एकाग्रता, कैचिंग, कन्ट्रोलिंग, परिवर्तन, शान्ति आदि शक्तियों का अभ्यास कर सकते हैं।

सत्यता की शक्ति होगी, उतना सहज अपना राज्य सतयुग ला सकेंगे। जो कार्य आज के अनेक पद्मपति नहीं कर सकते वह शुभ संकल्प की शक्ति से सहज ही कर सकते हैं। साइन्स और साइलेन्स का कनेक्शन कैसा है? और दोनों के कनेक्शन से कितनी सफलता हो सकती है इसकी रिसर्च कर सकते हैं। दिव्य शक्तियाँ भाग 3 इस पुस्तिका में महसूसता, सत्यता, संकल्प, संगठन, सामना, साइन्स और साइलेन्स आदि शक्तियों का अभ्यास कर सकते हैं।

ब्रह्मा बाबा बच्चों से बच्चा बनकर एडजेस्ट हो जाते, तो बड़ों से बड़ा बनकर एडजस्ट हो जाते थे। अच्छा वातावरण बनाने के लिए समाने की शक्ति की आवश्यकता होती है। स्नेह सबसे बड़ी आकर्षित करने की शक्ति है जो परम आत्मा को भी स्नेह के बंधन में बांध लेती है। दिव्य शक्तियाँ भाग 4 इस पुस्तिका में एडजेस्टमेंट, समाने, सहन, संग्रह और संग्राम आदि शक्तियों का अभ्यास कर सकते हैं।

इस पुस्तिका द्वारा स्वयं को शक्तिशाली बनाने के लिये पहले अपने पर प्रयोग करके देखो। हर मास वा हर 15 दिन के लिये कोई न कोई विशेष शक्ति का स्व प्रति प्रयोग करके देखो।

**बापदादा के वरदानों की स्मृति के साथ विजयी भव, सफलतामूर्त भव !!!**

**धन्यवाद।**

**दिव्य ज्योति पुंज की पहचान हो, पहचान हो ।**

**तुम सर्वशक्तिमान की संतान हो, संतान हो ।।**

## सूची

क्र.	शक्तियाँ	पृष्ठ क्र.
1	महसूसता की शक्ति	4
2	सत्यता की शक्ति	18
3	संकल्प शक्ति	36
4	संगठन की शक्ति	70
5	सामना करने की शक्ति	94
6	साइन्स और साइलेन्स	122

## 1. महसूसता की शक्ति

**13.3.69...** .. कुमारियों की रिजल्ट कैसी है? आप अपनी रिजल्ट क्या समझती हो? विशेष किस बात में उन्नति समझती हो? (हरेक ने अपना सुनाया) याद की यात्रा में कमी है। इसलिए इतनी महसूसता नहीं होती। अमृतवेले याद का इतना अनुभव नहीं होता है इसलिए जैसे साकार में यहाँ बाहर खुली हवा में सैर भी कराते थे, लक्ष्य भी देते थे, योग का अनुभव भी कराते थे। इसी रीति जो कुमारियों के निमित्त टीचर्स हैं वह उन्हों को आधा घण्टा एकान्त में सैर करावें। जैसे शुरू में तुम अलग-अलग जाकर बैठते थे, सागर के किनारे, कोई कहाँ, कोई कहाँ जाकर बैठते थे। ऐसी प्रैक्टिस कराओ। छतें तो यहाँ बहुत बड़ी-बड़ी हैं। फिर शाम के समय भी 7 से 7.30 तक यह समय विशेष अच्छा होता है। जैसे अमृतवेले का सतोगुणी टाइम होता है वैसे यह शाम का टाइम भी सतोगुणी है। सैर पर भी इसी टाइम निकलते हैं। उसी समय संगठन में योग कराओ और बीच-बीच में अव्यक्ति रूप से बोलते रहो, कोई का बुद्धियोग यहाँ वहाँ होगा तो फिर अटेन्शन खँचेगा। योग की सबजेक्ट में बहुत कमी है। भाषण करना, प्रदर्शनी में समझाना यह तो आजकल के स्कूलों की कुमारियों को एक सप्ताह ट्रेनिंग दे दो तो बहुत अच्छा समझा लेंगी। लेकिन यह तो जीवन में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना है ना। उसी समय ऐसे समझो जैसे कि बापदादा के निमन्त्रण पर जा रहे हैं। जैसे बापदादा सैर करने आते हैं वैसे बुद्धियोग बल से तुम सैर कर सकती हो। जब याद की यात्रा का अनुभव करेंगे तो अव्यक्ति स्थिति का प्रभाव आपके नयनों से, चलन से प्रत्यक्ष देखने में आयेगा। फिर उन्हों से माला बनवायेंगे। जैसे शुरू में आप खुद माला बनाती थी ना।

**17.5.69...** .. अव्यक्ति स्थिति की परख आप सभी के जीवन में क्या होगी, वह मालूम है? उनके हर कर्म में एक तो अलौकिकता और दूसरा हर कर्म करते हर कर्मेन्द्रियों से अतीन्द्रिय सुख की महसूसता आवेगी। उनके नयन, चैन, उनकी चलन अतीन्द्रिय सुख में हर वक्त रहेगी। अलौकिकता और अतीन्द्रिय सुख की झलक उनके हर कर्म में देखने में आयेगी। जिससे मालूम पड़ेगा यह व्यक्त में होते अव्यक्त स्थिति में स्थित हैं। अगर यह दोनों ही चीजें अपने कर्म में देखते हो तो समझना चाहिए कि अव्यक्त स्थिति में स्थित हैं।

**23.7.69...** .. प्रदर्शनी में भी कुछ नवीनता आनी चाहिए। अभी तो इतना ही समझते हैं कि यहाँ की नालेज अच्छी है। जो बात बतानी हैं, बिना पूछे देखने से ही समझें कि हमको अभी यह सहज रास्ता मिला है। इस लक्ष्य को रखकर बनाने की कोशिश करें। और टापिक में भी आकर्षण हो। परमात्मा के परिचय पर रख सकते हो। और लोग जो दूर भागते हैं उनको नजदीक लाना है। फिर उसमें धर्म के विचार वाले हो वा कोई प्रकार हो उसकी फिर पीठ भी करनी है। बिना पीठ किये सफलता नहीं होगी। जैसे म्युजियम की सर्विस की है, उसकी भी पीठ करनी है। उनसे सम्पर्क रखना है। समय प्रति समय बुलाना है। भले सम्बन्ध रखना चाहिए जो उनको परिवार की महसूसता हो। तभी ही सर्विस की सफलता होगी।

**16.10.69...** .. ऐसी कुछ नवीनता आप भी देखना चाहते हो और बाप-दादा भी चाहते हैं। ऐसा आवाज फैल जाये कि यह कौन कहाँ से प्रगट हुए हैं। ऐसे महसूस हो कि एक-एक स्थान पर कोई अलौकिक आत्मा अवतरित होकर आई है। एक अवतार इतना कुछ कर सकता है तो यह कितने अवतार हैं। यहाँ से जब जाओ तो ऐसे ही समझकर जाना कि हम इस शरीर में अवतरित हुए हैं – ईश्वरीय सेवा के लिये। अगर यह स्मृति रखकर जायेंगे तो आपके हर चलन में अलौकिकता देखने में आयेगी। जो भी आपके दैवी परिवार वाले वा लौकिक परिवार वाले हैं वह महसूस करें कि यह कुछ अनोखे ही बनकर आये हैं, बदलकर आये हैं। जब आप की बदलने की

महसूसता आयेगी तब आप दुनिया को बदल सकेंगे। अगर आप सभी के बदलने की भासना नहीं तो दुनिया को नहीं बदल सकेंगे। खुद बदल कर दुनिया को बदलना है। ऐसे ही समझकर चलना कि निमित्त मात्र इस शरीर का लोन लेकर ईश्वरीय कार्य के लिए, थोड़े दिन के लिए अवतरित हुये हैं। कार्य समाप्त करके फिर चले जायेंगे। यह स्मृति, लक्ष्य रख करके, ऐसी स्थिति बनाकर फिर चलना।

**6.8.70...** .. सर्व स्नेही बनने के लिए पहले नारा बनना है। सर्विस करते हुए, संकल्प करते हुए भी अपने को और दूसरों को भी महसूसता ऐसी आनी चाहिए कि वह नारा और अति पारा है। जितना जो स्वां नारा होगा उतना औरों को बाप का पारा बना सकेंगे।

**15.4.71...** .. कर्मणा द्वारा गुणों का दान करने के कारण कौनसी मूर्त बन जायेंगे? फरिश्ता। कर्म अर्थात् गुणों का दान करने से उनकी चलन और चेहरा – दोनों ही फरिश्ते की तरह दिखाई देंगे। दोनों प्रकार की लाइट होगी अर्थात् प्रकाशमय भी और हल्कापन भी। जो भी कदम उठेगा वह हल्का। बोझ महसूस नहीं करेंगे। जैसे कोई शक्ति चला रही है। हर कर्म में मदद की महसूसता करेंगे। हर कर्म में सर्व द्वारा प्राप्त हुआ वरदान अनुभव करेंगे। दूसरे, हर कर्म द्वारा महादानी बनने वाला सर्व की आशीर्वाद के पात्र बनने के कारण सर्व वरदान की प्राप्ति अपने जीवन में अनुभव करेंगे। मेहनत से नहीं, लेकिन वरदान के रूप में। तो कर्म में दान करने वाला एक तो फरिश्ता रूप नज़र आयेगा, दूसरा सर्व वरदानमूर्त अपने को अनुभव करेगा।

**27.7.71...** .. दिन-प्रतिदिन जितना-जितना अपनी स्मृति की समर्थी में आते जायेंगे अर्थात् अपनी आत्मा रूपी नेत्र को पावरफुल बनाते जायेंगे, क्लीयर बनाते जायेंगे उतना-उतना कोई भी अगर विघ्न आने वाला होगा तो पहले से ही यह महसूसता आयेगी कि आज कोई पेपर होने वाला है। और जितना-जितना इनएडवान्स मालूम पड़ता जायेगा तो पहले से ही होशियार होने के कारण विघ्नों में सफलता पा लेंगे।

**27.5.74...** .. बाप जब कि जानते भी हैं, तो भी सुनते क्यों हैं? क्योंकि स्वयं द्वारा किये गये कर्म व संकल्प स्वयं वर्णन करेंगे, तो ही महसूसता की सीढ़ी पर पाँव रख सकेंगे। महसूस करना या अफसोस करना या माफी लेना बात एक हो जाती है। इसलिए सुनाने की अर्थात् स्वयं को हल्का बनाने की या परिवर्तन करने की विधि बनाई गई है। इस विधि से पापों की वृद्धि कम हो जाती है। इसलिये अगर शीश महल बनने के बाद, स्वयं को स्पष्ट देख कर के स्पष्ट किया तो रिज़ल्ट क्या होगी, यह जानते हो? बाप-दादा भी ड्रामा प्रमाण उन आत्माओं को स्पष्ट चैलेन्ज देंगे, तो फिर क्या कर सकेंगे? इसलिए जब महसूसता के आधार पर स्पष्ट हो अर्थात् बोझ से स्वयं को हल्का करो, तब ही डबल लाइट स्वरूप अर्थात् फरिश्ता व आत्मिक स्थिति स्वरूप बन सकेंगे।

महसूसता के आधार से हल्की होने वाली आत्मायें फरिश्ता बनती है।

**24.6.74...** .. जो महारथी हैं अर्थात् 'पास विद ऑनर' होने वाले हैं, तो उनकी नींद का टाइम भी योग-युक्त स्थिति में गिना जाता है। उनकी स्टेज ऐसी होगी, जैसे कि पार्ट समाप्त कर वह स्वयं परमधाम में हैं और उनको योग की ही महसूसता होगी।

जैसे किसी ने कर्मन्द्रियों को ऑर्डर दिया और उसने वैसा ही किया, तो मानो कि वह कर्मयोगी है लेकिन जो सेकेण्ड ग्रेड वाले होंगे, तो उन्हें इसमें कभीकभी सफलता वा कर्मयोगी की महसूसता आयेगी और कभी-कभी नहीं और बाकी थर्ड ग्रेड वाले को तो तुम जान ही सकते हो।

1.2.75... अपनी लगन में अग्नि की महसूसता आती है? जिस लगन की अग्नि में स्वयं के पास्ट (Past) के संस्कार और स्वभाव और अन्य आत्माओं के दुःखदायी संस्कार व स्वभाव को भस्म कर सको? ज्ञान द्वारा अथवा स्नेह व सम्पर्क द्वारा संस्कार परिवर्तित करते तो हो, लेकिन उसमें समय लगता है। मिटा हुआ-सा संस्कार फिर भी कब प्रत्यक्ष हो जाता है, लेकिन अब समय लगन की अग्नि में भस्म करने का है, जो फिर उस संस्कार का नामोनिशान भी न रहे। इस मुक्ति की युक्ति कौनसी है? अर्थात् इस लगन की अग्नि को पैदा करने की युक्ति व तीली कौनसी है? तीली से आग जलाते हो न? तो इस अग्नि को प्रज्वलित करने की कौन-सी तीली है? एक शब्द कौनसा है? दृढ़ संकल्प। अर्थात् मर जायेंगे और मिट जायेंगे लेकिन करना ही है। करना तो चाहिए, होना तो चाहिए, कर ही रहे हैं, हो ही जायेगा, अटेंशन तो रहता है, और महसूस भी करते हैं – ऐसा सोचना एक प्रकार से यह बुझी हुई तीली है। बार-बार मेहनत भी करते हो, समय भी लगाते हो लेकिन अग्नि प्रज्वलित नहीं होती। कारण यह है कि संकल्प रूपी बीज और दृढ़ता रूपी सार सम्पन्न नहीं है, अर्थात् खाली है। इस कारण जो फल की आशा रखते हो व भविष्य सोचते हो, वह पूर्ण नहीं हो पाता है और चलते-चलते मेहनत ज्यादा, प्राप्ति कम देखते हो तो दिल-शिकस्त व अलबेले हो जाते हो। तब कहते हो कि करते तो हैं लेकिन मिलता नहीं, तो क्यों करें, हमारा पार्ट ही ऐसा है। यह दिल-शिकस्त व अलबेलेपन के और फल न देने वाले संकल्प हैं। आप अन्य आत्माओं को संगमयुग की विशेषता कौनसी बताते हो? सभी को कहते हो कि संगमयुग है – असम्भव से सम्भव होने का। जो बात सारी दुनिया असम्भव समझती है, वह सम्भव करने का युग यही है। तो स्वयं को भी जो मुश्किल व असम्भव महसूस होता है, उसको एक सेकेण्ड में सम्भव करना – यह है दृढ़ संकल्प। सहज को अथवा सम्भव को प्रैक्टिकल में लाना कोई बड़ी बात नहीं। लेकिन असम्भव को सम्भव करना और दृढ़ संकल्प से करना – यह है पास विद ऑनर (Pass with Honour) की निशानी। अब यह नवीनता करके दिखाओ।

अगर कोई विकर्म नहीं लेकिन व्यर्थ कर्म हो जाता है तो पश्चाताप की स्थिति नहीं लेकिन महसूसता की स्टेज होती है। बारबार व्यर्थ संकल्प महसूसता की स्टेज पर लाता रहेगा कि यह करना नहीं चाहिए। यह राँग है, जैसे काँटे के समान चुभता रहेगा। जहाँ पश्चाताप की स्थिति व महसूसता की स्टेज अनुभव होगी वहाँ तख्तनशीन के नशे की स्टेज नहीं होगी। फर्स्ट स्टेज है – तख्त नशीन। सेकेण्ड स्टेज है – करने के बाद महसूसता की स्टेज। इसमें भी नम्बर है। कोई करने के बाद महसूस करते हैं। कोई करते समय ही महसूस करते हैं और कोई कर्म होने के पहले ही कैच करते हैं कि कुछ होने वाला है। कोई तूफान आने वाला है। आने के पहले ही महसूस कर, कैच कर समाप्त कर देते हैं। तो सेकेण्ड स्टेज है महसूसता की। तीसरी स्टेज है – पश्चाताप की। इसमें भी नम्बर हैं – कोई पश्चाताप के साथ परिवर्तन कर लेते हैं और कई पश्चाताप करते हैं लेकिन परिवर्तन नहीं कर पाते। पश्चाताप है लेकिन परिवर्तन की शक्ति नहीं है तो उसके लिए क्या करेंगे। ऐसे समय पर विशेष स्वयं के प्रति कोई-न-कोई व्रत और नियम बनाना चाहिए। जैसे भक्ति मार्ग में भी अल्पकाल के कार्य की सिद्धि के लिए विशेष नियम और व्रत धारण करते हैं। व्रत से वृत्ति परिवर्तन होगी। वृत्ति से भविष्य जीवन रूपी सृष्टि बदल जायेगी क्योंकि विशेष व्रत के कारण बार-बार वही शुद्ध संकल्प, जिसके लिए व्रत रखा है, वह स्वतः याद आता है। जैसे भक्त लोग विशेष किसी देवी या देवता का व्रत रखते हैं तो न चाहते भी सारा दिन उसी देवी या देवता की याद आती है और याद के कारण ही बाप उसी देवी या देवता द्वारा याद की रिटर्न में उनकी आशा पूर्ण कर देते हैं। तो जब भक्तों के व्रत का भी फल मिलता है तो ज्ञानी तू आत्मा अधिकारी बच्चों को शुद्ध संकल्प रूपी व्रत का व दृढ़ संकल्प रूपी व्रत का

प्रत्यक्ष फल जरूर प्राप्त होगा। तो सुना, तख्तनशीन तो सब देखे लेकिन कोई सदा काल के, उतरते चढ़ते हुए देखे, अभी-अभी तख्तनशीन, अभी-अभी नीचे।

23.4.77... .. पहले स्वयं को स्वयं के धोखे से बचाओ तो समय के धोखे से भी बच जायेंगे। माया के अनेक प्रकार के धोखे से भी बच जायेंगे। दुःख के अंश मात्र के महसूसता से सदा बच जायेंगे, लेकिन सर्व का आधार – ‘समय को व्यर्थ नहीं गंवाओ।’ हर सेकेण्ड का लाभ उठाओ। समय के वरदानों को स्वयं प्रति और सर्व के प्रति कार्य में लगाओ।

12.6.77... .. विजयी रत्न सदा खुश अर्थात् हर्षित रहते हैं। स्वप्न में भी दुःख का दृश्य न आए अर्थात् दुःख के अनुभव की महसूसता न आए। स्वप्न में भी तो दुःख होता है। कोई ऐसा दृश्य देख करके स्वप्न में भी दुःख की लहर आती है? सदा विजयी के स्वप्न भी सुखदायी होते हैं, दुःख के नहीं। जब स्वप्न भी सुखदाई होंगे तो जरूर साकार में सुख स्वरूप होंगे।

12.12.79... .. अगर कोई विकर्म नहीं लेकिन व्यर्थ कर्म हो जाता है तो पश्चाताप की स्थिति नहीं लेकिन महसूसता की स्टेज होती है। बारबार व्यर्थ संकल्प महसूसता की स्टेज पर लाता रहेगा कि यह करना नहीं चाहिए। यह राँग है, जैसे काँटे के समान चुभता रहेगा। जहाँ पश्चाताप की स्थिति व महसूसता की स्टेज अनुभव होगी वहाँ तख्तनशीन के नशे की स्टेज नहीं होगी। फर्स्ट स्टेज है – तख्त नशीन। सेकेण्ड स्टेज है – करने के बाद महसूसता की स्टेज। इसमें भी नम्बर है। कोई करने के बाद महसूस करते हैं। कोई करते समय ही महसूस करते हैं और कोई कर्म होने के पहले ही कैच करते हैं कि कुछ होने वाला है। कोई तूफान आने वाला है। आने के पहले ही महसूस कर, कैच कर समाप्त कर देते हैं। तो सेकेण्ड स्टेज है महसूसता की। तीसरी स्टेज है – पश्चाताप की। इसमें भी नम्बर हैं – कोई पश्चाताप के साथ परिवर्तन कर लेते हैं और कई पश्चाताप करते हैं लेकिन परिवर्तन नहीं कर पाते। पश्चाताप है लेकिन परिवर्तन की शक्ति नहीं है तो उसके लिए क्या करेंगे। ऐसे समय पर विशेष स्वयं के प्रति कोई-न-कोई व्रत और नियम बनाना चाहिए। जैसे भक्ति मार्ग में भी अल्पकाल के कार्य की सिद्धि के लिए विशेष नियम और व्रत धारण करते हैं। व्रत से वृत्ति परिवर्तन होगी। वृत्ति से भविष्य जीवन रूपी सृष्टि बदल जायेगी क्योंकि विशेष व्रत के कारण बार-बार वही शुद्ध संकल्प, जिसके लिए व्रत रखा है, वह स्वतः याद आता है। जैसे भक्त लोग विशेष किसी देवी या देवता का व्रत रखते हैं तो न चाहते भी सारा दिन उसी देवी या देवता की याद आती है और याद के कारण ही बाप उसी देवी या देवता द्वारा याद की रिटर्न में उनकी आशा पूर्ण कर देते हैं। तो जब भक्तों के व्रत का भी फल मिलता है तो ज्ञानी तू आत्मा अधिकारी बच्चों को शुद्ध संकल्प रूपी व्रत का व दृढ़ संकल्प रूपी व्रत का प्रत्यक्ष फल जरूर प्राप्त होगा। तो सुना, तख्तनशीन तो सब देखे लेकिन कोई सदा काल के, उतरते चढ़ते हुए देखे, अभी-अभी तख्तनशीन, अभी-अभी नीचे।

14.1.80... .. जितनों को सम्पर्क में लायेंगे उतनी प्रजा बनती जायेगी। अगर सम्बन्ध में लाया तो बच्चे भी बन सकते हैं। कोई-कोई अच्छा-अच्छा कहकर चले भी जायेंगे लेकिन वह अन्त में हलचल के समय इच्छुक 38 होकर महसूसता शक्ति के साथ-साथ आयेंगे। इसलिए सेवा करते रहना चाहिए। फिर भी आपको इष्ट मानेंगे जरूर। और कुछ नहीं तो कम-से-कम आपके भक्त तो बन जायेंगे। अगर अन्त में यह भी कहा कि इन्होंने संदेश अच्छा दिया, संदेशी थे, पैगम्बर थे, यह भी सोचा तो भक्त बन जायेंगे। लास्ट स्टेज भक्त है, वह भी तो चाहिए।

**17.1.81.. ..** जैसे सेवा-केन्द्र पर अगर कोई भी ज़रा स्व-भाव स्व-संस्कार के वश होकर ऐसी चाल-चलन चलते हैं तो सब कहते हो ऐसा नहीं होना चाहिए। ऐसे ही आपके घर के स्थान पर भी ऐसी **महसूसता** हो कि इस स्थान पर ऐसा कोई कर्म नहीं होना चाहिए। यह फीलिंग दिल में आये कि यह कर्म हम नहीं कर सकते। जैसे सेवा स्थान पर कोई भी कमी पेशी देखते हो तो ठीक कर देते हो ऐसे अपने लौकिक स्थान को और स्थिति को ठीक कर देना। घर मन्दिर लगे, गृहस्थी नहीं। जैसे मन्दिर का वायुमण्डल सबको आकर्षित करता, ऐसे आपके घर से पवित्रता की खुशबू आये। जिस प्रकार अगरबत्ती की खुशबू चारों ओर फैलती, इसी प्रकार पवित्रता की खुशबू दूर-दूर तक फैलनी चाहिए, इसको कहा जाता है पवित्र प्रवृत्ति।

**10.1.82.. ..** जैसे बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज़ निकलती है – “मेरा बाबा”। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, **महसूसता** हो, जो हरेक समझे कि यह – ‘मेरी माँ’ है। यह बेहद की पालना। हरेक से मेरे-पन की भावना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक, सहयोगी सेवा के साथी हैं। इसको कहा जाता है – ‘बाप समान’। इसको ही कहा जाता है – कर्मातीत स्टेज के तख़्तनशीन। जो सेवा के कर्म के भी बन्धन में न आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेंट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है। इस कर्मबन्धन से – ‘कर्मातीत’। तो समझा – इस वर्ष क्या करना है? कर्मातीत बनना है और “यह वही हैं, यही सब कुछ हैं,” यह महसूसता दिलाए, आत्माओं को समीप लाना है। ठिकाने पर लाना है। अपने प्रति भी सुनाया और सेवा के प्रति भी सुनाया। अच्छा – सबका संकल्प था ना कि अभी क्या करना है? कौन-सी लहर फैलानी है।

**13.6.82.. ..** माला की विशेषता है – एक दो के संस्कारों के समीप। दाने से दाना मिला हुआ। वह तैयारी है? जिसको भी देखें, चाहे 108वाँ नम्बर हो लेकिन दाना मिला हुआ, तो वह भी है ना! ऐसे जुड़े हुए हैं। सभी को यह **महसूसता** आवे कि यह तो माला के समान पिरोये हुए मणके हैं। ऐसे नहीं – संस्कार सबके वैरायटी हैं तो नजदीक कैसे होंगे? नहीं। वैरायटी संस्कार होते भी समीप दिखाई दें। वैरायटी के आधार पर नम्बर हो गये लेकिन दाने तो नजदीक हैं ना – एक दो के। जब तक एक दूसरे से न मिलें तब तक माला बन नहीं सकती। एक भी दाना निकल जाए तो माला खण्डित हो जाए। पूज्य माला नहीं कही जायेगी। दूर भी रह जाए तो भी कहेंगे यह पूज्यनीय माला नहीं। 108वाँ नम्बर भी अगर थोड़ा दूर है तो माला रेडी नहीं हो सकती।

**26.1.83..** जो जितना अपने को सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न अनुभव करेंगे वह सदा सन्तुष्ट होंगे। अगर जरा भी कमी की **महसूसता** हुई तो जहाँ कमी है वहाँ असन्तुष्टता है। तो सर्व प्राप्ति है ना। संकल्प की सिद्धि तो फिर भी हो रही हैना।

**14.4.83.. ..** रोज़ नई नई पाइंट स्मृति में रख मनन करो तो बड़ा मज़ा आयेगा, मौज में रहेंगे। क्योंकि बाप का दिया हुआ खजाना मनन करने से अपना अनुभव होता है। जैसे भोजन पहले अलग होता है, खाने वाला अलग होता है। लेकिन जब हजम कर लेते तो वही भोजन खून बन शक्ति के रूप में अपना बन जाता है। ऐसे ज्ञान भी मनन करने से अपना बन जाता, अपना खजाना है यह **महसूसता** आयेगी।

**10.11.83.. ..** स्टेज पर आते हो तो याद रहता है – भाषण करना है लेकिन यह ज़्यादा याद रहे, भाषण निमित्त है, ईश्वरीय शक्ति की भासना देनी है। वाणी में भी ईश्वरीय शक्ति की भासना आवे। इसको कहा जाता है – न्यारापन। स्पीच बहुत अच्छी की तो यह स्पीकर के रूप में देखा ना। यह ईश्वरीय अलौकिक आत्मायें हैं इस रूप



में देखें। यह **महसूसता** करानी है। यह भासना ही ईश्वरीय बीज डाल देती। फिर वह बीज निकल नहीं सकता। एक सेकण्ड का भी किसको अनुभव हो जाता है तो वह अन्त तक मेहनत नहीं लेता। ईश्वरीय झलक का अनुभव जिसने आते ही किया उनका चलना, सेवा करना वह और होता है। जो सिर्फ सुनकर प्रभावित होते उनका चलना और होता है, जो सिर्फ प्यार में ही चलते रहते उनका चलना और है। भिन्न-भिन्न प्रकार हैं ना। तो अभी पहले स्वयं को सदा ईश्वरीय पालना में अनुभव करो तब औरों को अनुभव हो।

**1.12.83...** .. ज्ञान की गहराई को सुनकर खुश हो गये। योग और प्यार के आधार पर चल रहे हैं, लेकिन अभी ज्ञान की गहराई को जाना यह और भी इन्हों को सेवा के निमित्त बनायेगी। माइन्ड तैयार हो जाए उसके लिए ज्ञान की गहराई चाहिए। ज्ञान और बाप यह दोनों की **महसूसता** दिलाना, यह रिजल्ट अच्छी है। कोई भी जाता है तो कितने खुश होते हैं, जैसे कोई आकाश से सितारा नीचे आ जाए, ऐसी अनुभूति करते हैं।

**7.5.84...** .. घबरावे नहीं क्या करूँ, बहुत जिम्मेवारी है। यह करूँ, वा नहीं। क्या करूँ, यह भी करूँ वह भी करूँ, बड़ा मुश्किल है। यह **महसूसता** अर्थात् बोझ है! तो डबल लाइट तो नहीं हुए ना। डबल लाइट अर्थात् च्यारा। कोई भी जिम्मेवारी के कर्म के हलचल का बोझ नहीं। इसको कहा जाता है – न्यारे और प्यारे का बैलेन्स रखने वाले।

**26.12.84...** .. कमजोरी मन की स्थिति को हलचल में ज़रूर लाती है। चाहे कितना भी अपने को छिपावे वा आर्टीफिशल अल्पकाल के समय प्रमाण, परिस्थिति प्रमाण बाहर से मुस्कराहट भी दिखावे लेकिन सत्यता की शक्ति स्वयं को **महसूसता** अवश्य कराती है। बाप से और अपने आप से छिप नहीं सकता। दूसरों से छिप सकता है। चाहे अलबेलेपन के कारण अपने आप को भी कभी-कभी महसूस होते हुए भी चला लेवे फिर भी सत्यता की शक्ति मन में उलझन के रूप में, उदासी के रूप में, व्यर्थ संकल्प के रूप में आती ज़रूर है। क्योंकि सत्यता के आगे असत्य टिक नहीं सकता।

**12.3.85...** .. नम्रता और रहम की भावना अभिमान की **महसूसता** नहीं कराती। जैसे मुरलियों को सुनते हुए कोई भी अभिमान नहीं कहेगा। अथार्टी से बोलते हैं, यह कहेंगे। भल शब्द कितने ही सख्त हों लेकिन अभिमान नहीं कहेगा! अथार्टी की अनुभूति करते हैं। ऐसे क्यों होता है? जितनी ही अथार्टी है उतनी ही नम्रता और रहम भाव है। ऐसे बाप तो बच्चों के आगे बोलते हैं लेकिन आप सभी इस विशेषता से स्टेज पर इस विधि से स्पष्ट कर सकते हो।

**24.3.85...** .. अपने हिसाब को भी आप साक्षी होकर देखो। इस शरीर से जो भी पिछला किया हुआ है वह चुक्तू कैसे कर रहा है, वह साक्षी होकर देखते। इसे कर्मभोग नहीं कहेंगे। भोगने में दुख होता है। तो भोगना शब्द नहीं कहेंगे क्योंकि दुखदर्द की महसूसता नहीं है। आप लोगों के लिए कर्मभोग नहीं है, यह भी कर्मयोग की शक्ति से सेवा का साधन बना हुआ है। यह कर्म भोगना नहीं, सेवा की योजना है। भोगना भी सेवा की योजना में बदल गई। ऐसे है ना!

**27.3.85...** .. एकरस अर्थात् सदा उड़ती कला की महसूसता रहे। इसमें एकरस। जो कल था उससे आज परसेन्टेज में वृद्धि का अनुभव करें। इसको कहा जाता है – उड़ती कला।

**2.12.85...** .. सबसे बड़ा बन्धन यह मन्सा का बन्धन है। जो बुद्धि को ताला लग जाता है। इसलिए कितनी भी समझाने की कोशिश करो लेकिन उनको समझ में नहीं आयेगा। मन्सा बन्धन की विशेष निशानी है – **महसूसता**

शक्ति समाप्त हो जाती है। इसलिए इस सूक्ष्म बन्धन को समाप्त करने के बिना कभी भी आन्तरिक खुशी, सदा के लिए अतीन्द्रिय सुख अनुभव नहीं कर सकेंगे।

**6.1.86...** .. जो अनेक बार विजयी आत्मायें हैं, उन्हीं की निशानी क्या होगी? उन्हें हर बात बहुत सहज और हल्की अनुभव होगी। जो कल्प-कल्प की विजयी आत्मायें नहीं उन्हें छोटा-सा कार्य भी मुश्किल अनुभव होगा। सहज नहीं लगेगा। हर कार्य करने के पहले स्वयं को ऐसे अनुभव करेंगे जैसे यह कार्य हुआ ही पड़ा है। होगा या नहीं होगा यह क्वेश्चन नहीं उठेगा। हुआ ही पड़ा है यह महसूसता सदा रहेगी। पता है सदा सफलता है ही, विजय है ही – ऐसे निश्चयबुद्धि होंगे। कोई भी बात नई नहीं लगेगी, बहुत पुरानी बात है। इसी स्मृति से स्वयं को आगे बढ़ाते रहेंगे।

**31.3.86...** .. एक बात ज़रूर करो – जो भी सेन्टर पर रहते हो वह आपस में सारे दिन में एक टाइम लेन-देन ज़रूर करो। नहीं तो एक, एक तरफ रहता है दूसरा दूसरे तरफ। उससे परिवार के प्यार की महसूसता नहीं आती है। और स्वयं में वह स्नेह की शक्ति नहीं होगी तो दूसरों को भी बाप के स्नेही नहीं बना सकेंगे। इसलिए एक दो को ज़रूर पूछो क्या है – कैसे हो? कोई बीमार है, कोई मन की तकलीफ है, कोई शरीर की तकलीफ है तो पूछने से वह समझेंगे कि हमारा भी कोई है। कोई भी सेवा का प्लैन भी बनाते हो तो दोनों तीनों मिलकर, चाहे छोटी भी हो, तो भी उससे 'हाँ जी' करायेंगे तो वह भी खुश हो जायेगी। वह भी समझेंगी कि इसमें मेरा हाथ है, और विशेष जो सर्विसएबुल सलाह देने वाले हैं उन्हीं की भी मीटिंग ज़रूर करनी चाहिए, क्योंकि उनके सहयोग के बिना आप भी क्या कर सकेंगे? स्नेह और शक्ति का बैलेन्स रखते हुए हैंडिल करो और आगे बढ़ो।

**25.10.87...** .. पुरानी देह के स्वभाव और संस्कार भी बहुत कड़े हैं। मायाजीत बनने में यह भी बड़ा विघ्न-रूप बनते हैं। कई बार बापदादा देखते हैं - पुराने स्वभाव, संस्कार रूपी सांप खत्म भी हो जाता लेकिन लकीर रह जाती जो समय आने पर बार-बार धोखा दे देती। यह कड़े स्वभाव और संस्कार कई बार इतना माया के वशीभूत बना देते हैं जो रांग को रांग समझते ही नहीं। 'महसूसता-शक्ति' समाप्त हो जाती है। इससे न्यारा होना - इसकी भी चेकिंग अच्छी तरह चाहिए। जब महसूसता-शक्ति समाप्त हो जाती है तो और ही एक झूठ के पीछे हजार झूठ अपनी बात को सिद्ध करने के लिए बोलने पड़ते हैं। इतना परवश हो जाते हैं! अपने को सत्य सिद्ध करना - यह भी पुराने संस्कार के वशीभूत की निशानी है। एक है यथार्थ बात स्पष्ट करना, दूसरा है अपने को जिद्द से सिद्ध करना। तो जिद्द से सिद्ध करने वाले कभी सिद्धिस्व रूप नहीं बन सकते हैं। यह भी चेक करो कि कोई भी पुराना स्वभाव, संस्कार अंश-मात्र भी छिपे हुए रूप में रहा हुआ तो नहीं है? समझा?

**02.11.87...** .. बापदादा देख रहे थे - दिलपसन्द, लोकपसन्द, बाप-पसन्द सफलता का आधार 'स्व परिवर्तन' की अभी कमी है और 'स्व-परिवर्तन' की कमी क्यों है? उसका मूल आधार एक विशेष शक्ति की कमी है। वह विशेष शक्ति है – महसूसता की शक्ति। कोई भी परिवर्तन का सहज आधार महसूसता-शक्ति है। जब तक महसूसता-शक्ति नहीं आती, तब तक अनुभूति नहीं होती और जब तक अनुभूति नहीं तब तक ब्राह्मण जीवन की विशेषता का फाउन्डेशन मजबूत नहीं। आदि से अपने ब्राह्मण जीवन को सामने लाओ। पहला परिवर्तन – मैं आत्मा हूँ, बाप मेरा है - यह परिवर्तन किस आधार से हुआ? जब महसूस करते हो कि 'हाँ, मैं आत्मा हूँ, यही मेरा बाप है।' तो महसूसता अनुभव कराती है, तब ही परिवर्तन

होता है। जब तक महसूस नहीं करते, तब तक साधारण गति से चलते हैं और जिस घड़ी महसूसता की शक्ति अनुभवी बनाती है तो तीव्र पुरुषार्थी बन जाते हैं। ऐसे जो भी परिवर्तन की विशेष बातें हैं - चाहे रचयिता के बारे में, चाहे रचना के बारे में, जब तक हर बात को महसूस नहीं करते कि हाँ, यह वही समय है, वही योग है, मैं भी वही श्रेष्ठ आत्मा हूँ - तब तक उमंग-उत्साह की चाल नहीं रहती। कोई के वायुमण्डल के प्रभाव से थोड़े समय के लिए परिवर्तन होगा लेकिन सदाकाल का नहीं होगा। महसूसता की शक्ति सदाकाल का सहज परिवर्तन कर लेगी। इसी प्रकार स्व-परिवर्तन में भी जब तक महसूसता की शक्ति नहीं, तब तक सदाकाल का श्रेष्ठ परिवर्तन नहीं हो सकता है। इसमें विशेष दो बातों की महसूसता चाहिए। **एक** - अपनी कमजोरी की महसूसता। **दूसरी** - जो परिस्थिति वा व्यक्ति निमित्त बनते हैं, उनकी इच्छा और उनके मन की भावना वा व्यक्ति की कमजोरी या परवश के स्थिति की महसूसता। परिस्थिति के पेपर के कारण को जान स्वयं को पास होने के श्रेष्ठ स्वरूप की महसूसता में हो कि - मैं श्रेष्ठ हूँ, स्वस्थिति श्रेष्ठ है, परिस्थिति पेपर है। यह महसूसता सहज परिवर्तन करा लेगी और पास कर लेंगे। दूसरे की इच्छा वा दूसरे के स्व-उन्नति की भी महसूसता अपने स्व-उन्नति का आधार है। तो स्व-परिवर्तन - महसूसता की शक्ति बिना नहीं हो सकता। इसमें भी एक है - सच्चे दिल की महसूसता, दूसरी - चतुराई की महसूसता भी है। क्योंकि नॉलेजफुल बहुत बन गये हैं। तो समय देख अपने को सिद्ध करने के लिए, अपना नाम अच्छा करने के लिए उस समय महसूस भी कर लेंगे लेकिन उस महसूसता में शक्ति नहीं होती जो परिवर्तन कर लेंगे। तो दिल की महसूसता दिलाराम की आशीर्वाद प्राप्त कराती है और चतुराई वाली महसूसता थोड़े समय के लिए दूसरे को भी खुश कर लेते, अपने को भी खुश कर देते। **तीसरे प्रकार की महसूसता** - मन मानता है कि यह ठीक नहीं है, विवेक आवाज देता है कि यह यथार्थ नहीं है लेकिन बाहर के रूप से अपने को महारथी सिद्ध करने के लिए, अपने नाम को किसी भी प्रकार से परिवार के बीच कमजोर या कम न करने के कारण विवेक का खून करते रहते हैं। यह विवेक का खून करना भी पाप है। जैसे आपघात महापाप है, वैसे यह भी पाप के खाते में जमा होता है। इसलिए बापदादा मुस्कराते रहते हैं और उनमें मन के डॉयलाग भी सुनते रहते हैं। बहुत सुन्दर डॉयलाग होते हैं। मूल बात - ऐसी महसूसता वाले यह समझते हैं कि किसको क्या पता पड़ता है, ऐसे ही चलता है... लेकिन बाप को पता हर पत्ते का है। सिर्फ मुख से सुनने से पता नहीं पड़ता, लेकिन पता होते भी बाप अन्जान बन भोलेपन में भोलानाथ के रूप से बच्चों को चलाते हैं। जबकि जानते हैं, फिर भोला क्यों बनते? क्योंकि रहमदिल बाप है, समझा? ऐसे बच्चे चतुरसुजान बाप से भी अथवा निमित्त आत्माओं से भी बहुत चतुर बन सामने आते हैं। इसलिए बाप रहमदिल, भोलानाथ बन जाते हैं। बापदादा के पास हर बच्चे के कर्म का, मन के संकल्पों का खाता हर समय का स्पष्ट रहता है। दिलों को जानने की आवश्यकता नहीं है लेकिन हर बच्चे के दिल की हर धड़कन का चित्र स्पष्ट ही है। इसलिए कहते

हैं कि मैं हर एक के दिल को नहीं जानता क्योंकि जानने की आवश्यकता ही नहीं, स्पष्ट है ही। हर घड़ी के दिल की धड़कन वा मन के संकल्प का चार्ट बापदादा के सामने है। बता भी सकते हैं, ऐसे नहीं कि नहीं बता सकते हैं। तिथि, स्थान, समय और क्या-क्या किया - सब बता सकते हैं। लेकिन जानते हुए भी अन्जान रहते हैं। तो आज सारा चार्ट देखा। स्व-परिवर्तन तीव्रगति से न होने के कारण - 'सच्ची दिल के महसूसता' की कमी है। महसूसता की शक्ति बहुत मीठे अनुभव करा सकती है। यह तो समझते हो ना। कभी अपने को बाप के नूरे रतन आत्मा अर्थात् नयनों में समाई हुई श्रेष्ठ बिन्दु महसूस करो। नयनों में तो बिन्दु ही समा सकता है, शरीर तो नहीं समा सकेगा। कभी अपने को मस्तक पर चमकने वाली मस्तक-मणि, चमकता हुआ सितारा महसूस करो, कभी अपने को ब्रह्मा बाप के सहयोगी, राइट हैण्ड साकार ब्राह्मण रूप में ब्रह्मा की भुजायें अनुभव करो, महसूस करो। कभी अव्यक्त फ़रिश्ता स्वरूप महसूस करो। ऐसे महसूसता शक्ति से बहुत अनोखे, अलौकिक अनुभव करो। सिर्फ नॉलेज की रीति वर्णन नही करो, महसूस करो। इस महसूसता-शक्ति को बढ़ाओ तो दूसरे तरफ़ की कमज़ोरी की महसूसता स्वतः ही स्पष्ट होगी। शक्तिशाली दर्पण के बीच छोटा-सा दाग भी स्पष्ट दिखाई देगा और परिवर्तन कर लेंगे। तो समझा, स्व परिवर्तन का आधार महसूसता शक्ति है। शक्ति को कार्य में लगाओ, सिर्फ गिनती करके खुश न हो - हाँ, यह भी शक्ति है, यह भी शक्ति है। लेकिन स्व प्रति, सर्व प्रति, सेवा प्रति सदा हर कार्य में लगाओ। समझा? कई बच्चे कहते कि बाप यही काम करते रहते हैं क्या? लेकिन बाप क्या करे, साथ तो ले ही जाना है। जब साथ ले जाना है तो साथी भी ऐसे ही चाहिए ना। इसलिए देखते रहते हैं और समाचार सुनाते रहते कि साथी समान बन जाएं।

18.11.87... .. जितनी नज़दीक वाली आत्मा होगी उतनी अपनेपन की ज़्यादा महसूसता होगी। सोचना नहीं पड़ेगा कि मैं था या मैं हो सकता हूँ। हर एक स्थूल वस्तु भी अति प्यारी लगेगी। जैसे कोई अपनी चीज़ होती है ना। अपनी चीज़ सदा प्यारी लगती है। तो यह निशानियाँ हैं। बापदादा देख रहे हैं कि दूर रहते भी दिल से सदा नजदीक रहने वाले हैं। सारा परिवार आपको इस श्रेष्ठ भाग्यवान की नज़र से देखते हैं। अच्छा।

14.12.87... .. अन्त में हिसाब-किताब चुक्ती करने वाले अपने साथी से काम लेंगे। साथी कौन है, जानते हो ना? फिर यह एक का पद्मगुणा का हिसाब समाप्त हो जायेगा। अभी रहमदिल है, फिर हिसाब-किताब शुरू होगा। इस समय तो माफ़ भी कर देते हैं। कड़ी भूल को भी माफ़ कर और ही मददगार बन आगे उड़ाते हैं। सिर्फ दिल से महसूस करना अर्थात् माफ़ होना। जैसे दुनिया वाले माफी लेते हैं, यहाँ उस रीति से माफी नहीं लेनी होती। महसूसता की विधि ही माफी है। तो दिल से महसूस करना, किसके कहने से या समय पर चलाने के लक्ष्य से, यह माफी मंजूर नहीं होती है। कई बच्चे चतुर भी होते हैं। वातावरण देखते हैं

तो कहते - अभी तो महसूस कर लो, माफी ले लो, आगे देखेंगे। लेकिन बाप भी नालेजफुल है, जानते हैं, फिर मुस्कराते छोड़ देते हैं लेकिन माफी मंजूर नहीं करते। बिना विधि के सिद्धि तो नहीं मिलेगी ना। विधि एक कदम की हो और सिद्धि पद्म कदम जितनी होगी। लेकिन एक कदम की विधि तो यथार्थ हो ना। तो इस समय की विशेषता कितनी है वा वरदानी समय कैसे है - यह सुनाया।

31.12.89... .. विशेष आत्माओं की विशेषता वा सेवा हर कर्म में यही होगी जो उनका एक-एक कर्म विशेषता अनुभव करायेगा। उनकी वृत्ति विशेष होगी, साधारण नहीं होगी। दृष्टि में विशेषता होने के कारण अलौकिक अनुभव होंगे। सबको महसूस होगा कि इनकी दृष्टि में अलौकिकता है, रिवाजी नहीं है। उनका हर कर्म विशेष है, यह अनुभव होगा। साधारण रीति से जो काम-काज के लिए बोल होते हैं, उस बोल में भी साधारणता नहीं होगी, विशेषता होगी। चाहे साधारण कार्य कर रहे हैं - खाना बना रहे हैं, कपड़े धुलाई कर रहे हैं। कोई भी साधारण कार्य कर रहे हैं लेकिन उस कार्य में भी विशेषता अनुभव होगी। क्या विशेषता अनुभव होगी? सभी अनुभव करेंगे कि यह काम तो हाथ से कर रहे हैं लेकिन काम करते हुए भी यह शक्तिशाली स्टेज पर स्थित हैं, 'कर्मयोगी' हैं। सिर्फ कर्मकर्ता नहीं हैं लेकिन योगयुक्त होकर कर्म कर रहे हैं - यह महसूसता आयेगी। चाहे साधारण रीति से चल रहे हैं, खड़े हैं लेकिन उसकी रूहानी पर्सनैलिटी दूर से अनुभव होगी। जैसे दुनियावी पर्सनैलिटी उनको आकर्षित करती है, अटेन्शन जाता है। ऐसा रूहानी पर्सनैलिटी, प्योरिटी की पर्सनैलिटी, ज्ञानी वा योगी तू आत्मा की पर्सनैलिटी स्वतः आकर्षित करेगी। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - चाहे बच्चों के साथ सब्जी भी काटते रहे, खेल करते रहे लेकिन पर्सनैलिटी सदा आकर्षित करती रही। तो ऐसे विशेष आत्माओं की भी यही निशानी दिखाई देगी।

4.12.91... .. सुखदाता के बच्चे हो ना। सुखदाता के बच्चों के पास दुःख की लेशमात्र भी नहीं आ सकती। संकल्प में भी दुःख की महसूसता नहीं हो। स्वप्न में भी नहीं आ सकती। ऐसे सुखदायी आत्मा हो? क्या भी हो जाये दुःख नहीं हो सकता। सुख में रहने वाले और सुख देने वाले। दुःख की दुनिया को छोड़ दिया।

20.12.92... .. शक्ति-सेना हो। तो सेना की शक्ति क्या होती है? शस्त्र। और शस्त्र हैं सर्व शक्तियां। तो रिजल्ट क्या देखा? मैजारिटी सदा समय पर सर्व शक्तियों को ऑर्डर पर चला सकें-इसमें कमी दिखाई दी। समझते भी हैं लेकिन सफलता-स्वरूप में समय प्रमाण या तो शक्तिहीन बन जाते हैं या थोड़ा-सा असफलता का अनुभव कर फौरन सफलता की ओर चल पड़ते हैं। तीन प्रकार के देखे। ड एक-उसी समय दिमाग द्वारा समझते हैं कि यह ठीक नहीं है, नहीं करना चाहिए लेकिन उस समझ को शक्तिस्वरूप में बदल नहीं सकते।

ड दूसरे हैं—जो समझते भी हैं लेकिन समझते हुए भी समय वा समस्या पूरी होने के बाद सोचते हैं। वह थोड़े समय में सोचते हैं, वह पूरा होने के बाद सोचते। ड तीसरे—महसूस ही नहीं करते कि यह राँग है, सदा अपने राँग को राइट ही सिद्ध करते हैं। अर्थात् सत्यता की महसूसता-शक्ति नहीं। तो अपने को चेक करो कि मैं कौन हूँ?

**10.1.94..** ... 'अटेन्शन' शब्द को भी डबल अन्डर लाइन करा रहे हैं कि ये प्रकृति की तमोगुणी शक्ति और माया की सूक्ष्म रॉयल समझदारी की शक्ति अपना कार्य तीव्र गति से कर रही है और करती रहेगी। प्रकृति के विकराल रूप को जानना सहज है लेकिन भिन्न-भिन्न विकराल हलचल में अचल रहना इसमें और अटेन्शन चाहिये। माया के अति सूक्ष्म स्वरूप को जानने में भी धोखा खा लेते हैं। माया ऐसा रॉल रूप रखती है जो राँग को राइट अनुभव कराती है। है बिल्कुल राँग लेकिन बुद्धि को ऐसा परिवर्तित कर देती है जो रीयल समझ को, महसूसता की शक्ति को गायब कर देती है। जैसे कोई जादू मन्त्र करते हैं ना तो परवश हो जाते हैं, ऐसी महसूसता शक्ति गायब करने की रॉयल माया रीयल को समझने नहीं देती है। होगा बिल्कुल राँग लेकिन माया की छाया के वशीभूत होने के कारण राँग को राइट समझते और सिद्ध करने में माया के सुप्रीम कोर्ट का वकील बन जाते हैं। तो वकील क्या करते हैं? झूठ को सच सिद्ध करने में होशियार होते हैं। सच को सच सिद्ध करने में भी होते हैं लेकिन झूठ को सच सिद्ध करने में होशियार होते हैं, दोनों में होशियार होते हैं। इसीलिये बापदादा 'अटेन्शन' को डबल अन्डर लाइन करा रहे हैं। महसूसता शक्ति को परिवर्तित करने की सूक्ष्म स्वरूप की माया की छाया से सदा अपने को सेफ़ रखो। क्योंकि विशेष माया का स्वरूप विशेष इस स्वरूप में अपना कार्य कर रहा है। समझा? अभी क्या करेंगे? केयरफुल रहना। अगर कोई भी विशेष आत्मायें इशारा देती हैं तो अच्छी तरह से माया की इस छाया से निकल बाप की छत्रछाया में अपने को, विशेष मन-बुद्धि को इस छत्रछाया के सहारे में लाओ। क्योंकि मन में निगेटिव भाव और भावना पैदा करने का विशेष माया का प्रभाव चल रहा है और बुद्धि में यथार्थ महसूसता को समाप्त करने का विशेष माया का कार्य चल रहा है। जैसे कोई सीज़न होती है ना तो सीज़न से बचने के लिये उसी प्रमाण विशेष अटेन्शन रखा जाता है। जैसे बारिश आयेगी तो छाते, रैन कोट आदि का अटेन्शन रखेंगे, सर्दी आयेगी तो गरम कपड़े रखेंगे, अटेन्शन देंगे ना। तो मन और बुद्धि के ऊपर प्रभाव नहीं पड़े—इसके लिये पहले ही सेफ्टी के साधन विशेष अपनाओ। वो विशेष साधन है बहुत सहज, पहले भी सुनाया है—एक ही 'पॉइन्ट' शब्द। सहज है ना। लम्बा-चौड़ा तो नहीं सुनाया ना। कहते रहते हैं—हाँ, मैं आत्मा बिन्दू हूँ, ज्योति रूप हूँ, लेकिन उसमें टिकते नहीं हैं। लगाना चाहते हैं पॉइन्ट लेकिन लग जाता है क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की निशानी। पॉइन्ट लगाना सहज या आश्चर्य की निशानी वा क्वेश्चन मार्क की निशानी? क्या सहज है? बिन्दी लगाना सहज है ना। फिर क्वेश्चन और आश्चर्य में क्यों चले जाते हैं? इस विधि को

अपनाओ। सीज़न है—झूठ, सच सिद्ध होने का और झूठ, सत से भी स्पष्ट और आकर्षण वाला होगा। जैसे आजकल का फैशन है ना—झूठी चीज़ कितनी आकर्षण वाली होती है, उसके आगे सच्चे की वैलु कम हो जाती है। रीयल सिल्वर देखो और व्हाइट सिल्वर देखो—क्या सुन्दर लगता है? रीयल सिल्वर काला हो जायेगा और व्हाइट सिल्वर सदा चमकता रहेगा। तो आकर्षण व्हाइट करेगा या रीयल करेगा? तो सीज़न को पहचानो, माया के स्वरूप को पहचानो, प्रकृति के तमोगुण के भिन्न-भिन्न रंगत को पहचानो। एक है जानना, दूसरा है पहचानना। जानते ज़ादा हो, पहचानने में कभी ग़लती कर देते हो, कभी राइट कर देते हो। अभी क्या करेंगे? सेफ़ रहेंगे ना। फिर ये नहीं कहना कि हमने तो समझा नहीं, ऐसा भी होता है क्या? यह क्या-क्या नहीं चलेगा। अभी तो फिर भी बाप थोड़ा-थोड़ा रहम करता, थोड़ा-थोड़ा कदम उठाता है। लेकिन फिर 'क्या' और 'क्यों' कोई नहीं सुनेगा। ऐसा नहीं, वैसा—ये वकालत नहीं चलेगी। जज बनो, माया का वकील नहीं बनो। मज़ा बहुत आता है जब वकालत करते हैं। अनुभवी तो सब हो ना, अनुभव होता है ना। सुन-सुनकर साक्षी हो हर्षित होते रहते हैं। अच्छी तरह से समझा? पाण्डवों ने, शक्तियों ने समझा, टीचर्स ने समझा? सभी हाँ-हाँ तो कर रहे हैं। फ़ोटो निकल रहा है हाँ का।

22.12.95... .. तन तो सबके पुराने हैं ही, चाहे जवान हैं, चाहे बड़े हैं, छोटे और ही बड़ों से भी कहाँ-कहाँ कमज़ोर हैं, चाहे बीमारी बड़ी है लेकिन बीमारी की **महसूसता** कि मैं कमज़ोर हूँ, मैं बीमार हूँ – ये बीमारी को बढ़ा देती है। क्योंकि तन का प्रभाव मन पर आ गया तो डबल बीमार हो गये। तन और मन दोनों से डबल बीमार होने के कारण बार-बार सोल कान्सेस के बजाय बीमारी कान्सेस हो जाते हैं।

आजकल दवाइयाँ या अलग-अलग थेरापी निकाली है, आज फलानी थेरापी है, आज फलानी, तो ये कलियुग के सीजन का शक्तिशाली फल है। इसलिए घबराओ नहीं। लेकिन दवाई कांसेस, बीमारी कांसेस होकर नहीं खाओ। तो तन की बीमारी होनी ही है, नई बात नहीं है। इसलिए बीमारी से कभी घबराना नहीं। बीमारी आई और उसको फ्रूट थोड़ा खिला दो और विदाई दे दो।

31.12.95... .. आप जितना ज्यादा अभ्यास करेंगे, मानो अभी कल से नया वर्ष भी शुरू होगा और डायमण्ड जुबली भी शुरू होगी तो कल से अर्थात् पहला मास जो जनवरी है उस एक मास में आप फरिश्ता रूप में अभ्यास करेंगे और दूसरा मास आयेगा उसमें आपका अभ्यास और बढ़ेगा, तीसरे मास में और बढ़ेगा और जितना-जितना बढ़ता जायेगा ना उतना-उतना आप द्वारा औरों को **महसूसता** होगी। समझा? तो ये है ब्रह्मा बाप की गिफ्ट।

18.1.97... जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, मालूम भी होता कि आज इस बच्चे ने भूल की है, तो भी उस बच्चे को शिक्षा भी तरीके से, युक्ति से देता और फिर उसको बहुत प्यार भी करता, जिससे वह समझ जाते कि बाबा का प्यार है और प्यार में गलती के महसूसता की शक्ति उसमें आ जाती।

19.3.2000... बापदादा रिज़ल्ट देखने चाहते हैं। दिल साफ़, कोई भी दिल में पुराने संस्कार का, अभिमान-अपमान की महसूसता का दाग नहीं हो।

30.3.2000... ब्रह्मा बाप को देखा, कैसा भी बच्चा हो, शिक्षादाता बन शिक्षा भी देते लेकिन शिक्षा के साथ प्यार भी दिल में रखते। और प्यार कोई बाहों का नहीं, लेकिन प्यार की निशानी है – अपनी शुभ भावना से, शुभ कामना से कैसी भी माया के वश आत्मा को परिवर्तन करना। कोई भी है, कैसी भी है, घृणा भाव नहीं आवे, यह तो बदलने वाले ही नहीं हैं, यह तो हैं ही ऐसे। नहीं। अभी आवश्यकता है रहमदिल बनने की क्योंकि कई बच्चे कमजोर होने नई दुनिया की स्मृति से सर्वगुणों का आह्वान करो और तीव्रगति से आगे बढ़ो। के कारण अपनी शक्ति से कोई बड़ी समस्या से पार नहीं हो सकते, तो आप सहयोगी बनो। किससे? सिर्फ शिक्षा से नहीं, आजकल शिक्षा, सिवाए प्यार या शुभ भावना के कोई नहीं सुन सकता। यह तो फाइनल रिज़ल्ट है, शिक्षा काम नहीं करती लेकिन शिक्षा के साथ शुभ भावना, रहमदिल यह सहज काम करता है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, मालूम भी होता कि आज इस बच्चे ने भूल की है, तो भी उस बच्चे को शिक्षा भी तरीके से, युक्ति से देता और फिर उसको बहुत प्यार भी करता, जिससे वह समझ जाते कि बाबा का प्यार है और प्यार में गलती के महसूसता की शक्ति उसमें आ जाती। तो ब्रह्मा बाप को आज बहुत याद किया ना! तो फालो फादर। बाप समान बनने की हिम्मत है? मुबारक हो हिम्मत की। बापदादा आपके दिल की तालियां पहले ही सुन लेता है आप खुशी से तालियां बजाते हो लेकिन बाप को दिल की तालियां पहले पहुंचती हैं।

20.2.2001... वर्तमान वायुमण्डल प्रमाण ब्राह्मण जीवन में भी मन और बुद्धि के ऊपर व्यर्थ का प्रभाव, बुरा नहीं, बुरा खत्म हुआ लेकिन व्यर्थ और निगेटिव का प्रभाव ज़्यादा है, इसलिए यथार्थ और सत्य निर्णय करने की महसूसता शक्ति कम हो जाती है। समझ से महसूसता होती है - हाँ यह रांग है, यह ठीक नहीं है लेकिन एक है विवेक से महसूसता, दूसरा है दिल से महसूसता। अगर दिल से कोई भी बात को महसूस कर लिया तो दुनिया बदल जाए लेकिन स्वयं नहीं बदलेगा। और संस्कार, पुराने 63 जन्मों के होने के कारण नेचुरल हो गये हैं, जिसको दूसरे शब्दों में कहते हो 'यह 'गलती नहीं है लेकिन मेरी नेचर है'। तो पुराने संस्कार कुछ मिटते हैं, कुछ दब जाते हैं फिर निकल आते हैं। लेकिन सर्व समर्पण का अर्थ है - मन का भाव और भावना हर आत्मा के प्रति परिवर्तन हो जाए, जिसको बापदादा कहते हैं कैसी भी आत्मा हो,



भिन्न-भिन्न तो होगी ही, कल्प वृक्ष है, वैरायटी नहीं हो तो शोभा नहीं लेकिन हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना। अशुभ भावना को भी परिवर्तन कर शुभ भावना रखना वा शुभ भावना देना। हर आत्मा के प्रति शुभ कामना, यह अवश्य बदलेंगे। ऐसा नहीं कि यह तो बदलना ही नहीं है, उसके प्रति जज बनके जजमेंट नहीं दो, यह बदलना ही नहीं है। जब चैलेन्ज की है कि प्रकृति को भी परिवर्तन कर सतोगुणी बनाना ही है, बनाना ही है। बनेगी, नहीं बनेगी - क्वेश्चन नहीं, बनाना ही है। 'ही' शब्द को अन्डरलाइन किया है। तो क्या प्रकृति बदल सकती है, आत्मा नहीं बदल सकती? आत्मा तो प्रकृति का पुरुष है। तो प्रकृति बदले, पुरुष नहीं बदले क्यों? तो वर्तमान समय यह मन-बुद्धि-संस्कार, स्व के परिवर्तन और सर्व के परिवर्तन - यही सेवा है।

## 2. सत्यता की शक्ति

27.5.74.....जैसेकि कल्प पहले का गायन है रॉयल पुरुषार्थियों का—कितना भी स्वयं को बनाने का पुरुषार्थ करें, लेकिन सत्यता रूपी दर्पण के आगे रॉयल भी रीयल दिखाई देगा। तो आगे चलकर ऐसे सत्य बोल, सत्य वृत्ति, सत्य दृष्टि, सत्य वायुमण्डल, सत्य वातावरण और सत्य का संगठन प्रसिद्ध दिखाई देगा। अर्थात् ब्राह्मण परिवार एक शीश महल बन जायेगा। ऐसी फाइनल रिज़ल्ट ऑटोमेटिकली आऊट होगी।

27.5.74... .. देखो, आजकल की भी जो महान् आत्मायें हैं, तो भक्त लोग उनके हर बोल के पीछे 'सत्य वचन महाराज' कहते हैं। चाहे व्यर्थ हो और चाहे गपोड़ा भी लगता हो फिर भी समझते हैं कि ये महान आत्माओं के बोल हैं, तो यह महत्व रखते हैं। 'सत्य वचन महाराज' का यह यादगार कब से आरम्भ हुआ? पहले यथार्थ प्रैक्टिकल में चलता है, फिर भक्तिमार्ग में सिर्फ यादगार रह जाता है, यथार्थ नहीं होता है, तो जब भक्तिमार्ग में भी हर बोल का महत्व इतना अभी तक भी है, जो अन्तिम घड़ी तक भी देख व सुन रहे हो तो ऐसे महत्व वाले बोल जिसमें सत्यता तथा विश्व का कल्याण हो, क्या ऐसे हर बोल निकलते हैं? दिन प्रतिदिन नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो महारथी व महावीर बन रहे हैं, उन्हीं के मुख से निकलने वाले, हर बोल सत्य हो जावेंगे। अभी नहीं होते हैं, क्योंकि अभी तक व्यर्थ और साधारण बोल ज्यादा निकलते हैं।

जैसेकि कल्प पहले का गायन है रॉयल पुरुषार्थियों का—कितना भी स्वयं को बनाने का पुरुषार्थ करें, लेकिन सत्यता रूपी दर्पण के आगे रॉयल भी रीयल दिखाई देगा। तो आगे चलकर ऐसे सत्य बोल, सत्य वृत्ति, सत्य दृष्टि, सत्य वायुमण्डल, सत्य वातावरण और सत्य का संगठन प्रसिद्ध दिखाई देगा। अर्थात् ब्राह्मण परिवार एक शीश महल बन जायेगा। ऐसी फाइनल रिज़ल्ट ऑटोमेटिकली आऊट होगी।

2.9.75.....गॉड इज टुथ। सत्य को ही भगवान कहते हैं। बाप-दादा सुनाते भी सत्यनारायण की कथा है और स्थापना भी सतयुग की करते हैं। तो बाप को जो सत बाप, सत टीचर, सत गुरु का प्रैक्टिकल पार्ट बजाते हैं, तो सत बाप को क्या प्रिय लगता है? – सच्चाई- जहाँ सच्चाई है अर्थात् सत्यता है, वहाँ स्वच्छता व सफाई अवश्य ही होती है

गायन भी है सच्चे दिल पर साहब राजी। दिल तख्तनशीन सर्विसएबल अवश्य है – लेकिन सर्विसएबल की निशानी सम्बन्ध और सम्पर्क में सच्चाई और सफाई, हर संकल्प और हर बोल में दिखाई देगी। अर्थात् ऐसी दिल तख्तनशीन श्रेष्ठ आत्मा का हर संकल्प सत होगा, हर वचन सत होगा। सत अर्थात् सत्य भी और सत अर्थात् सफल भी। अर्थात् कोई भी संकल्प व बोल व्यर्थ व साधारण नहीं होगा। ऐसे सर्विसएबल जिनके हर कदम में, हर समय की निगाह में अर्थात् दृष्टि में सर्व आत्माओं के प्रति निःस्वार्थ सेवा ही सेवा

दिखाई देगी। सोते भी सेवा, जागते भी सेवा और चलते हुए भी सेवा। सिवाय सेवा के स्वप्न में भी कोई बात नहीं होगी। ऐसे सेवाधारी जो अचल और अथक होगा – ऐसा ही बाप-दादा के दिल-तख्तनशीन होता है। समझा, निशानी क्या होती है?

1.4.78... .. जैसे तीर्थस्थान पर शान्ति कुण्ड या गति-सद्गति के कुण्ड बनाते हैं ना। तो ऐसे समझें कि सर्व प्राप्ति कुण्ड यही है। न्यारापन अनुभव हो, साधारणता हो लेकिन शक्तिशाली हो और यह सत्यता महसूस हो। ऐसी स्टेज(अवस्था) लेते-लेते विश्व का राज्य भी ले लेंगे। अभी तो सिर्फ प्रोग्राम का निमन्त्रण देते हैं फिर जैसे जड़ चित्रों को आंखों और सिर पर उठाते हैं वैसे आप सबको उस नज़र से कहाँ बिठावें, क्या करें कुछ सूझेगा नहीं। महिमा में क्या बोलें क्या न बोलें यह सूझेगा नहीं। संगठन करना अच्छा है, संगठन से भी उमंग-उल्लास बढ़ता है।

28.12.78... . आत्मिक सुख वा आत्मिक शान्ति की अनुभूति रूहानियत की अनुभूति के भिन्न भिन्न शस्त्र नम्बरवार समय प्रमाण कार्य में लगाया है लेकिन लास्ट बम अर्थात् परमात्म बम है बाप की प्रत्यक्षता का। जो देखे, जो सम्पर्क में आ करके सुने उन्हीं द्वारा यह आवाज़ निकले कि बाप आ गये हैं – डायरेक्ट आलमाइटी अथार्टी का कर्त्तव्य चल रहा है। यह अन्तिम बाम्ब है जिससे चारों ओर से आवाज़ निकलेगा - अभी यह कार्य रहा हुआ है। यह कैसे होगा और कब होगा? **परमात्म प्रत्यक्षता का आधार सत्यता है।** सत्यता ही प्रत्यक्षता है - एक स्वयं के स्थिति की सत्यता दूसरी सेवा की सत्यता। सत्यता का आधार है स्वच्छता और निर्भयता। इन दोनों धारणाओं के आधार से सत्यता द्वारा ही प्रत्यक्षता होगी। किसी भी प्रकार की अस्वच्छता अर्थात् ज़रा भी सच्चाई सफाई की कमी है तो कर्त्तव्य की सिद्धि, प्रत्यक्षता हो नहीं सकती। **सच्चाई और सफाई- सच्चाई अर्थात् जो मैं हूँ जैसा हूँ सदा उस ओरीज़नल सत्य स्वरूप में स्थित होना।** अर्थात् आत्मा के ओरीज़नल सतोप्रधान स्वरूप में स्थित रहना है रजो और तमो स्टेज सच्चाई की ओरीज़नल स्टेज नहीं। यह संगदोष की स्टेज है। किसका संग? माया अथवा रावण का। आत्मा की सत्यता सतोप्रधानता है। तो पहली यह सच्चाई है। दूसरी बात- बोल और कर्म में भी सच्चाई अर्थात् सत्यता की स्टेज सतोप्रधानता है वा अभी रजो और तमो मिक्स हैं! सत्यता नेचरल संस्कार रूप में हैं वा पुरुषार्थ से सत्यता की स्टेज को लाना पड़ता है! जैसे बाप को टुथ अर्थात् सत्य कहते हैं वैसे ही आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता भी सत्य अर्थात् टुथ है। तो सत्यता सतोप्रधानता को कहा जाता है, ऐसी सच्चाई है! सफाई अर्थात् स्वच्छता। ज़रा भी संकल्प द्वारा भी अशुद्धि अर्थात् बुराई को वा अवगुण को टच नहीं करें – अगर बुद्धि वा संकल्प द्वारा भी स्वीकार किया अर्थात् धारण किया तो सम्पूर्ण सफाई नहीं कहेंगे। जैसे स्थूल में भी कोई प्रकार की गन्दगी को देखना भी अच्छा नहीं लगता, देखने से किनारा कर देंगे, ऐसे बुराई को सोचना

भी बुराई को टच करना हुआ। सुनना और बोलना वा करना यह तो स्वयं ही बुराई को धारण करते हैं। सफाई अर्थात् स्वच्छता, संकल्प मात्र भी अशुद्धि न हो। इसको कहा जाता है सच्चाई और सफाई अर्थात् स्वच्छता। दूसरी बात है निर्भयता। निर्भयता की परिभाषा भी बड़ी गुह्य है! पहली बात- अपने पुराने तमोगुणी संस्कार पर विजयी बनने की निर्भयता। क्या करूँ, होता नहीं, बहुत प्रबल है, यह भी निर्भयता नहीं। अन्य आत्माओं के सम्पर्क और सम्बन्ध में स्वयं के संस्कार मिलाना और अन्य के संस्कार परिवर्तन करना इसमें भी निर्भयता हो। पता नहीं चल सकेंगे, निभा सकेंगे मेरा मानेंगे वा नहीं मानेंगे इसमें भी अगर भयता है तो इसको सम्पूर्ण निर्भयता नहीं कहेंगे। तीसरी बात- विश्व की सेवा में अर्थात् सेवा के क्षेत्र में वायुमण्डल वा अन्य आत्माओं के सिद्धान्तों की परिपक्वता को देखते हुए संकल्प में भी उन्हीं की परिपक्वता वा वातावरण वायुमण्डल का प्रभाव पड़ना यह भी भयता है। यह बिगड़ जायेंगे, हंगामा हो जायेगा - हलचल हो जायेगी इससे भी निर्भयता हो। जब आत्मिक ज्ञानी आप तना द्वारा निकली हुई शाखाएँ वह भी अपने अल्पज्ञ मान्यता में निर्भयता का प्रभाव डालती हैं, अपनी अल्प मत को प्रत्यक्ष करने में निर्भय होती हैं, झूठ को सच करके सिद्ध करने में अटल ओर अचल रहती हैं, तो सर्वज्ञ बाप के श्रेष्ठ मत वा-अनादि आदि सत्य को प्रत्यक्ष करने में संकोच करना भी भय है। शाखाएँ हिलने वाली होती हैं, तना अचल होता है तो शाखाएँ निर्भय हो और तना में संकोच के भय की हलचल हो इसको क्या कहेंगे! इसलिए जो प्रत्यक्षता का आधार स्वच्छता और निर्भयता है उसको चेक करो। इसी को ही सत्यता कहा जाता है।

जो प्रत्यक्षता का आधार स्वच्छता और निर्भयता है उसको चेक करो। इसी को ही सत्यता कहा जाता है। इस सत्यता के आधार पर ही प्रत्यक्षता है। इसलिए अन्तिम पावरफुल बाम्ब परमात्म प्रत्यक्षता अब शुरू नहीं की है। अब तक की रिजल्ट में राजयोगी आत्माएँ श्रेष्ठ हैं, राजयोग श्रेष्ठ है, कर्त्तव्य श्रेष्ठ है, परिवर्तन श्रेष्ठ है। यह प्रत्यक्ष हुआ है लेकिन सिखाने वाला डायरेक्ट आलमाइटी है - ज्ञान सूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है यह अभी गुप्त है - परमात्म बाम्ब की रिजल्ट क्या होगी!

हर धर्म की आत्मा द्वारा एक ही बोल निकलेगा कि हमारा बाप हिन्दुओं वा मुसलमानों का नहीं- सबका बाप। इसको कहा जाता है परमात्म बाम्ब द्वारा अन्तिम प्रत्यक्षता। अब रिजल्ट सुनी कि क्या कर रहे हैं और क्या करना है! अब के वर्ष परमात्म बाम्ब फैको। बाप को स्वच्छता और निर्भयता के आधार से सत्यता द्वारा प्रत्यक्षता करो।

1.1.79... अभी मैजारटी आत्माएं प्रकृति के अल्पकाल के साधनों से, वा आत्मिक शान्ति प्राप्त करने के बने हुए अल्पज्ञ स्थानों से अर्थात् परमात्म मिलन मनाने के ठेकेदारों से अब थक गए हैं, निराश हो गए हैं - समझते हैं सत्य कुछ और है - सत्यता की मंजिल की खोज में हैं - प्राप्ति के प्यासे हैं। ऐसी प्यासी

आत्माओं को आत्मिक परिचय, परमात्म परिचय की यथार्थ बूँद भी तृप्त आत्मा बना देगी – इसलिए ज्ञान कलश धारण कर प्यासों की प्यास बुझाओ। अमृत कलश सदा साथ रहे। चलते फिरते सदा अमृत द्वारा अमर बनाते चलो। तब ही ब्रह्मा बाप के साथ-साथ मुक्ति के गेट का उद्घाटन कर सकेंगे!

1.1.79... .. स्टेज पर आने वाले के ऊपर सभी की नज़र आटोमेटिकली जाती है – अभी पर्दे के अन्दर है, स्वयं के पुरुषार्थ का पर्दा है- अभी इसी पर्दे से निकल सेवा की स्टेज पर आओ तो विश्व की आत्माएं – ऐसे हीरो पार्टधारियों को देख नज़र से निहाल हो जावेंगे। **ऐसे प्लान बनाओ ऐसे ग्रुप के मुख से सत्यता की अथार्टी स्वतः ही बापकी प्रत्यक्षता करेगी** – अभी तो बेबी बाम्ब फेंक रहे हैं – अभी परमात्म बाम्ब द्वारा धरनी को परिवर्तन करो। इसका सहज साधन है सदा मुख पर वा संकल्प में **बापदादा – बापदादा** की निरन्तर माला के समान स्मृति हो। सबकी एक ही धुन हो बाप-दादा। संकल्प, कर्म और वाणी में यही अखण्ड धुन हो – जैसे वह अखण्ड धुनी जगाते हैं वैसे यह अखण्ड धुन हो। यही अजपाजाप हो – जब यह अजपाजाप हो जावेगा तो और सब बातें स्वतः ही समाप्त हो जावेंगी। क्योंकि इसमें ही बिजी रहेंगे। फुर्सत ही नहीं होती तो व्यर्थ स्वतः ही समाप्त हो जावेगा। तो अब सुना कि इस वर्ष में क्या करना है – आज के संकल्प से समय को जानना – सुई तो ब्रह्मा ही हैं ना। तो सुई कहाँ तक पहुँची हैं! सूक्ष्मवतन से आगे भी बढ़ेगी ना!

14.1.79... .. आज बापदादा प्यूरिटी की सबजेक्ट में मार्क्स दे रहे थे – मार्क्स देने में विशेषता क्या देखी – पहली विशेषता मन्सा की पवित्रता – जब से जन्म लिया तब से अभी तक संकल्प में भी अपवित्रता के संस्कार इमर्ज न हों। अपवित्रता अर्थात् विष को छोड़ चुके। ब्राह्मण बनना अर्थात् अपवित्रता का त्याग। अपवित्रता का त्याग और पवित्रता का श्रेष्ठ भाग्य। ब्राह्मण जीवन में संस्कार ही परिवर्तन हो जाते हैं। मन्सा में सदा श्रेष्ठ स्मृति – आत्मिक स्वरूप अर्थात् भाई-भाई की रहती है – इस स्मृति के आधार पर मन्सा प्यूरिटी के मार्क्स मिलते हैं। **वाचा में सदा सत्यता और मधुरता – विशेष इस आधार पर वाणी की मार्क्स मिलती हैं।** कर्मणा में सदा नम्रता और सन्तुष्टता इसका प्रत्यक्ष फल सदा हर्षितमुखता होगी, इस विशेषता के आधार पर कर्मणा में मार्क्स मिलती हैं। अब तीनों को सामने रखते हुए अपने आपको चैक करो कि हमारा नम्बर कौनसा होगा। विदेशी आत्माओं का नम्बर कौनसा है?

23.1.79... .. अनेक मत वाले सिर्फ़ एक बात को मान जाएं कि हम सबका बाप एक है और वही अब कार्य कर रहे हैं, कम से कम यह आवाज़ सब तरफ़ पहुँचे कि हम सब एक की सन्तान एक हैं और एक ही यथार्थ है। चाहे धारण करे न करे लेकिन मान लें, चलना तो पीछे की बात है। जैसे कई आत्मायें सम्पर्क में

आती तो समझती हैं यह अच्छा काम कर रहे हैं, इतना सब मान लें तो विजय का झण्डा लहरा जायेगा। इसी संकल्प से मुक्तिधाम में चली जायें तो भी ठीक है। इसी संकल्प से मुक्तिधाम जायेंगे तो जब अपना-अपना पार्ट बजाने आयेंगे तो पहले यही संस्कार होंगे कि गाड इज वन। यह गोल्डन एज की स्मृति है। अनेकों में फँसना यह आइरन एज है। अथार्टी से और सत्यता से बोलो, संकोच से नहीं। सत्यता प्रत्यक्षता का आधार है। प्रत्यक्षता करने के लिए पहले स्वयं को प्रत्यक्ष करो, निर्भय बनो।

5.2.79..... जैसे बाम्ब फटता है तो क्या करता है – सबको अग्नि में जला देता है तो यह परमात्म-बाम्ब अर्थात् स्नेह का बाम्ब, सम्बन्ध जोड़ने का बाम्ब – दिल के आवाज़ से महिमा करने का बाम्ब – सभी को लगन में मगन की आग में सभी को हिला दे। जब बाम्ब फटता है तो सब हिल जाते हैं ना। तो सबकी बुद्धि को हिलावे यह किसकी महिमा है! यह किसकी अथार्टी से बोल रहे हैं, यह क्या और किसका सन्देश दे रहे हैं – अथार्टी भी हो, मधुरता भी हो – शब्दों की मधुरता हो लेकिन अन्दर समाई हुई अथार्टी हो – शब्द भी रहमदिल की भावना के हों – स्पष्ट भी करते रहें लेकिन स्पष्ट करते हुए बाप की महिमा करते हुए सम्बन्ध भी जोड़ते जाएं। हम यह क्यों कहते, इससे क्या प्राप्ति होगा, हम लोगों का अनुभव क्या है। एक घड़ी की भी प्राप्ति क्या है। ऐसे बीच-बीच में निज़ी अनुभव का आवाज़ लगे – सिर्फ भाषण नहीं लगे – लगन में मगन मूर्त अनुभव हो – यह नवीनता है – लोग कहते हैं लेकिन स्वरूप नहीं बनते – आपका बोल और स्वरूप दोनों साथसाथ हों – स्पष्ट भी हों, स्नेह भी हो, नम्रता भी, मधुरता भी और महानता भी हो, सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो, इसी रूप से बाप को प्रत्यक्ष करना है। निर्भय हो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों – दोनों बातों का बैलेन्स हो – जहाँ बैलेन्स होता है वहाँ कमाल दिखाई देती है और वह शब्द कड़े नहीं, मीठे लगते हैं तो अथार्टी और नम्रता दोनों के बैलेन्स की कमाल दिखाओ। इसको कहा जाता है बाप की प्रत्यक्षता का साधन। जैसे झूठे शास्त्रों की अथार्टी वाले भी कितनी अथार्टी से बोलते हैं। जो बिल्कुल असत्य बात उसको कैसे सिद्ध कर बताते हैं। न सिर्फ सिद्ध करते हैं लेकिन मनवाते भी हैं, सतवचन महाराज कहलवाते भी हैं, जब वह झूठ की अथार्टी वाले भी इतना प्रभाव डाल सकते यह तो अनुभव के बोल हैं—प्राप्ति स्वरूप के बोले हैं – बाप से सम्बन्ध है उसकी बातें हैं, तो क्यों नहीं कहलवायेंगे वा मनवायेंगे। तो अब समझा क्या करना है –

27.3.81.....तो बाप पसन्द बनने के लिए – “सच्ची दिल पर साहेब राजी।” जो भी हो सच्चाई, सत्यता बाप को जीत लेती है। और मन पसन्द बनने के लिए क्या चाहिए? मनमत पर नहीं चलना। मनपसन्द औरचीज़ हैं। मन पसन्द बनने के लिए बहुत सहज साधन है – श्रीमत की लकीर के अन्दर रहो। संकल्प

करो तो भी श्रीमत की लकीर के अन्दर। बोलो, कर्म करो, जो कुछ भी करो लकीर के अन्दर। तो सदा स्वयं से भी सन्तुष्ट और सर्व को भी सन्तुष्ट कर सकेंगे। संकल्प रूपी नाखून भी बाहर न हो।

5.4.81... .. अगर मानो मैजारिटी किसी बात के प्रति कोई इशारा देते हैं लेकिन स्वयं नहीं समझते कि मैं राँग हूँ, फिर भी जब लोक-संग्रह के प्रति ऊपर से डायरेक्शन मिले कि यह अटेन्शन रखना चाहिए तो फिर उस समय अपनी नहीं चलानी चाहिए। क्योंकि अगर सत्यता की शक्ति है तो सत्य को कहा ही जाता है – “ सत्यता महानता है।” और महान वही है जो स्वयं झुकता है। अगर मानो कल्याण के प्रति झुकना भी पड़ता है तो वह झुकना नहीं है, लेकिन महानता है। अनेकों की सेवा के अर्थ महान को झुकना ही पड़ता है। तो यह विशेष अटेन्शन रखो। इसी में ही अलबेलापन आ जाता है। मैं ठीक हूँ, ठीक तो हो लेकिन जो ठीक रह सकता है वह स्वयं को मोल्ड भी कर सकता है। अगर मानो दूसरे को मेरी कोई चलन से कोई भी संकल्प उत्पन्न होता है तो स्वयं को मोल्ड करने में नुकसान ही क्या है? फिर भी सबकी आशीर्वाद तो मिल जायेगी। यह आशीर्वाद भी तो फायदा हुआ ना। क्यों-क्या में नहीं जाओ। यह क्यों, यह ऐसे होगा वैसे होगा। इसको फुलस्टाप लगाओ। अब यह विशेषता चारों ओर लाइट हाउस के मुआफिक फैलाओ। इसको कहा जाता है – एक ने कहा, दूसरे ने माना अर्थात् अनेकों को सुख देने के निमित्त। इसमें यह नहीं सोचो कि मैं कोई नीचे हो गया। नहीं। ग़लती की तभी मैं परिवर्तन कर रहा हूँ, यह नहीं सोचो लेकिन सेवा के लिए परिवर्तन कर रहा ह। सेवा के लिए स्थूल में भी कुछ मेहनत करनी पड़ती है ना! तो श्रेष्ठ, महान आत्मा बनने के लिए थोड़ा बहुत परिवर्तन भी क्या तो हर्जा ही क्या है? इसमें हे! अर्जुन, बनो। इससे वातावरण बनेगा। एक से दो, दो से तीन अगर कोई ग़लती है और मान ली तो यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन ग़लती नहीं है और लोक-संग्रह अर्थ करना पड़ता है। यह है महानता। इसमें अगर कोई समझता भी है कि इसने यह किया अर्थात् नीचे हो गया, तो दूसरों के समझने से कुछ नहीं होता, बाप की लिस्ट में तो आगे नम्बर है ना। इसको दबाना नहीं कहा जाता है। यह भी ब्राह्मणों की भाषा होती है ना – कहाँ तक दबेंगे, कहाँ तक मरेंगे, कब तक सहन करेंगे, अगर यहाँ दबेंगे भी तो अनेक आप के पाँव दबायेंगे। यह दबाना नहीं है लेकिन अनेकों के लिए पूज्य बनना है। महान बनना है।

11.4.81... .. सत्यता की शक्ति से विश्व परिवर्तन

आज की यह सभा कौन सी सभा है? यह है विधि-विधाताओं की सभा। सिद्धि-दाताओं की सभा। अपने को ऐसे विधि-विधाता वा सिद्धि दाता समझते हो? इस सभा की विशेषताओं को जानते हो? विधि-विधाताओं की विशेष शक्ति है जिस द्वारा सेकेण्ड में सर्व को विधि द्वारा सिद्धि स्वरूप बना सकते। उसको जानते हो? वह है – “सत्यता अर्थात् रियल्टी”। सत्यता ही महानता है। सत्यता की ही मान्यता है। वह सत्यता अर्थात् महानता स्पष्ट रूप से जानते हो? विशेष विधि ही सत्यता के आधार पर है। पहला फाउन्डे-

शन अपनी नालेज अर्थात् अपने स्वरूप में सत्यता देखो। सत्य स्वरूप क्या है और मानते क्या थे? तो पहला सत्य हुआ आत्मा स्वरूप का। जब तक यह सत्य नहीं जाना तो महानता थी? महान थे वा महान के पुजारी थे? जब अपने आपको जाना तो क्या बन गये? महान आत्मा बन गये। सत्यता की अथार्टी से औरों को भी कहते हो – हम आत्मा हैं। इसी प्रकार से सत्य बाप का सत्य परिचय मिलने से अथार्टी से कहते हो – परमात्मा हमारा बाप है। वर्से के अधिकार की शक्ति से कहते हो बाप हमारा और हम बाप के। ऐसे अपनी रचना के वा सृष्टि चक्र के सत्य परिचय को अथार्टी से सुनते हो – अब यह सृष्टि चक्र समाप्त हो फिर से रिपीट होना है। अब संगम का युग है, न कि कलियुग। चाहे सारी विश्व के विद्वान पण्डित और अनक आत्मायें शास्त्रों के प्रमाण कलियुग ही मानत लेकिन आप 5 पाण्डव अर्थात् कोटों में कोई थोड़ी सी आत्मायें चैलेन्ज करते हो कि अभी कलियुग नहीं, संगमयुग है, यह किस अथार्टी से? सत्यता की महानता के कारण। विश्व में मैसेज देते हो कि आओ और आकर समझो। सोये हुए कुम्भकरणों को जगाकर कहते हो – समय आ गया। यही सत् बाप, सत् शिक्षक, सत् गुरु द्वारा सत्यता की शक्ति मिली है। अनुभव करते हो – यही सत्यता है।

सत् के दो अर्थ है। एक सत् अर्थात् सत्य दूसरा सत् अर्थात् अविनाशी। तो बाप सत्य भी है और अविनाशी भी है इसलिए बाप द्वारा जो परिचय मिला वह सब सत् अर्थात् सत्य और अविनाशी है। भक्त लोग भी बाप की महिमा गाते हैं – “सत्यम् शिवम् सुन्द-रम्”। सत्यम् भी मानते और अविनाशी भी मानते। गाड इज टुथ भी मानते। तो बाप द्वारा सत्यता की अथार्टी प्राप्त हो गई है। यह भी वर्सा मिला है ना! सत्यता की अथार्टी प्राप्त हो गई है। यह भी वर्सा मिला हैना। सत्यता की अथार्टी वाले का गायन भी सुना है, उसकी निशानी क्या होगी? सिन्धी में कहावत है – “सच ते बिठो नच”। और भी कहावत है – “सत्य की नाव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती”। आपको भी हिलाने की कोशिश तो बहुत करते हैं ना! यह झूठ है, कल्पना है। लेकिन सच तो बिठो नच। आप सत्यता की महानता के नशे में सदा खुशी के झूल में झूलते रहते। खुशी में नाचते रहते हो ना। जितना वह हिलाने की कोशिश करते उतना ही क्या होता? आपके झूले को हिलाने से और ही ज्यादा झूलते हो। आपको नहीं हिलाते लेकिन झूले को हिलाते। और ही उसको धन्यवाद दो कि हम बाप के साथ झूलें, आप झुलाओ। यह हिलाना नहीं लेकिन झुलाना है। ऐसे अनुभव करते हो। हिलते नहीं हो लेकिन झूलते हो ना! सत्यता की शक्ति सारी प्रकृति को ही सतोप्रधान बना देती है। युग को सतयुगी बना देती है। सर्व आत्माओं के सद्गति की तकदीर बना देती है। हर आत्मा आपके सत्यता की शक्ति द्वारा अपने-अपने यथा शक्ति अपने धर्म में, अपने समय पर गति के बाद सद्गति में ही अवतरित होंगे। क्योंकि विधि-विधाताओं द्वारा संगमयुग पर अन्त तक भी बाप को याद करने की विधि का सन्देश जरूर मिलना है। फिर किसको वाणी द्वारा, किसको चित्रों द्वारा, किसको समाचारों द्वारा, किसको आप सबके पावरफुल वायब्रेशन द्वारा, किसको अन्तिम विनाश लीला की हलचल द्वारा, वैराग वृत्ति के वायुमण्डल द्वारा। यह सब साइन्स के साधन आपके इस सन्देश देने के कार्य में सहयोगी होंगे।

संगम पर ही प्रकृति सहयोगी बनने का अपना पार्ट आरम्भ कर देगी। सब तरफ से प्रकृति-पति का और मास्टर प्रकृतिपति का आयजान करेगी। सब तरफ से आफरीन और आफर होगी। फिर क्या करेंगे? यह जो



भक्ति में गायन है, हर प्रकृति के तत्व को देवता के रूप में दिखाया है। देवता अर्थात् देने वाला। तो अन्त में यह सब प्रकृति के तत्व आप सबको सहयोग देने वाले दाता बन जायेंगे। यह सागर भी आपको सहयोग देंगे। चारों ओर की सामग्री भारत की धरनी पर लाने में सहयोगी होंगे। इसलिए कहते हैं सागर ने रतनों की थालियाँ दी। ऐसे ही धरनी की हलचल सारी वैल्युबल वस्तु आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए एक स्थान भारत में इकट्ठी कर देने में सहयोगी होगी। इन्द्र देवता कहते हैं ना! तो बरसात भी धरनी की सफाई के सहयोग में हाजिर हो जायेगी। इतना सारा किचड़ा आप तो नहीं साफ करेंगे। यह सारा प्रकृति का सहयोग मिलेगा। कुछ वायु उड़ायेगी, कुछ बरसात साथ ले जायेगी। अग्नि को तो जानते ही हो। तो अन्त में यह सब तत्व आप श्रेष्ठ आत्माओं को सहयोग देने वाले देवता बनेंगे। और सर्व आत्मायें अनुभव करेंगी। फिर भक्ति में जो अब सहयोग देने के कर्त्तव्य के कारण देवता बने उस कर्त्तव्य का अर्थ भूल, देवताओं का मनुष्य रूप दे देते हैं। जैसे सूर्य है तत्व लेकिन मनुष्य रूप दे दिया है। तो समझा विधि-विधाता बन क्या कार्य करना है। उन्हीं की है विधान सभा और यह है विधि-विधाताओं की सभा। वहाँ सभा के मेम्बर होते हैं। यहाँ अधिकारी महान आत्मायें होती हैं। तो समझा सत्यता की महानता कितनी है! सत्यता पारस के समान है। जैसे पारस लोहे को भी पारस बना देता है। आपके सत्यता की शक्ति आत्मा को, प्रकृति को, समय को, सर्व सामग्री को, सबको सतोप्रधान बना देती है। तमोगुण का नाम निशान समाप्त कर देती है। सत्यता की शक्ति आपके नाम को, रूप को सत् अर्थात् अविनाशी बना देती है। आधाकल्प चैतन्य रूप, आधा कल्प चित्र रूप। आधा कल्प प्रजा आपको नाम गायेगी, आधा कल्प भक्त आपका नाम गायेगे। आपका बोल सत् वचन के रूप में गाया जाता है। आज तक भी एक-आधा वचन लेने से अपने को महान अनुभव करते। आपकी सत्यता की शक्ति से आपका देश भी अविनाशी बन जाता है। वेष भी अविनाशी बन जाता है। आधाकल्प देवताई वेष में रहेंगे, आधाकल्प देवताई वेष का यादगार चलेगा। अब अन्त तक भी भक्त लोग आपके चित्रों को भी ड्रेस से सजाते रहते हैं। कर्त्तव्य और चरित्र – यह सब सत् हो गये। कर्त्तव्य का यादगार भागवत बना दिया है। चरित्रों की अनेक कहानियाँ बना दी हैं। यह सब सत्य हो गये। किस कारण? सत्यता की शक्ति कारण। आपकी दिनचर्या भी सत् हो गई है। भोजन खाना, अमृत पीना सब सत् हो गया है। आपके चित्रों को भी उठाते हैं, बिठाते हैं, परिक्रमा लगवाते हैं, भोग लगाते हैं, अमृत रखते और पीते हैं। हर कर्त्तव्य वा हर कर्म का यादगार बन गया है। इतनी शक्ति को जानते हो? इतनी अथार्टी से सबको चैलेन्ज करते हो वा सेवा करते हो? नये-नये आये हैं ना! ऐसे तो नहीं समझते हम थोड़े हैं, लेकिन आलमाइटी अथार्टी आपका साथी है। सत्यता की शक्ति वाले हो। पाँच नहीं हो लेकिन विश्व का रचयिता आपका साथी है। इसी फलक से बोलो। मानेंगे, नहीं मानेंगे, कहें, कैसे कहें। यह संकल्प तो नहीं आते जहाँ सत्यता है, सत् बाप है वहाँ सदा विजय है। निश्चय के आधार पर अनुभवी मूर्त्त बन बोलो तो सफलता सदा आपके साथ है।

1.6.83... .. जैसे एक शास्त्रों की अथार्टी वाले, थोड़ा बहुत त्याग कर पवित्र बनने की अथार्टी वाले, सिर्फ यह एक अथार्टी है, वह भी सत्यता की अथार्टी नहीं, भल महान आत्मायें हैं लेकिन परमात्मा बाप के सम्बन्ध में यथार्थ नालेज की अथार्टी नहीं – ऐसे एक अथार्टी वाले भी विश्व में सर्व आत्माओं को अपने

तरफ आकर्षित कर झूठ को सत्य सिद्ध कर चलते आ रहे हैं। कितने समय से अपनी अथार्टी दिखाते आ रहे हैं। कितनी फलक से, अल्पकाल के प्राप्ति की झलक से अपना प्रभाव डालते हैं। तो जो सर्व अथार्टी वाली श्रेष्ठ आत्मायें हैं उन्हीं को क्या करना है? बाकी क्या रहा हुआ है, जानते हो? समाप्ति के लिए कहाँ तक समय का अन्दाज लगा रहे हो? 84 तक वा 2000 तक? कहाँ तक अन्दाज लगा रहे हो? दो हजार पूरे होने हैं वा उसके पहले होना है? अपनी तैयारी के हिसाब से क्या समझते हो? कौन सी बात अभी रही हुई है? नई दुनिया के लिए धरनी तो बना रहे हो। लेकिन नई दुनिया का आधार – यह नई नालेज है। पहली अथार्टी तो नालेज की है ना! बाप की महिमा में भी पहली महिमा क्या आती है? ‘ज्ञान का सागर’ कहते हो ना। तो जो पहली महिमा है ज्ञान, उस नये ज्ञान को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष किया है? जब तक “यह नया ज्ञान है” – यह प्रत्यक्ष नहीं हुआ है तो ज्ञानदाता कैसे प्रत्यक्ष हो। पहले ज्ञान आता है फिर दाता आता है। तो ज्ञानदाता ऊँचे ते ऊँचा है। या एक ही वह ज्ञानदाता है, यह सिद्ध कैसे होगा? इस नये ज्ञान से ही सिद्ध होगा। आत्मा क्या कहती और परमात्मा क्या कहता है, यह अन्तर जब तक मनुष्यों की बुद्धि में न आये तब तक जो भी तिनके के सहारे पकड़े हुए हैं वह कैसे छोड़ेंगे? और एक का सहारा कैसे लेंगे। अभी तो छोटे-छोटे तिनकों के सहारे पर चल रहे हैं, वो ही अपना आधार समझ रहे हैं। जब तक उन्हीं को ज्ञान द्वारा ज्ञानदाता का सहारा अनुभव नहीं हो तब तक इस हृद के बन्धनों से मुक्त हो नहीं सकते। अभी तक धरनी बनाने की, वायुमण्डल परिवर्तन करने की सेवा हुई है। अच्छा कार्य है, परिवार का प्यार है, यह प्यार का गुण वायुमण्डल को परिवर्तन करने के निमित्त बना। धरनी तो बन गई और बनती जायेगी। लेकिन जो फाउण्डेशन है, नवीनता है, बीज है, वह है ‘नया ज्ञान’। निःस्वार्थ प्यार है, रूहानी प्यार है यह तो अनुभव करते हैं लेकिन अभी प्यार के साथ-साथ ‘ज्ञान की अथार्टी’ वाली आत्मायें हैं, सत्य ज्ञान की अथार्टी है, यह प्रत्यक्षता अभी रही हुई है। जो भी आते हैं वो समझें कि यह नया ज्ञान, नई बात है। जो कोई ने नहीं सुनाई वह यहाँ सुनी। यह वर्णन करें कि यह देने वाला अथार्टी है। पवित्रता है, शान्ति है, प्यार है, स्वच्छता है यह सब बातें तो फाउण्डेशन हैं, जिस फाउण्डेशन के आधार पर धरनी परिवर्तन हुई। यह भी 4 स्तम्भ है। पहले जो किसी की भी बुद्धि इस तरफ टिकती नहीं थी सो अभी इन 4 स्तम्भों के आधार द्वारा बुद्धि की आकर्षण होती है। यह परिवर्तन तो हुआ। लेकिन अभी जो मुख्य बात है – नया ज्ञान, उसका आवाज बुलन्द हो। आज तक जिन बातों की सभी ने “हाँ” की, उन बातों के लिए ब्र.कु. की आलमाइटी अथार्टी “ना” सिद्ध करके बताती हैं। जो वे ना कहते, आप सिद्ध करके बताते हो और जो आप ‘हाँ’ कहते उसे वो ‘ना’ कहते। तो हाँ और ना का रात दिन का अन्तर है ना। तो इस महान अन्तर को सिद्ध करने वाली महान आत्मायें हैं, यह नाम अब प्रत्यक्ष करो तब जयजयकार होगी।

26.12.84... .. ईश्वरीय सत्ता सदा अचल अविनाशी है। ईश्वरीय सत्ता को सत्यता की शक्ति कहा जाता है क्योंकि देने वाला सत बाप, सत शिक्षक, सतगुरू है। इसलिए सत्यता की शक्ति सदा श्रेष्ठ है। सत्यता की शक्ति द्वारा सतयुग, सचखण्ड स्थापन कर रहे हो। सत अर्थात् अविनाशी। अविनाशी और सच को भी सत कहा जाता है। सच्चा भी है अविनाशी भी है। तो सत्यता की शक्ति द्वारा अविनाशी वर्सा, अविनाशी पद प्राप्त करने वाली पढ़ाई, अविनाशी वरदान प्राप्त किये हैं? इस प्राप्ति से कोई भी मिटा नहीं सकता। सत्यता

की शक्ति से सारी विश्व आप सत्यता की शक्ति वालों का भक्तिमार्ग के आदि से अन्त तक अविनाशी गायन और पूजन करती आती है। अर्थात् गायन पूजन भी अविनाशी सत हो जाता है। सत अर्थात् सत्य। तो सबसे पहले क्या जाना? अपने आपको 'सत आत्मा' जाना। सत बाप के सत्य परिचय को जाना। इस सत्य पहचान से सत्य ज्ञान से सत्यता की शक्ति स्वतः ही सत्य हो जाती। सत्यता की शक्ति द्वारा असत्य रूपी अंधकार, अज्ञान रूपी अंधकार स्वतः ही समाप्त हो जाता है। अज्ञान सदा असत्य होता है। ज्ञान सत है, सत्य है। इसलिए भक्तों ने बाप की महिमा में भी कहा है "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्"। सत्यता की शक्ति सहज ही प्रकृति जीत, मायाजीत बना देती है। अभी अपने आप से पूछो – सत् बाप के बच्चे हैं तो सत्यता की शक्ति कहाँ तक धारणा की है? सत्यता के शक्ति की निशानी है – वह सदा निर्भय होगा। जैसे मुरली में सुना है – "सच तो बिठो नच" अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा बेफिकर निश्चिन्त होने के कारण, निर्भय होने के कारण खुशी में नाचता रहेगा। जहाँ भय है, चिंता है वहाँ खुशी में नाचना नहीं। अपनी कमजोरियों की भी चिंता होती है। अपने संस्कार वा संकल्प कमजोर हैं तो सत्य मार्ग होने के कारण मन में अपनी कमजोरी का चिंतन चलता ज़रूर है। कमजोरी मन की स्थिति को हलचल में ज़रूर लाती है। चाहे कितना भी अपने को छिपावे वा आर्टीफिशल अल्पकाल के समय प्रमाण, परिस्थिति प्रमाण बाहर से मुस्कराहट भी दिखावे लेकिन सत्यता की शक्ति स्वयं को महसूसता अवश्य कराती है। बाप से और अपने आप से छिप नहीं सकता। दूसरों से छिप सकता है। चाहे अलबेलेपन के कारण अपने आप को भी कभी-कभी महसूस होते हुए भी चला लेवे फिर भी सत्यता की शक्ति मन में उलझन के रूप में, उदासी के रूप में, व्यर्थ संकल्प के रूप में आती ज़रूर है। क्योंकि सत्यता के आगे असत्य टिक नहीं सकता।

21.2.85... .. सत्यता की शक्ति और शीतलता की शक्ति का भी बहुत मनोरम रीति से महत्त्व समझाया गया है। इनको पढ़ने से आज के दूषित वातावरण में दूसरे की कमियों को न देख, स्वयं में इन गुणों को धारण करने के लिए मन सहज ही और स्वतः तैयार हो जाता है।

सत्यता और शीतलता दोनों शक्तियाँ समान और साथ चाहिए। क्योंकि आज के विश्व का हर एक मानव किसी न किसी अग्नि में जल रहा है। ऐसी अग्नि में जलती हुई आत्मा को पहले शीतलता की शक्ति से अग्नि को शीतल करो तब शीतलता के आधार से सत्यता को जान सकेंगे।

पहले चन्द्रमा की शीतलता से योग्य बनते फिर ज्ञान सूर्य के सत्यता की शक्ति से 'योगी' बन जाते!

12.3.85... .. सत शब्द के दो अर्थ हैं – सत सत्यता भी है और सत अविनाशी भी है। तो सत्यता की शक्ति अविनाशी भी है। इसलिए अविनाशी प्राप्ति, अविनाशी सम्बन्ध, अविनाशी स्नेह, अविनाशी परिवार है। यही परिवार 21 जन्म भिन्नभिन्न नाम रूप से मिलते रहेंगे। जानेंगे नहीं। अभी जानते हो कि हम ही भिन्न सम्बन्ध से परिवार में आते रहेंगे। इस अविनाशी प्राप्ति ने, पहचान ने दूर देश में होते हुए भी अपने सत्य परिवार, सत्य बाप, सत्य ज्ञान की तरफ खींच लिया। जहाँ सत्यता भी हो और अविनाशी भी हो, यही परमात्म पहचान है।

21.2.85... .. आज तारामण्डल का सैर करते भिन्न-भिन्न सितारों को देख बापदादा हर्षित हो रहे हैं। कैसे हर एक सितारा – ज्ञान सूर्य द्वारा सत्यता की लाइट माइट ले बाप समान सत्यता की शक्ति सम्पन्न सत्य

स्वरूप बने हैं। और ज्ञान चन्द्रमा द्वारा शीतलता की शक्ति धारण कर चन्द्रमा समान 'शीतला' स्वरूप बने हैं। यह दोनों शक्तियाँ – 'सत्यता और शीतलता' सदा सहज सफलता को प्राप्त कराती हैं। एक तरफ़ सत्यता की शक्ति का ऊँचा नशा दूसरे तरफ़ जितना ऊँचा नशा उतना ही शीतलता के आधार से कैसे भी उल्टे नशे वा क्रोधित आत्मा को भी शीतल बनाने वाले। कैसा भी अहंकार के नशे में 'मैं, मैं' करने वाला हो लेकिन शीतलता की शक्ति से मैं, मैं के बजाए 'बाबा-बाबा' कहने लग पड़े। सत्यता को भी शीतलता की शक्ति से सिद्ध करने से सिद्धि प्राप्त होती है। नहीं तो सिवाए शीतलता की शक्ति के सत्यता को सिद्ध करने के लक्ष्य से, करते सिद्ध हैं लेकिन अज्ञानी, सिद्ध को जिद्द समझ लेते हैं। इसलिए सत्यता और शीतलता दोनों शक्तियाँ समान और साथ चाहिए। क्योंकि आज के विश्व का हर एक मानव किसी न किसी अग्नि में जल रहा है। ऐसी अग्नि में जलती हुई आत्मा को पहले शीतलता की शक्ति से अग्नि को शीतल करो तब शीतलता के आधार से सत्यता को जान सकेंगे।

शीतलता की शक्ति अर्थात् आत्मिक स्नेह की शक्ति। चन्द्रमा 'माँ' स्नेह की शीतलता से कैसे भी बिगड़े हुए बच्चे को बदल लेती है। तो स्नेह अर्थात् शीतलता की शक्ति किसी भी अग्नि में जली हुई आत्मा को शीतल बनाए सत्यता को धारण कराने के योग्य बना देती है। पहले चन्द्रमा की शीतलता से योग्य बनते फिर ज्ञान सूर्य के सत्यता की शक्ति से 'योगी' बन जाते! तो ज्ञान चन्द्रमा के शीतलता की शक्ति बाप के आगे जाने के योग्य बना देती है। योग्य नहीं तो योगी भी नहीं बन सकते हैं। तो सत्यता जानने के पहले शीतल हो? सत्यता को धारण करने की शक्ति चाहिए।

9.3.85... .. जैसे अब कहते हैं शान्ति का स्थान है तो यही है। ऐसे सबके मुख से यह आवाज निकले कि सत्य ज्ञान है तो यही है। जैसे शान्ति और स्नेह की शक्ति अनुभव करते हैं वैसे सत्यता सिद्ध हो, तो और सब क्या हैं, वह सिद्ध हो ही जायेगा। कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अब वह सत्यता की शक्ति कैसे प्रत्यक्ष करो, वह विधि क्या अपनाओ जो आपको कहना न पड़े। लेकिन वह स्वयं ही कहें कि इससे यह सिद्ध होता है कि सत्य ज्ञान परमात्म ज्ञान शक्तिशाली ज्ञान है तो यही है।

12.3.85... .. सत्य ज्ञान वा सत्यता की शक्ति कितनी महान है उसके अनुभवी आत्मायें हो। सब दूरदेश वासी बच्चे भिन्न धर्म, भिन्न मान्यतायें, भिन्न रीति रसम में रहते हुए भी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की तरफ वा राजयोग की तरफ क्यों आकर्षित हुए? सत्य बाप का सत्य परिचय मिला अर्थात् सत्य ज्ञान मिला। सच्चा परिवार मिला। सच्चा स्नेह मिला। सच्ची प्राप्ति का अनुभव हुआ। तब सत्यता की शक्ति के पीछे आकर्षित हुए। जीवन थी, प्राप्ति भी थी यथा शक्ति ज्ञान भी था लेकिन सत्य ज्ञान नहीं था। इसलिए सत्यता की शक्ति ने सत्य बाप का बना लिया।

सत शब्द के दो अर्थ हैं – सत सत्यता भी है और सत अविनाशी भी है। तो सत्यता की शक्ति अविनाशी भी है। इसलिए अविनाशी प्राप्ति, अविनाशी सम्बन्ध, अविनाशी स्नेह, अविनाशी परिवार है। यही परिवार 21 जन्म भिन्नभिन्न नाम रूप से मिलते रहेंगे। जानेंगे नहीं। अभी जानते हो कि हम ही भिन्न सम्बन्ध से परिवार में आते रहेंगे। इस अविनाशी प्राप्ति ने, पहचान ने दूर देश में होते हुए भी अपने सत्य परिवार, सत्य बाप, सत्य ज्ञान की तरफ खींच लिया। जहाँ सत्यता भी हो और अविनाशी भी हो, यही परमात्म पहचान है। तो जैसे

आप सभी इसी विशेषता के आधार पर आकर्षित हुए, ऐसे ही सत्यता की शक्ति को, सत्य ज्ञान को विश्व में प्रत्यक्ष करना है।

13.1.86... .. सत्यता की खुशबू कभी मिट नहीं सकती। छिप नहीं सकती। इसलिए धोखा कभी नहीं खाना। यही पाठ पक्का करना। पहले अपनी बेहद की अविनाशी खुशी फिर दूसरी बातें। बेहद की खुशी सेवा की वा सर्व के स्नेह की, सर्व द्वारा अविनाशी सम्मान प्राप्त होने की खुशानसीबी अर्थात् श्रेष्ठ भाग्य स्वतः ही अनुभूति करायेगी। जो सदा खुश है वह खुशानसीब है। बिना मेहनत, बिना इच्छा अथवा बिना कहने के सर्व प्राप्ति सहज होंगी। यह पाठ पक्का किया?

20.3.87... .. बापदादा सभी बच्चों को आगे बढ़ाने की युक्ति बताते हैं, वह युक्ति क्या है? सबसे बड़े-ते-बड़ी युक्ति है – ‘सहनशीलता के गुण को अपनाना’। जितना सहनशील होंगे, सत्यता की शक्ति होगी, उतना सहज अपना राज्य सतयुग ला सकेंगे।

20.3.87... .. सत्यता की ही है। सत् दो अर्थ से कहा जाता है। एक – सत् अर्थात् सत्य। दूसरा – सत् अर्थात् अविनाशी। दोनों अर्थ से सत्यता की शक्ति सबसे बड़ी है। बाप को सत् बाप कहते हैं। बाप तो अनेक हैं लेकिन सत् बाप एक है। सत् शिक्षक, सत्गुरु एक ही है। सत्य को ही परमात्मा कहते हैं अर्थात् परम आत्मा की विशेषता सत्य अर्थात् सत् है। आपका गीत भी है। सत्य ही शिव है...। दुनिया में भी कहते हैं – सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्। साथ-साथ बाप परमात्मा के लिए सत्-चित-आनन्द स्वरूप कहते हैं। आप आत्माओं को सत्-चित-आनन्द कहते हैं। तो ‘सत्’ शब्द की महिमा बहुत गाई हुई है। और कभी भी कोई भी कार्य में अथॉर्टी से बोलते तो यही कहेंगे – मैं सच्चा हूँ, इसलिए अथॉर्टी से बोलता हूँ। सत्य के लिए गायन है – सत्य की नाँव डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। आप लोग भी कहते हो – सच तो बिठो नच। सच्चा अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा नाचता रहेगा, कभी मुरझायेगा नहीं, उलझेगा नहीं, घबरायेगा नहीं, कमज़ोर नहीं होगा। सत्यता की शक्ति वाला सदा खुशी में नाचता रहेगा। शक्तिशाली होगा, सामना करने की शक्ति होगी, इसलिए घबरायेगा नहीं। सत्यता को सोने के समान कहते हैं, असत्य को मिट्टी के समान कहते हैं। भक्ति में भी जो परम- आत्मा की तरफ़ लगन लगाते हैं, उन्हीं को सत्संगी कहते हैं, सत् का संग करने वाले हैं। और लास्ट में जब आत्मा शरीर छोड़ती है तो भी क्या कहते हैं – सत् नाम संग है। तो सत् अविनाशी, सत् सत्य है। सत्यता की शक्ति महान शक्ति है।

20.3.87... .. सत्यता हर आत्मा को आकर्षित करती है। चाहे आज की दुनिया झूठ खण्ड है, सब झूठ है अर्थात् सबमें झूठ मिला हुआ है, फिर भी सत्यता की शक्ति वाले विजयी बनते हैं। सत्यता की प्राप्ति खुशी और निर्भयता है। सत्य बोलने वाला सदा निर्भय होगा। उनको कब भय नहीं होगा। जो सत्य नहीं होगा तो उनको भय ज़रूर होगा। तो आप सभी सत्यता के शक्तिशाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। सत्य ज्ञान, सत्य बाप, सत्य प्राप्ति, सत्य याद, सत्य गुण, सत्य शक्तियाँ सर्व प्राप्ति हैं। तो इतनी अथॉर्टी का नशा रहता है? अथॉर्टी का अर्थ अभिमान नहीं है। जितना बड़े-ते-बड़ी अथॉर्टी, उतना उनकी वृत्ति में रूहानी अथॉर्टी रहती है। वाणी में स्नेह और नम्रता होगी – यही अथॉर्टी की निशानी है। जैसे आप लोग वृक्ष का दृष्टान्त देते हो। वृक्ष में जब सम्पूर्ण फल की अथॉर्टी आ जाती है तो वृक्ष झुकता है अर्थात् निर्मान बनने की सेवा करता है। ऐसे रूहानी

अथॉर्टी वाले बच्चे जितनी बड़ी अथॉर्टी, उतने निर्मान और सर्व स्नेही होंगे। लेकिन सत्यता की अथॉर्टी वाले निर-अहंकारी होते हैं। तो अथॉर्टी भी हो, नशा भी हो और निर-अहंकारी भी हो – इसको कहते हैं सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप।

20.3.87... .. सबसे बड़े-ते-बड़ी शक्ति वा अथॉर्टी सत्यता की ही है। सत् दो अर्थ से कहा जाता है। एक – सत् अर्थात् सत्य। दूसरा – सत् अर्थात् अविनाशी। दोनों अर्थ से सत्यता की शक्ति सबसे बड़ी है। बाप को सत् बाप कहते हैं। बाप तो अनेक हैं लेकिन सत् बाप एक है। सत् शिक्षक, सत्गुरु एक ही है। सत्य को ही परमात्मा कहते हैं अर्थात् परम आत्मा की विशेषता सत्य अर्थात् सत् है। आपका गीत भी है। सत्य ही शिव है...। दुनिया में भी कहते हैं – सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्। साथ-साथ बाप परमात्मा के लिए सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप कहते हैं। आप आत्माओं को सत्-चित्त-आनन्द कहते हैं। तो 'सत्' शब्द की महिमा बहुत गाई हुई है। और कभी भी कोई भी कार्य में अथॉर्टी से बोलते तो यही कहेंगे – मैं सच्चा हूँ, इसलिए अथॉर्टी से बोलता हूँ। सत्य के लिए गायन है – सत्य की नाँव डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। आप लोग भी कहते हो – सच तो बिठो नच। सच्चा अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा नाचता रहेगा, कभी मुरझायेगा नहीं, उलझेगा नहीं, घबरायेगा नहीं, कमज़ोर नहीं होगा। सत्यता की शक्ति वाला सदा खुशी में नाचता रहेगा। शक्तिशाली होगा, सामना करने की शक्ति होगी, इसलिए घबरायेगा नहीं। सत्यता को सोने के समान कहते हैं, असत्य को मिट्टी के समान कहते हैं। भक्ति में भी जो परम- आत्मा की तरफ़ लगन लगाते हैं, उन्हीं को सत्संगी कहते हैं, सत् का संग करने वाले हैं। और लास्ट में जब आत्मा शरीर छोड़ती है तो भी क्या कहते हैं – सत् नाम संग है। तो सत् अविनाशी, सत् सत्य है। सत्यता की शक्ति महान शक्ति है। वर्तमान समय मेजारिटी लोग आप सबको देखकर क्या कहते हैं – इन्हीं में सत्यता है, तब इतना समय वृद्धि करते हुए चल रहे हैं। सत्यता कब हिलती नहीं है, अचल होती है। सत्यता वृद्धि को प्राप्त करने की विधि है। सत्यता की शक्ति से सतयुग बनाते हो, स्वयं भी सत्य-नारायण, सत्य-लक्ष्मी बनते हो। यह सत्य ज्ञान है, सत् बाप का ज्ञान है। इसलिए दुनिया से न्यारा और प्यारा है। तो आज बापदादा सभी बच्चों को देख रहे हैं कि सत्य ज्ञान की सत्यता की अथॉर्टी कितनी धारण की है? सत्यता हर आत्मा को आकर्षित करती है। चाहे आज की दुनिया झूठ खण्ड है, सब झूठ है अर्थात् सबमें झूठ मिला हुआ है, फिर भी सत्यता की शक्ति वाले विजयी बनते हैं। सत्यता की प्राप्ति खुशी और निर्भयता है। सत्य बोलने वाला सदा निर्भय होगा। उनको कब भय नहीं होगा। जो सत्य नहीं होगा तो उनको भय ज़रूर होगा। तो आप सभी सत्यता के शक्तिशाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। सत्य ज्ञान, सत्य बाप, सत्य प्राप्ति, सत्य याद, सत्य गुण, सत्य शक्तियाँ सर्व प्राप्ति हैं। तो इतनी अथॉर्टी का नशा रहता है? अथॉर्टी का अर्थ अभिमान नहीं है। जितना बड़े-ते-बड़ी अथॉर्टी, उतना उनकी वृत्ति में रूहानी अथॉर्टी रहती है। वाणी में स्नेह और नम्रता होगी – यही अथॉर्टी की निशानी है। जैसे आप लोग वृक्ष का दृष्टान्त देते हो। वृक्ष में जब सम्पूर्ण फल की अथॉर्टी आ जाती है तो वृक्ष झुकता है अर्थात् निर्मान बनने की सेवा करता है। ऐसे रूहानी अथॉर्टी वाले बच्चे जितनी बड़ी अथॉर्टी, उतने निर्मान और सर्व स्नेही होंगे। लेकिन सत्यता की अथॉर्टी वाले निर-अहंकारी होते हैं। तो अथॉर्टी भी हो, नशा भी हो और निर-अहंकारी भी हो – इसको कहते हैं सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप। जैसे इस झूठ खण्ड के अन्दर ब्रह्मा बाप सत्यता की

अथॉर्टी का प्रत्यक्ष साकार स्वरूप देखा ना। उनके अथॉर्टी के बोल कभी भी अहंकार की भासना नहीं देंगे। मुरली सुनते हो तो कितनी अथॉर्टी के बोल हैं! लेकिन अभिमान के नहीं। अथॉर्टी के बोल में स्नेह समाया हुआ है, निर्मानता है, निर-अहंकार है। इसलिए अथॉर्टी के बोल प्यारे लगते हैं। सिर्फ प्यारे नहीं लेकिन प्रभावशाली होते हैं। फ़ालो फ़ादर है ना। सेवा में वा कर्म में फ़ालो ब्रह्मा बाप है क्योंकि साकार दुनिया में साकार 'एक्ज़ाम्पल' है, सैम्पल है। तो जैसे ब्रह्मा बाप को कर्म में, सेवा में, सूरत से, हर चलन से चलता-फ़िरता अथॉर्टी स्वरूप देखा, ऐसे फ़ालो फ़ादर करने वाले में भी स्नेह और अथॉर्टी, निर्मानता और महानता – दोनों साथ-साथ दिखाई दें। ऐसे नहीं सिर्फ स्नेह दिखाई दे और अथॉर्टी गुम हो जाए या अथॉर्टी दिखाई दे और स्नेह गुम हो जाए। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा वा अभी भी मुरली सुनते हो। प्रत्यक्ष प्रमाण है। तो बच्चे-बच्चे भी कहेगा लेकिन अथॉर्टी भी दिखायेगा। स्नेह से बच्चे भी कहेगा और अथॉर्टी से शिक्षा भी देगा। सत्य ज्ञान को प्रत्यक्ष भी करेंगे लेकिन बच्चे-बच्चे कहते नया ज्ञान सारा स्पष्ट कर देंगे। इसको कहते हैं स्नेह और सत्यता की अथॉर्टी का बैलेन्स (सन्तुलन) तो वर्तमान समय सेवा में इस बैलेन्स को अण्डरलाइन करो।

11.12.91... .. रूहानी रॉयल्टी की सबसे श्रेष्ठ निशानी है – रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी अर्थात् सत्यता। जैसे आत्मा का अनादि स्वरूप सत है। सत अर्थात् अविनाशी और सत्य है। जैसे बाप की महिमा विशेष यही गाते रहते हैं – सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। सत्य ही शिव है वा गॉड इज ट्रुथ (God is truth) कहा जाता है। तो बाप की महिमा सत्य अर्थात् सत्यता की है। ऐसे रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी – सत्यता जरा भी बनावटी या मिला-वटी न हो। चाहे बोल में, चाहे कर्म में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में मिलावट या बनावट नहीं हो। जिसको साधारण भाषा में बापदादा कहते हैं – सच्चाई। रॉयल आत्माओं की वृत्ति, दृष्टि बोल और चलन सब एक सत्य होगी। ऐसे नहीं कि वृत्ति में एक बात हो और बोल में दूसरा बनावटी भाव हो। इसको रॉयल्टी वा रीयल्टी नहीं कहा जाता है।

रॉयल आत्मा का चेहरा और चलन दोनों ही सत्यता की सभ्यता अनुभव करायेंगे। वैसे भी रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है। उनका बोलना, देखना, चलना, खान-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म में सभ्यता सत्यता स्वतः ही दिखाई देगी। ऐसे नहीं कि मैं तो सत्य को सिद्ध कर रहा हूँ और सभ्यता हो ही नहीं। कई बच्चे कहते हैं वैसे क्रोध नहीं आता है, लेकिन कोई झूठ बोलता है तो क्रोध आ जाता है। उसने झूठ बोला, आपने क्रोध से बोला तो दोनों में राइट कौन? सत्यता को सिद्ध करने वाला सदा सभ्यता वाला होगा। कई चतुराई करते हैं, कहेंगे हम क्रोध नहीं करते हैं, हमारा आवाज ही बड़ा है, आवाज ही ऐसा तेज है। साइन्स के साधनों से आवाज को कम और ज्यादा कर सकते हैं ना तो क्या साइलेन्स के पॉवर से अपने आवाज की गति को धीमी या तेज नहीं कर सकते हो? इससे तो ये टेप रिकार्ड और ये माइक अच्छा है जो आवाज कम ज्यादा तो कर सकते हो। तो ये चेक करो कि सत्यता के साथ सभ्यता भी है? अगर सभ्यता नहीं तो सत्यता नहीं। तो प्योरिटी की रॉयल्टी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे।

18.12.91... .. तो विश्वास की नांव सत्यता है, ऑनेस्टी है तो डगमग होगी लेकिन अविश्वासपात्र बनना अर्थात् डूबेगी नहीं। इसलिए सत्यता की हिम्मत से विश्वासपात्र बन सकते हो। पहले सुनाया था ना कि सत्य को सिद्ध नहीं किया जाता है। सत्य स्वयं में ही सिद्ध है। सिद्ध नहीं करो लेकिन सिद्धि स्वरूप बन जाओ। तो

समय के गति के प्रमाण अभी तपस्या के कदम को सहज और तीव्र गति से आगे बढ़ाओ। समझा- तपस्या वर्ष में क्या करना है? अभी भी कुछ समय तो पड़ा है। इन सब विधियों को स्वयं में धारण कर सिद्धि स्वरूप बनो।

5.03.04 बाप को सबसे बढ़िया चीज़ लगती है - सच्चाई। इसलिए भक्ति में भी कहते हैं गाड इज टुथ। सबसे प्यारी चीज़ सच्चाई है क्योंकि जिसमें सच्चाई होती है उसमें सफाई रहती है। क्लीन और क्लीयर रहता है। इसलिए बापदादा को डबल फारेनर्स के सच्चाई की प्रेम की रस्सी खींचती है। थोड़ा बहुत मिक्स तो होता है, कोई-कोई। लेकिन डबल फारेनर्स अपनी यह सच्चाई की विशेषता कभी नहीं छोड़ना। सत्यता की शक्ति एक लिफ्ट का काम करती है।

11.12.91... .. रॉयल आत्मा का चेहरा और चलन दोनों ही सत्यता की सभ्यता अनुभव करायेगे। वैसे भी रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है। उनका बोलना, देखना, चलना, खान-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म में सभ्यता सत्यता स्वतः ही दिखाई देगी। ऐसे नहीं कि मैं तो सत्य को सिद्ध कर रहा हूँ और सभ्यता हो ही नहीं। कई बच्चे कहते हैं वैसे क्रोध नहीं आता है, लेकिन कोई झूठ बोलता है तो क्रोध आ जाता है। उसने झूठ बोला, आपने क्रोध से बोला तो दोनों में राइट कौन? सत्यता को सिद्ध करने वाला सदा सभ्यता वाला होगा। कई चतुराई करते हैं, कहेंगे हम क्रोध नहीं करते हैं, हमारा आवाज ही बड़ा है, आवाज ही ऐसा तेज है। साइन्स के साधनों से आवाज को कम और ज्यादा कर सकते हैं ना तो क्या साइलेन्स के पाँवर से अपने आवाज की गति को धीमी या तेज नहीं कर सकते हो? इससे तो ये टेप रिकार्ड और ये माइक अच्छा है जो आवाज कम ज्यादा तो कर सकते हो। तो ये चेक करो कि सत्यता के साथ सभ्यता भी है? अगर सभ्यता नहीं तो सत्यता नहीं। तो प्योरिटी की रॉयल्टी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे। ऐसे नहीं, अन्दर में तो रॉयल्टी है, बाहर देखने में नहीं आती। अगर अन्दर है तो बाहर में जरूर दिखाई देगी। सत्यता की रॉयल्टी को कोई छिपा नहीं सकता। इसमें गुप्त नहीं रहना है। कई कहते हैं गुप्त पुरुषार्थी हैं इसीलिए गुप्त रहते हैं। लेकिन जैसे सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता, सत्यता के सूर्य को कोई छिपा नहीं सकता। न कोई कारण छिपा सकता है, न कोई व्यक्ति। सत्य सदा ही सत्य है। सत्यता की शक्ति सबसे महान है। सत्यता सिद्ध करने से सिद्ध नहीं होती। सत्यता की शक्ति को स्वतः ही सिद्ध होने की सिद्धि प्राप्त होती है। सत्यता को अगर कोई सिद्ध करने चाहता है तो वह सिद्ध जिद्द हो जाता है। इसलिए सत्यता स्वयं ही सिद्ध होती ही है। उसको सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। समझा। तपस्या वर्ष में क्या दिखाना है? प्योरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी।

15.4.92... .. यह सदैव याद रखो कि सत्यता की निशानी क्या है! जो स्वयं सत्यता पर है और असत्य को खत्म करना चाहता है, लक्ष्य तो बहुत अच्छा है लेकिन असत्यता को खत्म करने के लिए अपने में भी सत्यता की शक्ति चाहिए। आवेशता या जोश यह सत्यता की निशानी है? सत्यता में जोश आयेगा? तो अगर झूठ को देख करके मुझे गुस्सा आता है, तो राइट है? कोई आग लगायेगा तो सेक नहीं आयेगा कि सेक प्रुफ हो सकते हैं? अगर हमें नॉलेज है कि यह असत्यता की आग है और आग का सेक होता है तो पहले अपने को सेफ करेंगे ना कि सेक में थोड़ा सा जल भी जाए तो चलेगा, हर्जा नहीं। तो सदैव यह याद



रखो कि सत्यता की निशानी है सभ्यता। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आपमें है तो सभ्यता को कभी नहीं छोड़ेंगे, सत्यता को सिद्ध करो लेकिन सभ्यतापूर्ण। अगर सभ्यता को छोड़-कर असभ्यता में आकरके सत्य को सिद्ध करना चाहते हो तो वह सत्य सिद्ध नहीं होगा। आप सत्य को सिद्ध करना चाहते हो लेकिन सभ्यता को छोड़ करके अगर सत्यता को सिद्ध करेंगे तो जिद्द हो जायेगा। सिद्ध नहीं। असभ्यता की निशानी है जिद्द और सभ्यता की निशानी है निर्माण। सत्यता को सिद्ध करने वाला सदैव स्वयं निर्माण होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करेगा। समझा - दूसरी होशियारी! ऐसे होशियार नहीं बनना। तो यह भी होमवर्क है कि ऐसे होशियारी को छोड़कर निर्माण बनो। बिल्कूल निर्माण।

15.4.92... .. आजकल एक विशेष भाषा बहुत यूज करते हैं कि हमसे असत्य देखा नहीं जाता, असत्य सुना नहीं जाता, इसलिए असत्य को देख झूठ को सून करके अन्दर में जोश आ जाता है। तो यह भाषा राईट है? अगर वह असत्य है और आपको असत्य को देख जोश आता है तो जोश सत्य है या असत्य है? जोश भी तो असत्य है ना! हम यह करके दिखायेंगे, यह चैलेन्ज करना राइट है? यह सदैव याद रखो कि सत्यता की निशानी क्या है! जो स्वयं सत्यता पर है और असत्य को खत्म करना चाहता है, लक्ष्य तो बहुत अच्छा है लेकिन असत्यता को खत्म करने के लिए अपने में भी सत्यता की शक्ति चाहिए। आवेशता या जोश यह सत्यता की निशानी है? सत्यता में जोश आयेगा? तो अगर झूठ को देख करके मुझे गुस्सा आता है, तो राईट है? कोई आग लगायेगा तो सेक नहीं आयेगा कि सेक प्रुफ हो सकते हैं? अगर हमें नॉलेज है कि यह असत्यता की आग है और आग का सेक होता है तो पहले अपने को सेफ करेंगे ना कि सेक में थोड़ा सा जल भी जाए तो चलेगा, हर्जा नहीं। तो सदैव यह याद रखो कि सत्यता की निशानी है सभ्यता। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आपमें है तो सभ्यता को कभी नहीं छोड़ेंगे, सत्यता को सिद्ध करो लेकिन सभ्यतापूर्ण। अगर सभ्यता को छोड़- कर असभ्यता में आकरके सत्य को सिद्ध करना चाहते हो तो वह सत्य सिद्ध नहीं होगा। आप सत्य को सिद्ध करना चाहते हो लेकिन सभ्यता को छोड़ करके अगर सत्यता को सिद्ध करेंगे तो जिद्द हो जायेगा। सिद्ध नहीं। असभ्यता की निशानी है जिद्द और सभ्यता की निशानी है निर्माण। सत्यता को सिद्ध करने वाला सदैव स्वयं निर्माण होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करेगा।

27.2.96... .. सत्यता का फाउण्डेशन पवित्रता है। और सत्यता का प्रैक्टिकल प्रमाण चेहरे पर और चलन में दिव्यता होगी। दुनिया में भी अनेक आत्मायें अपने को सत्यवादी कहते हैं वा समझते हैं लेकिन सम्पूर्ण सत्यता पवित्रता के आधार पर होती है। पवित्रता नहीं तो सदा सत्यता रह नहीं सकती है। तो आप सबका फाउण्डेशन क्या है? पवित्रता। तो पवित्रता के आधार पर सत्यता का स्वरूप स्वतः और सहज सदा होता है। सत्यता सिर्फ सच बोलना, सच करना इसको नहीं कहा जाता लेकिन सबसे पहला सत्य जिससे आपको पवित्रता की वा सत्यता की शक्ति आई, तो पहली बात है अपने सत्य स्वरूप को जाना, मैं आत्मा हूँ—ये सत्य स्वरूप पहले नहीं जानते थे। लेकिन पहला सत्य अपने स्वरूप को जाना। मैं फलानी हूँ या फलाना हूँ, बॉडी के हिसाब से वह सत्य स्वरूप था? सत्य स्वरूप है पहले स्व स्वरूप और फिर बाप के सत्य परिचय को जाना। अच्छी तरह से अपना सत्य स्वरूप और बाप का सत्य परिचय जान लिया है? तीसरी बात—इस सृष्टि चक्र को भी सत्य स्वरूप से जाना। यह चक्र क्या है और इसमें मेरा पार्ट क्या है! तो अपना पार्ट अच्छी तरह

से स्पष्ट रूप से जान लिया? आपका पार्ट अच्छा है ना? सबसे अच्छा पार्ट संगमयुग का कहेंगे। लेकिन आपका देव आत्मा का पार्ट भी विश्व में सारे चक्र की आत्माओं से श्रेष्ठ है। चाहे धर्म आत्मायें, महान आत्मायें भी पार्ट बजाती हैं लेकिन वो आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र नहीं हैं और आप देव आत्मायें शरीर और आत्मा दोनों से पवित्र हैं, जो सारे कल्प में और कोई आत्मा ऐसी नहीं। तो पवित्रता का फाउण्डेशन सिवाए आपके और कोई भी आत्मा का श्रेष्ठ नहीं है।

अभी कभी भूल भी जाते हो, बॉडी कानसेस में आ जाते हो तो संकल्प सदा सत्यता के शक्तिशाली हो, पवित्रता के शक्तिशाली हो, वह सदा नहीं रहता। सदा रहता है कि व्यर्थ भी होता है? तो व्यर्थ को सत्य कहेंगे? झूठ तो बोला ही नहीं तो क्यों नहीं सत्य है? अगर कोई यह समझकर बैठे कि मैं कभी भी झूठ नहीं बोलती, सदा सच बोलती लेकिन सत्यता की परख है कि संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें दिव्यता अनुभव हो। बोल सच रहे हैं लेकिन दिव्यता नहीं है, देखते हो ना—कई बार-बार कहेंगे मैं सच बोलती, मैं सच बोलती। मैं सदा सच्ची हूँ लेकिन बोल में, कर्म में अगर दिव्यता नहीं है तो दूसरे को आपका सच, सच नहीं लगेगा। यही समझेंगे कि यह अपने को सिद्ध कर रही है लेकिन समझ में नहीं आता कि यह सत्य है। सत्य को सिद्ध करने के लिए सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। अगर अपने सत्य को जिद्द से सिद्ध करते हैं तो वह दिव्यता दिखाई नहीं देती है। ये साधारणता है, जो दुनिया में भी करते हैं। और बापदादा सत्य की निशानी एक स्लोगन में कहते हैं, साकार द्वारा भी सुना जो सच्चा होगा वह कैसे दिखाई देगा! सच तो नच। सदा खुशी में नाचता रहेगा। जब जिद्द करके सिद्ध करते तो आप अपना या दूसरे का चेहरा नोट करेंगे तो वह खुशी का नहीं होगा। थोड़ा सोचने का और थोड़ा उदासी का होगा। नाचने का नहीं होगा। सच तो बिठो नच, सच्चा खुशी में नाचता है। तो खुशी में जीवन के दिन या रात बहुत अच्छी लगती है। और थोड़ा भी सत्य में असत्य मिक्स है तो उस समय की जीवन इतनी अच्छी नहीं लगेगी। तो सत्यता का अर्थ ही है सत्य स्वरूप में स्थित होकर चाहे संकल्प, चाहे बोल, चाहे कर्म करना।

सत्यता की शक्ति से आज डायमण्ड जुबली मना रहे हैं। अगर पवित्रता और सत्यता नहीं होती तो आज आपके चेहरों से, चलन से आने वालों को जो दिव्यता अनुभव होती है वह नहीं होती। चाहे प्यादा भी है, नम्बरवार तो है ही ना। महारथी भी हैं, नाम के महारथी नहीं, लेकिन जो सच्चे महारथी हैं अर्थात् सत्यता की शक्ति से चलने वाले महारथी हैं। जो परिस्थिति को देखकर सत्यता से ज़रा भी किनारा कर लेते, कहते हैं और कुछ नहीं किया एक दो शब्द ऐसे बोल दिये, दिल से नहीं बोले ऐसे बाहर से थोड़ा बोल दिये तो यह सम्पूर्ण सत्यता नहीं है। सत्यता के पीछे अगर सहन भी करना पड़ता तो वह सहन नहीं है भल बाहर से लगता है कि हम सहन कर रहे हैं लेकिन आपके खाते में वह करने के बाद सोचना ही पश्चाताप का रूप है। सहन शक्ति के रूप में जमा होता है। नहीं तो क्या होता कि अगर कोई थोड़ा सा भी सहन करने में कमजोर हो जाता है तो उसे असत्य का सहारा जरूर लेना पड़ता है। तो उस समय ऐसे लगता है जैसे सहारा मिल गया, ठीक हो गया लेकिन उसके खाते में सहनशक्ति जमा नहीं होती है। तो बाहर से ऐसे समझेंगे कि हम बहुत अच्छे चलते हैं, हमको चलने की चतुराई आ गई है, लेकिन अगर अपना खाता देखेंगे तो जमा का खाता बहुत कम होगा। इसलिए चतुराई से नहीं चलो, एक दो को देखकर भी कापी करते हैं, यह ऐसे चलती है ना

तो इसका नाम बहुत अच्छा हो गया है, यह बहुत आगे हो गई है और हम सच्चे चलते हैं ना तो हम पीछे के पीछे ही रह गये। लेकिन वह पीछे रहना नहीं है, वह आगे बढ़ना है।

27.2.96.....सत्यता की शक्ति सदा तब रहेगी जब अपने और बाप के सत्य स्वरूप की स्मृति रहेगी, तो स्वतः ही हर संकल्प भी आपका सत्य होगा। अभी कभी भूल भी जाते हो, बॉडी कानसेस में आ जाते हो तो संकल्प सदा सत्यता के शक्तिशाली हो, पवित्रता के शक्तिशाली हो, वह सदा नहीं रहता।

सत्यता की शक्ति धारण करने में सहनशक्ति की भी आवश्यकता है। सहन करना पड़ता है, झुकना पड़ता है, हार माननी पड़ती है लेकिन वह हार नहीं है, उस समय के लिए हार लगती है लेकिन है सदा की विजय। सत्यता की शक्ति से आज डायमण्ड जुबली मना रहे हैं। अगर पवित्रता और सत्यता नहीं होती तो आज आपके चेहरों से, चलन से आने वालों को जो दिव्यता अनुभव होती है वह नहीं होती। चाहे प्यादा भी है, नम्बरवार तो है ही ना। महारथी भी हैं, नाम के महारथी नहीं, लेकिन जो सच्चे महारथी हैं अर्थात् सत्यता की शक्ति से चलने वाले महारथी हैं। जो परिस्थिति को देखकर सत्यता से ज़रा भी किनारा कर लेते, कहते हैं और कुछ नहीं किया एक दो शब्द ऐसे बोल दिये, दिल से नहीं बोले ऐसे बाहर से थोड़ा बोल दिये तो यह सम्पूर्ण सत्यता नहीं है।

4.11.2001.. .. बापदादा को राज़ी करना बहुत सहज है। बापदादा को राज़ी करने का सहज साधन है “सच्ची दिल”। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। हर कर्म में सत्यवादी। सत्यता महानता है। जो सच्ची दिल वाला है, वह सदा संकल्प, वाणी और कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में राज़युक्त होगा अर्थात् राज़ को समझ करने वाले, चलने वाले; और हम कहाँ तक राज़युक्त हैं - उसको परखने की निशानी है - अगर राज़ जानता है तो वह कभी भी अपने स्व-स्थिति से नाराज़ नहीं होगा अर्थात् दिलशिकस्त नहीं होगा और संकल्प में भी, वृत्ति से भी, स्मृति से भी, दृष्टि से भी किसी को नाराज़ नहीं करेगा; क्योंकि वो सबके वा अपने संस्कार-स्वभाव को जानने वाला राज़युक्त है। तो बाप को राज़ी करने की विधि है - राज़युक्त चलना और राज़युक्त अर्थात् न अपने अन्दर नाराज़गी आये, न औरों को नाराज़ करे।

### 3. संकल्प शक्ति

2.2.69.. .. अगर मैंने किया, मैं-मैं आया तो मालूम है क्या होगा? जैसे निमित्त बनने से निराकारी, निरंहकारी, निरसंकल्प स्थिति होती है वैसे ही मैं मैं आने से मगरूरी, मुरझाइस, मायूसी आ जायेगी। उसकी फिर रिजल्ट क्या होगी? आखरीन अन्त में उसकी रिजल्ट यही होती है कि चलते-चलते जीते हुए भी मर जाते हैं। इसलिए इस मुख्य शिक्षा को हमेशा साथ रखना कि मैं निमित्त हूँ। निमित्त बनने से कोई भी अंहकार उत्पन्न नहीं होगा। नहीं तो अगर मैं पन आ गया तो मतभेद के चक्र में आ जायेंगे। इसलिए इन अनेक व्यर्थ के चक्करो से बचने के लिए स्वदर्शनचक्र को याद रखना। क्योंकि जैसे-जैसे महारथी बनेंगे वैसे ही माया भी महारथी रूप में आयेगी। साकार रूप में अन्त तक कर्म करके दिखाया। क्या कर्म करके दिखाया? याद है? क्या शिक्षा दी यही कि निरंहकारी और निर्माणचित होकर एक दो में प्रेम प्यार से चलना है।

17.4.69.. .. बालकपन अर्थात् निरसंकल्प हो। जो कोई भी आज्ञा मिले, डायरेक्श्र मिले उस पर चलना। मालिकपन अर्थात् अपनी राय देना। किस स्थान पर मालिक बनना है वह स्थान और बात देखनी है। सभी जगह मालिक नहीं बनना है। जहाँ बालक बनना है वहाँ अगर मालिक बन जायेंगे तो फिर संस्कारों का टक्कर हो जायेगा। इसलिए आपस में एक दो के मददगार बनने के लिए दोनों ही बातें धारण करनी हैं।

6.7.69.. .. निरसंकल्प जो होता है उनको ही सच्चा योगी कहा जाता है। उनमें जो लक्ष्य है वह धारण करना है।

19.7.69.. .. अभी हिम्मत की आवश्यकता है। हिम्मत कैसे आयेगी? हर समय, हर कदम पर, हर संकल्प में बलिहार होने से। जो बलिहार होता है उसमें हिम्मत ज्यादा होती है तो जितना-जितना अपने को बलिहार बनायेंगे उतना ही गले के हार में नज़दीक आयेंगे। अभी बलिहार होंगे फिर बनेंगे प्रभु के गले का हार। अगर बलिहार बनकर के ही कर्म करेंगे तो दूसरों को भी बलिहार बनायेंगे। जिसको वारिस कहा जाता है। अभी प्रजा बहुत बनती है। वारिस कम बनते हैं। जितना बहुत बनायेंगे उतना ही नजदीक आयेंगे। तो अब वारिस बनाने का प्लान सोचो।

23.7.69 .. .. परखने की शक्ति बढ़ाने का क्या पुरुषार्थ है? दिल की सफाई से भी इस बात में बुद्धि की सफाई जास्ती चाहिए। संकल्प की जो शक्ति है उनको ब्रेक लगाने की पाँवर हो। मन का संकल्प वा बुद्धि की जजमेंट जो भी होती है। तो मन और बुद्धि दोनों को एक तो पावरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की भी शक्ति चाहिए। यह दोनों ही शक्तियों की बहुत जरूरत है। इसी को ही याद की शक्ति वा अव्यक्ति शक्ति कहा जाता है। अगर ब्रेक ना दें सकेंगे तो भी ठीक नहीं। अगर टर्न नहीं कर सकेंगे तो भी ठीक नहीं। तो ब्रेक देने और मोड़ने की शक्ति होगी तो बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं गवायेंगे। इनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जायेगी। जितनी जमा

होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी। यह भी अभ्यास भट्टी में करना चाहिए। तो अपने मन और बुद्धि को कहाँ तक ब्रेक लगा सकते हो और मोड़ सकते हो? अपने को चेक करना है। कोई बात में एक्सीडेन्ट होने के भी यही दो कारण होते हैं खास पाण्डवों प्रति, बापदादा का यही विशेष इशारा है।

28.9.69... .. कभी भी अपने में कमजोरी की, संशय की फीलिंग नहीं आनी चाहिए। **कमजोरी के संकल्प ही संशय है।** अब कहाँ तक यह पुराने संस्कार और संकल्प रहे। पुराने संस्कार भी नहीं। संस्कार तो मोटी चीज़ है। लेकिन पुराने संकल्प खत्म होने चाहिए। तब कहेंगे भट्टी से पककर निकल रहे हैं।

**एकरस अवस्था में रहने लिए एक ही शुद्ध संकल्प रखना है। वो कौनसा एक? एक तो स्नेही बनना, दूसरा सर्विसएबुल हूँ। बस।** इनके बिना और कोई संकल्प नहीं। सर्विसएबुल को सर्विस का ही संकल्प चलेगा। भट्टी का जो लक्ष्य है कि खुद बदलकर औरों को बदलना है। यह लक्ष्य सदैव याद रखना है। यह है निश्चय की छाप।

3.10.69... .. धन को श्रीमत से यूज करना तो सहज है तन को भी यूज करना सहज है। **लेकिन मन सिवाय श्रीमत के एक भी संकल्प उत्पन्न नहीं करे – इस स्थिति को कहा जाता है समर्पण।** इसलिए ही मनमनाभव का मुख्य मन्त्र है। अगर मन सम्पूर्ण समर्पण है तो तन-मन-धन-समय सम्बन्ध शीघ्र ही उस तरफ लग जाते हैं। तो मुख्य बात ही है मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्प, विकल्पों को समर्पण करना। वो ही परख है सम्पूर्ण परवाने की।

**कोई भी व्यर्थ संकल्प आये तो उनको बिन्दी लगा दो तो बिन्दी बन जायेंगे। व्यर्थ संकल्प आये तो उनको बिन्दी लगा दो तो बिन्दी बन जायेंगे।**

16.10.69 .. .. जब जैसे चाहें वैसी स्थिति बना सकें। यह मन को ड्रिल करानी है। यह जरूर प्रैक्टिस करो। एक सेकेण्ड में आवाज में, एक सेकेण्ड में फिर आवाज से परे। **एक सेकेण्ड में सर्विस के संकल्प में आये और एक सेकेण्ड में संकल्प से परे स्वरूप में स्थित हो जायें। इस ड्रिल की बहुत आवश्यकता है।** ऐसे नहीं कि शारीरिक भान से निकल ही न सकें। एक सेकेण्ड में कार्य प्रति शारीरिक भान में आये फिर एक सेकेण्ड में अशारीरी हो जायें, जिसकी यह ड्रिल पक्की होगी वह सभी परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं। जैसे शारीरिक ड्रिल सुबह को कराई जाती है वैसे यह अव्यक्त ड्रिल भी अमृतबेले विशेष रूप से करना है। करना तो सारा दिन है लेकिन विशेष प्रैक्टिस करने का समय अमृतबेले है। जब देखो बुद्धि बहुत बिजी है तो उसी समय यह प्रैक्टिस करो। परिस्थिति में होते हुए भी हम अपनी बुद्धि को न्यारा कर सकते हैं। लेकिन न्यारे तब हो सकेंगे जब जो भी कार्य करते हो वह न्यारी अवस्था में होकर करेंगे। अगर उस कार्य में अटैचमेंट होगी तो फिर एक सेकेण्ड में डिटैच नहीं होंगे। इसलिए यह प्रैक्टिस करो। कैसी भी परिस्थिति हो। क्योंकि फाइनल पेपर अनेक प्रकार के भयानक और न चाहते हुए भी अपने तरफ आकर्षित करने वाली परिस्थितियों के बीच होंगे। उनकी भेंट में जो

आजकल की परिस्थितियां है वह कुछ नहीं हैं। जो अन्तिम परिस्थिति आने वाली है, उन परिस्थितियों के बीच पेपर होना है। इसकी तैयारी पहले से करनी है। इसलिए जब अपने को देखो कि बहुत बिजी हूँ, बुद्धि बहुत स्थूल कार्य में बिजी है, चारों ओर सरकमस्टान्सेज अपने तरफ खँचने वाली है तो ऐसे समय पर यह अभ्यास करो। तब मालूम पड़ेगा कहाँ तक हम ड्रिल कर सकते हैं। यह भी बात बहुत आव- श्यक है। इसी ड्रिल में रहते रहेंगे तो सफलता को पायेंगे। एक-एक सबजेक्ट की नम्बर होती है। मुख्य तो यही है। इसमें अगर अच्छे हैं तो नम्बर आगे ले सकते हैं। अगर इस सबजेक्ट में नम्बर कम है तो फाइनल नम्बर आगे नहीं आ सकते। इसलिए सुनाया था कि ज्ञानी तू आत्मा के साथ में स्नेही भी बनना है।

सारा दिन इन संकल्पों से बुद्धि थकी हुई होने कारण निर्णय करने की शक्ति में कमी आ जाती है। इसलिए विजयी नहीं बन सकते। हार खाने का मुख्य कारण यह है। बुद्धि की सफाई नहीं है।

9.11.69 .. .. सभी के दिलों पर विजय किन गुणों से प्राप्त कर सकते हो? सभी को सन्तुष्ट करना। बाप में यह विशेष गुण था। वही फालो करना है। सभी मधुबन की लिस्ट में हो या आलराउन्डर की लिस्ट में हो? एक है हद की लिस्ट, दूसरी है बेहद की लिस्ट। आलराउन्डर और एवररेडी। इसी लिस्ट में मालूम है क्या करना होता है? एक सेकेण्ड में तैयार। संकल्पों को भी एक सेकेण्ड में बन्द करना है। मिलिट्री वालों का हर समय बिस्तरा तैयार रहता है। यह संकल्पों का बिस्तरा भी बन्द करना है। बिस्तरा भी एवररेडी रहना चाहिए। एवररेडी बनने वालों का संकल्पों का बिस्तरा तैयार रहना चाहिए। कोई भी परिस्थिति हो उसका सामना करने के लिए पेट्टी बिस्तरा तैयार हो।

17.11.69 .. .. अट्रैक्टिव भी तब बन सकेंगे जब पहले अपने में विशेषताएं होंगी। आकर्षित बनने लिये हर्षित भी रहना पड़ेगा। हर्षित का अर्थ ही है अतीन्द्रिय सुख में डूमना। ज्ञान को सुमिरण करके हर्षित होना। अव्यक्त स्थिति का अनुभव करते अतीन्द्रिय सुख में डूमना। इसको कहा जाता है हर्षित। हर्षित भी मन से और तन से दोनों से होना है। ऐसा जो हर्षित होता है वही आकर्षित होता है। प्रकृति और माया के अधीन न होकर दोनों को अधीन करना चाहिए। अधीन हो जाने के कारण अपना अधिकार खो लेते हैं। तो अधीन नहीं होना है, अधीन करना है तब अपना अधिकार प्राप्त करेंगे और जितना अधिकार प्राप्त करेंगे उतना प्रकृति और लोगों द्वारा सत्कार होगा तो सत्कार कराने लिये क्या करना पड़ेगा? अधीनपन छोड़कर अपना अधिकार रखो। अधिकार रखने से अधिकारी बनेंगे। लेकिन अधिकार छोड़ कर के अधीन बन जाते हो। छोटी-छोटी बातों के अधीन बन जाते हो। अपनी ही रचना के अधीन बन जाते हैं। लौकिक बच्चे तो भल हैं लेकिन अपनी ही रचना अर्थात् संकल्पों के अधीन हो जाते हैं। जैसे लौकिक रचना से अधीन बनते हो वैसे ही अब भी अपनी रचना संकल्पों के भी अधीन बन जाते हो। अपनी रचना कर्मइन्द्रियों के भी अधीन बन जाते हो। अधीन बनने से ही अपना जन्म सिद्ध अधिकार खो लेते हो ना। तो बच्चे बने और अधिकार हुआ। सर्वदा सुख, शान्ति और पवित्रता का जन्म सिद्ध अधिकार कहते हो ना। अपने आप से पूछो कि बच्चा बना और पवित्रता, सुख, शान्ति का अधिकार प्राप्त किया। अगर अधि-कार छूट जाता है तो कोई बात के अधीन बन जाते हो। तो अब अधीनता को छोड़ो, अपने जन्म सिद्ध अधिकार को प्राप्त करो। यह जो कहते हो कब प्रभाव निकलेगा? यह प्रभाव भी क्यों नहीं निकलता कारण क्या? क्योंकि अब तक कई बातों में खुद ही प्रभावित होते रहते हो। तो जो खुद प्रभावित होता रहता है उनका प्रभाव नहीं निकलता। प्रभाव चाहते हो तो इन सभी बातों में प्रभावित नहीं होना। फिर देखो कितना जल्दी प्रभाव निकलता है। अपनी एक्टिविटी

से अन्दाजा निकाल सकते हो। ऐसा सौभाग्य सारे कल्प में एक ही बार मिलता है। सतयुग में भी लौकिक बाप के साथ रहेंगे। पारलौकिक बाप के साथ नहीं। 84 जन्मों में कितना श्रृंगार किया होगा। भिन्न-भिन्न प्रकार के बहुत श्रृंगार किये? बापदादा का स्नेह यही है कि बच्चों को श्रृंगार कर शोकेस में सृष्टि के सामने लायें। जब सभी सम्पूर्ण बनकर शोकेस अर्थात् विश्व के सामने आयेंगे तो कितने सजे हुए होंगे। सतयुग का श्रृंगार नहीं। गुणों के गहने धारण करने हैं।

28.11.69... .. जितना-जितना शार्ट आर स्पष्ट लिख सकेंगे उतना आन्तरिक स्थिति भी स्पष्ट और क्लीयर होगी। संकल्प को शार्ट करेंगे तो समाचार भी शार्ट होगा और पुरुषार्थ की लाइन क्लीयर होगी। तो समाचार भी स्पष्ट होगा। इसमें सारा पोतामेल आ जायेगा।

6.12.69 ... .. एक है मोड़ने की शक्ति और दूसरी है ब्रेक लगाने की शक्ति। मोड़ना भी है तो कितने समय में? भल मोड़ना आता भी है लेकिन कहाँ-कहाँ समय बहुत लग जाता है। समय न लगे वह संकल्प करना है। संकल्प किया और सिद्ध हुआ। भट्टी से ऐसा बनकर के निकलना है जो हर संकल्प हर शब्द सिद्ध हो। वह लोग रिद्धि-सिद्धि प्राप्त करते हैं लेकिन यहाँ योग की रिद्धि-सिद्धि है। याद की रिद्धि-सिद्धि क्या होती है, वह सीखना है। जो सिद्धि को प्राप्त होते हैं उनके संकल्प, शब्द और हर कर्म सिद्ध होता है। एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं उठेगा। संकल्प वह उठेंगे जो सिद्ध होंगे। सर्विस-एबुल उसको कहा जाता है जिसका एक भी संकल्प बिना सिद्धि के न जाये। अथवा ऐसा कोई संकल्प न उठना चाहिए जो सिद्ध होने वाला न हो। आप के एक-एक संकल्प की वैल्यू है। लेकिन जब अपनी वैल्यू को खुद रखेंगे तब अनेक आत्मायें भी आप रत्नों की वैल्यू को परखेंगी। इस भट्टी से हरेक का चेहरा चैतन्य म्युज़ियम बनकर निकले।

25.12.69... ऐसी भी स्थिति होगी जो किसके मन में जो संकल्प उठेगा वह आपके पास पहले ही पहुँच जायेगा। बोलने सुनने की आवश्यकता नहीं। लेकिन यह तब होगा जब औरों के संकल्पों को रीड करने के लिये अपने संकल्पों के ऊपर फुल ब्रेक होगी। ब्रेक पावरफुल हो। अगर अपने संकल्पों को समेट न सकेंगे तो दूसरों के संकल्पों को समझ नहीं सकेंगे। इसलिये सुनाया था कि संकल्पों का बिस्तर बन्द करते चलो। जितनी-जितनी संकल्पों को समेटने की शक्ति होगी उतना-उतना औरों के संकल्पों को समझने की भी शक्ति होगी। अपने संकल्पों के विस्तार में जाने के कारण अपने को ही नहीं समझ सकते हो तो दूसरों को क्या समझेंगे। इसलिये यह भी स्टेज नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आती रहेगी, यह भी सम्पूर्ण स्टेज की परख है। कहाँ तक सम्पूर्ण स्टेज के नजदीक आये हैं। उनकी परख इन बातों से अपने आप ही करनी है।

22.1.70 ... .. जैसे बापदादा के सामने जब आते हो तो बिना सुनाये हुए भी आप सभी के मन के संकल्प मन के भावों को जान लेते हैं। वैसे ही आप बच्चों को भी यही अन्तिम कोर्स पढ़ना है। जैसे मुख की भाषा कही जाती है वैसे ही फिर रूहों की रूहान होती है। जिसे रूह-रूहान कहते हैं। तो रूह भी रूह से बातें करते हैं। लेकिन कैसे? क्या रूहों की बातें मुख से होती हैं? जैसे जैसे रूहानी स्थिति में स्थित होते जायेंगे वैसे-वैसे रूह रूह की बात को ऐसे ही सहज और स्पष्ट जान लेंगे। जैसे इस दुनिया में मुख द्वारा वर्णन करने से एक दो के भाव को जानते हो। तो इसके लिए किस बात की धारणा की आवश्यकता है? विशेष इस बात की आवश्यकता है जो सदैव बुद्धि की लाइन क्लीयर हो।

जैसे आप लोगों का प्रदर्शनी में है ना – स्विच ऑन करने से जवाब मिलता है। वैसे ही पुरुषार्थ की लाइन क्लीयर होने से संकल्प का स्विच दबाया और किया। ऐसा अनुभव करते जायेंगे। सिर्फ व्यर्थ संकल्पों की कन्ट्रोलिंग पावर

चाहिए। व्यर्थ संकल्प चलने के कारण जो ओरिजिनल बापदादा द्वारा प्रेरणा कहें वा शुद्ध रेस्पॉन्स मिलता है वह मिक्स हो जाता है क्योंकि व्यर्थ संकल्प अधिक होते हैं। अगर व्यर्थ संकल्पों को कंट्रोल करने की पावर है तो उसमें एक वही रेस्पॉन्स स्पष्ट देखने में आता है। वैसे ही अगर बुद्धि ट्रान्सलाइट है तो उसमें हर बात का रिस्पॉन्स स्पष्ट होता जाता है और यथार्थ होता है। मिक्स नहीं। जिनके व्यर्थ संकल्प नहीं चलते वह अपने अव्यक्त स्थिति को जादा बढ़ा सकते हैं। शुद्ध संकल्प भी चलने चाहिए। लेकिन उनको भी कंट्रोल करने की शक्ति होनी चाहिए। व्यर्थ संकल्पों का तूफ़ान मैजोरिटी में जादा है।

23.1.70... जो जास्ती पुरुषार्थ करने की इच्छा रखते हैं उनको मदद भी मिलती है। सिर्फ़ अपनी इच्छा को दृढ़ रखना, तो मदद भी दृढ़ मिलेगी। कितना भी कोई हिलाये लेकिन यह संकल्प पक्का रखना। संकल्प पक्का होगा तो फिर सृष्टि भी ऐसी बनेगी।

23.1.70... जब कोई बलि चढ़ता है तो उसमें अगर ज़रा भी चिल्लाया वा आंखों से बूँद निकली तो उनको देवी के आगे स्वीकार नहीं करायेगे। झाटकू सुना है ना। एक धक से कोई चीज़ को खत्म करने और बार बार काटने में फ़र्क रहता है ना। झाटकू अर्थात् एक धक से खत्म। बापदादा के पास भी कौन से बच्चे स्वीकार होंगे? जिनको मन्सा में भी संकल्प न आये इसको कहा जाता है महाबली। ऐसे महान बलि को ही महान बल की प्राप्ति होती है।

24.1.70... बाप को याद करना सहज है वा मुश्किल? सहज करने में सहज हो जाता है। यह तो मेरा कर्तव्य ही है। फ़र्ज है।, क्या करूँ यह संकल्प आने से मुश्किल हो जाता है। कभी भी अपने अन्दर कमजोर संकल्प को नहीं रहने देना। अगर मन में कमजोर संकल्प उत्पन्न भी हो जायें तो उनको वहाँ ही खत्म कर शक्तिशाली बनाना है।

जब तक कोशिश है तब तक अव्यक्ति कशिश अपने में नहीं आ सकती है। यह भाषा ही कमजोरी की है। सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे यह नहीं कह सकते। उनके संकल्प, वाणी सभी निश्चय के होंगे। ऐसी स्थिति बनानी है। सदैव चेक करो कि संकल्प रूपी फाउन्डेशन मजबूत है। तीव्र पुरुषार्थी की चलन में यह विशेषता होगी जो उनके संकल्प, वाणी, कर्म तीनों ही एक समान होंगे।

25.1.70... बाप सर्वशक्तिमान और बच्चों को संकल्पों को रोकने की भी शक्ति नहीं! बाप सृष्टि को बदलते हैं, बच्चे अपने को भी नहीं बदल सकते! यही सोचो कि बाप क्या है और हम क्या है? तो अपने ऊपर खुद ही शर्म आयेगा। अपनी चलन को परिवर्तन में लाना है। वाणी से इतना नहीं समझेंगे। परिवर्तन देख खुद ही पूछेंगे कि आप को ऐसा बनाने वाला कौन? कोई बदलकर दिखाता है तो न चाहते हुए भी उनसे पूछते हैं क्या हुआ, कैसे किया, तो आप की भी चलन को देख खुद खींचेंगे। मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हो। यह है ब्राह्मण कुल की रीति। जो दूर से ही कोई समझ ले कि यह हम लोगों से न्यारे हैं। न्यारे और प्यारे रहना— यह है पुरुषार्थ।

26.1.70... हर कदम पर, संकल्प पर अटेन्शन। संकल्प जो उठता है वह चेक करो कि यह हमारा संकल्प यथार्थ है वा नहीं? इतना अटेन्शन जब संकल्प पर हो तब वाणी भी ठीक और कर्म भी ठीक रहे। संकल्प और समय दोनों ही संगम युग के विशेष खजाने हैं। जिससे बहुत कमाई कर सकते हो। जैसे स्थूल धन को सोच समझकर प्रयोग करते हैं कि एक पैसा भी व्यर्थ न जाए। वैसे ही यह संगम का समय और संकल्प व्यर्थ न जायें। अगर संकल्प पावरफुल हैं तो अपने ही संकल्प के आधार पर अपने लिये सतयुगी सृष्टि लायेंगे। अपने ही संकल्प कमजोर हैं तो अपने लिये त्रेतायुगी सृष्टि लाते हैं। यह खज़ाना सारे कल्प में फिर नहीं मिलेगा। तो जो मुश्किल से एक ही समय पर मिलने वाली चीज़ है, उसका कितना मूल रखना चाहिए। अभी जो बना सो बना। फिर बने हुए



को देखना पड़ेगा। बना नहीं सकेंगे। अभी बना सकते हो। उसका अब थोड़ा समय है। दूसरों को तो कहते हो बहुत गई थोड़ी रही.लेकिन अपने साथ लगाते हो? समय थोड़ा रहा है लेकिन काम बहुत करना है। अपने आप से दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि आज से फिर यह बातें कभी नहीं रहेंगी। यह संस्कार अपने में फिर इमर्ज नहीं होने देंगे। यह व्यर्थ संकल्प कभी भी उत्पन्न नहीं होने देंगे। जब ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा करेंगे तब ही प्रत्यक्ष फल मिलेगा।

2.2.70... .. सर्विसएबल उनको कहा जाता है जिनका एक सेकेण्ड और एक संकल्प भी बिना सर्विस के ना जाय, हर सेकेण्ड सर्विस के प्रति हो। चाहे अपनी सर्विस चाहे दूसरों की सर्विस। लेकिन जब हो ही सर्विसएबल, तो समय और संकल्प सर्विस के बिगर नहीं जाना चाहिए।

5.3.70... .. एक शब्द बताओ जिसमें व्यर्थ संकल्पों का बीज आ जाये। व्यर्थ संकल्प वा विकल्प जो चलते हैं तो एक ही शब्द बुद्धि में आता है कि यह क्यों हुआ, क्यों से व्यर्थ संकल्पों की क्यू शुरू हो जाती है। अंग्रेजी में भी आप देखेंगे क्यू शब्द की निशानी सभी से टेढ़ी होती है। तो क्यों की क्यू बड़ी लम्बी है। इस क्यू के समाप्ति बाद ही सम्पूर्णता आयेगी। फिर वह क्यू लगेगी। जब क्यों शब्द निकलेगा, फिर ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेंगे। तो अभी क्यों के क्यू को खत्म करना है। समझा।

23.3.70... .. जो सर्व सहयोगी होते हैं, वही सर्व के स्नेही और सहयोगी बनते हैं। ऐसे श्रेष्ठ संकल्प वाले श्रेष्ठ पद के अधिकारी बनते हैं। संकल्प में भी सर्व के कल्याण की भावना हो। सिर्फ अपनी नहीं। ऐसे ही सर्व प्राप्तियों के अधिकारी बनते हैं। ऐसे को बापदादा तथा सभी से सत्कार मिलता है। सत्कार का अधिकार लेना – यह भी बहुत बड़ी बात है।

26.3.70... .. अभी तो जो संकल्प हो वह कर्म हो। संकल्प और कर्म में अन्तर नहीं होना चाहिए। वह बचपन की बातें हैं। संकल्प करना, प्लैन्स बनाना फिर उस पर चलना, अब वह दिन नहीं। अब पढ़ाई कहां तक पहुँची है? अब तो अन्तिम स्टेज पर है।

गुड्डियों का खेल क्या होता है, मालूम है? सारी जीवन उनकी बना देते हैं, छोटे से बड़ा करते, फिर स्वयंवर करते...वैसे बच्चे भी कई बातों की, संकल्पों की रचना करते हैं फिर उसकी पालना करते हैं फिर उनको बड़ा करते हैं फिर उनसे खुद ही तंग होते हैं। तो – यह गुड्डियों का खेल नहीं हुआ? खुद ही अपने से आश्चर्य भी खाते हैं। अब ऐसी रचना नहीं रचनी है। बापदादा व्यर्थ रचना नहीं रचते हैं। और बच्चे फिर व्यर्थ रचना रचकर फिर उनसे हटने और मिटने का पुरुषार्थ करते हैं। इसलिए ऐसी रचना नहीं रचनी है। एक सेकेण्ड की सुल्टी रचना भी क्विक रचते हैं और उल्टी रचना भी इतनी तेज़ी से होती है। एक सेकेण्ड में कितने संकल्प चलते हैं। रचना रचकर उसमें समय देकर फिर उनको खत्म करने लिए प्रयत्न करने की आवश्यकता ही क्या है? अब इस रचना को ब्रेक लगाना है।

2.4.70... .. अब बापदादा ऐसा मास्टर सर्वशक्तिमान बनाने की पढ़ाई पढ़ा रहे हैं, जो किसके भी सूरत में उसकी स्थिति और संकल्प स्पष्ट समझ सको। शक भी न रहे। स्पष्ट मालूम पड़ जाये। यह है अन्तिम पढ़ाई की स्टेज।

निश्चयबुद्धि के पीछेपीछे विजय आती है। वह विजय के पीछे नहीं दौड़ते, विजय उनके पीछे दौड़ती है। हम विजयी बनें इस संकल्प का भी वह त्याग कर लेते। ऐसे सर्वस्व त्यागी हो? सर्वस्व त्यागी और सर्व संकल्पों के त्यागी। सिर्फ सर्व सम्बन्धों का त्याग नहीं। सर्व संकल्पों से भी त्यागी। यही सम्पूर्ण स्थिति है।

ललकार तब होगी जब कोई भी बात को अंगीकार नहीं करंगे। अभी क्या होता है कई बातों को अंगीकार कर लेते हैं, चाहे स्थूल चाहे सूक्ष्म। जब कोई भी संकल्प में भी अंगीकार वा स्वीकार न हो तब ललकार हो।

आप लोग मन में जो संकल्प करते हो वह आपके मन में पीछे आता है उनके पहले बापदादा के पास स्पष्ट हो जाता है। क्योंकि सम्पूर्ण बनने से ड्रामा की हर नूँध स्पष्ट देखने में आती है। इसलिए ड्रामा की नूँध को पहले से ही स्पष्ट देख सकते। इसलिए भविष्य देख करके पहले से बात करते हैं। पहले से जैसे कि पहुंचा ही हुआ है। फिर जब आप लोग पार्ट बजाते हो, बापदादा भी पार्ट बजाते हैं। आप रूहरूहान करने का पार्ट बजाते हो, बापदादा सुनने का पार्ट बजाते हैं। समझा।

मस्तकमणी वह बनते हैं जो सदैव आस्तिक रहते हैं। वह सदैव हां करते हैं। जो आस्तिक हैं, वही मस्तकमणी हैं। कोई भी बात में ना शब्द संकल्प में भी न हो। ऐसे गुण वाले मस्तक में आ जाते हैं।

एकता होने का साधन है – दो बातें लानी पड़ें। एक तो एकनामी बन सदैव हर बात में एक का ही नाम लो, एकनामी और इकॉनामी वाले बनना है। इकॉनामी कौन सी? संकल्पों की भी इकॉनामी चाहिए और समय की भी और ज्ञानके खज़ाने की भी इकॉनामी चाहिए। सभी प्रकार की इकॉनामी जब सीख जायेंगे। फिर क्या हो जायेगा? फिर मैं समाकर एक बाप में सभी भिन्नता समा जायेगी। साथ-साथ इकॉनामी करने से व्यर्थ संकल्प नहीं चलेंगे। और न व्यर्थ संकल्पों का टक्कर होगा।

29.5.70... .. समझाया था ना कि फरमान बरदार किसको कहा जाता है? जिसका संकल्प भी बिगर फरमान के नहीं चलता। ऐसे फरमानबरदार को ही तीव्र पुरुषार्थी कहा जाता है।

7.6.70... .. संकल्पों को कैच करने की प्रैक्टिस होगी तो संकल्प रहित भी सहज बन सकेंगे। ज्यादा संकल्प तब चलाना पड़ता है जब किसके संकल्प को परख नहीं सकते हैं। लेकिन हरेक के संकल्पों को रीड करने की प्रैक्टिस होगी तो व्यर्थ संकल्प ज्यादा नहीं चलेंगे। और सहज ही एक संकल्प में एक रस स्थिति में एक सेकेण्ड में स्थित हो जायेंगे। तो संकल्पों को रीड करना यह भी एक सम्पूर्णता की निशानी है।

सभी के हर संकल्प भविष्य के लॉ बन रहे हैं। तो कितना ध्यान देना चाहिए!

जितना हो सके उतना अपना समय व्यक्तभाव से हटाकर अव्यक्त स्थिति में रहना है। अव्यक्त स्थिति से सर्व संकल्प सिद्ध हो जाते हैं। इसमें मेहनत कम और प्राप्ति अधिक होती है।

कई लोग अपने घर को सजाने के लिए अपने बचपन से लेकर, अपने भिन्न-भिन्न रूपों का यादगार रखते हैं। तो आप अपने मन मन्दिर में अपने सम्पूर्ण स्वरूप की मूर्ति, भविष्य के अनेक जन्मों की मूर्ति— यां स्पष्ट रूप में सामने रखो। फिर और कोई तरफ संकल्प नहीं जायेगा।

7.6.70... ..बिन्दु रूप में अगर ज्यादा नहीं टिक सकते तो इसके पीछे समय न गंवाओ। बिन्दी रूप में तब टिक सकेंगे जब पहले शुद्ध संकल्प का अभ्यास होगा। अशुद्ध संकल्पों को शुद्ध संकल्पों से हटाओ। जैसे कोई एक्सीडेन्ट होने वाला होता है। ब्रेक नहीं लगती तो मोड़ना होता है। बिन्दी रूप है ब्रेक। अगर वह नहीं लगता तो व्यर्थ संकल्पों से बुद्धि को मोड़कर शुद्ध संकल्पों में लगाओ। कभी-कभी ऐसा मौका होता है जब बचाव के लिए ब्रेक नहीं लगाई जाती है, मोड़ना होता है। कोशिश करो कि सारा दिन शुद्ध संकल्पों के सिवाय कोई व्यर्थ संकल्प न चले। जब यह सब्जेक्ट पास करेंगे तो फिर बिन्दी रूप की स्थिति सहज रहेगी।

19.6.70... .. संकल्पों को ब्रेक लगाने का मुख्य साधन कौन सा है? मालूम है? जो भी कार्य करते हो तो करने के पहले सोचकर फिर कार्य शुरू करो। जो कार्य करने जा रहा हूँ वह बापदादा का कार्य है, मैं निमित्त हूँ। जब कार्य समाप्त करते हो तो जैसे – यज्ञ रचा जाता है तो समाप्ति समय आहुति दी जाती है। इस रीति जो कर्त्तव्य किया और जो परिणाम निकला। वह बाप को समर्पण, स्वाहा कर दिया फिर कोई संकल्प नहीं। निमित्त बन कार्य

किया और जब कार्य समाप्त हुआ तो स्वाहा किया। फिर संकल्प क्या चलेगा? जैसे आग में चीज़ डाली जाती है तो फिर नाम निशान नहीं रहता वैसे हर चीज़ की समाप्ति में सम्पूर्ण स्वाहा करना है। फिर आपकी ज़िम्मेवारी नहीं। जिसके अर्पण हुए फिर ज़िम्मेवार वह हो जाते हैं। फिर संकल्प काहे का।

19.6.70... इस संगम के युग का एक-एक संकल्प एक-एक कर्म 21 जन्म के बैंक में जमा होता है। इतना अटेंशन रखकर फिर संकल्प भी करना। जो करूंगा वह जमा होगा। तो कितना जमा होगा। एक संकल्प भी व्यर्थ न हो। एक संकल्प भी व्यर्थ हुआ तो जमा में कट जाता है। तो जमा जब करना होता है तो एक भी व्यर्थ न हो। कितना पुरुषार्थ करना है! संकल्प भी व्यर्थ न जाये। समय तो छोड़ो। अब पुरुषार्थ इस सीमा पर पहुंच रहा है। जैसे पढ़ाई दिन प्रतिदिन ऊंची होती जाती है तो — यह भी ऐसे है। बड़े क्लास में पढ़ रहे हो ना।

2.7.70... शेरनी शक्तियों का एक भी संकल्प या एक भी बोल व्यर्थ नहीं जा सकता। जो कहा वह किया। संकल्प और कर्म में अन्तर नहीं होता। क्योंकि संकल्प भी जीवन का अनमोल खजाना है। जैसे स्थूल खजाने को व्यर्थ नहीं करते हो वैसे शिव शक्तियाँ जिनकी मूर्त में दोनों गुण प्रत्यक्ष रूप में हैं उन्हीं का एक भी संकल्प व्यर्थ नहीं होता। एक एक संकल्प से स्वयं का और सर्व का कल्याण होता है। एक सेकेण्ड में, एक संकल्प से भी कल्याण कर सकते हैं। इसलिए शक्तियों को कल्याणी कहते हैं।

11.7.70... योगुक्त और निश्चयबुद्धि बनकर के कर्तव्य करने से सफलता प्राप्त हो ही जाती है। पहले से ही अगर यह संकल्प बुद्धि में होता है कि करते हैं परन्तु मिलता मुश्किल है। तो यह संकल्प भी निश्चय की परसेन्ट को कम कर देता है। निश्चाबुद्धि हो करें तो फेल नहीं होंगे। समस्याओं का सामना करने से सफलता मिलती है। विघ्न तो आयेंगे लेकिन लगन की अग्नि से विघ्न भस्म हो जायेंगे।

24.7.70... जैसे जब कोई ऐसा दिन होता है तो सारे चलते-फिरते हुए ट्रैफिक को भी रोक कर तीन मिनट साइलेन्स की प्रैक्टिस कराते हैं। सारे चलते हुए कार्य को स्टॉप कर लेते हैं। आप भी कोई कार्य करते हो वा बात करते हो तो बीच-बीच में यह संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करना चाहिए। एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच में रोक कर भी यह प्रैक्टिस करना चाहिए। अगर यह प्रैक्टिस नहीं करेंगे तो बिन्दू रूप की पावरफुल स्टेज कैसे और कब ला सकेंगे? इसलिए यह अभ्यास करना आवश्यक है।

जैसे आजकल जनसंख्या का हिसाब निकालते हैं ना कि एक दिन में कितनी वृद्धि होती है। यहाँ फिर यह संकल्पों की स्पीड तेज होगी। एक तरफ संकल्पों की, दूसरी तरफ ईविल स्पिरिट्स (आत्माओं) की भी वृद्धि होगी। लेकिन इसके लिए एक विशेष अटेंशन रखना पड़े, जिससे सर्व बातों का सामना कर सकेंगे। वह यह है कि जो भी बात होती है उसको स्पष्ट समझने के लिए दो शब्द याद रखना है। एक अन्तर और दूसरा मन्त्र। जो भी बात होती है उसका अन्तर करो कि यह यथार्थ है या अयथार्थ है। बापदादा के समान है वा नहीं है। बाप समान है वा नहीं? एक तो हर समय अन्तर(भेंट) करके उसका एक सेकेण्ड में नाट या तो डाट। करना नहीं है तो फिर डाट देंगे, अगर करना है तो करने लग जायेंगे। तो नाट और डाट यह भी स्मृति में रखना है। अन्तर और मन्त्र यह दोनों प्रैक्टिकल में होंगे।

30.7.70... अभी-अभी संकल्प किया अभी-अभी कर्म में लाया। संकल्प और कर्म में महान अन्तर नहीं होना चाहिए। महारथियों का अर्थ ही है महानता। तो महानता सिर्फ संकल्प में नहीं लेकिन सर्व में महानता। यह है महारथियों की निशानी। संकल्प को प्रैक्टिकल में लाने के लिए सोच करने में समय नहीं लगता। क्योंकि महारथियों के संकल्प भी ऐसे होते हैं जो संकल्प प्रैक्टिकल में सम्भव हो सकते हैं। यह करें न करें, कैसे करें क्या

होगा यह सोचने की उनको आवश्यकता नहीं है। संकल्प ही ऐसे उत्पन्न होंगे जो संकल्प उठा और सिद्ध हुआ। इससे अपनी स्टेज की परख कर सकते हो।

6.8.70... सुनाया था ना कि “कब” शब्द भी खत्म। हर बात में “अब” हो। इतना परिवर्तन वाणी, कर्म और संकल्प में लाना है। संकल्प में भी यह न आये कि कब कर लेंगे या कब हो जायेगा। नहीं। अब हो ही जायेगा। ऐसा परिवर्तन करना है तब सर्विस की सफलता है।

6.8.70... पास विद आनर अर्थात् मन में भी संकल्पों से सजा न खायें। धर्मराज की सजाओं की तो बात पीछे है। परन्तु अपने संकल्पों की भी उलझन अथवा सजाओं से परे। इसको कहते हैं पास विद आनर। अपनी गलती से स्वयं को सजा देते हैं। उलझते हैं, पुकारते हैं, मूँझते हैं इससे भी परे। पास विद आनर इसको कहते हैं।

22.10.70... हरेक के एक-एक सेकेण्ड के संकल्प का चित्र अव्यक्त वतन में स्पष्ट होता रहता है। इसलिए बेपरवाह नहीं बनना है। ईश्वरीय मर्यादाओं में बेपरवाह नहीं बनना है। आसुरी मर्यादाओं वा माया से बेपरवाह बनना है न कि ईश्वरीय मर्यादाओं से बेपरवाह बनना है।

23.10.70... जैसे साकार में साथ होता है तो वेरीफाय कराने बाद प्रैक्टिकल में आते हैं। वैसे ही बापदादा को अवक्त रूप से सदैव सम्मुख वा साथ रखने से हर संकल्प और हर कार्य वेरीफाय कराकर फिर करने से कोई भी व्यर्थ विकर्म नहीं होगा।

5.11.70... कम्पलीट बनने में व्यर्थ संकल्पों के तूफान विघ्न डालते हैं। यह मैजारिटी की कम्पलेन है। अब इसको मिटाने लिये आज युक्ति बताते हैं।

रोज अमृतवेले सारे दिन की अपनी अपाइन्टमेंट की डायरी बनाओ। अगर अपने मन को हर समय अपाइन्टमेंट में बिजी रखेंगे तो बीच में व्यर्थ संकल्प समय नहीं ले सकेंगे। अपाइन्टमेंट से फ्री रहते हो तब व्यर्थ संकल्प समय ले लेते हैं। तो समय की बुकिंग करने का तरीका सीखो। अपने आप की अपाइन्टमेंट खुद ही बनाओ कि आज सारे दिन में क्या- क्या करना है। फिर समय सफल हो जायेगा। मन को किसमें अपाइन्ट करना है। इसके लिये 4 बातें बताई हैं। 1. मिलन, 2. वर्णन, 3. मगन, 4. लगन। लगन लगाने में भी समय बहुत जाता है ना। तो मगन की अवस्था में कम रहते हैं। इसलिए लगन, मगन, मिलन और वर्णन। वर्णन है सर्विस, मिलन है रुह-रूहान करना। बापदादा से मिलते हैं ना। तो इन चार बातों में अपने समय को फिक्स करो। अगर रोज की अपनी दिनचर्या फिक्स करने लिये अपाइन्टमेंट सारे समय की फिक्स होगी तो बीच में व्यर्थ संकल्पों को डिस्टर्ब करने का समय ही नहीं मिलेगा।

9.12.70... सदैव यही दृढ़ संकल्प रहे कि यह मैं ही तो था। 5000 वर्ष की बात इतनी स्पष्ट अनुभव में आये जैसे कल की बात। इसको कहते हैं कैचिंग पावर। अपनी स्मृति को इतना श्रेष्ठ और स्पष्ट बनाकर जाना। भट्टी में आये हो ना। सदैव अपना आदि स्वरूप और आदि संस्कार सामने दिखाई दे। अपनी स्मृति को पावरफुल बनाने से वृत्ति और दृष्टि स्वतः ही पावरफुल बन जायेंगी। फिर यह कुमार ग्रुप क्या बन जायेंगे? अनुकुमार अर्थात् अनोखे। हरेक के दो नयनों से दो स्वरूप का साक्षात्कार होगा। कौन से दो स्वरूप? सुनाया था ना कि निराकारी और दिव्यगुणधारी। फरिश्ता रूप और दैवी रूप। हरेक ऐसे अनुभव करेंगे वा हरेक से ऐसा अनुभव होगा जैसे कि चलता फिरता लाइट हाउस और माइट हाउस हो।

परिवर्तन संकल्प

31.12.70... आखँ खुलते ही मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, यह है आदि समय का आदि परिवर्तन संकल्प, इसी आदि संकल्प के साथ सारे दिन की दिनचर्या का आधार है।

जैसे सृष्टि के आदि में ब्रह्म से देव-आत्मा सतोप्रधान आत्मा पार्ट में आयेगी, ऐसे हर रोज़ अमृतवेला आदिकाल है। इसलिए इस आदिकाल के समय भी उठते ही पहला संकल्प याद में ब्राह्मण आत्मा पधारे – बाप से मिलन मनाने के लिए। यही समर्थ संकल्प, श्रेष्ठ संकल्प, श्रेष्ठ बोल, श्रेष्ठ कर्म का आधार बन जायेगा। पहला परिवर्तन – ‘मैं कौन!’ तो यही फाउन्डेशन परिवर्तन शक्ति का आधार है।

अमृतवेले के बाद अपने देह के कार्यक्रम करते हुए कौन-से परिवर्तन की आवश्यकता है? जिससे निरन्तर सहजयोगी बन जायेंगे। सदा यह संकल्प रखो – ‘कि मैं चैतन सर्वश्रेष्ठ मूर्ति हूँ और यह मन्दिर है, चैतन मूर्ति का यह देह चैतन मन्दिर है। मन्दिर को सजा रहे हैं। इस मन्दिर के अन्दर स्वयं बापदादा की प्रिय मूर्ति विराजमान है। जिस मूर्ति के गुणों की माला स्वयं बापदादा सिमरण 3 करते हैं। जिस मूर्ति की महिमा स्वयं बाप करते हैं। ऐसी विशेष मूर्ति का विशेष मन्दिर है।’ जितनी मूर्ति वैल्यूबल होती है मूर्ति के आधार पर मन्दिर की भी वैल्यू होती है। तो परिवर्तन क्या करना है? मेरा शरीर नहीं लेकिन बापदादा की वैल्यूबल मूर्ति का यह मन्दिर है। स्वयं ही मूर्ति स्वयं ही मन्दिर का ट्रस्टी बन मन्दिर को सजाते रहो। इस परिवर्तन संकल्प के आधार पर मेरापन अर्थात् देहभान परिवर्तन हो जाओगा। इसके बाद – अपना गॉडली स्टूडेंट रूप सदा स्मृति में रहे। इसमें विशेष परिवर्तन संकल्प कौन-सा चाहिए? जिससे हर सेकेण्ड की पढ़ाई हर अमूल्य बोल की धारणा से हर सेकेण्ड वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ प्रालब्ध बन जाए। इसमें सदा यह परिवर्तन संकल्प चाहिए कि मैं साधारण स्टूडेंट नहीं, साधारण पढ़ाई नहीं लेकिन डॉयरेक्ट बाप रोज दूरदेश से हमको पढ़ाने आते हैं। भगवान के वर्षास हमारी पढ़ाई है। श्री-श्री की श्रीमत् हमारी पढ़ाई है, जिस पढ़ाई का हर बोल पद्यों की कमाई जमा कराने वाला है। अगर एक बोल भी धारण नहीं किया तो बोल मिस नहीं किया लेकिन पद्यों की कमाई अनेक जन्मों की श्रेष्ठ प्रालब्ध वा श्रेष्ठ पद के प्राप्ति में कमी की। ऐसा परिवर्तन संकल्प ‘भगवान बोल रहे हैं’, हम सुन रहे हैं। मेरे लिए बाप टीचर बनकर आये हैं। मैं स्पेशल लाडला स्टूडेंट हूँ – इसलिए मेरे लिए आये हैं। कहाँ से आये हैं, कौन आये हैं, और क्या पढ़ा रहे हैं ? यही परिवर्तन श्रेष्ठ संकल्प रोज़ क्लास के समय धारण कर पढ़ाई करो। साधारण क्लास नहीं, सुनाने वाले व्यक्ति को नहीं देखो। लेकिन बोलने वाले बोल किसके हैं, उसको सामने देखो। व्यक्त में अव्यक्त बाप और निराकारी बाप को देखो। तो समझा – क्या परिवर्तन करना है। आगे चलो – पढ़ाई भी पढ ली – अभी का करना है? अभी सेवा का पार्ट आता। सेवा में किसी भी प्रकार की सेवा चाहे प्रवृत्ति की, चाहे व्यवहार की, चाहे ईश्वरी सेवा, प्रवृत्ति चाहे लौकिक सम्बन्ध हो, कर्मबन्धन के आधार से सम्बन्ध हो लेकिन प्रवृत्ति में सेवा करते परिवर्तन संकल्प ही करो – मरजीवा जन्म हुआ अर्थात् लौकिक कर्मबन्धन समाप्त हुआ। कर्मबन्धन समझकर नहीं चलो। कर्मबन्धन, कर्मबन्धन सोचने और कहने से ही बन्ध जाते हो। लेकिन यह लौकिक कर्मबन्धन का सम्बन्ध अब मरजीवे जन्म के कारण श्रीमत् के आधार पर सेवा के सम्बन्ध का आधार है। कर्मबन्धन नहीं, सेवा का सम्बन्ध है। सेवा के सम्बन्ध में वैरायटी प्रकार की आत्माओं का ज्ञान धारण कर, सेवा का सम्बन्ध समझ करके चलेंगे तो बन्धन में तंग नहीं होंगे। लेकिन अति पाप आत्मा, अति अपकारी आत्मा, बगुले के ऊपर भी नफरत नहीं, घृणा नहीं, निरादर नहीं लेकिन विश्व-कलाणकारी स्थिति में स्थित हो रहमदिल बन तरस की भावना रखते हुए सेवा का सम्बन्ध समझकर सेवा करेंगे और जितने ही होपलेस केस की सेवा करेंगे तो उतने ही प्राइज़ के अधिकारी बनेंगे।

नामीग्रामी विश्व-कल्याणकारी गाये जायेंगे। पीसमेकर की प्राइज़ लेंगे। तो प्रवृत्ति में कर्मबन्धन के बजाए सेवा का सम्बन्ध है – यह परिवर्तन संकल्प करो।

कर्म अर्थात् व्यवहार योग अर्थात् परमार्थ। परमार्थ अर्थात् परमापिता की सेवा अर्थ कर रहे हैं। तो व्यवहार और परमार्थ दोनों साथ-साथ रहे। इसको कहा जाता है श्रीमत् पर चलने वाले कर्मयोगी। व्यवहार के समय परिवर्तन क्या करना है? मैं सिर्फ व्यवहारी नहीं लेकिन व्यवहारी और परमार्थी अर्थात् जो कर रहा हूँ वह ईश्वरीय सेवा अर्थ कर रहा हूँ। व्यवहारी और परमार्थी कम्बाइंड हूँ। यही परिवर्तन संकल्प सदा स्मृति में रहे तो मन और तन डबल कमाई करते रहेंगे। स्थूल धन भी आता रहेगा। और मन से अविनाशी धन भी जमा होता रहेगा। एक ही तन द्वारा एक ही समा मन और धन की डबल कमाई होती रहेगी। तो सदा यह याद रहे कि डबल कमाई करने वाला हूँ। इस ईश्वरीय सेवा में सदा निमित्त मात्र का मंत्र वा करनहार की स्मृति का संकल्प सदा याद रहे। करावनहार भूले नहीं। तो सेवा में सदा निर्माण ही निर्माण करते रहेंगे। अच्छा ....।

नया वर्ष, नये संस्कार, नया स्वभाव, नया उमंग उत्साह, विश्व को नया बनाने का श्रेष्ठ संकल्प, सर्व को मुक्ति जीवनमुक्ति का वरदान देने का सदा श्रेष्ठ संकल्प ऐसे नवीनता की मुबारक हो, बधाई हो। पुराने संस्कारों, पुरानी चाल, पुरानी ढाल, पुराने की विदाई की बधाई हो।

22.1.71... टीचर्स द्वारा यह शब्द अब तक नहीं निकलने चाहिए कि यह मेरी नेचर है। यह कहना शक्तिहीनता की निशानी है। 'पुरुषार्थ' शब्द, पुरुषार्थ शब्द से यूज नहीं करते हैं। परन्तु 'पुरुषार्थ' शब्द पुरुषार्थ से छुड़ाने का साधन बना दिया है। इसलिए आप लोगों के शब्द रचना द्वारा भी आपके सामने आते हैं। इसलिए सदैव ऐसे समझो जैसे कोई गुम्बज़ में जो आवाज़ किया जाता है वह लौटकर अपने पास आ जाता है। इतना अटेंशन अपने संकल्पों पर भी रखना है।

26.1.71... वैल्युबल का मुख्य गुण यह होता है जो उसको स्वयं भी अपने समय की, संकल्प की और सर्विस की वैल्यु होती है। इसलिए उनके संकल्प, शब्द वा उस द्वारा जो सर्विस होती है उसकी और भी वैल्यु रखते हैं वा ड्रामा अनुसार उनकी वैल्यु हो जाती है। सभी उनको वैल्युबल की दृष्टि से देखते हैं।

1.2.71... सदैव सिर्फ दो बातें कर्म करते हुए याद रखो। फिर ऐसी प्रैक्टिस हो जायेगी जो किसके मन में आये हुए संकल्प को ऐसे कैच करेंगे जैसे मुख से की हुई बात सरल रीति से कैच कर सकते हो। वैसे मन के संकल्प को सहज ही कैच करेंगे। लेकिन यह तब होगा जब समानता के नज़दीक आयेंगे। एक-दो के स्वभाव में भी अगर कोई की समानता होती है तो उनके भाव को सहज समझ सकते हैं। तो यह भी बाप की समानता के समीप जाने से मन के संकल्प ऐसे कैच कर सकेंगे जैसे मुख द्वारा वाणी। इसके लिए सिर्फ अपने संकल्पों की मिक्सचर्टी नहीं होनी चाहिए। संकल्पों के ऊपर कंट्रोलिंग पावर होनी ज़रूरी है। जैसे बाहर की कारोबार कंट्रोल करने की कंट्रोलिंग पावर किसमें कितनी होती है, किसमें कितनी होती है। ऐसे ही यह मन के संकल्पों की कारोबार को कंट्रोल करने की कंट्रोलिंग पावर नम्बरवार है। तो वह दो बातें कौनसी हैं? एक तो सदैव इह स्मृति में रखो कि मैं हर समा, हर सेकेण्ड, हर कर्म करते हुए स्टेज पर हूँ। हर कर्म पर अटेंशन रहने से सम्पूर्ण स्टेज के नज़दीक आते जाँगे। दूसरी बात -- सदैव अपने वर्तमान और भविष्य के स्टेट्स को स्मृति में रखो। तो एक स्टेज, दूसरा स्टेट्स – यह दोनों बातें सदैव स्मृति में रखने से कोई भी ऐसा कार्य नहीं होगा जो स्टेट्स के विरुद्ध हो। और, साथ-साथ स्टेज पर अपने को समझने से सदैव ऊंच कर्तव्यों को करने की प्रेरणा मिलेगी। यह दो बातें सदैव स्मृति में रखते चलो।

1.3.71... .. संकल्प की सिद्धि कैसे आयेगी, मालूम है? संकल्पों की सिद्धि न होने का कारण क्या है? क्योंकि अभी संकल्प व्यर्थ बहुत चलते हैं। व्यर्थ संकल्प मिक्स होने से समर्थ नहीं बन सकते हो। जो संकल्प रचते हो उसकी सिद्धि नहीं होती है। व्यर्थ संकल्पों की सिद्धि तो हो नहीं सकती है ना। तो संकल्पों की सिद्धि प्राप्त करने के लिए मुख्य पुरुषार्थ यह है – व्यर्थ संकल्प न रच समर्थ संकल्पों की रचना करो। समझा?

5.3.71... .. विजयी रत्न हो ना। तो कब भी पुरुषार्थ में अपने आप में संशय बुद्धि नहीं बनना चाहिए। संशय-बुद्धि होने से ही हार होती है। अपना ही संशय का संकल्प मायाजीत नहीं बनने देता है।

सदैव यह स्मृति में रखकर कदम उठाना कि विजय तो हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। अधिकारी बनकर कर्म करने से विजय अर्थात् सफलता का अधिकार अवश्य ही प्राप्त होता है। इसमें संकल्प उठाने की आवश्यकता ही नहीं है। स्वप्न में भी कभी यह संकल्प नहीं आना चाहिए कि 'ना मालूम विजय होगी या नहीं?' मास्टर नालेजफुल के मुख से 'ना मालूम शब्द' नहीं निकलना चाहिए। जब सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को, तीनों कालों को जान गये हो, मास्टर नालेजफुल बन गये हो; तो ऐसे मास्टर नालेजफुल के मुख से यह शब्द नहीं निकल सकता कि 'ना मालूम'।

9.4.71... .. यह ग्रुप जितना ही बड़ा है उतना ही शक्तिशाली स्वरूप बनकर चारों ओर फैल जाओगे तो फिर शक्तिाँ जय-जयकार की आवाज़ बुलन्द कर सकती हैं। संस्कारों के अधीन भी नहीं होना है। कोई के स्नेह के अधीन भी नहीं होना है। वायुमण्डल के अधीन भी नहीं। समझा? अब ऐसे शब्द मुख से तो क्या मन में संकल्प रूप में भी न आएँ कि – क्या करें, मजबूर हूँ। चाहे कोई व्यक्ति ने वा वायुमण्डल ने मजबूर किया, लेकिन नहीं। मजबूर नहीं होना है परन्तु मजबूत होना है। समझा?

15.4.71... .. हर कर्म व हर संकल्प की जो उत्पत्ति होती है वह त्रिकालदर्शी बनकर फिर संकल्प को कर्म में लाते हो? सदैव तीनों ही कार्य साथ-साथ ज़रूर चलते हैं। क्योंकि अगर पुराने संस्कार वा स्वभाव वा व्यर्थ संकल्पों का विनाश ही नहीं करेंगे तो नई रचना कैसे होगी। और अगर नई रचना करते हो, उनकी पालना न करेंगे तो प्रैक्टिकल कैसे दिखाई देंगे। तो त्रिमूर्ति बाप के त्रिमूर्ति बच्चे तीनों ही कर्त्तव्य साथ-साथ कर रहे हो। विनाश करते हो विकर्मों अथवा व्यर्थ संकल्पों का। यह तो और भी अब तेजी से करना पड़े। सिर्फ अपने व्यर्थ संकल्प वा विकर्म भस्म नहीं करने हैं लेकिन तुम तो विश्व-कल्याणकारी हो। इसलिए सारे विश्व के विकर्मों का बोझ हल्का करना वा अनेक आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों को मिटाना—यह शक्तियों का कर्त्तव्य है।

जब मास्टर त्रिकालदर्शी बन संकल्प को कर्म में लायेंगे। जो भी संकल्प उत्पन्न होता है, संकल्प को ही चेक करो। मास्टर त्रिकालदर्शी की स्टेज पर हूँ? अगर उस स्टेज पर स्थित होकर कर्म करेंगे तो कोई भी कर्म व्यर्थ नहीं होगा। विकर्म की तो बात ही नहीं है। अभी विकर्म के खाते से ऊपर आ गये हो। विकल्प भी खत्म तो विकर्म भी खत्म। अभी है व्यर्थ कर्म और व्यर्थ संकल्प की बात। इन व्यर्थ को बदलकर समर्थ संकल्प और समर्थ कार्य करना है। इसको कहते हैं सम्पूर्ण स्टेज।

मन्सा महादानी बनने वाले को प्रत्यक्षफल यहीं प्राप्त होता है – एक तो वह अपनी मन्सा अर्थात् संकल्पों के ऊपर एक सेकेण्ड में विजयी बनता है अर्थात् संकल्पों के ऊपर विजयी बनने की शक्ति प्राप्त होती है। और, कितना भी कोई चंचल संकल्प वाला हो यानी एक सेकेण्ड भी उनका मन एक संकल्प में न टिक सके – ऐसे चंचल संकल्प वाले को भी अपनी विजय की शक्ति में टेम्पेरी टाइम के लिए शांत व चंचल से अचल बना देंगे।

जो मन्सा के महादानी होंगे उनके संकल्प में इतनी शक्ति होती है जो संकल्प किया उसकी सिद्धि मिली। तो मन्सा-महादानी संकल्पों की सिद्धि को प्राप्त करने वाला बन जाता है। जहाँ संकल्प को चाहे वहाँ संकल्पों को टिका सकते हैं। संकल्प के वश नहीं होंगे लेकिन संकल्प उनके वश होता है। जो संकल्पों की रचना रचे, वह रच सकता है। जब संकल्प को विनाश करना चाहे तो विनाश कर सकते हैं। तो ऐसे महादानी में संकल्पों के रचने, संकल्पों को विनाश करने और संकल्पों की पालना करने की तीनों ही शक्ति होती है। तो यह है मन्सा का महादान।

18.4.71... .. अपने को आप ही चेक करो कि आज हमने बुद्धि द्वारा कोई भी अशुद्ध संकल्प का भोजन तो नहीं पान किया? महान आत्माओं का आहार-विहार यही तो देखा जाता है। तो आज सारे दिन में बुद्धि का आहार कौनसा रहा? अगर कोई अशुद्ध संकल्प वा विकल्प वा व्यर्थ संकल्प भी बुद्धि ने ग्रहण किया तो समझना चाहिए कि आज मेरे आहार में अशुद्धि रही। जो महान आत्मा होते हैं उनके हर व्यवहार अर्थात् चलन से सर्व आत्माओं को सुख का दान देने का लक्ष्य होता है। वह सुख देता और सुख लेता है।

19.4.71... .. मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाय आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई न दे वा स्मृति में न आये। ऐसे निरन्तर तपस्वी बनना है, जिस भी संस्कार वा स्वभाव वाले चाहे रजोगुणी, चाहे तमोगुणी आत्मा हो। संस्कार वा स्वभाव के वश हो, आपके पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो लेकिन हर आत्मा के प्रति सेवा अर्थात् कल्याण का संकल्प वा भावना उत्पन्न हो।

29.4.71... .. यह समा और संकल्प। जैसे बाप ने पूरा ही अपने को विल किया, वैसे आप लोगों की जो स्मृति है उसको भी पूरा विल करना है। जैसे स्थूल खज़ाने से जो चाहें वह प्राप्त कर सकते हैं। वैसे ही इस समय का यह खज़ाना 'समय और संकल्प' -- इससे भी आप जो प्राप्त करना चाहो वह इन्हीं द्वारा प्राप्त कर सकते हो। सारी प्राप्ति का आधार संगमगुण का समय और श्रेष्ठ स्मृति अर्थात् याद है। यही खज़ाना है। इसको ही विल करना है।

20.5.71... .. वरदाता बनने के लिए मुख्य पुरुषार्थ यही करना पड़े, बार-बार जो भक्ति मार्ग में गायन किया है कि वारी जाऊं। यह गायन अगर प्रैक्टिकल में कर लो तो जिसके ऊपर वारी जाते हो वह आपको भी सर्व वरदान देकर वरदातामूर्त बना देते हैं। तो हर समय, हर कर्म में, हर संकल्प में यह सोचो कि 'वारी जाऊं' का जो वचन दिया था वह पालन कर रही हूँ। तो बाप वरदातामूर्त है ना। आप सभी भी बाप समान वरदातामूर्त बन जाते हो। तो इतनी चेकिंग करते हो? एक संकल्प भी किसके प्रति न हो, जो भी संकल्प उठता है उसमें बाप के प्रति कुर्बान का, वारी जाने का रहस्य भरा हुआ हो। ऐसी चेकिंग करते रहो तो फिर माया सामना करने का साहस रख सकेगी? सामना करने का साहस नहीं रखेगी, लेकिन बार-बार नमस्कार कर विदाई लेगी। समझा?

24.5.71... .. अगर निश्चय में, स्वरूप की स्मृति में ही कमजोरी होगी तो कर्म में भी कमजोरी आ जायेगी। तो सदैव हर संकल्प निश्चाबुद्धि का होना चाहिए। कर्म करने के पहले यह निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है। अनेक कल्प विजयी बने हो। जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हो, तो अब वह रिपीट नहीं करेंगे? वही बना हुआ कर्म दुबारा रिपीट करना है। इसलिए कहा जाता है कि बना-बना...।

30.5.71... .. चाहना के साथ समर्थी भी चाहिए और समर्थी आोगी स्मृति से। अगर स्मृति कमजोर है तो फिर जो संकल्प करते हो वह सिद्ध नहीं हो पाता है। जो कर्म करते हो वह भी सफल नहीं हो पाते हैं। तो स्मृति रखना मुश्किल है वा सहज है? जो सहज बात होती है वह निरन्तर भी रह सकती है। स्मृति भले निरन्तर रहती भी है



लेकिन एक होती है साधारण स्मृति, दूसरी होती है पावरफुल स्मृति। साधारण रूप में तो स्मृति रहती है लेकिन पावरफुल स्मृति रहनी चाहिए। पावरफुल स्मृति, जिससे बिल्कुल वह स्वरूप बन जाए और स्वरूप की सिद्धि 'सफलता' मिले, वह कितना समय रहती है। इसकी प्रैक्टिस कर रहे हो ना? निरन्तर समझो कि हम ईश्वरीय सर्विस पर हैं। भले कर्मणा सर्विस भी कर रहे हो, फिर भी समझो- मैं ईश्वरीय सर्विस पर हूँ। भले भोजन बनाते हो, वह है तो स्थूल कार्य लेकिन भोजन में ईश्वरीय संस्कार भरना, भोजन को पावरफुल बनाना, वह तो ईश्वरीय सर्विस हुई ना। 'जैसा अन्न वैसा' मन कहा जाता है। तो भोजन बनाते समय ईश्वरीय स्वरूप होगा तब उस अन्न का असर मन पर होगा। तो भोजन बनाने का स्थूल कार्य करते भी ईश्वरयि सर्विस पर हो ना! आप लिखते भी हो – आन गॉडली सर्विस ओनली। तो उसका भावार्थ क्या हुआ? हम ईश्वरीय सन्तान सिर्फ और सदैव इसी सर्विस के लिए ही हैं। भल उसका स्वरूप स्थूल सर्विस का है लेकिन उसमें भी सदैव ईश्वरीय सर्विस में हूँ। जब तक यह ईश्वरीय जन्म है तब तक हर सेकेण्ड, हर संकल्प, हर कार्य ईश्वरीय सर्विस है। वह लोग थोड़े टाइम के लिए कुर्सी पर बैठ अपनी सर्विस करते हैं, आप लोगों के लिए यह नहीं है। सदैव अपने सर्विस के स्थान पर कहाँ भी हो तो स्मृति वह रहनी चाहिए। फिर कमजोरी आ नहीं सकती।

30.5.71... .. जिनका बाप के विल पर पूरा अधिकार होगा, उन्हीं की निशानी क्या दिखाई देगी? वह विल-पावर वाले होंगे। उनका एक-एक संकल्प विल-पावर वाला होगा। अगर विल-पावर है तो असफलता कभी नहीं होगी। पूरे विल के अधिकारी नहीं बने हैं तब विल-पावर नहीं आती है।

8.6.71... .. शक्तियां आनी जरूर हैं। मुख से बोलने की भी जरूरत नहीं, संकल्प से कर्तव्य सिद्ध कर देंगे। जैसे मुख द्वारा कर्तव्य सिद्ध करने के अभ्यास में भी पहले आप लोगों को जादा बोलना पड़ता था तब सिद्धि मिलती थी। अभी कम बोलने से भी कर्तव्य होता है। तो जैसे यह अन्तर्यामी वैसे फिर यह प्रैक्टिस हो जायेगी। आपका संकल्प कर्तव्य को पूरा करेगा। संकल्प से किसको बुला सकेंगे, किसको संकल्प से कार्य की प्रेरणा देंगे। यह भी शक्तियां हैं लेकिन उनको कर्तव्य समझ प्रयोग करना है। यह प्राप्ति श्रीमत से हुई। यह जैसे बटन दबाने से सारा नज़ारा टेलीविजन में आता है, वैसे ही आप संकल्प यहाँ करेंगे, वहाँ उसकी बुद्धि में क्लियर चित्र खिंच जायेगा। ऐसे कनेक्शन चलेगा। यह सभी शक्तियों की प्राप्ति होगी। इस प्राप्ति के लिए जब तक बुद्धि में और सभी बातें समाप्त हों और सिर्फ श्रीमत की आज्ञा जो मिली हुई है वही चलती रहे। और कुछ भी मिक्स न हो। व्यर्थ संकल्प श्रीमत नहीं है, यह अपनी मनमत है। तो जब ऐसी बुद्धि हो जाये जिसमें सिवाय श्रीमत के कुछ भी मिक्स न हो, तब शक्तियां आयेंगी। नज़दीक आ रही हो। गायन शक्तियों का जादा है। कर्तव्य के सम्बन्ध में शक्तियों का गायन जादा है। क्योंकि साकार में अन्तिम कर्तव्य की समाप्ति शक्तियों द्वारा है। इसलिए कर्तव्य की स्मृति वा यादगार भी शक्तियों का जादा है। दिन- प्रतिदिन भविष्य में देवताओं के स्वरूप का पूजन वा यादगार कम होता जायेगा, शक्तियों का पूजन गायन बढ़ता जायेगा। गायन होते-होते ही प्रत्यक्ष हो जायेंगे। अच्छा।

8.6.71... .. सहनशीलता वाले बाहरमुखता के वाब्रेशन को ही नहीं, लेकिन मन के संकल्प भी जो उत्पन्न होते हैं उन संकल्पों की उत्पत्ति को देखकर भी घबरायेंगे नहीं। अपनी सहनशीलता से सामना करेंगे।

10.6.71... .. आप लोग नालेज और याद की सर्चलाइट द्वारा मार्ग दिखलाने वाले सर्चलाइट हो। और जब दृढ़ संकल्प करके जाते हैं तो संकल्प से स्वरूप बन ही जायेंगे। संकल्प है कि हम विजयी रत्न हैं, तो स्वरूप भी विजय का ही बन जाता है। वाणी और कर्म ऐसे ही चलते हैं। संकल्प के आधार से विजय कर्म में भरी हुई है। विजय का

तिलक सर्विसएबल आत्माओं को लगा हुआ है। सर्विस अर्थात् विजय का तिलक लगा है। यह सर्विसएबल ग्रुप जा रहा है ना। जिसका एक सेकेण्ड वा एक संकल्प भी सर्विस के सिवाय ना हो वह है सर्विसएबल।

अपनी आत्मिक दृष्टि से अपने संकल्पों को भी सिद्ध कर सकते हो। वह है रिद्धि-सिद्धि और यहाँ विधि से सिद्धि। शब्दों का अन्तर है। रिद्धि-सिद्धि है अल्पकाल, लेकिन याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि है अविनाशी। वह रिद्धि-सिद्धि यून करतें हैं और आप याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि प्राप्त करतें हो।

1.6.71... .. संगदोष कई प्रकार का होता है। माया संकल्पों के रूप में भी अपने संग का रंग लगाने की कोशिश करती है। तो इस व्यर्थ संकल्पों के वा माया की आकर्षण के संकल्पों में कभी फेल नहीं होना।

18.6.71... .. जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियों का मालिक बन जब चाहो कार्य में लगा सकते हो, वैसे ही संकल्प को वा बुद्धि को जहाँ लगाने चाहो वहाँ लगा सकते हो इसको ही ईश्वरीय अर्थोटी कहा जाता है, जो बुद्धि की लगन भी ऐसे ही सहज जहाँ चाहो वहाँ लगा सकते हो।

22.6.71... .. शुद्ध संकल्प स्वरूप स्थिति का अनुभव करते हो? जबकि अनेक संकल्पों की समाप्ति होकर एक शुद्ध संकल्प रह जाता है, इस स्थिति का अनुभव कर रही हो? इस स्थिति को ही शक्तिशाली, सर्व कर्म-बन्धनों से न्यारी और प्यारी स्थिति कहा जाता है। ऐसी न्यारी और प्यारी स्थिति में स्थित होकर फिर कर्म करने के लिए नीचे आते हैं। जैसे कोई का निवास-स्थान ऊंचा होता है, लेकिन कोई कार्य के लिए नीचे उतरते हैं तो नीचे उतरते हुए भी अपना निजी स्थान नहीं भूलते हैं। ऐसे ही अपनी ऊंची स्थिति अर्थात् असली स्थान को क्यों भूल जाते हो? ऐसे ही समझकर चलो कि अभी-अभी अल्पकाल के लिए नीचे उतरे हैं कार्य करने अर्थ, लेकिन सदाकाल की ओरिजिनल स्थिति वही है। फिर कितना भी कार्य करेंगे लेकिन कर्मयोगी के समान कर्म करते हुए भी अपनी निजी स्थिति और स्थान को भूलेंगे नहीं। यह स्मृति ही समर्थी दिलाती है।

संकल्प में भी अपवित्रता वा अशुद्धता न हो – इसको कहते हैं सम्पूर्ण पवित्र। निरन्तर योगी भी हैं। निरन्तर अर्थात् संकल्प में भी अशुद्धता नहीं है। संकल्प में भी अगर पुराने अशुद्ध संस्कारों का टच होता है तो भी सम्पूर्ण पोरिटी तो नहीं कहेंगे ना। जैसे स्थूल भोजन भले कोई स्वीकार नहीं करते हैं, लेकिन हाथ भी लगाते हैं तो भी अपने को सच्चे वैष्णव नहीं समझते हैं। अगर बुद्धि द्वारा भी अशुद्ध संकल्प वा पुराने संस्कार संकल्प रूप में टच होते हैं तो भी सम्पूर्ण वैष्णव कहेंगे? कहा जाता है – अगर कोई देखता भी है अकर्त्तव्य कार्य, तो देखने का असर हो जाता है, उसका भी हिसाब बन जाता है। इस हिसाब से सोचो तो पुराने संस्कार व अशुद्ध संकल्प बुद्धि में भी टच होते हैं, तो भी सम्पूर्ण वैष्णव वा सम्पूर्ण प्योरिटी नहीं कहेंगे।

इतना वफादार और फरमानबरदार बनना है जो एक सेकेण्ड भी, एक संकल्प भी फरमान के सिवाय न चले। इसको कहते हैं फरमानब- रदार। और वफादार किसको कहते हैं? सम्पूर्ण वफ़ादार वे कहलायेंगे जिसको संकल्प में भी वा स्वप्न में भी सिवाय बाप के और बाप के कर्त्तव्य वा बाप की महिमा, बाप के ज्ञान के और कुछ भी दिखाई न दे। ऐसे को सम्पूर्ण वफादार कहते हैं।

29.6.71... .. सहन शक्ति वाले की ही अव्यक्त स्थिति वा शुद्ध संकल्पों के स्वरूप की स्थिति रहेगी। सहनशील की सूरत में चमक रहेगी। कैसे भी संस्कार वाले होंगे, तो भी उनको अपनी सहन शक्ति से टेम्पेरी टाइम के लिए दबा लेंगी। तो दोनों शक्तियां चाहिएं। अपने पुरुषार्थ में मन के संकल्प चलाने में भी सहन शक्ति चाहिए, जिसको

कन्ट्रोलिंग पावर भी कहते हैं। सहन शक्ति है तो व्यर्थ संकल्पों को भी कन्ट्रोल कर सकते हैं। तो इन दोनों शक्तियों के लिए अटेन्शन रखना है।

29.6.71... .. जैसे वह बिज़नेसमैन एक- एक पैसे को कितना बना देते हैं कमाई करके। यह भी एक-एक सेकेण्ड वा संकल्प कमाई करके दिखाये, उनको कहते हैं नम्बरवन बिज़नेसमैन। बुद्धि को और काम ही क्या है। बुद्धि इसी में ही बिज़ी रहनी चाहिए।

11.7.71... .. निमित्त बनने वालों को विशेष अपने हर संकल्प के ऊपर भी अटेन्शन रखना पड़े। क्योंकि निमित्त बनी हुई आत्माओं के ऊपर ही सभी की नज़र होती है। जैसे यहाँ दिन-प्रतिदिन नालेजफुल बनते जाते हो, वैसे ही दुनियाँ के लोग भी विज्ञान की शक्ति से, विज्ञान की रीति से नालेजफुल होते जाते हैं। वह आप लोगों के संकल्पों को भी मस्तक से, नानों से चेहरे से, चेक कर लेते हैं। जैसे यहाँ ज्ञान की शक्ति भरती जाती है, वहाँ भी विज्ञान की शक्ति कम नहीं है। दोनों का फोर्स है। अगर निमित्त बनने वालों में कोई कमी है तो वह छिप नहीं सकते। इसलिए तुम निमित्त बनी हुई आत्माओं को इतना ही विशेष अपने संकल्प, वाणी और कर्म के ऊपर अटेन्शन रखना पड़े। यह चेक करो कि हर संकल्प से पदमों की कमाई जमा की? हर वचन से, हर कर्म से, हर कदम से पदमों की कमाई जमा की? नहीं तो यह कहावत किसलिए है – हर कदम में पदम हैं? पदम कमल पुष्प को भी कहते हैं ना। तो पदम समान बनकर चलने से हर संकल्प और हर कदम में पदमों की कमाई कर सकेंगे। एक संकल्प भी बिना कमाई के नहीं होगा। अब तो ऐसा अटेन्शन रखने का समय है – एक कदम भी बिना पदम की कमाई के न हो।

जैसे भोग लगाते हो तो बाप के आगे अर्पण करते हो ना। उसमें शक्ति भर जाती है। तो यह भी ऐसे हर संकल्प, हर कदम बाप को अर्पण करो – जो किया, जो सोचा। बाप की याद अर्थात् बाप के कर्त्तव्य की याद। जितना अर्पणमय के संस्कार उतना पावरफुल दर्पण। हर संकल्प निमित्त बनकर करेंगे। तो निमित्त बनना अर्थात् अर्पण। नम्रचित्त जो होते हैं वह झुकते हैं। जितना संस्कारों में संकल्पों में, झुकेंगे उतना विश्व आपके आगे झुकेगी। झुकना अर्थात् झुकाना। संस्कार में भी झुकना। यह संकल्प भी न हो – दूसरे हमारे आगे भी तो कुछ झुकें? हम झुकेंगे तो सभी झुकेंगे। सच्चे सेवाधारी होते हैं वह जब सभी के आगे झुकेंगे तब तो सेवा करेंगे। छोटे भी और प्यारे होते हैं। इसलिए अपने को सिकीलधे समझो। सर्व के स्नेही हो। बड़ों को तो फिर भी कहेंगे, छोटे तो छूट जाते हैं। लेकिन अपने में कोई कमी नहीं रखना। सभी के आगे जाने का लक्ष जरूर रखना है। आगे बढ़ते हुए भी आगे बढ़ाने वालों का रिगार्ड नहीं छोड़ना है। बढ़ाने वालों का रिगार्ड रखेंगे तब वह आपका रिगार्ड रखेंगे, आपको देख अन करेंगे।

11.7.71... .. मास्टर सर्वशक्तिमान चाहे और वह न कर सके, हो सकता है? अब यह भाषा खत्म करो। शक्तियाँ हो ना। शक्तियों का कर्म और संकल्प समान होता है। संकल्प एक और कर्म दूसरे – तो यह शक्ति की कमी है।

18.7.71... .. ऐसे नहीं कि बैठे अपनी स्थिति को स्थित करने के लिए बाप की याद में और उसके बजाय व्यर्थ संकल्प वा डगमग स्थिति बन जाये, यह कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है। एक सेकेण्ड से भी कम समय में अपने संकल्प को जहाँ चाहें वहाँ टिका सकें। अगर स्वयं की स्थिति को नहीं टिका सकेंगे तो औरों को आत्मिक-स्थिति में कैसे टिका सकेंगे। इसलिए अपनी स्टेज और स्टेट्स -- दोनों की स्मृति सदा रहे तब ही लक्ष की सिद्धि पा सकेंगे।

19.7.71... जैसे कोई भी सिम्पल चीज़ अगर स्वच्छ होती है तो अपने तरफ आकर्षित करती है। इस रीति से मन्सा में भी जो संकल्प है, सम्बन्ध में, व्यवहार में भी और रहन-सहन में भी सभी में सिम्पल और स्वच्छ रहने वाले सिम्पल बन अपनी तरफ आकर्षित करते हैं।

28.7.71... सदैव ऐसे समझो कि हम दाता के बच्चे हैं, एक सेकेण्ड भी देने के सिवाय न रहे। उसी को कहा जाता है महादानी। सदैव देने के द्वार खुले हों। जैसे मन्दिर का दरवाजा सदैव खुला रहता है। यह तो आजकल बन्द करते हैं। तो ऐसे दाता के बच्चे का देने का द्वार कभी बन्द नहीं होता। हर सेकेण्ड, हर संकल्प चेक करो – “कुछ दिया? लिया तो नहीं?” देते जाओ। लेना है बाप से, वह तो ले ही लिया, अब देना है। लेने का कुछ रहा है क्या? सभी कुछ जो लेना था वह ले लिया। बाकी रह गया देना। जितना-जितना देने में बिज़ी होंगे, तो यह बातें जिसको क्रास करना मुश्किल लगता है, वह बहुत सहज हो जायेंगी।

संकल्प से, बुद्धि से, चाहे स्थूल कर्मणा से जितना फ्री रहते हो उतना ही माया चान्स लेती है। अगर स्थूल और सूक्ष्म – दोनों ही रूप से अपने को सदैव बिज़ी रखो तो माया को चान्स नहीं मिलेगा। जिस दिन स्थूल कार्य भी रुचि से करते हो उस दिन की चेकिंग करो तो माया नहीं आयेगी, अगर देवता होकर किया तो। अगर मनुष्य होकर किया, फिर तो चान्स दिया। लेकिन सेवाधारी हो और देवता बन अपनी रुचि, उमंग से अपने को बिज़ी रखकर देखो तो कभी माया नहीं आवेगी। खुशी रहेगी।

अपने कमजोर संकल्प गिराने का कारण बन जाते हैं। इसलिए एक संकल्प भी व्यर्थ न जाये। क्योंकि संकल्पों के मूल का भी अभी मालूम पड़ा है। अगर संकल्प, वाचा, कर्मणा – तीनों अलौकिक होंगे तो फिर अपने को इस लोक के निवासी नहीं समझेंगे। समझेंगे कि इस पृथ्वी पर पांव नहीं हैं अर्थात् बुद्धि का लगाव इस दुनिया में नहीं है। बुद्धि रूपी पांव देह रूपी धरती से ऊंचा है। यह खुशी की निशानी है।

1.8.71... योगयुक्त अर्थात् युक्तियुक्त। अगर कोई भी युक्तियुक्त संकल्प वा शब्द वा कर्म नहीं होता है, तो समझना चाहिए योगयुक्त नहीं हैं। क्योंकि योगयुक्त की निशानी है युक्तियुक्त। योगयुक्त का कभी अयुक्त कर्म वा संकल्प हो ही नहीं सकता है। यह कनेक्शन है।

20.8.71... हम सभी आत्माओं से हीरो पार्टधारी आत्मायें, श्रेष्ठ आत्माएं हैं। और दूसरा पोजीशन है ईश्वरीय सन्तान ब्रह्माकुमार-कुमारीपन का। यह दोनों पोजीशन स्मृति में रहें तो कर्म और संकल्प दोनों ही श्रेष्ठ हो जायेंगे। श्रेष्ठ आत्मा अथवा हीरो अपने को समझने से ऐसा कोई व्यवहार नहीं करेंगे जो ईश्वरीय मर्यादाओं के वा ब्राह्मण कुल की मर्यादा के विपरीत हो। इसलिए यह दोनों पोजीशन स्मृति में होंगी तो माया की अपोजीशन खत्म हो जायेगी। इसलिए डबल पोजीशन भी सदैव स्मृति में रखो।

ज़रा भी मन्सा संकल्प भी इमपोअर अर्थात् अपवित्रता का न हो, तब फरिश्तेपन की निशानी में टिक सकेंगे ब्रह्माकुमार हो लेकिन ब्रह्माकुमार वा ब्राह्मणों के कुल की मर्यादाओं को जानकर मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर जाना। ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम बनो जो आपके एक-एक संकल्प वायुमण्डल पर प्रभाव डालें। ऐसे पावरफुल बनकर जाना। सारे दिन में डबल कर्त्तव्य आपका चलता रहता है। मुख्य कर्त्तव्य है ही विनाश और स्थापना का। कुछ विनाश करना है और कुछ रचना रचनी है। रचना सभी प्रकार की रचते हो। एक तो सर्विस द्वारा अपनी राजधानी की रचना कर रहे हो और दूसरी करनी है बुद्धि में शुद्ध संकल्पों की रचना। और वर्थ संकल्पों वा विकल्पों के विनाश की विधि भी आप लोग समझ गो हो। रचना मन्सा द्वारा भी और वाणी द्वारा भी; दोनों प्रकार की रचना रचते हो। इसी प्रकार डबल कर्त्तव्य करते हो। इसी कार्य में सारा दिन बिज़ी रहें तो बताओ एकरस स्थिति नहीं हो सकती?

25.8.71... .. अपने आप को हर संकल्प वा कर्म में महान् बनाने के लिए सभी से सहज युक्ति की तीन बातें सुनाओ। मन, वचन, कर्म में महानता के लिए ही पूछ रहे हैं। महान् बनने के लिए एक तो अपने को पुरानी दुनिया में मेहमान समझो। दूसरी बात – जो भी संकल्प वा कर्म करते हो, तो महान् अन्तर को बुद्धि में रख संकल्प और कर्म करो। तीसरी बात कि बाप के वा अपने दैवी परिवार की हर आत्मा के गुण और श्रेष्ठ कर्तव्य की महिमा करते रहो। 1. मेहमान, 2. महान् अन्तर और 3. महिमा।

देवी का रूप स्मृति में आने से जैसे जड़ चित्रों में कभी संकल्प मात्र भी अपवित्रता वा देह का अट्रेक्शन नहीं होता है, ऐसे ही चैतन रूप में भी यह स्मृति रखने से संकल्प में भी यह कम्पलेन नहीं रहेगी और कम्पलीट हो जायेंगे। समझा? यह हैं वर्तमान पुरुषार्थियों की कम्पलेन के ऊपर कम्पलीट बनने की युक्तियां।

19.8.71... .. अगर मुख से न बोला लेकिन सुनी हुई बात का व्यर्थ संकल्प भी चला तो इसको कहेंगे बड़े ते बड़ा बन्धन।

15.9.71... .. पतित-पावनी बनने के लिए मुख्य कौनसी बात स्मृति में रखो जिससे कैसा भी पतित, पावन बन जाये? कोई भी पतित आत्मा का संकल्प भी समा जाये। इसके लिए मुख्य बात यही सदा बुद्धि में रहनी चाहिए कि मैं सर्व आत्माओं के पतित संकल्पों वा वृत्तियों वा दृष्टि को भस्म करने वाली मास्टर ज्ञान-सूर्य हूँ। अगर मास्टर ज्ञान-सूर्य बनकर कोई भी पतित आत्मा को देखेंगे, तो जैसे सूर्य अपनी किरणों से किचड़ा, गन्दगी के कीटाणु भस्म कर देते हैं, वैसे कोई भी पतित आत्मा का पतित संकल्प भी पतित- पावनी आत्मा के ऊपर वार नहीं कर सकता। और ही पतित-आत्माएं आप पतित-पावनियों के ऊपर बलिहार जायेंगी।

अगर कोई को यह भी संकल्प आता है कि – मैंने इतना किया, मुझे इससे कुछ शान-मान वा महिमा मिलनी चाहिए – यह भी लेना हुआ, लेने की भावना हुई। दाता के बच्चे अगर यह भी लेने का संकल्प करते हो तो दाता नहीं हुए। यह भी लेना, देने वाले के आगे शोभता नहीं है। इसको कहा जाता है बेहद के वैरागी। सेवाधारी को यह भी संकल्प नहीं उठना चाहिए। तब स्टेट से अपने बेहद के विश्व महाराजन् का स्टेट्स पा सकेंगे।

18.10.71... .. दीपावली मनाना अथवा अपने को सम्पूर्ण बनाने का दृढ़ संकल्प करना ही मनाना है। तो ऐसे दीपावली मनाई है कि सिर्फ मिलन मनाया? मिलन मनाने का यादगार माला के रूप में है लेकिन दृढ़ संकल्पों का यादगार दीपक के ज्योति रूप का है। तो दोनों रूप से मनाया?

26.10.71... .. अगर सदा अपने को इस सृष्टि के कर्तव्य के इन्चार्ज समझेंगे तो सदा बैटरी चार्ज रहेगी। इस चार्ज से अपने को विस्मृत करते हो तभी बैटरी डिस्चार्ज होती है। इसलिए सदा अपने इस कर्तव्य में अपने को इन्चार्ज समझो और फिर अपनी बैटरी चार्ज का बार-बार चार्ट चेक करो, तो कभी भी संकल्प वा कर्म में वा आत्मा की स्थिति में डिस्चार्ज नहीं होंगे। फिर यह कम्पलेन कम्पलीट हो जायेगी।

31.11.71... .. अभी तो विधाता और वरदाता बनकर विश्व की हर आत्मा को कुछ-न-कुछ दान वा वरदान देना है, न कि यह चाहिए, यह चाहिए... का संकल्प अभी तक करना है। दाता के बच्चे सर्व शक्तियों से सम्पन्न होते हैं। यही सम्पन्न स्थिति सम्पूर्ण स्थिति को समीप लाती है।

21.1.72... .. जो शरीर के साथ वा शरीर के सम्बन्ध में जो भी बातें हैं, शरीर की दुनिया, सम्बन्ध वा अनेक जो भी वस्तुएं हैं उनसे बिल्कुल डिटैच होंगे, ज़रा भी लगाव नहीं होगा, तब न्यारा हो सकेंगे। अगर सूक्ष्म संकल्प में भी हल्कापन नहीं है, डिटैच नहीं हो सकते तो न्यारेपन का अनुभव नहीं कर सकेंगे। तो अब महारथियों को यह प्रैक्टिस करनी है।

2.2.72... .. अव्यक्ति स्थिति में रहने वालों का सदा हर संकल्प, हर कार्य अलौकिक होता है। ऐसा अव्यक्ति भाव में, व्यक्त देश और कर्तव्य में रहते हुए भी कमल पुष्प के समान न्यारा और एक बाप का सदा प्यारा रहता है।

2.2.72... .. प्रीत बुद्धि वाला कब श्रीमत के विपरीत एक संकल्प भी नहीं उठा सकता।

27.2.72... .. स्वस्मृति में रहने वाला सदैव जो भी कार्य करेगा वा जो भी संकल्प करेगा उसमें उसको सदा निश्चय रहता है कि यह कार्य वा यह संकल्प सिद्ध हुआ ही पड़ा है अर्थात् ऐसा निश्चाबुद्धि अपनी विजय वा सफलता निश्चित समझ कर चलता है।

28.2.72... .. प्रत्यक्षता समीप आ रही है, यह तो समझते हो। वायुमंडल और वृत्तियां परिवर्तन में आ रही हैं। इससे भी समझना चाहिए कि प्रत्यक्षता का समय कितना जल्दी-जल्दी आगे आ रहा है। मुश्किल बात सरल होती जा रही है। संकल्प तो सिद्ध होते जा रहे हैं। निर्भयता और संकल्प में दृढ़ता – यह है सम्पूर्ण स्टेज के समीप की निशानी। यह दोनों ही दिखाई दे रहे हैं। संकल्प के साथ-साथ आपकी रिजल्ट भी स्पष्ट दिखाई दे। इसके साथ-साथ फल की प्राप्ति भी स्पष्ट दिखाई दे। यह संकल्प है यह इसकी रिजल्ट। यह कर्म है यह इनका फल। ऐसा अनुभव होता है। इसको ही प्रत्यक्षफल कहा जाता है।

4.3.72... .. सदैव यही स्मृति रखो कि हम दुःख-हर्ता सुख-कर्ता के बच्चे हैं। किसके भी दुःख को हल्का करने वाले स्वयं कब भी, एक सेकेण्ड के लिए भी, संकल्प वा स्वप्न में भी दुःख की लहर में नहीं आ सकते हैं। अगर संकल्प में भी दुःख की लहर आती है तो सुख के सागर बाप की सन्तान कैसे कहला सकते हैं?

4.3.72... .. अगर सदा बुद्धि का सम्बन्ध एक ही बाप से लगा हुआ है तो सम्बन्ध से सर्व शक्तियों का वर्सा अधिकार के रूप में अवश्य प्राप्त होता है, लेकिन अधिकारी समझकर हर कर्म करते रहें तो कहने वा संकल्प में मांगने की इच्छा नहीं रहेगी।

4.3.72... .. यही नशा सदैव रहे कि सर्व शक्तियां तो हमारा जन्म-सिद्ध-अधिकार है। तो अधिकारी बनकर के चलो। ऐसा सदैव बुद्धि में श्रेष्ठ संकल्प रहना चाहिए। अगर संकल्प श्रेष्ठ है तो वचन और कर्म में भी नहीं आ सकते। इसलिए संकल्प को श्रेष्ठ बनाओ और सदैव सर्वशक्तिवान बाप के साथ बुद्धि का संग हो।

सदैव यही समझो कि सोचना है वा बोलना है वा करना है तो कमाल का, कामन नहीं। अगर कामन अर्थात् साधारण संकल्प किये तो प्राप्ति भी साधारण होगी। जैसे संकल्प वैसी सृष्टि बनेगी ना। अगर संकल्प ही श्रेष्ठ न होंगे तो अपनी नई सृष्टि जो रचने वाले हैं उसमें पद भी साधारण ही मिलेगा। इसलिए सदैव यह चेक करो – हमारा संकल्प जो उठा वह साधारण है वा श्रेष्ठ? साधारण संकल्प वा चलन तो सर्व आत्मायें करती रहती हैं। अगर सर्वशक्तिवान की सन्तान होने के बाद भी साधारण संकल्प वा कर्म हुए तो श्रेष्ठता वा विशेषता क्या हुई? मैं विशेष आत्मा हूँ, इस कारण हमारा सभी कुछ विशेष होना चाहिए। अपने परिवर्तन से आत्माओं को अपनी तरफ वा अपने बाप के तरफ आकर्षित कर सको; अपने देह के तरफ नहीं, अपनी अर्थात् आत्मा की रूहानात तरफ। तुम्हारा परिवर्तन सृष्टि को परिवर्तन में लायेगा।

जो नालेज वा धारणायें मिली हैं वह बुद्धि में धारण तो की हैं ना। लेकिन प्रैक्टिकल में आने में जो विघ्न रूप बनता वह है स्वयं का आलस्य। अच्छा, कल से लेकर करेंगे, फलाना करे तो हम भी करेंगे, आज सोचते हैं कल से करेंगे, यह कार्य पूरा करके फिर यह करेंगे – ऐसे-ऐसे संकल्प ही आलस्य का रूप हैं। जो करना है वह अभी करना है। जितना करना है वह अभी करना है।

मैं पतित-पावनी, आसुरी-पतित संस्कार संहारी हूँ। जो स्वयं संहारी हैं वह कब किसका शिकार नहीं बन सकते। इतना प्रैक्टिकल प्रभाव होना चाहिए जो कोई भी आपके सामने संकल्प करे और उनका संकल्प मूर्छित हो जाए। ऐसा काली रूप बनना है।

15.3.72... .. जैसे संकल्प करेंगे वैसे ही स्मृति रहेगी और जैसी स्मृति रहेगी वैसी समर्थी हर कर्म में आयेगी। इसलिए स्मृति को सदैव श्रेष्ठ रखो।

यह चेक करो—संकल्प के खजाने में भी “कम खर्च बाला नशीन” बने हैं? जादा खर्च नहीं करो। अपने संकल्प के खजाने को व्यर्थ न गंवाओ तो समर्थ और श्रेष्ठ संकल्प होगा। श्रेष्ठ संकल्प से प्राप्ति भी श्रेष्ठ होगी ना।

27.4.72... .. जब कोई बात पर जादा पुरुषार्थ कर लेते हो तो अपने अन्दर से कब संकल्प आता है कि मेरी तकदीर में तो यही देखने में आता है? पुरुषार्थ के बाद भी सफलता नहीं होती है तो समझते हो ना-तकदीर में यह ऐसा है। सफलता न मिलने का कारण क्या है? अपनी रीति से पुरुषार्थ किया फिर भी सफलता नहीं मिलती तो फिर क्या कहते हो? ड्रामा में ऐसा ही है। तो ड्रामा का बना हुआ लक ही ले ओ हो ना? पुरुषार्थी को कभी भी यह समझना नहीं चाहिए कि मेरे पुरुषार्थ करने के बाद कोई असफलता भी हो सकती है। सदैव ऐसा ही समझना चाहिए कि पुरुषार्थ जो किया वह कभी भी व्यर्थ नहीं जा सकता। अगर सही प्रकार से पुरुषार्थ किया तो उसकी सफलता अब नहीं तो कब मिलनी ज़रूर है। असफलता का रूप देखकर समझना है कि यह परीक्षा है, इससे पार होने के बाद परिपक्वता आने वाली है। तो वह असफलता नहीं है लेकिन अपने पुरुषार्थ के फाउन्डेशन को पक्का करने का एक साधन है। कभी भी कोई चीज को मजबूत करना होता है तो पहले उसके फाउन्डेशन को ठोका जाता है, ठोक-ठोक कर पक्का किया जाता है। वह ठोकना ही परिपक्वता का साधन है।

27.4.72... .. सदैव चियरफुल चेहरा रहे, दुःख की लहर संकल्प में भी न आये—उसको कहा जाता है चियरफुल। तो अपने चियरफुल चेहरे से ही सर्विस कर सकते हो।

अपने व्यर्थ संकल्प, विकल्प ही अपने को चियरफुल स्टेज से गिरा देते हैं, क्योंकि मर्यादा का उल्लंघन किया। इसलिए हर संकल्प और कर्म में यह चेक करो अर्थात् केयर करो-बाहर तो नहीं निकलते? ऐसे अपने को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाओ।

3.5.72... .. कोई भी श्रेष्ठ देवताएं होते हैं, उनको कभी भी कोई भेंट चढ़ाते हैं तो देवताओं के योग भेंट चढ़ाते हैं, ऐसे-वैसे नहीं चढ़ाते। तो हर संकल्प बाप के ऊपर अर्थात् बाप के कर्त्तव्य के ऊपर बलिहार जाना है। यह चेक करो – जैसे ऊंच ते ऊंच बाप है वैसे ही संकल्प भी ऊंच है जो भेंट चढ़ावें? अगर व्यर्थ संकल्प, विकल्प हैं तो बाप के ऊपर बलि चढ़ा नहीं सकते, बाप स्वीकार कर नहीं सकते। आजकल शक्तियों और देवियों का भोजन होता है तो उसमें भी शुद्धिपूर्वक भोग चढ़ाते हैं। अगर उसमें कोई अशुद्धि होती है तो देवी भी स्वीकार नहीं करती है, फिर वह भक्तों को महसूसता आती है कि देवी ने हमारी भेंट स्वीकार नहीं की। तो आप भी श्रेष्ठ आत्मायें हो। शुद्धि पूर्वक भेंट नहीं है तो आप भी स्वीकार नहीं करते हो। ऊंच ते ऊंचे बाप के आगे क्या भेंट चढ़ानी है वह तो समझ सकते हो। हर संकल्प में श्रेष्ठता भरते जाओ, हर संकल्प बाप और बाप के कर्त्तव्य में भेंट चढ़ाते जाओ। फिर कब भी हार नहीं खा सकेंगे।

व्यर्थ धन गंवाने वाले की रिजल्ट क्या निकलती है? दिवाला निकल जाता है। ऐसे ही यह श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना व्यर्थ गंवाते-गंवाते बाप द्वारा जो वर्सा प्राप्त होना चाहिए वह प्राप्ति का अनुभव नहीं होता। जैसे कोई दिवाला मारते हैं तो का गति हो जाती है? ऐसे स्थिति का अनुभव होगा। इसलिए अभी जो समय चल रहा है वह

बहुत सावधानी से चलने का है, क्योंकि अभी यात्री चलते-चलते ऊंच मंजिल पर पहुंच गये हैं। तो ऊंच मंजिल पर कदम-कदम पर अटेंशन रखने की बहुत आवश्यकता होती है।

शक्तियों के आगे किसकी हिम्मत नहीं जो अलबेलापन दिखा सके। अपने प्रति भी अब संहारी बनो। ऐसी स्टेज बनाओ जो आसुरी संस्कार संकल्प में भी ठहर न सकें। इसको कहते हैं – एक ही नजर से असुर संहारनी। संकल्पों को परिवर्तन करने में कितना समय लगता है? सेकेण्ड। और नजर से देखने में कितना समय लगता है? एक सेकेण्ड। तो नजर से असुर संहार करने वाले अर्थात् एक सेकेण्ड में आसुरी संस्कारों को भस्म करने वाले, ऐसे बने हो?

9.5.72... .. सम्पूर्ण निर्विकारी अर्थात् किसी भी परसेन्टेज में कोई भी विकार तरफ आकर्षण न जाए वा उनके वशीभूत न हो। अगर स्वप्न में भी किसी भी प्रकार विकार के वश किसी भी परसेन्टेज में होते हो तो सम्पूर्ण निर्विकारी कहेंगे? अगर स्वप्नदोष भी है वा संकल्प में भी विकार के वशीभूत हैं तो कहेंगे विकारों से परे नहीं हुए हैं। ऐसे सम्पूर्ण पवित्र वा निर्विकारी अपने को बना रहे हो वा बन गये हो?

10.5.72... .. अपनी सर्विस फर्स्ट, अपनी सर्विस की तो दूसरों की सर्विस स्वतः हो जाती है। अपनी सर्विस को छोड़ दूसरों की सर्विस में लग जाने से समय और संकल्प जादा खर्च कर लेते हो। इस कारण जो जमा होना चाहिए वह नहीं कर पाते। जमा न होने के कारण वह नशा, वह खुशी नहीं रहती। अभी-अभी कमाया और अभी-अभी खाया; तो वह अल्पकाल का हो जाता है। जमा रहता है वह सदा साथ रहता है। तो अब जमा करना भी सीखो। सिर्फ इस जन्म के लिए नहीं लेकिन 21 जन्मों के लिए जमा करना है।

अपना कर्तव्य है -- संकल्प में, वृत्ति में, स्मृति में भी कोई पाप का संकल्प न आये। इसको ही कहा जाता है ब्राह्मण अर्थात् पवित्र। अगर कोई भी अपवित्रता वृत्ति, स्मृति वा संकल्प में है तो ब्राह्मण-पन की स्थिति में स्थित हो नहीं सकते, सिर्फ कहलाने मात्र हो। इसलिए कदम- कदम पर सावधान रहो।

15.5.72... .. आप जो श्रेष्ठ आत्मायें हो वह सदैव वैष्णव अर्थात् तमोगुणी संकल्प वा तमोगुणी संस्कारों को भी टच नहीं कर सकते हो। अगर कोई संकल्प वा संस्कारों को टच किया अर्थात् धारण किया तो सच्चे वैष्णव हुए? और जो सच्चे वैष्णव नहीं बनते हैं, वह विष्णु के राज्य में विश्व के मालिक नहीं बन सकते हैं। तो अपने आपको देखो – कहां तक सदाकाल के वैष्णव बने हैं?

20.5.72... .. जैसे सेक्रीन (कोलतार की जीनी) और वैसे मिठास में फर्क होता है ना। वह अधिक क्वान्टिटी यूज करनी पड़ेगी। सेक्रीन कम अन्दाज में मिठास जादा देगी। इस रीति से कोई भी बात के विस्तार में जाने से समय और संकल्प की शक्ति दोनों ही व्यर्थ चली जाती हैं। व्यर्थ जाने के कारण वह शक्ति नहीं रहती। इसलिए ऐसी श्रेष्ठ स्थिति बनाने के लिए सदा यह अभ्यास करो। कोई भी बात के विस्तार को समाकर सार में स्थित रह सकते हो। ऐसा अभास करते-करते स्वयं सार-रूप बनने के कारण अन आत्माओं को भी एक सेकेण्ड में सारे ज्ञान का सार अनुभव करा सकेंगे।

24.5.72... .. जैसे जादूगर थोड़े ही समय में बहुत विचित्र खेल दिखाते हैं, वैसे आप रूहानी जादूगर भी अपनी रुहानात की शक्ति से सारे विश्व को परिवर्तन में लाने वाले हो, कंगाल को डभले ताजधारी बनाने वाले हो। परन्तु इतना बड़ा कार्य स्वयं को बदलने अथवा विश्व को बदलने का, एक ही दृढ़ संकल्प से करने वाले हो। एक ही दृढ़ संकल्प से अपने को बदल देते हो। वह कौनसा एक दृढ़ संकल्प, जिस एक संकल्प से अनेक जन्मों की विस्मृति के संस्कार स्मृति में बदल जाएं? वह एक संकल्प कौनसा? है भी एक सेकेण्ड की बात जिससे स्वयं को



बदल लिया। एक ही सेकेण्ड का और एक ही संकल्प यह धारण किया कि मैं आत्मा हूँ। इस दृढ़ संकल्प से ही अपने सभी बातों को परिवर्तन में लाया। ऐसे ही, दृढ़ संकल्प से विश्व को भी परिवर्तन में लाते हो। वह एक दृढ़ संकल्प कौन-सा? हम ही विश्व के आधारमूर्त, उद्धारमूर्त हैं अर्थात् विश्व-कलाणकारी हैं। इस संकल्प को धारण करने से ही विश्व के परिवर्तन के कर्त्तव्य में सदा तत्पर रहते हो। तो एक ही संकल्प से अपने को वा विश्व को बदल लेते हो, ऐसे रुहानी जादूगर हो।

वह जादूगर तो अल्पकाल के लिए चीजों को परिवर्तन में लाकर दिखाते हैं, लेकिन आप रुहानी जादूगर अविनाशी परिवर्तन, अविनाशी प्राप्ति करने-कराने वाले हो। तो सदा अपने इस श्रेष्ठ मर्तबे और श्रेष्ठ कर्त्तव्य को सामने रखते हुए हर संकल्प वा कर्म करो तो कोई भी संकल्प वा कर्म वर्ध नहीं होगा।

आजकल साइन्स द्वारा भी एक सेकेण्ड में कोई भी वस्तु को भस्म कर लेते हैं। तो नालेजफुल मास्टर सर्वशक्तवान एक सेकेण्ड के दृढ़ संकल्प से वा प्रतिज्ञा से अपनी कमजोरियों को भस्म नहीं कर सकते हो? जैसे हर वर्ष का सर्विस प्लैन बनाते हो वैसे हर वर्ष में अपनी चढ़ती कला वा सम्पूर्ण बनने का वा श्रेष्ठ संकल्प वा कर्म करने का भी अपने आप के लिए प्लैन बनाओ और प्लैन के साथ हर समय प्लैन को सामने देखते हुए प्रैक्टिकल में लाते जाओ।

31.5.72... .. कोई चोरी करता है, झूठ बोलता है वा कोई भी विकार वश होता है जिसको अपवित्रता के संकल्प वा कर्म कहा जाता है, वह अकेलेपन में ही होता है। अगर सदा अपने को बाप के साथ-साथ अनुभव करो तो फिर यह कर्म होंगे ही नहीं।

10.6.72... .. अभिमान के कारण कोई ने ज़रा भी कोई उन्नति के लिए इशारा दिया तो सूक्ष्म में न सहनशक्ति की लहर आ जाती है वा संकल्प आता है कि यह क्यों कहा? इसको भी अभिमान सूक्ष्म रूप में कहा जाता है। कोई ने कुछ इशारा दिया तो उस इशारे को वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए उन्नति का साधन समझकर के उस इशारे को समय देना वा अपने में सहन करने की शक्ति भरना – यह अभ्यास होना चाहिए।

10.6.72... .. जैसे साकार रूप में कदम-कदम, हर कर्म शिक्षक के रूप में प्रैक्टिकल में देखा। जिसको दूसरे शब्दों में चरित्र कहते हो। किसको वाणी द्वारा शिक्षा देना तो कामन बात है। लेकिन सभी अनुभव चाहते हैं। अपने श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति से अनुभव कराना है।

12.6.72... .. जो चीज रिफाइन नहीं होगी उसकी क्वालिटी जादा, क्वालिटी कम होगी। तो यहां भी जबकि रिफाइन होते जाते हैं; तो कम समय, कम संकल्प, कम इनर्जी में जो कर्त्तव्य होगा वह सौ गुणा होगा और हल्कापन भी हो जाता। हल्केपन की निशानी होगी -- वह कब नीचे नहीं आवेगा, ना चाहते भी स्वतः ही ऊपर स्थित रहेगा। यह है रिफाइन क्वालिफिकेशन।

14.6.72... .. याद सहज और सदा रहे और हेल्दी, वेल्दी, हैपी, होली भी कायम रहें इसका पुरुषार्थ सुनाओ। चारों ही बातें साथ-साथ रहें। जैसे आप भी निराकार और साकार दोनों रूप में हो ना। निराकार आत्मा और साकार शरीर दोनों के सम्बन्ध से हर कार्य कर सकते हो। अगर दोनों का सम्बन्ध ना हो तो कोई भी कार्य नहीं कर सकते। ऐसे ही निराकार और साकार बाप दोनों का साथ वा सामने रखते हुए हर कर्म वा हर संकल्प करो तो यह चारों बातें आटोमेटिकली आ जाएगी। लेकिन निराकार और साकार दोनों ही सदा साथ रहें तो साथ होने से जो संकल्प करेंगे वह पहले ज़रूर उनसे वेरीफाय करायेंगे, वेरीफाय कराने के बाद कोई भी कर्म करने से निश्चय बुद्धि होकर करेंगे। जैसे देखो साकार में अगर कोई निमित्त श्रेष्ठ आत्मा साथ में है तो उनसे कोई भी बात वेरीफाय

कराये फिर करेंगे, तो निश्चय-बुद्धि होकर करेंगे ना। निर्भीता और निश्चय दोनों गुणों को सामने रख करेंगे। तो जहाँ सदा निश्चय और निर्भीता है वहाँ सदैव श्रेष्ठ संकल्प की विजय है।

21.6.72... .. भक्ति-मार्ग में जो महादानी-कल्याणकारी वृत्ति वाले सेवाधारी होते हैं वह कोई भी दान आदि अपने प्रति नहीं करेंगे, सर्व आत्माओं प्रति ही संकल्प करेंगे। तो यह रीति-रस्म आप श्रेष्ठ अथवा कल्याणकारी आत्माओं से शुरु हुई है, जो भक्ति में भी रस्म चली आती है। ज़रूर प्रैक्टिकल में हुई है तब तो यादगार रूप में रस्म चल रही है। दूसरों के अर्थ सेवाधारी बनने से वा दूसरों के प्रति समय और संकल्प लगाने से, सर्विसएबल बनने से सदा सक्सेसफुल स्वतः ही बन जाएंगे। क्योंकि अनेक आत्माओं को सुखी वा शान्त बनाने का रिटर्न प्रत्यक्षफल के रूप में स्वतः ही प्राप्त हो जाता है।

विश्व-महाराजन् बनने के लिए विश्व-कल्याणकारी बनो। जब इतने बिजी हो जायेंगे तो क्या व्यर्थ समय और संकल्प आयेगा? व्यर्थ स्वतः ही समाप्त हो जायेगा और सदा समर्थ संकल्प चलेंगे, सदा विश्व-सेवा में समय लगेगा।

अमृतवेले के समय अपनी आत्मा को अमृत से भरपूर कर देने से सारा दिन कर्म भी ऐसे होंगे। जैसी वेला श्रेष्ठ, अमृत श्रेष्ठ वैसे ही हर कर्म और संकल्प भी सारा दिन श्रेष्ठ होगा। अगर इस श्रेष्ठ वेला को साधारण रीति से चला लेते तो सारा दिन संकल्प और कर्म भी साधारण ही चलते हैं। तो ऐसे समझना चाहिए यह अमृतवेला सारे दिन के समय का फाउन्डेशन वेला है।

28.7.72... .. जैसे छुईमुई का वृक्ष देखा है ना। अगर कोई भी मनुष्य का ज़रा भी हाथ लगता है तो शक्तिहीन हो जाती है। उसमें टाइम नहीं लगता। तो आप के सिर्फ एक सेकेण्ड के शुद्ध संकल्प की शक्ति से माया छुईमुई माफिक मूर्छित हो जानी चाहिए। ऐसी स्थिति नहीं आई है?

योग अर्थात् याद की शक्ति द्वारा ऑब- जेक्ट प्राप्त होनी चाहिए-वह जो भी संकल्प करेंगे वह समर्थ होगा और जो भी कोई समस्या आने वाली होगी, उनका पहले से ही योग की शक्ति से अनुभव होगा कि यह होने वाला है, तो पहले से ही मालूम होने कारण कभी भी हार नहीं खावेंगे।

योग अर्थात् याद की शक्ति द्वारा ऑब- जेक्ट प्राप्त होनी चाहिए-वह जो भी संकल्प करेंगे वह समर्थ होगा और जो भी कोई समस्या आने वाली होगी, उनका पहले से ही योग की शक्ति से अनुभव होगा कि यह होने वाला है, तो पहले से ही मालूम होने कारण कभी भी हार नहीं खावेंगे।

2.8.72... .. अपने को सिद्धि-स्वरूप समझते हो? जो भी संकल्प करते हो अगर यथार्थ विधिपूर्वक है तो उनकी रिजल्ट क्या निकलेगी? सिद्धि। तो हर संकल्प वा कर्म अगर विधिपूर्वक है तो सिद्धि ज़रूर होती है। अगर सिद्धि नहीं है तो विधिपूर्वक भी नहीं है। इसलिये भक्ति में भी जो कार्य करते हैं वा कराते हैं, वैल्यू उसकी विधि पर होती है। विधिपूर्वक होने कारण उस सिद्धि का अनुभव करते हैं। जैसे-जैसे सिद्धि की परसेन्टेज बढ़ती जावेगी तो टाइम भी वेस्ट नहीं जावेगा। थोड़े टाइम में सफलता जास्ती मिलेगी। इसको कहा जाता है सिद्धि। अगर समय जादा, मेहनत भी जादा करते हो फिर सफलता मिलती है तो इसको भी परसेन्ट कम कहेंगे। सभी रीति से कम लगना चाहिए। तन भी कम, मन के संकल्प भी कम लगे। नहीं तो संकल्प करते हो, प्लैन बनाते-बनाते मास डेढ़ लग जाता है। तो समय और संकल्प वा अपनी जो भी सर्व शक्तियां हैं, उन सर्व शक्तियों के खजाने को जादा काम में नहीं लगाना है। कम खर्च बाला नशीन। संकल्प वही उत्पन्न होगा जिससे सिद्धि प्राप्त हो ही जावेगी। समय भी वही निश्चित होगा जिसमें सफलता हुई पड़ी है। इसको ही कहते हैं सिद्धि-स्वरूप।

सदैव यह स्मृति रहे कि हमारे हर संकल्प के पीछे विश्व-कल्याण का संबंध है। जो आधारमूर्त हैं उनके संकल्प में समर्थी नहीं तो समय के परिवर्तन में भी कमजोरी पड़ जाती। इस कारण जितना-जितना समय समर्थ बनेंगे उतना ही सृष्टि के परिवर्तन का समय समीप ला सकेंगे।

14.4.73... सभी का एक संकल्प है ना? जैसे अभी सभी का एक संकल्प चल रहा था, वैसे ही सभी एक ही लगन अर्थात् एक ही बाप से मिलन की, एक ही 'अशरीरी-भव' बनने के शुद्ध-संकल्प में स्थित हो जाओ। तो सभी के संगठन रूप का यह एक शुद्ध संकल्प क्या कर सकता है? किसी के भी और दूसरे संकल्प न हों। सभी एक-रस स्थिति में स्थित हों तो बताओ वह एक सेकेण्ड के शुद्ध संकल्प की शक्ति क्या कमाल कर देती है? तो ऐसे संगठित रूप में एक ही शुद्ध संकल्प अर्थात् एक-रस स्थिति बनाने का अभ्यास करना है। तब ही विश्व के अन्दर शक्ति सेना का नाम बाला होगा।

16.10.75... ऐसा अभ्यास करो जो जहाँ बुद्धि को लगाना चाहे वहाँ स्थित हो जायें। संकल्प किया और स्थित हुआ। यह रूहानी ड्रिल सदैव बुद्धि द्वारा करते रहो। अभी-अभी परम-धाम निवासी, अभी-अभी सूक्ष्म अव्यक्त फरिश्ता बन जायें और अभी-अभी साकार कर्मेन्द्रियों का आधार लेकर कर्मयोगी बन जायें। इसको कहा जाता है – संकल्प शक्ति को कन्ट्रोल करना। संकल्प को रचना कहेंगे और आप उसके रचयिता हो। जितना समय जो संकल्प चाहिए उतना ही समय वह चले। जहाँ बुद्धि लगाना चाहे, वहाँ ही लगे। इसको कहा जाता है – अधिकारी। यह प्रैक्टिस अभी कम है। इसलिये यह अभ्यास करो, अपने आप ही अपना प्रोग्राम बनाओ और अपने को चेक करो कि जितना समय निश्चित किया, क्या उतना ही समय वह स्टेज रही?

9.12.75... जैसे आत्म-ज्ञानियों के सिद्धि का गायन है, वैसे आप सबके संगठन का एक ही संकल्प हो। एक संकल्प की शक्ति संगठित रूप में न होने के कारण बिगड़े हुए हैं। जैसे बिगड़ी हुई शक्ति है वैसे रिजल्ट भी बिगड़ा हुआ है। इसमें समाने की शक्ति ज़रूर चाहिए। देखा और सुना – उसको बिल्कुल समा कर, वही आत्मिक दृष्टि और कल्याण की भावना रहे। जब अज्ञानियों के लिए कहते हो – अपकारियों पर उपकार करना है; तो संगठन में भी एक दूसरे के प्रति रहम की भावना रहे। अभी रहम की भावना कम रहती है क्योंकि आत्मिक-स्थिति का अभ्यास कम है।

7.1.77... जो सभी खज़ाने सुनाए वह स्वयं के प्रति नहीं, विश्व-कल्याण के प्रति युज़ (Use;प्रयोग) करो। समझा, अब क्या करना है? आवाज़ द्वारा सर्विस, स्थूल साधनों द्वारा सर्विस और आवाज़ से परे 'सूक्ष्म साधन संकल्प' की श्रेष्ठता, संकल्प शक्ति द्वारा सर्विस का बैलेन्स प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ तब विनाश का नगाड़ा बजेगा। समझा?

31.5.77... संकल्प ही ऊँच ले जाने और नीचे ले आने की रूहानी लिफ्ट है जिस द्वारा चाहे तो सर्व श्रेष्ठ अर्थात् ऊँची मंजिल पर पहुँचो अर्थात् निराकारी स्थिति में स्थित हो जाओ, चाहे आकारी स्थिति में स्थित हो जाओ, चाहे साकारी स्थिति में स्थित हो जाओ। ऐसी प्रैक्टिस अनुभव करते हो? संकल्प की शक्ति को जहाँ चाहो वहाँ लगा सकते हो? क्योंकि आत्मा मालिक है इन सूक्ष्म शक्तियों की। मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् सर्वशक्तियों को जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें वैसे कार्य में लगा सकते हैं। ऐसा मालिकपन अनुभव करते हो? संकल्प को रचने वाले रचता, स्वयं को अनुभव करते हो? रचना के वशीभूत तो नहीं होते हो?

13.1.78... जैसे एयरकण्डीशन (Air condition) में सर्दी व गर्मी का अनुभव करते हैं कि सचमुच गर्मी से ठण्डी हवा में आ गये हैं। ठण्डी से गर्मी में आ गये हैं। ऐसे आपकी चलन और चेहरे द्वारा आपके संकल्प शक्ति

द्वारा सुख-शान्ति और शक्ति का अनुभव करें। जैसे एक सेकेण्ड में अंधकार से रोशनी का अनुभव किया ना। ऐसे आजकल के मनुष्य अपनी शक्ति से अनुभव नहीं कर सकेंगे। लेकिन आप सबको अपनी प्राप्ति के आधार से, याद के आधार से अनुभवी बनाना पड़ेगा। यह है वास्तविक सहज राजयोग या कर्मयोग की परिभाषा।

1.12.78... .. बाप-दादा ने भी हर बच्चे की रिसेप्शन में बच्चों को स्वयं की और खज़ानों की चाबी आने से ही दे दी। ऐसी जादू की चाबी जिससे जिस शक्ति का आह्वान करो वह शक्ति स्वरूप बन सकते हो। एक सेकेण्ड में इस जादू की चाबी द्वारा जिस लोक में जाने चाहो उस लोक के वासी बन सकते हो। जिस काल को जानने चाहो उस काल को जानने वाले रूहानी ज्योतिषी बन सकते हो। संकल्प शक्ति को जिस रफ्तार से जिस मार्ग पर ले जाना चाहो उसी रीति से संकल्प शक्ति के अधिकारी बन सकते हो – ऐसी चाबी काम में क्यों नहीं लगाते? महत्त्व को नहीं जाना है क्या? किनारे रखने के संस्कार इमर्ज हो जाते। अच्छी चीज़ को सम्भाल कर किनारे रखते हैं ना कि समय पर काम में लायेंगे! लेकिन यह चाबी हर समय कार्य में लाओ। चाबी लगाओ और खज़ाना लो। इसमें एकनामी नहीं करो – लेकिन एकनामी बनो। एकनामी बनना ही चाबी को लगाने का तरीका है। तो यह करने नहीं आता? आजकल तो चाबी साथ रखने का फैशन है। सौगात में भी कीचेन देते हैं। यह सम्भालना मुश्किल लगता है क्या? कोई भी कर्म शुरू करने के पहले जैसा कर्म वैसी शक्ति का आह्वान। इस चाबी द्वारा करो – तो हर शक्ति आप मास्टर रचता की सेवाधारी बन सेवा करेगी।

12.12.78... .. परोपकारी अर्थात् सदैव विशेष रूप से अपनी मन्सा अर्थात् संकल्प शक्ति द्वारा, वाणी की शक्ति द्वारा, अपने संग के रंग के द्वारा, सम्बन्ध के स्नेह द्वारा, खुशी के अखुट खज़ाने द्वारा अखण्ड दान करता रहेगा। कोई भी आत्मा सम्पर्क में आवे तो खुशी के खज़ाने से सम्पन्न होके जाए। ऐसे अखण्ड दानी होंगे।

14.1.79... .. अपने याद की यात्रा को पावरफुल बनाते जाओ। संकल्प में सर्व शक्तियों का सार भरते जाओ। हर संकल्प में शक्ति भरते रहो। संकल्प की शक्ति से भी बहुत सेवा कर सकते हो।

18.1.79... .. जब ब्रह्माकुमार कहलाते हो, परमात्मा के बच्चे कहलाते हो तो चलन भी तो ऐसी चाहिए। सदा आक्यूपेशन और एक्टिविटी को मिलाओ। बड़ा आदमी कर्म बेसमझी के वा बच्चे जैसे करे तो लोग हसेंगे ना। ऐसे ही जब ब्रह्माकुमार कहलाते हो और साधारण ऐक्ट चलो तो क्या कहेंगे! आधाकल्प बेसमझ रहे अब समझदार बने – तो समझदार का हर संकल्प शक्तिशाली होगा।

10.12.79... .. पुण्य आत्मा के संकल्प में ऐसी विशेष शक्ति है जैसे जन्म-मन्त्र द्वारा असम्भव बात को सम्भव कर लेते हैं वैसे संकल्प की शक्ति द्वारा असम्भव को भी सम्भव कर सकते हो। वशीकरण महामन्त्र द्वारा वशीभूत आत्मा को फायरफ़्लाइं मुआफ़िक उड़ा सकते हो।

जो कार्य आज के अनेक पदमपति नहीं कर सकते वह आपका एक संकल्प आत्मा को पदमापदमपति बना सकता है। तो आपके संकल्प की शक्ति कितनी श्रेष्ठ है। चाहे जमा करो औ कराओ, चाहे व्यर्थ गँवाओ, यह आपके ऊपर है। गँवाने वाले को पश्चाताप करना पड़ेगा। जमा करने वाले सर्व प्राप्तियों के झूले में झूलेंगे। कभी सुख के झूले में, कभी शान्ति के झूले में, कभी आनन्द के झूले में। और गँवाने वाले झूले में झूलने वालों को देख अपनी झोली को देखते रहेंगे। आप सब तो झूलने वाले हो ना।

19.12.79... .. श्रीमत में मिक्स नहीं करो। सदा हल्के रहने से वतन की सभी सीन-सीनरियाँ यहाँ रहते हुए भी देख सकेंगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे इस दुनिया की कोई भी सीन स्पष्ट दिखाई देती है। सिर्फ संकल्प शक्ति अर्थात् मन और बुद्धि सदा मनमत से खाली रखो। मन को चलाने की आदत बहुत है ना। एकाग्र करते हो फिर भी चल

पड़ता है। फिर मेहनत करते हो। चलाने से बचने का साधन है जैसे आजकल अगर कोई कन्ट्रोल में नहीं आता, बहुत तंग करता है, बहुत उछलता है, या पागल हो जाता है तो उनको ऐसा इन्जेक्शन लगा देते हैं जो वह शान्त हो जाता है। तो ऐसे अगर संकल्प शक्ति आपके कन्ट्रोल में नहीं आती तो अशरीरी भव का इन्जेक्शन लगा दो। बाप के पास बैठ जाओ। तो संकल्प शक्ति व्यर्थ नहीं उछलेगी बैठना भी नहीं आता है क्या? सिर्फ बैठने का ही काम दिया है, और कुछ नहीं। अभी तो समझ रहे हैं कि बहुत सहज है। बुद्धि का लगाम देकर के फिर ले लेते हो इस लिए मन व्यर्थ की मेहनत में डाल देता है। व्यर्थ मेहनत से छूट जाओ। बाप को बच्चों की मेहनत देख तरस तो पड़ेगा ना।

19.12.79... .. सविसएबुल बच्चों का व्यर्थ कभी नहीं चलना चाहिए। अगर आप ही यह कहें कि व्यर्थ संकल्प आते हैं तो और क्या करेंगे? और तो विकल्प में चले जायेंगे। ऐसे तो हरेक अटेन्शन रखता ही है लेकिन अब महीन अटेन्शन चाहिए। संकल्प से भी सेवा हो। अगर संकल्प शक्ति को सेवा में बिज़ी कर देते हो तो व्यर्थ ऑटोमेटिकली खत्म हो जायेगा।

कहीं बारिश का पानी व्यर्थ जाता है तो बाँध बनाकर व्यर्थ भी सफल कर देते हैं। ऐसे संकल्प शक्ति जो व्यर्थ चली जाती है उसको सेवा में बिज़ी रखेंगे तो व्यर्थ के बजाए समर्थ हो जायेगा। संकल्प, बोल, कर्म व ज्ञान की शक्तियाँ कुछ भी व्यर्थ न जानी चाहिए।

4.1.80... .. वर्तमान व भविष्य के राज्य-अधिकारी बनने के लिए सदा यह चेक करो कि मेरे में रूलिंग पावर कहाँ तक है, पहले सूक्ष्म शक्तियाँ, जो विशेष कार्यकर्ता है, उनके ऊपर कहाँ तक अपना अधिकार है। संकल्प शक्ति के ऊपर, बुद्धि के ऊपर और संस्कारों के ऊपर। यह विशेष तीन शक्तियाँ राज्य-अधिकारी बनाने में सदा सहयोगी अर्थात् राज्य की कारोबार चलाने वाले मुख्य सहयोगी कार्यकर्ता हैं। अगर यह तीनों कार्यकर्ता आप आत्मा अर्थात् राज्य-अधिकारी राजा के इशारे पर चलते हैं तो सदा वह राज्य यथार्थ रीति से चलता है।

4.1.80... .. जैसे ब्रह्मा आदि देव है वैसे पहले आदि शक्ति है – ‘मन’ अर्थात् संकल्प शक्ति’। आदि शक्ति यथार्थ है तो और भी कार्यकर्ता उनके साथी यथार्थ कार्य करने वाले हैं। पहले यह चेक करो मुझ राजा का पहला आदि कार्यकर्ता सदा समीप के साथी के समान इशारे पर चलता है। क्योंकि माया दुश्मन भी पहले इसी आदि शक्ति को बागी अर्थात् ट्रेटर बनाती है। और राज्य-अधिकार लेने की कोशिश करती है। इसलिए आदि शक्ति को सदा अपने अधिकार की शक्ति के आधार पर सहयोगी, विशेष कार्यकर्ता करके चलाओ। जैसे राजा स्वयं कोई कार्य नहीं करता, कराता है। करने वाले राज्य कारोबारी अलग होते हैं। अगर राज्य कारोबारी ठीक नहीं होते तो राज्य डगमग हो जाता है। ऐसे आत्मा भी करावनहार है, करनहार ये विशेष त्रिमूर्ति शक्तियाँ हैं। पहले इनके ऊपर रूलिंग पावर है तो यह साकार कर्मेन्द्रियाँ उन के आधार पर स्वतःही सही रास्ते पर चलेंगी। कर्मेन्द्रियों को चलाने वाली भी विशेष यह तीन शक्तियाँ हैं। अब रूलिंग पावर कहाँ तक आई है – यह चेक करो।

4.1.80... .. अभी शक्ति को जमा करना है। जैसे ‘याद’ से मन्सा की शक्ति जमा करते हो, साइलेन्स में बैठते हो तो ‘संकल्प-शक्ति’ जमा करते हो। ऐसे, वाणी की शक्ति भी जमा करो।

15.4.81... ..अब तो आवाज़ बुलन्द हो रहा है। अभी अजुन सब यहाँ वहाँ देखकर कोशिश कर रहे हैं कि यह कहाँ का आवाज़ है। सुनाई देता है लेकिन अभी किलीयर सुनाई नहीं देता है। कहाँ से आवाज़ आ रहा है, किस तरफ जाना है वह नहीं समझते। किलीयर होगा जब वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति उन्हीं तक पहुँचे। तब आवाज़ किलीयर होगा। अभी अटेन्शन जाना शुरू हुआ है।

4.10.81... बापदादा सर्व बच्चों को अन्तिम स्टेज अर्थात् सम्पन्न और सम्पूर्ण स्टेज-इसी शक्तिशाली स्थिति का अनुभव कराते हैं। जिस स्थिति में सदा मास्टर सर्वशक्तिवान, मास्टर ज्ञानसागर, सर्व गुणों में सम्पन्न, हर संकल्प में, हर श्वास में हर सेकेण्ड सदा साक्षी-द्रष्टा और सदा बाप के साथीपन का, सर्व ब्राह्मण परिवार की श्रेष्ठ आत्माओं के स्नेह, सहयोग के साथीपन का सदा अनुभव होगा। ऐसे अनु- भूति होगी जैसे साइंस के साधनों द्वारा दूर की वस्तु समीप अनुभव करते हैं। ऐसे दिव्य बुद्धि द्वारा कितनी ही दूर रहने वाली आत्माओं को समीप अनुभव करेंगे। जैसे स्थूल में साथ रहने वाली आत्माओं को समीप अनुभव करेंगे। जैसे स्थूल में साथ रहने वाली आत्मा को स्पष्ट देखते, बोलते, सहयोग देते और लेते हो, ऐसे चाहे अमेरिका में बैठी हुई आत्मा हो लेकिन दिव्य-दृष्टि, दिव्य दृष्टि ट्रांस नहीं लेकिन रूहानियत भरी दिव्य दृष्टि- जिस दृष्टि द्वारा नैचुरल रूप में आत्मा और आत्माओं का बाप भी दिखाई देगा। आत्मा को देखूँ यह मेहनत नहीं होगी, पुरुषार्थ नहीं होगा लेकिन हूँ ही आत्मा, हैं ही सब आत्मायें। शरीर का भान ऐसे खोया हुआ होगा जैसे द्वापर से आत्मा का भान खो गया था। सिवाए आत्मा के कुछ दिखाई नहीं देगा। आत्मा चल रही है, आत्मा कर रही है। सदा मस्तक मणी के तरफ तन की आँखे वा मन की आँखे जायेंगी। बाप और आत्माएं- यही स्मृति निरन्तर नैचुरल होगी। उस समय की भाषा क्या होगी? श्रेष्ठ संकल्प की भाषा होगी। भाषण करने वाले नहीं, आत्मिक आकर्षण करने वाले होंगे। बोलने से नहीं लेकिन स्थिति के द्वारा, श्रेष्ठ जीवन के दर्पण द्वारा सहज ही स्वरूप अनुभव करायेंगे। मुख के बजाए नयन ही स्वरूप अनुभव कराने के साधन बन जायेंगे। नयनों की भाषा संकल्प की भाषा है। संकल्प शक्ति आपके मुख के आवाज़ की गति से भी तेज गति से कार्य करेगी। इसलिए श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति को ऐसे स्वच्छ बनाओ जो ज़रा भी व्यर्थ की अस्वच्छता भी न हो। जिसको कहा जाता है लाइन क्लीयर। **इस संकल्प शक्ति द्वारा बहुत ही कार्य सफल होने की सिद्धि के अनुभव करेंगे।** जिन आत्माओं को, जिन स्थूल कार्यों को वा सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली आत्माओं के संस्कारों को, मुख द्वारा वा अन्य साधनों द्वारा परिवर्तन करते हुए भी सम्पूर्ण सफलता नहीं अनुभव करते, वे सब उम्मीदें संकल्प शक्ति द्वारा सम्पूर्ण सफल ऐसे हो जायेंगी जैसे हुई पड़ी थीं। चारों ओर जैसे स्थूल आकाश में भिन्न-भिन्न सितारे देखते हो ऐसे विश्व के वायुमण्डल के आकाश में चारों ओर सफलता के सितारे चमकते हुए देखेंगे। वर्तमान समय उम्मीदों के तारे और सफलता के तारे दोनों दिखाई देते हैं लेकिन अन्तिम समय, अन्तिम स्थिति, बाप के अन्त में खोये हुए श्रेष्ठ स्थिति में सफलता के सितारे ही होंगे। यह रूहानी नयन, यह रूहानी मूर्त ऐसे दिव्य दर्पण बन जायेगी- जिस दर्पण में हर आत्मा बिना मेहनत के आत्मिक स्वरूप ही देखेगी। सेकेण्ड में इस दर्पण द्वारा आत्मिक स्वरूप का अनुभव करने के कारण बाप की तरफ आकर्षित हो, अहो प्रभू के गीत गाते, देहभान से सहज अर्पण हो जायेंगे। अहो आपका भाग्य! ओहो मेरा भाग्य! इस भाग्य की अनुभूति के कारण देह और देह के सम्बन्ध की स्मृति का त्याग कर देंगे क्योंकि भाग्य के आगे त्याग करना अति सहज है। आप सब भी इस सहज त्याग और भाग्य को लेने चाहते हो वा देने वाले बनने चाहते हो? यह तो नहीं सोचते हो कि इतने वर्षों की मेहनत से तो अन्त समय सहज त्याग और भाग्य वाले बन जाएं, क्या पसन्द है? अन्त में सहज अनुभव ज़रूर करेंगे लेकिन कितने समय का अनुभव होगा? जितने थोड़े समय की पहचान उतने ही थोड़े समय के लिए प्राप्ति। आप सब बहुकाल के साथी हो और बहुकाल के राज्य अधिकारी हो। अन्त की कमज़ोर आत्माओं को महादानी वरदानी बन अनुभव का दान और पुण्य करो। यही सेकेण्ड का शक्तिशाली स्थिति द्वारा किया हुआ पुण्य आधाकल्प के लिए पूजनीय और गायन योग्य बना देगा। क्योंकि अन्तिम काल में आत्माओं के अन्तिम समय में आप सम्पूर्ण आत्माओं द्वारा प्राप्ति के अनुभव और सम्पूर्ण स्वरूप के प्रत्यक्षता का सम्पन्न स्वरूप,

यही अन्तिम अनुभव का संस्कार लेकर आत्माएँ आधाकल्प के लिए अपने घर में विश्रामी होंगी। कुछ प्रजा बनेंगी, कुछ भक्त बनेंगी इसलिए अन्त काल जो अन्त मती सो द्वापर में भक्तपन की गति में अर्थात् श्रेष्ठ भक्त माला के शिरोमणि आत्मायें बन जायेंगी। कोई विश्व अधिकारी के रूप में देखेंगे, कोई प्रजा बनने के संस्कार कारण आपके राज्य में प्रजा बन जायेंगी। कोई अति पूज्य स्वरूप में देखेंगे तो भक्त आत्मायें बन जायेंगी। ऐसी श्रेष्ठ स्थिति, जिस स्थिति द्वारा इतनी सिद्धि को पायेंगे, ऐसी श्रेष्ठता का अनुभव कर रहे हो? संकल्प के ख़ज़ाने के महत्व को जानते हुए श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति जमा कर रहे हो? समझा अन्तिम स्टेज क्या है?

बापदादा भी तो आवाज़ से परे जायेंगे या आवाज़ में ही आयेंगे? प्रैक्टिस करो आवाज़ में कम आने की तो आवाज़ से परे की स्थिति स्वतः ही आकर्षण करेगी। पहला गेट तो आवाज़ से परे जाने का खुलता है ना! तो गेट खोलने का उद्घाटन कब करेंगे? और तो उद्घाटन बहुत करते हो ना- मधुवन में? इसका उद्घाटन बापदादा अकेले करेंगे या साथ में करेंगे? तो तैयार हो? अच्छा-फिर दूसरे बारी इसका हिसाब लेंगे। हिसाब तो लेना पड़ेगा ना!

28.11.81... आप पूर्वज आत्माओं की अलौकिकता— “सूक्ष्म शक्ति” है। जो सब अनुभव करें कि पूर्वजों द्वारा कोई विशेष शक्ति उत्पन्न हो रही है। वंशावली आप आत्माओं द्वारा कोई नवी-नता चाहती है। साधनों की शक्ति, वाणी की शक्ति यह तो सबके पास है। लेकिन अप्राप्त शक्ति कौन-सी है? वह है— ‘श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति, शुभ वृत्ति की शक्ति, स्नेह और सहयोग की दृष्टि।’ यह किसके पास नहीं है। तो हे पूर्वज आत्मायें! अपनी वंशावली के प्राप्ति के आशाओं के दीपक जलाए यथार्थ मंजिल तक लाओ। समझा क्या करना है?

18.1.82... सबसे तीव्रगति की सेवा का साधन है – ‘संकल्प शक्ति’। तो ब्रह्मा बाप श्रेष्ठ संकल्प की विधि द्वारा वृद्धि में सदा सहयोगी है। तो वृद्धि की भी गति तीव्र हो रही है ना। विधि तीव्र है तो वृद्धि भी तीव्र है। बगीचे को देख खुशी होती है ना?

1.3.83... ऐसा समय आयेगा जो चारों ओर फरिश्ते नजर आयेंगे। अभी मुख द्वारा सेवा का पार्ट चल रहा है और अभी कुछ रहा हुआ है इसलिए दूर-दूर जाना पड़ता है। अभी श्रेष्ठ संकल्प की शक्तिशाली सेवा जो पहले भी सुनाई है, अन्त में वही सेवा का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देगा। हमें कोई बुला रहा है कोई दिव्य बुद्धि द्वारा, शुभ संकल्प का बुलावा हो रहा है, ऐसे अनुभव करेंगे। कोई दिव्य दृष्टि द्वारा बाप और स्थान को देखेंगे। दोनों प्रकार के अनुभवों द्वारा बहुत तीव्रगति से अपने श्रेष्ठ ठिकाने पर पहुँच जायेंगे।

9.12.85... मनजीत अर्थात् मन के व्यर्थ संकल्प, विकल्प जीत है। ऐसे जीते हुए बच्चे विश्व के राज्य अधिकारी बनते हैं। इसलिए ‘मन जीते जगतजीत’ गाया हुआ है। जितना इस समय संकल्प-शक्ति अर्थात् मन को स्व के अधिकार में रखते हो उतना ही विश्व के राज्य के अधिकारी बनते हो।

1.1.86... दादियों से- शक्तिशाली संकल्प का सहयोग विशेष आज की आवश्यकता है। स्वयं का पुरुषार्थ अलग चीज़ है लेकिन श्रेष्ठ संकल्प का सहयोग इसकी विशेष आवश्यकता है। यही सेवा आप विशेष आत्माओं की है। संकल्प से सहयोग देना इस सेवा को बढ़ाना है। वाणी से शिक्षा देने का समय बीत गया। अभी श्रेष्ठ संकल्प से परिवर्तन करना है। श्रेष्ठ भावना से परिवर्तन करना इसी सेवा की आवश्यकता है। यही बल सभी को आवश्यक है। संकल्प तो सब करते हैं लेकिन संकल्प में बल भरना वह आवश्यकता है। तो जितना जो स्वयं शक्तिशाली है उतना औरों में भी संकल्प में बल भर सकते हैं। जैसे आजकल सूर्य की शक्ति जमा कर कई कार्य सफल करते हैं ना। यह भी संकल्प की शक्ति इकट्ठी की हुई, उससे औरों को भी बल भर सकते हो। कार्य सफल कर सकते हो। वह साफ कहते हैं – हमारे में हिम्मत नहीं है। तो उन्हें हिम्मत देनी है। वाणी से भी हिम्मत आती है लेकिन

सदाकाल की नहीं। वाणी के साथ-साथ श्रेष्ठ संकल्प की सूक्ष्म शक्ति ज़्यादा कार्य करती है। जितना जो सूक्ष्म चीज़ होती है वह ज़्यादा सफलता दिखाती है। वाणी से संकल्प सूक्ष्म हैं ना। तो आज इसी की आवश्यकता है। यह संकल्प शक्ति बहुत सूक्ष्म है। जैसे इन्जेक्शन के द्वारा ब्लड में शक्ति भर देते हैं ना। ऐसे संकल्प एक इन्जेक्शन का काम करता है। जो अन्दर वृत्ति में संकल्प द्वारा संकल्प में शक्ति आ जाती है। अभी यह सेवा बहुत आवश्यक है।

31.3.86... इस वर्ष बच्चों के दृढ़ता की तपस्या से हर संकल्प को अमर, अविनाशी बनाने के लिए, स्वयं से बार-बार दृढ़ता के अभ्यास से रूह-रूहान करने के लिए, रियलाइजेशन करने के लिए और रीडनकारनेट स्वरूप बन फिर कर्म में आने के लिए इस स्थिति को सदाकाल के लिए और मजबूत करने के लिए, बापदादा यह समय दे रहे हैं। साथ-साथ विशेष रूप में शुद्ध संकल्प की शक्ति से जमा का खाता और बढ़ाना है।

शुद्ध संकल्प की शक्ति का विशेष अनुभव अभी और अन्तर्मुखी बन करने की आवश्यकता है। शुद्ध संकल्पों की शक्ति सहज व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर दूसरों के प्रति भी शुभ भावना, शुभ कामना के स्वरूप से परिवर्तन कर सकते हैं। अभी इस शुद्ध संकल्प के शक्ति का विशेष अनुभव अभी व्यर्थ संकल्पों को सहज समाप्त कर देती है। न सिर्फ अपने व्यर्थ संकल्प लेकिन आपके शुद्ध संकल्प दूसरों के प्रति भी शुभ भावना, शुभ कामना के स्वरूप से परिवर्तन कर सकते हैं। अभी इस शुद्ध संकल्प के शक्ति की स्वयं के प्रति भी स्टाक जमा करने की बहुत आवश्यकता है। मुरली सुनना यह लगन तो बहुत अच्छी है। मुरली अर्थात् खज़ाना। मुरली की हर प्वाइंट को शक्ति के रूप में जमा करना यह है – शुद्ध संकल्प शक्ति को बढ़ाना। शक्ति के रूप में हर समय कार्य में लगाना। अभी इस विशेषता का विशेष अटेन्शन रखना है। शुद्ध संकल्प की शक्ति के महत्त्व को अभी जितना अनुभव करते जायेंगे उतना मन्सा सेवा के भी सहज अनुभवी बनते जायेंगे। पहले तो स्वयं के प्रति शुद्ध संकल्पों की शक्ति जमा चाहिए। और फिर साथ-साथ आप सभी बाप के साथ विश्व कल्याणकारी आत्मायें, विश्व परिवर्तक आत्मायें हो। तो विश्व के प्रति भी यह शुद्ध संकल्पों की शक्ति द्वारा परिवर्तन करने का कार्य अभी बहुत रहा हुआ है। जैसे वर्तमान समय ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूपधारी बन शुद्ध संकल्प की शक्ति से आप सबकी पालना कर रहे हैं। सेवा की वृद्धि के सहयोगी बन आगे बढ़ा रहे हैं। यह विशेष सेवा – शुद्ध संकल्प के शक्ति की चल रही है। तो ब्रह्मा बाप समान अभी इस विशेषता को अपने में बढ़ाने का, तपस्या के रूप में अभ्यास करना है। तपस्या अर्थात् दृढ़ता सम्पन्न अभ्यास। साधारण को तपस्या नहीं कहेंगे तो अभी तपस्या के लिए समय दे रहे हैं। अभी ही क्यों दे रहे हैं? क्योंकि यह समय आपके बहुतकाल में जमा हो जायेगा। बापदादा सभी को बहुतकाल की प्राप्ति कराने के निमित्त हैं। बापदादा सभी बच्चों को बहुतकाल के राज्य भाग्य अधिकारी बनाना चाहते हैं। तो बहुतकाल के राज्य भाग्य के अधिकारी बनाना चाहते हैं। तो बहुत काल का समय बहुत थोड़ा है। इसलिए हर बात के अभ्यास को 'तपस्या' के रूप में करने के लिए यह विशेष समय दे रहे हैं। क्योंकि समय ऐसा आयेगा – जिसमें आप सभी को दाता और वरदाता बन थोड़े समय में अनेकों को देना पड़ेगा। तो सर्व खज़ानों के जमा का खाता सम्पन्न बनाने के लिए समय दे रहे हैं।

जैसे अमेरिका का व्हाइट हाउस मशहूर है। तो यह विश्व का पीस हाउस-मधुबन प्रसिद्ध होगा। सभी की नजर इस तरफ जायेगी। चाहे पहुँच न भी सकें लेकिन अटेन्शन ज़रूर जायेगा। आकर्षण होगी, बुद्धि द्वारा भी अनुभव करने की कोशिश करेंगे। ऐसे समय पर यह शक्तियाँ काम आयेंगी। उन्हीं को संकल्प की शक्ति का सहयोग दे, संकल्प शक्ति के विमान द्वारा मधुबन पहुँचा सको। आपसे इस विमान की माँगनी करेंगे। इतनी शक्ति शुभ श्रेष्ठ



संकल्पों की जमा करो जो कईयों का पर-उपकार कर सको। बहुत काल के वरदान का पूरा-पूरा लाभ उठाना। समझा!

18.11.87... .. जैसे वाणी द्वारा अभी सारा स्थूल कार्य करते रहते हो, ऐसे साइलेन्स के शक्ति के श्रेष्ठ साधन - शुभ संकल्प की शक्ति से स्थूल कार्य भी ऐसे ही सहज कर सकते हो वा करा सकते हो।

28.2.88... .. 'संकल्प की शक्ति', वाणी की शक्ति से अति सूक्ष्म होने के कारण अति तीव्रगति से चलती भी है, और पहुँचती भी है। रूह-रूहान की भाषा है ही संकल्प की भाषा। साइन्स वाले आवाज़ को कैच करते हैं लेकिन संकल्प को कैच करने के लिए सूक्ष्म साधन चाहिए। बापदादा हर एक बच्चे के संकल्प की भाषा सदा ही सुनते हैं अर्थात् संकल्प कैच करते हैं। इसके लिए बुद्धि अति सूक्ष्म, स्वच्छ और स्पष्ट आवश्यक है, तब ही बाप की रूह-रूहान के रेसपाण्ड को समझ सकेंगे।

31.3.88... .. अभी शक्ति को जमा करना है। जैसे 'याद' से मन्सा की शक्ति जमा करते हो, साइलेन्स में बैठते हो तो 'संकल्प-शक्ति' जमा करते हो। ऐसे, वाणी की शक्ति भी जमा करो।

28.2.88... .. जैसे ब्रह्मा बाप के श्रेष्ठ संकल्प द्वारा वा श्रेष्ठ संकल्प के आह्वान द्वारा दिव्य जन्म प्राप्त किया है, ऐसे ही श्रेष्ठ संकल्प की विशेष रचना होने के कारण अपने संकल्पों को श्रेष्ठ बनाने के विशेष अटेंशन में रहते हैं। संकल्प के ऊपर अटेंशन होने कारण किसी भी प्रकार की सूक्ष्म माया के वार को जल्दी जान भी जाते हैं और परिवर्तन करने के लिए वा विजयी बनने के लिए पुरुषार्थ कर जल्दी से खत्म करने का प्रयत्न करते हैं। संकल्प-शक्ति को सदा शुद्ध बनाने का अटेंशन अच्छा रहता है। अपने को चेक करने का अभ्यास अच्छा रहता है। सूक्ष्म चेकिंग के कारण छोटी गलती भी महसूस कर बाप के आगे, निमित्त बने हुए बच्चों के आगे रखने में साफ़ दिल हैं, इसलिए इस विधि से बुद्धि में किचड़ा इकट्ठा नहीं होता है। मैजारिटी साफ-दिल से बोलने में संकोच नहीं करते हैं, इसलिए जहाँ स्वच्छता है वहाँ देवताई गुण सहज धारण हो जाते हैं। दिव्य गुणों की धारणा अर्थात् आह्वान करने की विधि है ही - 'स्वच्छता'।

31.3.88... .. मनजीत अर्थात् मन के व्यर्थ संकल्प, विकल्प जीत है। ऐसे जीते हुए बच्चे विश्व के राज्य अधिकारी बनते हैं। इसलिए 'मन जीते जगतजीत' गाया हुआ है। जितना इस समय संकल्प-शक्ति अर्थात् मन को स्व के अधिकार में रखते हो उतना ही विश्व के राज्य के अधिकारी बनते हो।

31.12.90... .. सदैव अपने को चेक करो कि आज के दिन मन्सा अर्थात् स्वयं के संकल्प शक्ति में विशेष क्या विशेषता लाई? और अन्य आत्माओं के प्रति मन्सा सेवा अर्थात् शुभ भावना, शुभ कामना के विधि द्वारा कितना वृद्धि को प्राप्त किया? अर्थात् श्रेष्ठता की नवीनता क्या लाई?

12.11.92... .. है-जैसे राजा अपने सेवा के साथियों को, प्रजा को जैसा, जो ऑर्डर करते हैं, उस ऑर्डर से, उसी नीति प्रमाण साथी वा प्रजा कार्य करते हैं। ऐसे आप स्वराज्य अधिकारी आत्माएं अपनी योग की शक्ति द्वारा हर कर्मेन्द्रिय को जैसा ऑर्डर करती हो, वैसे हर कर्मेन्द्रिय आपके ऑर्डर के अन्दर चलती है। न सिर्फ यह स्थूल शरीर की सर्व कर्मेन्द्रियां लेकिन मन, बुद्धि, संस्कार भी आप राज्य-अधिकारी आत्मा के डायरेक्शन प्रमाण चलते हैं। जब चाहो, जैसे चाहो-वैसे मन अर्थात् संकल्प शक्ति को वहाँ स्थित कर सकते हो। अर्थात् मन, बुद्धि, संस्कार के भी राज्य-अधिकारी। संस्कारों के वश नहीं लेकिन संस्कार को अपने वश में कर श्रेष्ठ नीति से कार्य में लगाते हो, श्रेष्ठ संस्कार प्रमाण सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो। तो स्वराज्य की नीति है-मन, बुद्धि, संस्कार और सर्व कर्मेन्द्रियों के ऊपर स्व अर्थात् आत्मा का अधिकार।

25.1.94... .. फ़रिश्ता अर्थात् डबल लाइट। तो निजी लाइट स्वरूप स्मृति स्वरूप में कहाँ तक रहा? साथ-साथ लाइट अर्थात् हल्कापन, स्व के परिवर्तन के पुरुषार्थ में कहाँ तक लाइट अर्थात् हल्के रहे? मन अर्थात् संकल्प शक्ति में व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने में अर्थात् व्यर्थ के बोझ को हल्का करने में कहाँ तक सफल रहे?

14.4.94... .. टीचर बनना बहुत अच्छा है, गद्दी तो मिल जाती है ना! दीदी-दीदी का टाइटल मिल जाता है ना। लेकिन ज़िम्मेदारी भी फिर इतनी है। इस वर्ष में कुछ नवीनता दिखाओ। यह नहीं सोचो—हाथ तो अनेक बार उठा चुके हैं, प्रतिज्ञा भी बहुत वर्ष कर चुके हैं, ऐसे संकल्प न सूक्ष्म में आये, न औरों के प्रति आये। ये संकल्प भी ढीला करता है। ये तो चलता ही आता है, ये तो होता ही रहता है... ये वाब्रेशन भी कमज़ोर बनाता है। दृढ़ संकल्प करो तो दृढ़ता सफलता को अवश्य लाती है। कमज़ोर संकल्प नहीं उत्पन्न करो। उनको पालने में बहुत टाइम व्यर्थ जाता है। उत्पत्ति बहुत जल्दी होती है। एक सेकण्ड में सौ पैदा हो जाते हैं। और पालना करने में कितना समा लगता है! मिटाने में मेहनत भी लगती, समय भी लगता और बापदादा के वरदान व दुआओं से भी वंचित रह जाते। सर्व की शुभ भावनाओं की दुआओं से भी वंचित हो जाते हैं। शुद्ध संकल्प का बंधन, घेराव, ऐसा बांधो सबके लिये, चाहे कोई थोड़ा कमज़ोर भी हो, उनके लिये भी ये शुद्ध संकल्पों का घेराव एक छत्रछाया बन जाये, सेफ्टी का साधन बन जाये, किला बन जाये। शुद्ध संकल्प की शक्ति को अभी कम पहचाना है। एक शुद्ध वा श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प क्या कमाल कर सकता है—इसकी अनुभूति इस वर्ष में करके देखो। पहले अभ्यास में युद्ध होगी, व्यर्थ संकल्प शुद्ध संकल्प को कट करेगा। जैसे कौरव-पाण्डव के तीर दिखाते हैं ना, तीर, तीर को रास्ते में ही ख़त्म कर देता है तो संकल्प, संकल्प को ख़त्म करने की कोशिश करता है, करेगा लेकिन दृढ़ संकल्प वाले का साथी बाप है। विजय का तिलक सदा है ही है। अब इसको इमर्ज करो तो व्यर्थ स्वतः ही मर्ज हो जायेगा। व्यर्थ को समय देते हो। कट नहीं करते हो लेकिन उसके रंग में रंग जाते हो। सेकण्ड से भी कम समय में कट करो। शुद्ध संकल्प से समाप्त करो। तो सर्व के शुभ संकल्पों का वायुमण्डल का घेराव कमाल करके दिखायेगा। पहले से ही यह नहीं सोचो कि होता तो है नहीं, करते तो बहुत हैं, सुनते तो बहुत हैं, अच्छा भी बहुत लगता है, लेकिन होता नहीं है। यह भी व्यर्थ वायुमण्डल कमज़ोर बनाता है। होना ही है—दृढ़ता रखो, उड़ान करो। क्या नहीं कर सकते हो! लेकिन पहले स्व के ऊपर अटेन्शन। स्व का अटेन्शन ही टेन्शन ख़त्म करेगा। समझा क्या करना है? कोई कहे यह तो होता ही रहता है, पहले भी प्रतिज्ञा की थी—यह नहीं सुनो। इसमें कमज़ोरों को साथ नहीं देना, साथी बनाना। अगर कोई ऐसा-वैसा बोलता है तो एक-दो में कहते हैं ना शुभ बोलो, शुभ सोचो, शुभ करो। अच्छा।

25.3.95... .. सबसे श्रेष्ठ खजाना संकल्प का खजाना है और आप सबका श्रेष्ठ संकल्प ही ब्राह्मण जीवन का आधार है। संकल्प का खजाना बहुत शक्तिशाली है। संकल्प द्वारा सेकण्ड से भी कम समय में परमधाम तक पहुँच सकते हो। **संकल्प शक्ति एक ऑटोमेटिक रॉकेट से भी तीव्र गति वाला रॉकेट है। जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो।** चाहे बैठे हो, चाहे कोई कर्म कर रहे हो लेकिन संकल्प के खजाने से वा शक्ति से जिस आत्मा के पास पहुँचना चाहो उसके समीप अपने को अनुभव कर सकते हो। जिस स्थान पर पहुँचना चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। जिस स्थिति को अपनाना चाहो, चाहे श्रेष्ठ हो, खुशी की हो, चाहे व्यर्थ हो, कमजोरी की हो, सेकण्ड के संकल्प से अपना सकते हो। संकल्प किया—मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ तो श्रेष्ठ स्थिति और श्रेष्ठ अनुभूति होगी और संकल्प किया मैं तो कमजोर आत्मा हूँ, मेरे में कोई शक्ति नहीं है, तो सेकण्ड के संकल्प से खुशी गायब हो

जायेगी। परेशानी के चिन्ह स्थिति में अनुभव होंगे। लेकिन दोनों स्थिति का आधार संकल्प है। याद में भी बैठते हो तो संकल्प के आधार से ही स्थिति बनाते हो। मैं बिन्दु हूँ, मैं फरिश्ता हूँ... यह स्थिति संकल्प से ही बनी। तो संकल्प कितना शक्तिशाली है!

25.3.95... .. ज्ञान का आधार भी संकल्प ही है। मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ—ये संकल्प करते हो। सारा दिन मनबुद्धि को शुद्ध संकल्प देते हो वा मनन में शुद्ध संकल्प करते हो तो मनन शक्ति का आधार भी संकल्प शक्ति है। धारणा करते हो, मनबुद्धि को संकल्प देते हो कि आज मुझे सहनशक्ति धारण करनी है तो धारणा का भी आधार संकल्प है। सेवा करते हो, प्लैन बनाते हो तो भी शुद्ध संकल्प ही चलते हैं ना! शुद्ध संकल्प द्वारा ही प्लैन बनता है। अनुभव है ना! तो ब्राह्मण जीवन का विशेष श्रेष्ठ खजाना है संकल्प का खजाना। अगर आप संकल्प के खजाने को सफल करते हो तो आपकी स्थिति, कर्म सारा दिन बहुत अच्छा रहता है और संकल्प के खजाने को व्यर्थ गँवाते हो तो रिज़ल्ट क्या होती? जो स्थिति चाहते हो वो नहीं होती।

व्यर्थ संकल्प तो तेज होते हैं ना! एक सेकण्ड में आबू से अमेरिका पहुँच जायेंगे। वैसे पहुँचने में कितने घण्टे लगते हैं! तो इतनी फास्ट गति है, उस गति के प्रमाण चेक करो, अपने संकल्प शक्ति की बचत करो और फिर रात्रि को चेक करो। अगर अटेन्शन दे करके कोई भी चीज़ की बचत करते हैं तो चाहे बचत थोड़ी हो लेकिन बचत की खुशी एक्स्ट्रा होती है। अगर 10 पाउण्ड या डॉलर खर्च होना है और आपने एक पाउण्ड या डॉलर बचा लिया तो एक पाउण्ड की बड़ी खुशी होगी कि बचाकर आये हैं। तो अपने संकल्पों के ऊपर कन्ट्रोलिंग पॉवर रखो। 12.12.98... .. युद्ध के संस्कार, मेहनत के संस्कार सूर्यवंशी बनने नहीं देंगे। लास्ट घड़ी भी युद्ध में ही जायेगी, अगर विदेही बनने का सेकण्ड में अभ्यास नहीं है तो। और जिस बात में कमज़ोर होंगे, चाहे स्वभाव में, चाहे सम्बन्ध में आने में, चाहे संकल्प शक्ति में, वृत्ति में, वायुमण्डल के प्रभाव में, जिस बात में कमज़ोर होंगे, उसी रूप में जान-बूझकर भी माया लास्ट पेपर लेगी। इसीलिए विदेही बनने का अभ्यास बहुत ज़रूरी है।

13.2.99... .. बापदादा बच्चों को फिर से आगे के लिए इशारा दे रहे हैं कि अभी भी पहला फाउण्डेशन संकल्प शक्ति कभी-कभी वेस्ट ज़्यादा और निगेटिव वेस्ट से थोड़ा कम है। इस संकल्प शक्ति का उपयोग जितना स्व प्रति वा विश्व के प्रति करना है उतना और बढ़ाओ क्योंकि संकल्प के आधार पर बोल और कर्म होता है तो संकल्प शक्ति का परिवर्तन करो। जो वेस्ट और निगेटिव जाता है, उसे परिवर्तन कर विश्व-कल्याण के प्रति कार्य में लगाओ। बापदादा संकल्प के खज़ाने को सर्व श्रेष्ठ मानते हैं इसलिए इस संकल्प के खज़ाने प्रति एकानामी के अवतार बनो। आज के दिन को अवतरण का दिन कहा जाता है तो बापदादा की सभी बच्चों प्रति यही शुभ आशा है कि आज के दिन शिव अवतरण के साथ आप सभी एकानामी के अवतार बनो। संकल्प में एकानामी की अर्थात् वेस्ट से बचाया, तो और सभी खज़ाने ऑटोमेटिक बच जायेंगे।

15.12.99... .. बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है - सबसे बड़ा खज़ाना है जो वर्तमान और भविष्य बनाता है, वह है श्रेष्ठ खज़ाना, श्रेष्ठ संकल्प का खज़ाना। संकल्प शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है जो आप बच्चों के पास है - श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति। संकल्प तो सबके पास हैं लेकिन श्रेष्ठ शक्ति, शुभ-भावना, शुभ-कामना की संकल्प शक्ति, मन-बुद्धि एकाग्र करने की शक्ति - यह आपके पास ही है। और जितना आगे बढ़ते जायेंगे इस संकल्प शक्ति को जमा करते जायेंगे, व्यर्थ नहीं गँवायेंगे, व्यर्थ गँवाने का मुख्य कारण है व्यर्थ संकल्प।

बापदादा फिर से अण्डरलाइन करा रहा है कि अन्तिम स्टेज, अन्तिम सेवा - यह संकल्प शक्ति बहुत फास्ट सेवा करायेगी। इसीलिए संकल्प शक्ति के ऊपर और अटेन्शन दो। बचाओ, जमा करो। बहुत काम में आयेगी। प्रयोगी इस संकल्प की शक्ति से बनेंगे।

मनोबल की बड़ी महिमा है, यह रिद्धि-सिद्धि वाले भी मनोबल द्वारा अल्पकाल के चमत्कार दिखाते हैं। आप तो विधिपूर्वक, रिद्धि-सिद्धि नहीं, विधिपूर्वक कल्याण के चमत्कार दिखायेंगे जो वरदान हो जायेंगे, आत्माओं के लिए यह संकल्प शक्ति का प्रयोग वरदान सिद्ध हो जायेगा। तो पहले यह चेक करो कि मन को कण्ट्रोल करने की कण्ट्रोलिंग पावर है? सेकण्ड में जैसे साइन्स की शक्ति, स्विच के आधार से, स्विच आन करो, स्विच आफ करो - ऐसे सेकण्ड में मन को जहाँ चाहो, जैसे चाहो, जितना समय चाहो, उतना कण्ट्रोल कर सकते हैं? बहुत अच्छे-अच्छे स्वयं प्रति भी और सेवा प्रति भी सिद्धि रूप दिखाई देंगे। लेकिन बापदादा देखते हैं कि संकल्प शक्ति के जमा का खाता अभी साधारण अटेन्शन है। जितना होना चाहिए उतना नहीं है। संकल्प के आधार पर बोल और कर्म ऑटोमेटिक चलते हैं। अलग- अलग मेहनत करने की ज़रूरत ही नहीं है, आज बोल को कण्ट्रोल करो, आज दृष्टि को अटेन्शन में लाओ, मेहनत करो, आज वृत्ति को अटेन्शन से चेंज करो। अगर संकल्प शक्ति पावरफुल है तो यह सब स्वतः ही कण्ट्रोल में आ जाते हैं। मेहनत से बच जायेंगे। तो संकल्प शक्ति का महत्त्व जानो।

15.12.99... .. आखिर आपके संकल्प की शक्ति इतनी महान हो जायेगी - जो सेवा में मुख द्वारा सन्देश देने में समय भी लगाते हो, सम्पत्ति भी लगाते हो, हलचल में भी आते हो, थकते भी हो..लेकिन श्रेष्ठ संकल्प की सेवा में यह सब बच जायेगा। बढ़ाओ। इस संकल्प शक्ति को बढ़ाने से प्रत्यक्षता भी जल्दी होगी।

15.12.99... .. अभी तक भी भगवान इन्हों का टीचर है, भगवान इन्हों को चला रहा है, करावनहार परमात्मा करा रहा है...यह स्पष्ट नहीं हुआ है। अच्छा कार्य है और श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं यह आवाज़ तो है लेकिन करावनहार अभी भी गुप्त है। तो यह संकल्प-शक्ति से हर एक के बुद्धि को परिवर्तित कर सकते हो। चाहे अहो प्रभू कहके प्रत्यक्ष हो, चाहे बाप के रूप में प्रत्यक्ष हो। तो बापदादा अभी भी फिर से अटेन्शन दिलाता है कि संकल्प शक्ति को बढ़ाओ और प्रयोग में लाते रहो। समझा।

जो हार्ट का कोर्स कर रहे हैं, वह हाथ उठाओ। हार्ट तो ठीक है ना। डाक्टर कहाँ है? (सतीष गुप्ता को) अच्छा है अगर सहज साधन से ठीक हो जाता है, तो डबल फायदा है। दवाई भी है और मैडीटेशन भी है। तो डबल खाता एक चुक्त्तू होता है, एक जमा होता है, अच्छा फायदा है। अगर समझते हैं बहुत अच्छा है तो एक हाथ उठाओ। यह भी अच्छा रिसर्च है। ऐसे ही ठीक हो जाँ तो अच्छा है ना! यह भी देखो कोई भी सर्च करते हैं तो यह भी क्या है? संकल्प शक्ति से ही इन्वेन्शन होती है। कोई भी इन्वेन्शन का आधार एकाग्रता से संकल्प शक्ति होती है। इसलिए इन्हों को तो बहुत अच्छा चांस मिल जाता है। मधुबन भी मिल जाता, बीमारी भी खत्म हो जाती और मैडीटेशन में भी बढ़ते जाते।

18.1.2000... .. ब्रह्मा बाप का त्याग ड्रामा में विशेष नून्धा हुआ है। आदि से ब्रह्मा बाप का त्याग और आप बच्चों का भाग्य नून्धा हुआ है। सबसे नम्बरवन त्याग का एकज़ाम्पल ब्रह्मा बाप बना। त्याग उसको कहा जाता है - जो सब कुछ प्राप्त होते हुए त्याग करे। समय अनुसार, समस्याओं के अनुसार त्याग - श्रेष्ठ त्याग नहीं है। शुरू से ही देखो

तन, मन, धन, सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति होते हुए त्याग किया। शरीर का भी त्याग किया, सब साधन होते हुए स्वयं पुराने में ही रहे। साधनों का आरम्भ हो गया था। होते हुए भी साधना में अटल रहे। यह ब्रह्मा की तपस्या आप सब बच्चों का भाग्य बनाकर गई। ड्रामानुसार ऐसे त्याग का एकजाम्पल रूप में ब्रह्मा ही बना और इसी त्याग ने संकल्प शक्ति की सेवा का विशेष पार्ट बनाया। जो नये-नये बच्चे संकल्प शक्ति से फास्ट वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। तो सुना ब्रह्मा के त्याग की कहानी।

13.12.2001... आप ब्राह्मणों के एक श्रेष्ठ संकल्प में, शुभ संकल्प में इतनी शक्ति है जो आत्माओं को बहुत सहयोग दे सकते हो। संकल्प शक्ति का महत्त्व अभी और जितना चाहो उतना बढ़ा सकते हो। जब साइंस का साधन राकेट, दूर बैठे जहाँ चाहे, जब चाहे, जिस स्थान पर पहुँचाने चाहे, एक सेकण्ड में पहुँचा सकते हैं। आपके शुभ श्रेष्ठ संकल्प के आगे यह राकेट क्या है! रिफाइन विधि से कार्य में लगाके देखो, आपके विधि की सिद्धि बहुत श्रेष्ठ है। लेकिन अभी अन्तर्मुखता की भट्टी में बैठो। तो इस नये वर्ष में अपने आप सर्व खज़ानों की बचत की स्कीम बनाओ। जमा का खाता बढ़ाओ। सारे दिन में स्वयं ही अपने प्रति अन्तर्मुखता की भट्टी के लिए समय फिक्स करो। आपेही आप कर सकते हो, दूसरा नहीं कर सकता है।

18.1.2002... एक हैं डायरेक्ट मुख द्वारा वंशावली और दूसरे हैं संकल्प द्वारा वंशावली। तो संकल्प शक्ति बड़ी महान होती है। जैसे संकल्प शक्ति फास्ट है, ऐसे ही आपकी रचना डबल फारेनर्स फास्ट पुरुषार्थ और फास्ट प्रालब्ध अनुभव करने वाले हैं इसलिए सारे ब्राह्मण परिवार में डबल फारेनर्स डबल सिक्कीलधे हो।

18.1.2003... संकल्प शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है। आप ब्राह्मण आत्माओं का संकल्प क्या नहीं कर सकता है। हर एक को अपने श्रेष्ठ संकल्प का महत्त्व स्मृति में रखना है।

## 4. संगठन की शक्ति

18.1.69(पिताश्री जी के अव्यक्त होने के बाद – अव्यक्त वतन से प्राप्त दिव्य सन्देश (गुल्जार बहिन द्वारा)... .. )... .. आज बाबा को मधुबन में आने के लिए निमन्त्रण देने के लिए गई – तो बापदादा के ईशारों से अनुभव हुआ कि आज बाबा का विचार नहीं है। इतने में ही बाबा बोले अच्छा बच्ची सभी बच्चों ने बुलाया है तो बापदादा बच्चों का सेवाधारी है। यह सुनकर संकल्प चला कि बाबा ने अभी-अभी ना की और अभी-अभी हाँ की क्यों? दिल के संकल्प को जानकर बाबा बोले – यह जानबूझ कर कर्म करके बाबा सिखला रहे हैं कि तुम बच्चों को भी एक दो की राय, एक दो के विचारों को रिगार्ड देना चाहिए। भल समझो कोई विचार देता है और तुमको नहीं जंचता है तो भी उनके विचार को फौरन ठुकरा नहीं देना चाहिए। पहले तो उनको रिगार्ड दो कि हाँ, क्यों नहीं। बहुत अच्छा। जिससे उनके विचार का फोर्स कम हो जाए। तो फिर आप जो उन्हें समझा-येगे वह समझ सकेंगे। अगर सीधा ही उनको कट करेंगे तो दोनों फोर्स टक्कर खायेंगी और रिजल्ट में सफलता नहीं निकलेगी। इसलिए एक दो के विचार अर्थात् राय को पहले रिगार्ड देना आवश्यक है। इससे ही आपस में स्नेह और संगठन चलता रहेगा।

संदेश-८ ... .. बाबा बोले – बच्ची, जैसे मार्शल के पास सारे नक्शे रहते हैं कि कहाँ-कहाँ क्या-क्या हो रहा है। आगे क्या होना है – वैसे यह भी स्थापना के कार्य की ही बातचीत चल रही थी। जो फिर सुनायेंगे। इसके बाद एक दृश्य दिखाया – जिसमें तीन संगठन थे। एक तो देखा लाल-लाल चींटियाँ जो आपस में गेंद के माफिक इक्वटी हो जा रही थी। दृश्य ऐसा था जो ब्रह्मा बाबा ने शुरू-शुरू में देखा था – दूसरा संगठन था मूलवतन में आत्मायें शमा रूप में थी तीसरा संगठन – हम ब्राह्मणों का था। जो सभी सर्किल रूप में बैठे थे और बीच में बापदादा थे। वह ऐसे लग रहा था जैसे फूल के बीच में बूर होता है और चारों ओर पत्ते होते हैं। इसका रहस्य बाबा ने बताया – कि बच्ची जब प्रत्यक्षता शुरू हुई तो भी संगठन में देखा। अन्त में भी आत्माओं को संगठन रूप में ही रहना है और अब मध्य में भी संगठन है। संगठन की शक्ति है तो कोई भी हिला नहीं सकता। देखो, बापदादा ने कहाँ-कहाँ से चुन-चुनकर संगठन बनाया है। तो बच्चे भी जब संगठन में चलेंगे तो माया का वार नहीं होगा। जैसे गुलाब का फूल वा कोई भी फूल होता है तो उनको योग्य स्थान पर रखेंगे और अकेला पत्ता होगा तो हाथ से जल्दी मसल देंगे। तो बच्चों का भी संगठन रूपी गुलदस्ता होगा तो विजय प्राप्त करते रहेंगे। कोई वार नहीं कर सकेगा। ऐसे कहते बाबा ने कहा कि सभी बच्चों को कहना कि संगठन ही सेफ्टी का साधन है।

संदेश-12 ... .. बाबा ने कहा – मैजारटी बच्चे अभी तक स्नेह में अच्छे चल रहे हैं और बहुत ऐसे भी हैं जिन्हों के अन्दर कुछ संकल्प भी है कि ना मालूम अब क्या होगा। परन्तु संगठन के सहारे अब तक ठीक हैं। बाबा ने कहा कि स्नेह के आधार पर जो बच्चे अभी तक ठहरे हुए हैं तो अब स्नेह के साथ ज्ञान का फाउन्डेशन जरा भी ढीला हुआ तो बच्चों पर वायुमण्डल का असर बहुत सहज हो सकता है। इसलिए हर एक बच्चे को अपनी चेंकिंग करनी है।

21.1.69... बच्चों ने संगठन और स्नेह दोनों का सबूत दिया। ब्रह्मा वतन से देख रहे थे कि कैसे-कैसे कोई आता है, कब-कब आता है। किस रूहाब से आता है। किस स्थिति से मिलते हैं! यह भी रिजल्ट बापदादा दोनों ही इकट्ठे देखते रहे। तो हरेक खुद को देखे और खुद में जो कमी हो उसको भरे।

2.2.69... साकार रूप में अन्त तक कर्म करके दिखाया। क्या कर्म करके दिखाया? याद है? क्या शिक्षा दी यही कि निरंहकारी और निर्माणचित होकर एक दो में प्रेम प्यार से चलना है। एक माताओं का संगठन बनाना। जैसे कुमारियों का ट्रेनिंग क्लास किया है वैसे ही माताएं जो मददगार बन सकती हैं और हैं, उन्हीं का मधुवन में संगठन रखना। कुमारियों के साथ माताओं का संगठन हो। संगठन के समय फिर आना होगा। स्नेह को देखते हैं तो ड्रामा याद आ जाता है। ड्रामा जब बीच में आता है तो साइलेन्स हो जाते हैं। स्नेह में आये तो क्या हाल हो जायेगा। नदी बन जायेंगे। लेकिन नहीं, ड्रामा। जो कर्म हम करेंगे वह फिर सभी करेंगे, इसलिए साइलेन्स।

17.4.69... संगठन के लिए मुख्य चार बातें जरूरी हैं – 1- आपस में एक दो में स्नेह 2-नजदीक सम्बन्ध 3-सर्विस की जिम्मेवारी और 4-ज्ञान-योग की धारणा का सबूत। इन चारों बातों में तैयार हो? एक दो में स्नेही कैसे बनना होता है? स्नेही बनने का साधन कौन-सा है? यह जो एक दो से दूर हो जाते हैं उसका कारण यह है – क्योंकि एक दो के संस्कार, एक दो के संकल्प नहीं मिलते हैं। सभी के संकल्प, संस्कार एक हो कैसे सकते हैं? (संस्कार तो हरेक के अपने-अपने होते हैं) संगमयुगी ब्राह्मणों का मुख्य संस्कार कौन-सा है? साकार रूप में मुख्य संस्कार कौन-सा था? जो ब्रह्मा का संस्कार वह ब्राह्मणों का। साकार ब्रह्मा का मुख्य संस्कार कौन सा था। ब्रह्मा में तो वह संस्कार सम्पूर्ण रूप से देख लिया। लेकिन ब्राह्मणों में यथा योग, यथा शक्ति है। उनका मुख्य संस्कार था – सर्वस्व त्यागी। निरंहकारी का मतलब ही है सर्वस्व त्यागी। अपना सभी कुछ त्याग कर लेते हैं। सर्वस्व त्यागी होने से सर्वगुण आ जाते हैं। दूसरों के अवगुणों को न देखना, यह भी त्याग है। त्याग का अभ्यास होगा तो यह भी त्याग कर सकेंगे। सर्वस्व त्यागी अर्थात् देह के भान का भी त्याग। तो ब्राह्मणों का मुख्य संस्कार है – सर्वस्व त्यागी।

26.5.69... संगठन में रहने के लिए भी सहनशक्ति चाहिए। फाइनल पेपर जो विनाश का है उसमें पास होने के लिए भी सहनशक्ति चाहिये। वह सहनशक्ति की रिजल्ट मैजारिटी में बहुत कम है। इसलिए उसको अब बढ़ाओ।

21-1-71... शक्तियों का खज़ाना, अतीन्द्रिय सुख का खज़ाना इतना इकट्ठा किया है जो अपनी स्थिति तो कायम रहे लेकिन अन्य आत्माओं को भी सम्पन्न बना सको। सर्व की झोली भरने वाले दाता के बच्चे हो ना। अब यह दृश्य बहुत जल्दी सामने आयेगा।

**29.6.71** ... संगठन और स्नेह की शक्ति से घेराव डालना है। अभी देखो, बाहर विलायत में भी सर्विस की सफलता का मूल कारण स्नेही और सहयोगी बनने का घेराव है। ज्ञान का प्रैक्टिकल सबूत यही स्नेह और संगठन की शक्ति है। सर्विस की सफलता का मूल आधार यह है।

**17.5.72**... .. ऐसे ही जो यह ईश्वरीय संगठन है, यह संगठन भी किला ही है। जैसे स्थूल किले को बहुत मजबूत किया जाता है, जिससे कोई भी दुश्मन वार कर न सके। इस रीति से मुख किला है संगठन का। इसमें भी इतनी मजबूती हो जो कोई भी विकार दुश्मन के रूप से वार कर न सके। अगर कोई दुश्मन वार कर लेता है तो ज़रूर किले की मजबूती की कमी है। यह तो संगठन रूपी किला है, इसकी मजबूती के लिए तीन बातों की आवश्यकता है। अगर तीनों बातें मजबूत हैं तो इस किले के अन्दर कोई भी रूप से कभी भी कोई दुश्मन वार नहीं कर सकेंगे। दुश्मन प्रवेश भी नहीं कर सकते, हिम्मत नहीं हो सकती। वह तीन बातें कौनसी हैं, जिससे मजबूत हो सकते हैं? एक – स्नेह; दूसरा – स्वच्छता और तीसरा है रूहानियत यह तीनों बातें अगर मजबूत हैं तो कब कोई का वार नहीं होगा। अगर कहां भी, कोई भी वार करता है, उनका कारण इन तीनों में कोई-ना-कोई कमी है। या स्नेह की कमी है या फिर रूहानियत की कमी है। तो संगठन रूपी किले को मजबूत करने के लिए इन तीन बातों पर बहुत अटेंशन चाहिए।

किले की मजबूती होती है एक दो के संगठन से। अगर किले की दीवार में एक भी ईंट वा पत्थर का सहायोग पूरा ना हो तो वह किला सेफ नहीं हो सकता। ज़रा भी हिला तो कमजोरी आ जाएगी। भले कहने में तो एक ईंट की कमी है लेकिन कमजोरी चारों ओर फैलती है। तो वैसे ही मजबूती के लिए तीन बातें बहुत ज़रूरी हैं। फिर कोई वायब्रेशन भी टच नहीं कर सकता। अपने ऊपर अटेंशन कम है। जैसे साकार बाप साकार रूप में लाइट-हाउस, माइट-हाउस दूर से ही दिखाई देते थे, ऐसे रूहानियत की मजबूती होने से कोई भी अन्दर आएं तो लाइट-हाउस, माइट-हाउस का अनुभव करेंगे। जैसे स्नेह और स्वच्छता बाहर के रूप में दिखाई देती है, वैसे ही रूहानियत वा अलौकिकता बाहर रीति से प्रत्यक्ष दिखाई दे।

**19.7.72**... .. संगठन में होने के कारण वह मोती, मणका शक्तिशाली हो जाता है। एक से दो भी आपस में मिल जाते हैं तो दो को 11 कहा जाता है। एक को एक ही कहा जावेगा। दो मिलकर 11 हो जाते हैं। तो कहां एक, कहां ग्यारह! इतनी उसकी वैल्यू बढ़ जाती है। दो के बदली 11 कहा जाता है। संगठन की शक्ति को प्रसिद्ध करने के लिये ऐसे कहने में आता है। आप अपने को कौन-सा मोती समझते हो? माला का मोती हो वा इन्डिपैन्डेंट्स मोती हो? अपनी वैल्यू को देखते हुये, अपनी शक्ति को देखते हुये यह अनुभव करते हो कि हम माला के मणके हैं? एक दो को ऐसे संगठन के रूप में पिराये हुए वैल्युएभले मोती समझते हो? दूसरे भी आपको समझते हैं वा सिर्फ आप ही अपने को समझते हो? जैसे कोई विशेष करते हैं वा कोई भी रीति विजयी बन कर आते हैं तो उनको मैडल मिलता है ना। वैसे ही जो अब तक पुरुषार्थ कर रहे हैं, उसका सर्टीफिकेट प्रैक्टिकल में लेने के लिए ही बीच-बीच में यह संगठन होता है।

संगठन की विशेषता वा भिन्नता है जो सारे विश्व में कोई भी संगठन की नहीं। सभी देखने वाले, आने वाले, सुनने वाले क्या वर्णन करते कि यहां एक-एक आत्मा का उठना, बोलना, चलना सभी एक जैसा है। यही विशेषता गायन करते हैं। तो जो एकता वा एक बात, एक ही गति, एक ही रीति, एक ही नीति का गान है, उसी प्रमाण अपने आपको चेक करो। वर्तमान समय के पुरुषार्थ में कारण शब्द समाप्त हो जाना चाहिए।

**14.4.73**... .. हरेक ब्राह्मण की रेसपॉन्सीबिलिटी न सिर्फ अपने को एक-रस बनाना है लेकिन सारे संगठन को एक-रस स्थिति में स्थित कराने के लिये सहयोगी बनना है। ऐसे नहीं खुश हो जाना कि मैं अपने रूप से ठीक ही



हूँ। लेकिन नहीं। अगर संगठन में व माला में एक भी मणका भिन्न प्रकार का होता है तो माला की शोभा नहीं होती। तो ऐसे संगठन की शक्ति ही उस परमात्म-ज्ञान की विशेषता है। उत्तम ज्ञान और परमात्म-ज्ञान में अन्तर यह है। वहाँ संगठन की शक्ति नहीं होती लेकिन यहाँ संगठन की शक्ति है। तो जो इस परमात्म-ज्ञान की विशेषता है इससे ही विश्व में सारे कल्प के अन्दर वह समय गाया<sup>21</sup> हुआ है। 'एक धर्म', 'एक राज्य', 'एक मत' – यह स्थापना कहाँ से होगी? इस ब्राह्मण संगठन की विशेषता-देवता रूप में प्रैक्टिकल चलते हैं।

हरेक का जो अपना मूल संस्कार है वही आदि संस्कार है। उनको भी जब परिवर्तन में लायेंगे, तब ही सम्पूर्ण बनेंगे। अब छोटी-छोटी भूलें तो परिवर्तन करना सहज ही है। लेकिन अब लास्ट पुरुषार्थ अपने मूल संस्कारों को परिवर्तन करना है। तब ही संगठन रूप में एक-रस स्थिति बन जायेगी।

23.1.74... .. जैसे आपके संगठन का नाम है-शक्ति-सेना, क्या वैसी आप अपने को शक्ति समझती हो? यह नाम तो आपका परिचय देता है, क्योंकि यह कर्तव्य के आधार पर है। शक्ति सेना का अर्थ है -- सर्व-शक्तियों से सम्पन्न आत्माओं का संगठन।

**28.4.74 ... ..** आप पाण्डवों का संगठन अथवा निमित्त बनी हुई आत्माओं का संगठन सिर्फ स्थूल सर्विस के साधन इकट्ठे करने या उन्हें प्रैक्टिकल में लाने तक ही नहीं है। स्थूल साधनों के साथ-साथ सूक्ष्म साधन और प्लैन (plan) के साथ-साथ प्लेन (plain) स्थिति और स्मृति रहे-इन बातों को अपनी ज़िम्मेवारी समझ कर चलना अर्थात् कर्म करना है। जो भी यहाँ बैठे हैं-वह सब इन बातों की ज़िम्मेवारी अपने को निमित्त समझ उठावेंगे तो क्या विहंग मार्ग की सर्विस का रूप नहीं दिखाई देगा

13.9.74 ... .. संगठन की सफलता, सिर्फ स्वयं को बनाने में नहीं है अपितु संगठन को मजबूत करना, सर्व-साथियों को उमंग व उत्साह में लाना, यह है इस संगठन की सफलता। जब दूसरे की कमी को, अपनी कमी समझेंगे तब ही संगठन को सफल बना सकेंगे। एक की कमी को, थकावट व कमजोरी को देखते हुए, स्वयं को ऐसे के संग की लहर में नहीं लाना है। फलानी ऐसे करती है तो फिर मैं भी कर लूँ। फलानी ने किया, यदि मैंने भी किया तो क्या हुआ? यह संकल्प स्वप्न तक भी नहीं आने देना, तब समझो कि सफलता है।

**16.10.75 ... ..** संगठन रूप में एक स्मृति-स्वरूप होने से वायुमण्डल पॉवरफुल हो जायेगा। लगन की अग्नि की भट्टी अनुभव होगी जिसके वाइब्रेशन्स (Vibrationw) चारों ओर फैलेंगे

21.10.75... .. संगठन में भी बेहद के वैराग्य-वृत्ति को लाने का पुरुषार्थ करो। एक-दो के साथी व सहयोगी बनो। जब वैराग्य-वृत्ति इमर्ज रूप में होगी तो पुराने संस्कार व स्वभाव बहुत जल्दी और सहज ही वैराग्य-वृत्ति के अन्दर मर्ज हो जायेंगे।

23.10.75... .. हमारा संगठन एक संकल्प वाला कहाँ तक बना है? शास्त्रों में गायन है कि ब्रह्मा को संकल्प उठा कि सृष्टि रचें तो सृष्टि रची गई। यहाँ अकेले ब्रह्मा की तो बात नहीं, लेकिन ब्रह्मा सहित सब ब्राह्मणों का भी जब एक साथ यह संकल्प उठे कि अब हम सब एवररेडी हैं और नई दुनिया की स्थापन होनी ही चाहिए या होगी ही – ऐसा दृढ संकल्प जब ब्राह्मणों के अन्दर उत्पन्न हो, तब ही सृष्टि का परिवर्तन हो अर्थात् नई सृष्टि की रचना प्रैक्टिकल में दिखाई दे। इसमें भी संगठन का बल चाहिए। एक दो का वा सिर्फ आठ का नहीं, लेकिन सारे संगठन का एक संकल्प चाहिये। संकल्प से सृष्टि रचना, इसका रहस्य इस प्रकार से है। संकल्प उत्पन्न होगा और सेकेण्ड में समाप्ति का नगाड़ा बजना शुरू हो जायेगा।

**31.10.75..** ...यूनिटी अर्थात् संस्कार-स्वभाव के मिलन की यूनिटी। कोई का संस्कार और स्वभाव न भी मिले तो भी कोशिश करके मिलाओ। यह है यूनिटी। सिर्फ संगठन को यूनिटी नहीं कहेगे। सर्विसएबल निमित्त बनी आत्मायें इन दो बातों के सिवाय बेहद की सर्विस के निमित्त नहीं बन सकती हैं, हद के हो सकते हैं। बेहद की सर्विस के लिये ये दोनों बातें चाहियें।

**9.12.75..** ...व्यर्थ संकल्पों की समाप्ति के लिए अपने संगठन को शक्तिशाली व एक मत बनाने के लिए कौन-सी शक्ति चाहिए कि जिससे संगठन पॉवरफुल और एक-मत हो जाए और व्यर्थ संकल्प भी समाप्त हो जायें? इसके लिए एक तो फेथ और समाने की शक्ति चाहिए। संगठन को जोड़ने का धागा है फेथ। किसी ने जो कुछ किया, मानो राँग भी किया, लेकिन संगठन प्रमाण वा अपने संस्कारों प्रमाण व समय प्रमाण उसने जो किया उसका भी ज़रूर कोई भाव-अर्थ होगा। संगठित रूप में जहाँ सर्विस है, वहाँ उसके संस्कारों को भी रहमदिल की दृष्टि से देखते हुए, संस्कारों को सामने न रख इसमें भी कोई कल्याण होगा इसको साथ मिलाकर चलने में ही कल्याण है ऐसा फेथ जब संगठन में एक दूसरे के प्रति हो, तब ही सफलता हो सकती है।

संगठन में साथी ने जो कुछ किया उसमें ज़रूर रहस्य होगा, यदि उसने राँग भी किया हो, तो भी उसको परिवर्तन कर देना चाहिए। यह दोनों प्रकार के फेथ रख कर एक-दूसरे के सम्पर्क में चलने से, संगठन की सफलता हो सकती है। इसमें समाने की शक्ति ज्यादा चाहिए। व्यर्थ संकल्पों को समाना है। बीते हुए संस्कारों को कभी भी वर्तमान समय से टैली (तुलना) न करो अर्थात् पास्ट को प्रेजेन्ट न करो। जब पास्ट को प्रेजेन्ट में मिलाते हैं, इससे ही संकल्पों की क्यू (Queue) लम्बी हो जाती है और जब तक यह व्यर्थ संकल्पों की क्यू है, तब तक संगठित रूप में एकरस स्थिति हो नहीं सकती। 'दूसरे की गलती सो अपनी गलती समझना' – यह है संगठन को मजबूत करना। यह तब होगा जब एक-दूसरे में फेथ होगा। परिवर्तन करने का फेथ या कल्याण करने का फेथ। जैसे आत्म-ज्ञानियों के सिद्धि का गायन है, वैसे आप सबके संगठन का एक ही संकल्प हो। एक संकल्प की शक्ति संगठित रूप में न होने के कारण बिगड़े हुए हैं। जैसे बिगड़ी हुई शक्ति है वैसे रिजल्ट भी बिगड़ा हुआ है। इसमें समाने की शक्ति ज़रूर चाहिए। देखा और सुना – उसको बिल्कुल समा कर, वही आत्मिक दृष्टि और कल्याण की भावना रहे। जब अज्ञानियों के लिए कहते हो – अपकारियों पर उपकार करना है; तो संगठन में भी एक दूसरे के प्रति रहम की भावना रहे। अभी रहम की भावना कम रहती है क्योंकि आत्मिक-स्थिति का अभ्यास कम है। संगठित रूप में आप ब्राह्मण बच्चों की आपस के सम्पर्क की भाषा भी अव्यक्त भाव की होनी चाहिए। जैसे फरिश्ते अथवा आत्मायें आत्माओं से बोल रही हैं! किसी की सुनी हुई गलती को संकल्प में भी स्वीकार न करना और न कराना ही चाहिये। ऐसी जब स्थिति हो तब ही बाप की जो शुभ कामना है-संगठन की, वह प्रैक्टिकल में होगी। एक भी पॉवरफुल संगठन होने से एक-दूसरे को खींचते हुए 108 की माला का संगठन एक हो जायेगा। एक-मत का धागा हो और संस्कारों की समीपता हो तब-ही माला भी शोभेगी। दाना अलग होगा या धागा अलग-अलग होगा तो माला शोभेगी नहीं।

**25.1.76....** जो सदा साथ का अनुभव करेंगे, वे कभी किसी देहधारी के साथ की आवश्यकता अनुभव नहीं करेंगे। कभी भी किसी सेवा में देहधारी का आधार नहीं लेंगे। मर्यादा प्रमाण, संगठन प्रमाण सहयोग लेना अलग बात है। बाकी किसी परिस्थिति में देहधारी की याद आये कि यह मुझे परिस्थिति से पार करेंगे, राय देंगे या सहारा देंगे – इससे सिद्ध है कि सर्वशक्तिवान् का सहारा सदा साथ नहीं रहता।

11.1.77.. .. जैसे शुरू में बाप से पवित्रता की प्रतिज्ञा की कि मरेंगे, मिटेंगे, सहन करेंगे, मार खायेंगे, घर छोड़ देंगे, लेकिन पवित्रता की प्रतिज्ञा सदा कायम रखेंगे – ऐसी शेरनियों के संगठन ने स्थापना के कार्य में निमित्त बन करके दिखाया, कुछ सोचा नहीं, कुछ देखा नहीं – करके दिखाया, वैसे ही अब ऐसा ग्रुप चाहिए।

26.1.77.. .. लक्ष्य रखो कि अनुभव कराना है, न कि सिर्फ भाषण करना है, चाहे छोटे-छोटे संगठन बनाओ लेकिन रूहानियत और रूहानी बाप के सम्बन्ध और अनुभव में समीप लाओ। कुछ नवीनता करो।

19.5.77 .. .. बहुत थोड़ी आत्माएं होंगी जिन्हों का फाउन्डेशन अनुभव है। लेकिन मैजारिटी का आधार संगठन को देखना वा सिर्फ सात्विक जीवन पर प्रभावित होना, एक सहारा समझ कर चलना वा किसके साथ से उल्लास उमंग से चल पड़ना, किसके कहने से चल पड़ना, नालेज अच्छी है उसके सहारे चल पड़े – ऐसे चलने वालों का अनुभव का फाउन्डेशन मजबूत न होने कारण चलते-चलते उलझते बहुत हैं। लेकिन नम्बर तो बनने ही हैं।

24.1.78.. .. जहाँ ब्राह्मणों का संगठन है वह मधुबन है तो हरेक विदेश के स्थान को मधुबन बनाओ। मधुबन बनावेंगे तो बाप-दादा भी आयेंगे। क्योंकि बाप का वायदा है कि मधुबन में आना है। तो जहाँ मधुबन वहाँ बाप-दादा। आगे चल कर बहुत वन्डर्स<sup>1</sup> देखेंगे। अभी जैसे भारत की संख्या बढ़ती जा रही है वैसे थोड़े समय में विदेश की संख्या बढ़ाओ। जहाँ रहते हो वहाँ चारों ओर आवाज़ फैल जाए। क्वेश्चन उत्पन्न हो कि यह कौन है और क्या है। जब ऐसे संगठन तैयार करेंगे तो जहाँ संगठन है वहाँ बाप-दादा भी हाज़िर नाज़िर हैं।

1.4.78. .. मेरा स्वभाव, मेरे संस्कार हैं, मेरी नेचर है, मेरा काम या ड्यूटी, मेरा नाम, मेरी शान, मैं-पन में यह मेरा-मेरा भी समाप्त हो जाता है। मैं-पन और मेरा-पन समाप्त हुआ यही समानता और सम्पूर्णता है। स्वप्न में भी मैं-पन न हो, इसको कहा जाता है, अश्वमेध यज्ञ में मैंपन के अश्व को स्वाहा करना। यही अन्तिम आहुति है। और इसी के आधार पर ही अन्तिम विजय के नगाड़े बजेंगे। संगठन रूप में इस अन्तिम आहुति का दिल से आवाज़ फैलाओ। फिर यह पांचों तत्व सदा सब प्रकार की सफलताओं की माला पहनायेंगे। अब तक तो तत्व भी सेवा में कहीं-कहीं विघ्न रूप बनते हैं। लेकिन स्वाहा की आहुति देने से आरती उतारेंगे।

3.12.78 .. .. अब ऐसा समय आने वाला है जो ऐसे सत्य अभ्यास के आगे अनेकों के अयथार्थ अभ्यास स्वतः ही प्रत्यक्ष हो जायेंगे। कहना नहीं पड़ेगा कि आपका अभ्यास अयथार्थ है – लेकिन यथार्थ अभ्यास के वायुमण्डल, वायुब्रेशन द्वारा स्वयं ही सिद्ध हो जायेगा। ऐसा संगठन तैयार है? अभी समय अनुसार अनेक प्रकार के लोग चेकिंग करने आयेंगे। संगठित रूप में जो चैलेन्ज करते हो कि हम सब ब्राह्मण एक की याद में एकरस स्थिति में स्थित होने वाले हैं - तो ब्राह्मण संगठन की चेकिंग होगी। इन्डीविज्युवल (Indi-vidual) तो कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन आप सब विश्व कल्याणकारी विश्व परिवर्तक हो – विश्व संगठन, विश्व कल्याणकारी संगठन विश्व को अपनी वृत्ति वा वायुब्रेशन द्वारा वा अपने स्मृति स्वरूप के समर्थी द्वारा कैसे सेवा करते हैं- उसकी चेकिंग करने बहुत आयेंगे। आज की साइंस द्वारा साइलेन्स शक्ति का नाम बाला होगा।

10.12.78.. .. जहाँ निश्चय होता है वहाँ शब्द का भाव बदल साधारण बात हो जाती है। हरेक की विशेषता को देखो तो अनेक होते भी एक दिखाई देंगे। एक मत संगठन हो जावेगा। कोई किसकी ग्लानि की बातें सुनावे तो उसे टेका देने के बजाए सुनाने वाले का रूप परिवर्तन कर दो। अर्थ में भावना परिवर्तन कर दो। यह अभ्यास चाहिए नहीं तो एक की बात दूसरे से सुनी, दूसरे की तीसरे से सुनी और फिर वह व्यर्थ बातें वातावरण में फैलती रहतीं,

जिस कारण पावरफुल वातावरण नहीं बन पाता। साक्षात्कार मूर्त भी नहीं बन सकते। इसलिए सदैव सबके प्रति शुभ भावना, कल्याण की भावना हो।

28.11.79... टीचर्स को विशेष क्या करना है? अब ऐसा अपना संगठन बनाओ जो सबके मुख से यह निकले कि यह अनेक होते भी एक हैं। जैसे यहाँ दीदी-दादी दो हैं लेकिन कहते हैं दोनो एक हैं तो यह प्रभाव पड़ता है ना। जब ये दो होते हुए भी एक-समान एक दूसरे को रिगार्ड देते, दो होते हुए एक दिखा रही हैं तो आप अनेक होते हुए एक का प्रमाण दे सकते हो। जैसे कहते हैं कि सब की वाणी एक ही होती है, जो एक बोलती वही सब बोलते हैं, ड्रेस भी एक जैसी, वाणी सबकी एक ही ज्ञान के पॉइन्ट्स की होती, भले सुनाने का ढंग अलग हो, सार एक ही होता है। वैसे ऐसा ग्रुप बनाओ जो सब कहें यह अनेक नहीं हैं, एक हैं। यही विशेषता है ना।

3.12.79... टीचर्स का क्या महत्व है? ऐसा अविनाशी संगठन बनाओ जो कोई भी कम्प्लेन्ट न रहे। वृद्धि बहुत कर रहे हो सिर्फ विघ्न-विनाशक बनो और बनाओ।

25.1.80... बाप-दादा अनन्य बच्चों के संगठन द्वारा भक्तों को और वैज्ञानिकों को, दोनों को टर्चिंग कराने की सेवा कराते रहते हैं। उनमें अनन्य भक्ति के संस्कार भर रहे हैं जो आधा कल्प भक्ति मार्ग को चलाते रहेंगे। और वैज्ञानिकों को परिवर्तन करने और रिफाइन साधन बनाने में। जो साधन जैसे ही सम्पन्न होंगे तो उसका सुख सम्पूर्ण आत्मायें लेंगी। ये (वैज्ञानिक) नहीं ले सकेंगे। तो दोनों ही कार्य सूक्ष्म सेवा द्वारा हो रहे हैं।

9.3.81... ब्रह्मा बाप के अव्यक्त होने के बाद इतना संगठन कहो यह देखकर बलिहारी जाते हैं। अब जगह संस्था टूटती है यहाँ बढ़ती है यह कमाल देखते हैं। सभी ने अपने-अपने शुद्ध संकल्प से, सहयोग की शक्ति, संगठन की शक्ति से, सेवा की। अभी सब जगह से निमन्त्रण मिलेगा। यह राष्ट्रपति भवन आपका घर हो जायेगा।

19.3.81... संगठन भी सेवाका साधन बन जाता है। एक बाप, एक मत, यही संस्कार सतयुग में एक राज्य की स्थापना करते हैं। निर्विघ्न सेवा चल रही है ना? कोई खिंटखिंट तो नहीं है? जहाँ माया देखती है कि इनकी युनिटी अच्छी है, घेराव है तो वहाँ आने की हिम्मत ही नहीं रखती। एक-एक अपने को सेवा के निमित्त समझकर चलते हैं। एक नहीं लेकिन हम सब निमित्त हैं। बाप ने निमित्त बनाया है, यह स्मृति रहे तो सफलता होती रहेगी। मनन की शक्ति से स्वयं की स्टेज भी पावरफुल होती जायेगी।

25.3.81... जितना बड़ा संगठन है तो बातें भी तो इतनी ही होंगी ना। बातों का होना, यह तो संगठन में होगा ही। बातों के समय बाप याद रहता है? यह नहीं सोचो कि बातें खत्म हों तो बाप याद आवे। लेकिन बातों को खत्म करने के लिए ही बाप की याद है। बातें खत्म ही तब होंगी जब हम आगे बढ़ेंगे। ऐसे नहीं, बातें खत्म हों तब हम आगे बढ़ें, हम आगे बढ़ेंगे तो बातें पीछे हो जायेंगी। रास्ता नहीं आगे बढ़ता है, चलने वाला आगे बढ़ता है। कभी रास्ता आगे बढ़ता है क्या? कोई रास्ता पार करने वाला सोचे, रास्ता आगे बढ़े तो मैं बढ़ूँ। रास्ता तो वहीं रहेगा लेकिन उसे तय करने वाला आगे बढ़ेगा। साइडसीन नहीं आगे बढ़ेंगी लेकिन देखने वाला आगे बढ़ेगा। तो यह शक्ति है? 'एक बाप दूसरा न कोई' – यह पाठ मंसा वाचा कर्मणा में निरंतर याद है?

5.4.81... विशेष सहनशीलता का गुण हरेक को धारण करना है – संगठन में अगर कोई एक के लिए कुछ बोलता भी है तो दूसरा चुप रहे तो बोलने वाला कब तक बोलेगा? आखिर तो चुप ही हो जायेगा। सिर्फ उसमें 10 बारी सुनने की हिम्मत चाहिए। दूसरे को बदलने के लिए थोड़ा तो सहन करना पड़ेगा। इसमें सहनशक्ति बहुत चाहिए। दो बारी में ही दिलशिकस्त नहीं हो जाओ। 10-12 बार तो सुनकर सहन करो। बाप ने भी कितने बच्चों के संस्कारों को बदला। ब्रह्मा, जो इतनी बड़ी फर्स्ट अथार्टी है उसने भी छोटे-छोटे बच्चों से सुना, अज्ञानियों से भी

सुना, इनसल्ट सहन की ना! ब्रह्मा बाप की भी इनसल्ट करते थे, तो आप कौन हो! जब बाप ने सब कुछ सहन कर परिवर्तन किया तो फालो फादर। सिर्फ हिम्मत की बात है, सब सहज हो जायेगा। सिर्फ थोड़ा पहले लगता है – कैसे होगा, कहाँ तक सहन करेंगे? हिम्मत न हारो तो अभी-अभी हो जाए। जब भविष्य पर छोड़ते हो कि कहाँ तक होगा... तभी संकल्प कमजोर होते हैं। कहाँ तक होगा यह नहीं सोचों, संकल्प में दृढ़ता लाओ।

12.10.81... संगठन में मिलन ज्यादा होता है, लेकिन मिलन के साथ सेवा का भी लक्ष्य हो। हरेक समझे कि हमें सेवा करनी है फिर वातावरण पावरफुल रहेगा और सेवा भी डबल हो जायेगी। उमंग उत्साह से कर रहे हैं यह बहुत अच्छा है!

24.10.81... जैसे यहाँ पंछियों का संगठन लाइन में जाता है, वैसे विमानों के संगठन जायेंगे। ऐसे नहीं एक जायेगा तो दूसरा नहीं जा सकेगा। ऐसे भिन्न-भिन्न डिज़ाइन में जायेंगे। राज्य फैमिली अपनी डिज़ाइन में जायेगी, साहूकार अपनी डिज़ाइन में जायेंगे। जहाँ चाहो वहाँ उतार लो। अभी प्रकृतिजीत बनो तो प्रकृति दासी बनेगी। अभी प्रकृतिजीत कम तो प्रकृति दासी भी कम होगी!

18.4.82.....ब्राह्मण परिवार का संगठन, निःस्वार्थी स्नेह – मन को आकर्षित करता है। बस यही विशेषता है कि बाबा मिला, परिवार मिला, पवित्र ठिकाना मिला, जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सहज सहारा मिल गया। इसी आधार पर मिलन की भावना में स्नेह के सहारे में चलते जा रहे हैं। लेकिन फिर भी सम्बन्ध जोड़ने के कारण सम्बन्ध के आधार पर स्वर्ग का अधिकार वर्से में पा ही लेते हैं – क्योंकि ब्राह्मण सो देवता, इसी विधि के प्रमाण देवपद की प्राप्ति का अधिकार पा ही लेते हैं।

26.1.83.....जैसे मजदूरों से लेकर बड़े-बड़े इन्जीनियर्स, दोनों के सहयोग और संगठन से हाल की सुन्दर रूप रेखा तैयार हुई है, अगर मजदूर न होते तो इन्जीनियर भी क्या करते। वे कागज पर प्लैन बना सकते हैं, लेकिन प्रैक्टिकल स्वरूप तो बिना मजदूरों के हो नहीं सकता। तो जैसे स्थूल सहयोग के आधार पर सर्व की अंगुली लगाने से हाल तैयार हो गया है। वैसे हाल के साथ वन्दरफुल चाल दिखाने के लिए ऐसा विशेष स्वरूप प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ। सिर्फ बुद्धि में संकल्प किया, यह नहीं। लेकिन जैसे इन्जीनियर के बुद्धि की मदद और मजदूरों के कर्म की मदद से कार्य सम्पन्न हुआ। इसी रीति मन के श्रेष्ठ संकल्प साथ-साथ हर कर्म द्वारा ही दिखाई देता है। तो ऐसे चलने और करने को संकल्प, वाणी हाथ वा पाँव द्वारा संगठित रूप में विचित्र स्वरूप से दिखाने का दृढ़ संकल्प किया है? ऐसी चाल का नक्शा तैयार किया है? सिर्फ 3 हजार की सभा नहीं लेकिन 3 हजार में सदा त्रिमूर्ति दिखाई दे। यह सब ब्रह्मा के समान कर्मयोगी, विष्णु के समान प्रेम और शक्ति से पालना करने वाले, शंकर के समान तपस्वी वायुम-ण्डल बनाने वाले हैं, ऐसा अनुभव हर एक द्वारा हो।

3.4.83.....आज का विशेष संगठन गऊपाल की माताओं का है। इतने बड़े संगठन को देख गऊपाल भी खुश हो रहे हैं। बापदादा भी मीठी-मीठी माताओं को “वन्दे मात्रम्” कहते हैं। क्योंकि नई सृष्टि की स्थापना के कार्य में ब्रह्मा बाप ने भी माता गुरु को सब समर्पण किया। इस ईश्वरीय ज्ञान की विशेषता वा नवीनता है ही शक्ति अवतार को आगे रखना। माता गुरु का सिलसिला स्थापन करना, यही नवीनता है। इसलिए यादगार में भी गऊ मुख का गायन पूजन है। ऐसे हृद की मातायें नहीं लेकिन बेहद की जगत मातायें हो, नशा है ना! जगत का कल्याण करने वाली हो, जगत्-कल्याणकारी अर्थात् विश्व-कल्याणकारी हो। सिर्फ घर कल्याणी तो नहीं हो ना। कब घर-कल्याणी का गीत सुना है क्या? विश्व-कल्याणी का सुना है। तो ऐसी बेहद की माताओं का संगठन, श्रेष्ठ संगठन हुआ ना।

24.4.83.....आज बापदादा विश्व की सर्व आत्माओं प्रति प्रत्यक्ष जीवन का प्रमाण देने वाले बच्चों से मिलने आये हैं। कुमार सो ब्रह्माकुमार, तपस्वी कुमार, राजऋषि कुमार, सर्व त्याग से भाग्य प्राप्त करने वाले कुमार ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं का आज विशेष संगठन है। कुमार जीवन शक्तिशाली जीवन गाई जाती है। लेकिन ब्रह्माकुमार डबल शक्तिशाली कुमार है। एक तो शारीरिक शक्ति दूसरी आत्मिक शक्ति। साधारण कुमार शारीरिक शक्ति वा विनाशी आक्वूपेशन की शक्ति वाले हैं। ब्रह्माकुमार अविनाशी ऊँचे ते ऊँचे मास्टर सर्वशक्तिवान के आक्वूपेशन के शक्तिशाली हैं। **आत्मा पवित्रता की शक्ति से जो चाहे वह कर सकती है।** ब्रह्माकुमारों का संगठन विश्व परिवर्तक संगठन है। सभी अपने को ऐसे शक्तिशाली समझते हो? अपने को पवित्रता का जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त किया हुआ अधिकारी आत्मा समझते हो? ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है – ‘पवित्र कुमार’। ब्रह्मा बाप ने दिव्य जन्म देते “पवित्र भव, योगी भव” यही वरदान दिया।

2.5.83.....आज बापदादा सारे संगठन में विशेष उन आत्माओं को देख रहे हैं जो ज्ञान और योग के स्वरूप बन मास्टर रचयिता की स्टेज पर सदा स्थित रहते हैं। ज्ञानी और योगी तो सभी अपने को कहलाते लेकिन ज्ञानी तू बाप समान आत्मा, योगी तू बाप समान आत्मा, इसमें नम्बरवार हैं। बाप समान अर्थात् मास्टर रचता की पोजीशन में सदा स्थित रहते। इस मास्टर रचता के सहज आसन पर स्थित हुई शक्तिशाली आत्मा के आगे सारी रचना दासी के रूप में, सेवा में सहयोगी बन जाती है। मास्टर रचता सेकेण्ड में अपने शुद्ध संकल्प रूपी आर्डर से जो वायुमण्डल बनाने चाहे वह बना सकते हैं। जैसा वायुब्रेशन फैलाने चाहें वैसे फैला सकते हैं।

7.5.83.....मैजारटी पुराने अनुभवियों का संगठन है ना। अनुभवी अर्थात् अथार्टी वाले। कौन सी अथार्टी? स्वराज्य की अथार्टी। ऐसी अथार्टी वाले हो ना! अभी तो आज आये हो। चेकिंग कराने, सर्टिफिकेट लेने आये हो ना कि हम ठीक बादशाह हैं! सर्टिफिकेट लेकर जायेंगे ना कि कौन से राजे हैं – नामधारी हैं या कामधारी। यह सब शीशमहल में आपेही देख लेंगे।

11.5.83.....आज बापदादा हंस आसनधारी होली हंसों की सभी देख रहे हैं। हर एक श्रेष्ठ आत्मा होली हंस सदा एक बाप दूसरा न कोई इसी लगन में मगन आत्मायें – यही स्थिति हंस-आसन है। ऐसे होली हंसों को देख बापदादा भी हर्षित होते हैं। हर होली हंस ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा, विश्व-कल्याणकारी है। हर एक के दिल में दिलाराम बाप की याद समाई हुई है। हर एक अपने वर्तमान और भविष्य को बनाने में लगन से लगे हुए हैं। ऐसा श्रेष्ठ संगठन सारे कल्प में सिवाए संगमयुग के कभी नहीं देख सकते। एक ही परिवार, एक ही लगन, एक ही लक्ष्य, ऐसा फिर कभी देखेंगे? बापदादा को भी बच्चों पर नाज़ है। इतना बड़ा परिवार वा संगठन और हरेक श्रेष्ठ बाप के बच्चे बनने कारण बाप के वर्से के अधिकारी हैं। तो इतने सब अधिकारी बच्चों को देख बाप को भी खुशी है। यह एक-एक बच्चा कुल का दीपक है। विश्व परिवर्तन करने के निमित्त आत्मा है।

11.5.83.....इतना बड़ा संगठन क्या नहीं कर सकता है! एक तो श्रेष्ठ आत्मायें, पवित्र आत्मायें हो तो पवित्रता की शक्ति है, दूसरा मास्टर सर्वशक्तिवान होने के कारण सर्वशक्तियाँ साथ हैं। संगठन की शक्ति है, साथ-साथ त्रिकालदर्शी होने के कारण जानते हो कि अनेक बार हम विश्वपरिवर्तक बने हैं। इसलिए कल्प-कल्प के विजयी होने के कारण अब भी विश्वपरिवर्तन के कार्य में विजय निश्चित है।

30.7.83.....संस्कार मिलाने की रास करने वाले सदा ही हर जन्म में श्रेष्ठ आत्माओं के संगठन में रास करते रहेंगे। यहाँ की रास मिलाना अर्थात् सदा क्या पार्ट बजायेंगे! सदा श्रेष्ठ आत्माओं के फ्रैण्डस बनेंगे, सम्बन्धी बनेंगे।

बहुत नज़दीक सम्बन्धी लेकिन सम्बन्धी और मित्र के दोनों स्वरूप के साथी। मित्र के मित्र भी, सम्बन्धी के सम्बन्धी भी। तो निमित्त हो।

3.12.83.....अभी संकल्प उठता है कि कोई सहारा, कोई नया रास्ता मिलना चाहिए। अभी चाह उत्पन्न हो रही है। अब राह दिखाना आप सबका कार्य है। 'एकता और दृढ़ता' – यह दो साधन हैं राह दिखाने के। संगठन की शुभ भावना ऐसी आत्माओं को भावना का फल दिलाने के निमित्त बनेगी। सर्व का शुभ संकल्प, उन आत्माओं में भी शुभ कार्य करने के संकल्प को उत्पन्न करेगा। इसी विधि को अभी से अपनाओ।

12.12.83.....एक ही समय, एक ही संकल्प– यह एकाग्रता की शक्ति अति श्रेष्ठ है। यह संगठन की एक संकल्प की एकाग्रता की शक्ति जो चाहे वह कर सकती है। जहाँ एकाग्रता की शक्ति है वहाँ सर्व शक्तियाँ साथ हैं। इसलिए – एकाग्रता ही सहज सफलता की चाबी हैं। एक श्रेष्ठ आत्मा के एकाग्रता की शक्ति भी कमाल कर दिखा सकती है तो जहाँ अनेक श्रेष्ठ आत्माओं के एकाग्रता की शक्ति संगठित रूप में है वह क्या नहीं कर सकते। जहाँ एकाग्रता होगी वहाँ श्रेष्ठता और स्पष्टता स्वतः होगी।

20.2.84.....हर एक बच्चा कैसे कल्प पहले मुआफिक तकदीर जगाकर पहुँच गया है। तकदीर जगाकर आये हो। पहचानना अर्थात् तकदीर जगना। विशेष डबल विदेशी बच्चों का वरदान भूमि पर संगठन हो रहा है। यह संगठन तकदीरवान बच्चों का संगठन है। सबसे पहले तकदीर खुलने का श्रेष्ठ समय वा श्रेष्ठ घड़ी वो ही है जब बच्चों ने जाना, माना – मेरा बाप। वह घड़ी ही सारे कल्प के अन्दर श्रेष्ठ और सुहावनी है। सभी को उस घड़ी की स्मृति अब भी आती है ना! बनना, मिलना, अधिकार पाना यह तो सारा संगमयुग ही अनुभव करते रहेंगे।

12.3.84.. ..सदैव विशेषता और विशेषता देखने का औरों को सिखाना यही संगठन की माला की डोर है। मोती भी तो धागे में पिरोते हैं ना। संगठन का धागा है ही यह। विशेषता के सिवाए और कोई वर्णन नहीं।

11.3.85.. ..आधार रूप अर्थात् सदा स्वयं को हर समय, हर संकल्प, कर्म में ज़िम्मेवार समझ चलने वाले। इस संगठन में आना अर्थात् बेहद के ज़िम्मेवारी के ताजधारी बनना। यह संगठन जिसको मीटिंग कहते हो, मीटिंग में आना अर्थात् सदा बाप से, सेवा से, परिवार से, स्नेह के श्रेष्ठ संकल्प के धागे में बंधना और बांधना, इसके आधार रूप हो। इस निमित्त संगठन में आना अर्थात् स्वयं को सर्व के प्रति एगजैम्पुल बनाना। यह मीटिंग नहीं लेकिन सदा मर्यादा पुरुषोत्तम बनने के शुभ संकल्प के बंधन में बंधना है। इन सब बातों के आधार स्वरूप बनना इसको कहा जाता है – आधार स्वरूप संगठन।

11.12.85.. ..संगठन की शक्ति का आधार क्या है? सिर्फ यह पाठ पक्का हो जाए कि 'रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है'। देना लेना है। लेना, लेना नहीं है। लेना अर्थात् गँवाना। देना अर्थात् लेना। कोई दे तो देवें यह कोई बिजनेस नहीं। यह तो दाता बनने की बात है। दाता लेकर फिर नहीं देता। वह तो देता ही जाता। इसलिए इस संगठन की सफलता है। लेकिन अभी कंगन तैयार हुआ है। माला नहीं तैयार हुई है।

18.1.86.. ..इसके लिए विशेष अटेंशन – हर कर्म करने के पहले यह लक्ष्य रखो कि मुझे स्वयं को सम्पन्न बनाए सैम्पुल बनाना है। होता क्या है कि संगठन का फायदा भी होता है तो नुकसान भी होता है। संगठन में एक दो को देख अलबेलापन भी आता है और संगठन में एक दो को देख करके उमंग उत्साह भी आता है, दोनों होता है। तो संगठन को अलबेलेपन से नहीं देखना है। अभी यह एक रीति हो गई है, यह भी करते हैं, यह भी करते हैं, हमने भी किया तो क्या हुआ! ऐसे चलता ही हैं। तो यह संगठन में अलबेलेपन का नुकसान होता है। संगठन से

श्रेष्ठ बनने का सहयोग लेना वह अलग चीज़ है। अगर यह लक्ष्य रहे – कि मुझे करना है। मुझे करके औरों को कराना है। फिर उमंग उत्साह रहेगा करने का भी और कराने का भी। और बार-बार इस लक्ष्य को इमर्ज करें।

22.3.86... संगठन की शक्ति है। एक ने कहा और दूसरे ने किया। ऐसे नहीं एक ने कहा और दूसरा कहे यह तो हो नहीं सकता। इसमें संगठन टूटता है। एक ने कहा दूसरे ने उमंग से सहयोगी बन प्रैक्टिकल में लाया, यह है संगठन की शक्ति। पाण्डवों का भी संगठन है, कभी तू मैं नहीं। बस, 'बाबा-बाबा' कहा तो सब बातें समाप्त हो जाती है। खिटखिट होती ही है – तू मैं, मेरा तेरा में। बाप को सामने रखेंगे

31.3.86... स्वयं के पुरुषार्थ प्रति वा सेवा के प्रति वा संगठन में एक दो के प्रति सदा विशाल बुद्धि। हृद की बुद्धि में नहीं आना। मैं यह चाहती, मेरा तो यह विचार है, यह विशालता नहीं है। जहाँ मैजारिटी वेरीफाय करते, निमित्त बने हुए वेरीफाय करते, तो यह है – 'विशाल बुद्धि'। जहाँ मैजारिटी, वहाँ मैं, यह संगठन की शक्ति बढ़ाना। इसमें यह बड़ाई नहीं दिखाओ कि मेरा विचार तो बहुत अच्छा है। भल कितना भी अच्छा हो लेकिन जहाँ संगठन टूटता है वह अच्छा भी साधारण हो जायेगा। संगठन की शक्ति बढ़ाने की विशालता हो। इसमें कुछ अपना विचार त्यागना भी पड़े तो इस त्याग में ही भाग्य है। यह सदा स्मृति में रखो कि अगर यहाँ संगठन से अलग रहेंगे तो वहाँ विश्व की रायल फैमली में नहीं आयेगे। अभी का संगठन 21 जन्मों के समीप सम्बन्ध में लायेगा। इसलिए संगठन की शक्ति को बढ़ाना – यह पहला ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ कार्य है। इसमें ही सफलता है। इसलिए इसमें विशाल बुद्धि बनो। बेहद के बनो।

23.1.87... जब स्वयं के प्रति भी संकल्प में 'क्या' और 'क्यों' का पूँछ लग जाता है तो मन और बुद्धि की स्थिति स्वयं प्रति भारी बन जाती है। साथ-साथ अगर किसी भी संगठन बीच वा सेवा के कार्य प्रति 'क्यों', 'क्या', 'ऐसा', 'कैसा',.... – यह क्वेश्चन मार्क की क्यू का पूँछ लग जाता है तो संगठन का वातावरण वा सेवा क्षेत्र का वातावरण फ़ौरन भारी बन जाता है।

20.2.87... संगठन में रहना है, स्नेही बनना है लेकिन बुद्धि का सहारा एक बाप हो, दूसरा न कोई। बुद्धि को कोई आत्मा का साथ वा गुण वा कोई विशेषता आकर्षित नहीं करे। इसको कहते हैं – 'पवित्रता'।

31.3.88... बाप बच्चों को शुक्रिया देता, बच्चे बाप को। एक-दो को शुक्रिया देते-देते आगे बढ़े हो, यही विधि है आगे बढ़ने की। इसी विधि से आप लोगों का संगठन अच्छा है। एक-दो को 'हाँ जी' कहा, 'शुक्रिया' कहा और आगे बढ़े इसी विधि को सब फालो करें तो फरिश्तें बन जायेगे।

31.12.89... संगठन में कभी-कभी घबरा जाते हो। सोचते हो – हमने तो वायदा किया था "बाप और मैं", यह थोड़े ही वायदा किया था कि संगठन में रहेंगे। बाप तो बहुत अच्छा है, बाप के साथ रहना भी बहुत अच्छा है लेकिन संगठन में सबके संस्कारों में रहना, यह बहुत मुश्किल है। लेकिन यह भी बहुत सहज हो जायेगा क्योंकि मन से, दिल से हर आत्मा के प्रति दुआयें, शुभभावना, शुभकामना पावरफुल होने के कारण दूसरे के संस्कार दब जायेगे। वह आपका सामना नहीं करेंगे और दबते-दबते समाप्त हो जायेगे। फिर कहेंगे – हाँ, हम 40 के साथ भी रह सकते हैं।

15.4.92... जब मास्टर सर्वशक्तिवान हो तो इस निश्चय में कमी है तब पता नहीं, पता नहीं का गीता गाते हो। और तीसरे फिर क्या कहते हैं? कि बाबा हमने तो आपको देख करके सौदा किया। दाप हमारे हो हम आपके हैं। इस ब्राह्मण परिवार से हमने सौदा नहीं किया। ब्राह्मण परिवार खिटखिट है, आप ठीक हो। ब्राह्मणों के संगठन में चलना मुश्किल है, एक आपसे चलना सहज है। तो बापदादा क्या कहेंगे? बापदादा मुस्करराते हैं, ऐसे बच्चों से



बापदादा का एक प्रश्न है क्योंकि ऐसी आत्माएं प्रसन्न-चित्त नहीं रहती, प्रश्न बहुत करती है, ये ऐसा क्यों, ऐसा होता है क्या, तो वह प्रसन्न-चित्त आत्मा नहीं है, प्रश्न चित्त आत्मा है।

बापदादा भी उन्हीं से प्रश्न करते हैं कि आप आत्मा मुक्तिधाम में रहने वाली हो या जीवनमुक्ति में आने वाली हो? मुक्ति में रहना है फिर जीवनमुक्ति में आना है ना। तो जीवनमुक्ति में सिर्फ बाबा ब्रह्मा होगा या राजधानी होगी? सिर्फ ब्रह्मा और सरस्वती राजा रानी होंगे? जीवनमुक्ति का वर्सा पाना है ना। आप लोग चैलेन्ज करते हो कि आदि सनातन धर्म और अन्य धर्म में सबसे बड़ा अन्तर है। वो सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं। और आप धर्म और राज्य दोनों की स्थापना कर रहे हो। यह पक्का है ना। धर्म की स्थापना और राज्य की भी स्थापना कर रहे हो ना, तो राज्य में क्या होगा? सिर्फ एक राजा, एक रानी होंगे? एक राजा रानी और आप एक बच्चा या बच्ची, बस। ऐसा राज्य होता है? तो हमें राजधानी में आना है। यह याद रखो। राजधानी में आना अर्थात् ब्राह्मण परिवार में सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट काना, श्रेष्ठ सम्बन्ध में आना। अभी बापदादा पूछेंगे सभी से कि आप माला में आने चाहते हो?

1.2.94... प्रयोग द्वारा उन आत्माओं को भी आपके प्रयोग का प्रभाव स्वतः ही पड़ता रहेगा। जैसे एक दृष्टान्त सामने रखो कि मुझे सहनशक्ति का प्रयोग करना है तो जब स्वयं में सहनशक्ति का प्रयोग करेंगे तो जो दूसरी आत्मायें आपकी सहनशक्ति को हिलाने के निमित्त हैं वो भी बच जायेंगी ना, उनका भी तो किनारा हो जायेगा। और जैसे छोटे-छोटे संगठन में रहते हो, सेन्टर्स हैं तो सेन्टर्स पर छोटे संगठन हैं ना तो पहले स्व के प्रति ट्रायल करो फिर अपने छोटे संगठन में ट्रायल करो। संगठन रूप में कोई भी गुण वा शक्ति के प्रयोग का प्रोग्राम बनाओ। उससे क्या होगा? संगठन की शक्ति से उसी गुण वा शक्ति का वायुमण्डल बन जायेगा, वायुब्रेशन फैलेगा और वायुमण्डल वा वायुब्रेशन का प्रभाव अनेक आत्माओं के ऊपर पड़ता ही है। तो ऐसे प्रोग्रामशाली आत्मायें बनो। पहले स्वयं में सन्तुष्टता का अनुभव करो फिर औरों में सहज हो जायेगा।

1.2.94.....इस वर्ष प्रयोगशाली आत्माओं बनो। समझा क्या करना है? और हर एक स्वयं के प्रति प्रयोग में लग जायेंगे तो प्रयोगशाली आत्माओं का संगठन कितना पॉवरफुल बन जायेगा! वह संगठन की किरणें अर्थात् वायुब्रेशन्स बहुत कार्य करके दिखायेंगी। इसमें सिर्फ दृढ़ता चाहिये—‘मुझे करना ही है’। दूसरों के अलबेलेपन का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये। आपकी दृढ़ता का प्रभाव औरों पर पड़ना चाहिये।

31.12.94.....सर्व के अंगुली से सफलता होती है। अगर थोड़ा भी सोचने वाले होते हैं कि कैसे होगा, क्या होगा तो संगठन की स्नेह की अंगुली न होने के कारण सफलता में कमी पड़ जाती है।

9.1.95.....हर स्टेट को महाराष्ट्र, कर्नाटक.... जो भी हैं, सभी स्टेट को माइक तैयार करने चाहिये। और एकएक स्टेट के माइक अगर सभी मिल जायेंगे तो संगठन बन जायेगा और संगठन का आवाज़ सहज फैलेगा। तो राजस्थान वाले माला भी तैयार करना और माइक भी।

25.3.95.....दादियों से – सब कार्य सफल हुए ही पड़े हैं। सफलता स्वरूप आत्मायें निमित्त हो। आप सभी निमित्त आत्मायें कौनसे सितारे हो? सफलता के सितारे हो ना! ये सारा संगठन सफलता के सितारे हैं। यह सारा संगठन ब्राह्मण परिवार के तारा मण्डल में सफलता के सितारे चमकते हुए हैं।

6.4.95.....सबके शुभ संकल्प और उमंगउत्साह के संकल्प से सफलता है ही है। यह संगठन का संकल्प ऐसे होता है जो असफलता को मिटा देता है। जैसे किला होता है ना तो किला कमजोर तब होता है जब एक भी ईंट हिलती है। और सब ईंटे मजबूत हैं तो किला कभी हिल नहीं सकता।

31.12.95.....साकार स्वरूप में भी बापदादा के सामने कितने डायमण्ड चमक रहे हैं और विश्व के कोने-कोने में चारों ओर चमकते हुए डायमण्ड देख रहे हैं। आत्मा सभी के मस्तक में चमकती हुई डायमण्ड कितनी अच्छी लगती है! सामने से चमकती हुई आत्मा डायमण्ड और इतने संगठित रूप में चारों ओर डायमण्ड ही डायमण्ड देखने में दृश्य कितना प्यारा लगता है! तो ये संगठन किसका है? डायमण्ड्स का है ना? चाहे नम्बरवार हैं फिर भी चमक रहे हैं। चमकते हुए डायमण्ड की सभा बाप के सामने है। आप भी क्या देख रहे हो? डायमण्ड देख रहे हो ना कि शरीर देख रहे हो? 63 जन्म शरीर को ही देखा लेकिन अभी शरीर में चमकता हुआ डायमण्ड दिखाई देता है? कि छिपा हुआ है इसलिए कभी दिखाई देता है, कभी छिप जाता है?

27.2.96. ... सत्यता की शक्ति से दिव्यता को धारण करो। कुछ भी सहन करना पड़े, घबराओ नहीं। सत्य समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होगा। कहते भी हो ना कि सत्य की नाव डोलती है लेकिन डूबती नहीं, तो किनारा तो ले लेंगे ना। निर्भय बनो। अगर कहाँ भी सामना करना पड़ता है तो ब्रह्मा बाप के जीवन को आगे रखो। ब्रह्मा बाप के आगे दुनिया की परिस्थितियां तो थी लेकिन वेराइटी बच्चों की भी परिस्थितियां रहीं लेकिन संगठन में होते, जिम्मेवारी होते सत्यता की शक्ति से विजयी हो गये। बच्चों की खिटखिट ब्रह्मा बाप ने नहीं देखी क्या? ब्रह्मा बाप के आगे भी वेराइटी संस्कार वाली आत्मायें रही, लेकिन इतनी सब परिस्थितियां होते हुए सत्यता की स्व-स्थिति ने सम्पूर्ण बना दिया।

18.1.97... आप सबके दिल में ये शुभ भावना, शुभ कामना उत्पन्न होती है कि हमारे सब भाई-बहन बेहद के वर्से के अधिकारी बन जायें? तो ये शुभ भावना और शुभ कामना कब तक प्रत्यक्ष रूप में करेंगे? उसकी डेट पहले से अपने दिल में फिक्स करो, संगठन से पहले दिल में करो फिर संगठन में करो तो विनाश की डेट आपेही स्पष्ट हो जायेगी, उसकी चिन्ता नहीं करो। रहम आता है या इसी मौज में रहते हो कि हम तो अधिकारी बन गये?

3.4.97... सभी की विशेषता चाहिए। बहुत अच्छा। दादियों ने कहा और पाण्डवों ने माना – ये बहुत अच्छी बात है, जब भी बुलायें हां-जी, हाँ-जी। आपके संगठन के आधार पर सारा दैवी परिवार चलता है। इसलिए जैसे दादियां निमित्त हैं, वैसे आप भी निमित्त हो। जिम्मेवार हो। हैं या नहीं हैं? सब बात में समझो हम सब सेवा के साथी हैं, यह 10-12 नहीं हैं लेकिन एक हैं, इसमें यज्ञ का शान है। बाप-दादा सभी को एवररेडी देखकर बहुत खुश हैं, कार्य तो बढ़ने ही हैं। कम तो होने नहीं हैं। संगठन की शक्ति बहुत वायुमण्डल को पावर देती है।

31.12.96... जैसे शान्तिवन की खुशी है, हाल की खुशी है ऐसे बापदादा और इतने बड़े संगठन के बीच यह वायदा करो कि इस वर्ष में हलचल से परे हो अचल-अडोल बनना ही है, बनेंगे नहीं, बनना ही है।

1.3.99... बापदादा को खुशी है कि आपस में संगठन बनाकर उन्नति के प्लैन वा रूहरिहान करते हैं। यह बहुत अच्छा है, इसको छोड़ना नहीं। संगठन में लाभ होता है और सारा दिन समझो कर्मणा किया, थोड़ा समय भी आपस में उन्नति की रूहरिहान करने से चेंज हो जाते हैं। उमंग-उत्साह भी बढ़ता है। तो बापदादा को यह अच्छा लगता है, जो गुप बनाकर बैठते हो उसको हल्का नहीं करो और पावरफुल बनाओ। मिस भी नहीं करना चाहिए। आप समझो हमारे में तो ताकत है, हमने तो सब कुछ कर लिया है, नहीं। सहयोग देना भी सेवा है। बैठने की जरूरत नहीं हो, लेकिन बैठना - यह बहुत सेवा है।

30.3.99... .. बापदादा जानते हैं कि भारत में और ही सहज है लेकिन अभी कुछ क्वालिटी की सेवा कर सहयोगी समीप लाओ। बहुत सहयोगी हैं लेकिन संगठन में उन्हों को और समीप लाओ। साथ-साथ ब्राह्मण आत्माओं में और भी समीप लाने के लिए, हर एक तरफ वा मधुवन में चारों ओर ज्वाला स्वरूप का वायुमण्डल बनाने के लिए, चाहे जिसको भट्टी कहते हो वह करो, चाहे आपस में संगठन में रूहरिहान करके ज्वाला स्वरूप का अनुभव कराओ और आगे बढ़ाओ। जब इस सेवा में लग जायेंगे तो जो छोटी-छोटी बातें हैं ना - जिसमें समय लगता है, मेहनत लगती है, दिलशिकस्त बनते हैं वह सब ऐसे लगेगा जैसे ज्वालामुखी हाइएस्ट स्टेज और उसके आगे यह समय देना, मेहनत करना, एक गुड़ियों का खेल अनुभव होगा। स्वतः ही सहज ही सेफ हो जायेंगे। जैसे बाप कहते हैं ना - हाज़िर हज़ूर। वैसे एक दो में हाज़िर - हाज़िर इस स्नेह और संगठन से शक्ति औरों को मिल रही है और दुआयें आपको मिल रही हैं।

22.10.94 ( अव्यक्त संदेश ) . . . . स्व और सेवा का बैलेन्स रखते, संगठन को शक्तिशाली बनाए एक दो को हिम्मत देते एक दो के बिचारों के समीप आना है क्योंकि ब्राह्मणों के संगठन की समीपता ही सफलता का साधन है।

20.7.97... .. “मन-बुद्धि के मालिकपन की अथॉरिटी में सेंट परसेन्ट रहना आवश्यक है।” क्योंकि मन-बुद्धि ही सदाकाल अचल बनने में विघ्न डालती है वा सदा एवररेडी बनने नहीं देती। अब तो प्रकृति भी अपने नज़ारे रिहर्सल रूप में दिखा रही है और समय भी सूचना दे रहे हैं, तो अब पावरफुल लहर संगठन में बढ़ती रहनी चाहिए।

19.6.98... .. सेवा से, संगठन से वैराग्य नहीं लेकिन पुरानी दुनिया, पुराने संस्कार और पुरानी दुनिया की वस्तुओं से वैराग्य हो।

30.7.98... .. संगठन में बाबा बोल देगा कि बच्चे यह यह पुरुषार्थ करो क्योंकि बाबा किसी को कहे और बच्चा ना करे तो विकर्म बन जायेगा। तो बाबा विकर्म कराने के निमित्त कभी नहीं बनेगा। बाबा हमेशा बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए इशारा देगा, उमंग-उत्साह भरेगा, शक्ति देगा, सकाश देगा।

23.10.99... .. संगठन से जो भी कार्य होता है वह सहज सफल होता है। तो डबल फ़ारेनर्स ने मीटिंग में संगठन की शक्ति का बहुत अच्छा प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाया।

18.1.2000 पहली विशेषता – चाहे स्थापना के आदि रत्न, चाहे सेवा के रत्न दोनों में संगठन की युनिटी बहुत-बहुत अच्छी रही। किसी में भी क्यों, क्या, कैसे... यह संकल्प मात्र भी नहीं रहा। दूसरी विशेषता – एक ने कहा दूसरे ने माना। यह एकस्ट्रा पावर्स के विल के वायुमण्डल में विशेषता रही। इसलिए सर्व निमित्त बनी हुई आत्माओं को बाबा-बाबा ही दिखाई देता रहा।

23.3.2000 ( अव्यक्त संदेश ) . . . . बच्चों ने सेवा तो बहुत की है लेकिन अभी बाबा चाहते हैं कि कोई संगठन बनाओ, हर देश में ऐसे कोई तैयार करो, जो ग्रुप सेवा के निमित्त बनकर सेवा को और भी फैलावे। एक ही लहर, एक ही टाइम पर सब देशों में निमित्त बन जाये, ऐसा संगठन हो। अभी तक सेवा जो बिखरी हुई है, बाबा कहते हैं – इसकी एक माला बनाओ और वह माला अभी से वह कार्य करे। एक दो के संगठन से उन्हों में और उमंग आयेगा।

31.12.2000... .. जोन-जोन में भी **संगठन** हो जाए, उन्हीं में हिम्मत आवे आगे बढ़ने की। इण्डीविज्युअल तो सेवा करते रहते हो लेकिन आवाज तब होगा जब एक-दो के संगठन में आयेंगे। जैसे फारेन से ग्रुप बनके आया ना! चाहे छोटा आया, चाहे बड़ा आया लेकिन ग्रुप बनके आया। और ग्रुप बनने में ताकत, हिम्मत आती है।

ब्राह्मण परिवार में भी आपके **संगठन** के वायब्रेशन द्वारा निर्विघ्न बनाना है। मन्सा सेवा की विधि को और तीव्र करो। वाचा वाले बहुत हैं। मन्सा द्वारा कोई न कोई शक्ति का अनुभव हो। वह समझें कि इन आत्माओं द्वारा यह यह शक्ति का अनुभव हुआ। चाहे शान्ति का हो, चाहे खुशी का हो, चाहे सुख का हो, चाहे अपने-पन का। तो जो भी अपने को महारथी समझते हैं उन्हीं को अभी यह सेवा करनी है।

बापदादा ने तो कहा ही है कि आल वर्ल्ड से यूथ ग्रुप को इकट्ठा कर गवर्मेन्ट के सामने लाना है कि यह यूथ स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन कर रहे हैं। ऐसा **संगठन** भी तैयार हो जायेगा। फारेन में कितने देशों में सेवा है? (75) और इन्डिया में? इन्डिया के एक एक स्टेट का हो और एक-एक देश का एक हो।

तो जैसा वायुमण्डल में लहर देखो वैसी लहर से उतनी कर सकते हो क्योंकि विशेष आत्माओं का **संगठन** है और बनी बनाई स्टेज है तो सबको सन्देश देने और भविष्य सम्पर्क बढ़ाने की सेवा तो है ही है, इसलिए जा सकते हैं।

बाबा ने कहा – देखो यह **संगठन** कितना प्यारा है। फिर एक सेकण्ड में वो जो त्रिशूल बना हुआ था वो सभी ऐसे मिल करके बाबा की बाँहों में आ गया, जैसे सभी के गले में बाबा की बाँहों का हार पड़ गया। बाबा की बाँहें बहुत लम्बी-लम्बी, बड़ी-बड़ी होती गई और सभी के गले में वो हार पड़ता गया।

फिर बाबा ने कहा बच्ची बाबा यही देखता है कि वर्तमान समय बच्चों में 'सहनशक्ति' की बहुत आवश्यकता है। विशेष अपने प्रति अथवा **संगठन** के प्रति सहनशक्ति कम होने के कारण ही यह सब बातें आती हैं - चाहे अभिमान की, चाहे अपमान की, चाहे कोई भी व्यर्थ संकल्प आते हैं, उन सबका कारण सहनशक्ति की कमी है।

ड्रामानुसार जो सेवा के प्लैन बनते हैं, वह अच्छे बन रहे हैं और हर एक सदा **संगठन** में स्नेह वा दुआयें लेने के लिए बालक सो मालिक का पाठ पक्का कर एक दो को आगे बढ़ाते हुए, एक दो के विचारों को भी सम्मान देते हुए आगे बढ़ते हैं तो सफलता ही सफलता है।

ऐसे ही वतन में इमर्ज हुए तो हर एक फूल की डाली पर लिखा हुआ था - सदा **संगठन**, सम्मान और स्नेह को अविनाशी बनाना। ऐसे फूलों की डाली हर एक को बापदादा ने गिफ्ट में दी और हम आप सबकी याद देते वा लेते हुए साकार वतन में पहुँच गई।

17.9.2001... .. बापदादा जानते हैं कि यह शुभ आशा बाप के हर बच्चे के दिल में बार-बार याद आती है कि बस मुझे तो बाप समान बनना ही है। परन्तु बच्चों का पुरुषार्थ कुछ समय तीव्र होता, फिर कोई समस्या, सरकमस्टांश वा **संगठन** के वातावरण कारण तीव्रता कम हो जाती है।

अभी भी एक धर्म नेताओं के **संगठन** में 'मिलेनियम वर्ल्ड पीस सम्मिट' के तरफ से निमन्त्रण मिला है, जिसमें सिर्फ धर्म नेतायें ही होंगे (प्रतिनिधि नहीं)। बापदादा बोले, बच्ची समय अनुसार अब धीरे-धीरे प्रत्यक्षता का रूप प्रत्यक्ष हो रहा है।

8.10.2002... ..परमात्म प्यार ब्राह्मण जीवन का आधार है, ऐसे ही ब्राह्मण **संगठन** का आधार आत्मिक प्यार है। जो आत्मिक प्यार आप बच्चे ही अनुभव कर सकते हो। आज के विश्व की आत्मायें इस सच्चे, निःस्वार्थ

आत्मिकपरमात्म प्यार की प्यासी हैं। ऐसा सच्चा प्यार सिवाए आप ब्राह्मण आत्माओं के किसी को प्राप्त नहीं हो सकता।

14.11.2002... **ब्राह्मण परिवार का** अर्थ ही है **संगठन**। छोटा परिवार नहीं है, ब्रह्मा बाप का ब्राह्मण परिवार सर्व परिवारों से श्रेष्ठ और बड़ा है। तो परिवार के बीच, परिवार के प्रीत की रीति निभाने में भी विजयी। ऐसा नहीं कि बाप मेरा, मैं बाबा का, सब कुछ हो गया, बाबा से काम है, परिवार से क्या काम! लेकिन यह भी निश्चय की विशेषता है।

13.02.2003... **बापदादा को, फारेन वालों ने यह जो सेवा की थी - काल आफ टाइम वालों की, उसकी** विधि अच्छी लगी कि छोटे से **संगठन** को समीप लाया। ऐसे हर ज़ोन, हर सेन्टर अलग-अलग सेवा तो कर रहे हो लेकिन कोई सर्व वर्गों का **संगठन** बनाओ। बापदादा ने कहा था कि बिखरी हुई सेवा बहुत है, लेकिन बिखरी हुई सेवा से कुछ समीप आने वाली योग्य आत्माओं का **संगठन** चुनो और समय प्रति समय उस **संगठन** को समीप लाते रहो और उन्हों को सेवा का उमंग बढ़ाओ। सभी पहुंच गये हैं, यह **संगठन** भी कितना प्यारा लगता है। बाप को भी बच्चों का **संगठन** अच्छा लगता है। अपने परिवार को देखने का चांस तो मिलता है। किसको कह तो सकते हैं कि हमने अपने बड़े परिवार को देखा है। मधुबन में सब सैलवेशन मिल रही है ना!

**संगठन** की निशानी का यादगार है पांच पाण्डव। पांच हैं लेकिन **संगठन** की निशानी है। अच्छा - अभी जो साकार ब्रह्मा के होते हुए सेवा के लिए सेन्टर पर रहे हैं, सेवा में लगे हैं, वह उठो। भाई भी हैं, पाण्डवों के बिना थोड़ेही गति है। यहाँ तो थोड़े हैं लेकिन और भी हैं। **संगठन** को जमा करने की जिम्मेवारी इनकी (दादी जानकी की) है, यह (दादी) तो बैकबोन है।

2.7.2002....अभी भी तपस्या है, सेवा है लेकिन एंजिल अर्थात् अपने को और दूसरों को अपने द्वारा एडजेस्ट करने की शक्ति हो, वो अब ज्यादा चाहिए क्योंकि ये **संगठन** में सबके **संगठन** की ज्वाला रूप का प्रभाव ही बाप के प्रत्यक्षता का पर्दा खोल सकेगा। लेकिन पर्दा खुलने के पहले संगठन एवररेडी चाहिए। अब इन्डीविज्युवल अपने पुरुषार्थ में हरेक यथा शक्ति लगा हुआ है लेकिन **संगठन** की शक्ति **बिना प्रत्यक्षता हो नहीं सकती**। यह लक्ष्य कम है। इसीलिए बापदादा की यही आश है कि हरेक अपने को और **संगठन** को शक्तिशाली बनाने का जिम्मेवार समझ इसमें उमंग-उत्साह का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाये।

23.9.2002... **तो बापदादा आज इस ग्रुप के बच्चों का संगठन देख खुश हो रहे हैं कि बच्चे उमंग-उत्साह से स्व पुरुषार्थ को तीव्र बनाने के लिए रूहानी भट्टी में पहुंच गये हैं। इस पाण्डवों के ग्रुप की विशेषता बापदादा देख रहे हैं कि इस संगठन में हर बच्चा या तो साकार स्वरूप की पालना वाले हैं वा अव्यक्त स्वरूप के आदि पालना वाले बच्चे हैं और हर एक अपने-अपने सेवा स्थान के निमित्त जिम्मेवार बच्चे हैं**

17.3.2003... **जैसे आप दादियों का एकता और दृढ़ता का संगठन पक्का है, ऐसे आदि सेवा के रत्नों का संगठन पक्का हो, इसकी बहुत-बहुत आवश्यकता है क्योंकि सेवा तो बढ़नी ही है। तो संगठन की शक्ति जो चाहे वह कर सकती है। संगठन की निशानी का यादगार है पांच पाण्डव। पांच हैं लेकिन संगठन की निशानी है।**

3.9.2002... **समय की समीपता और सम्पूर्णता के बैलेन्स को सदा चेक करते शक्ति, स्नेह, संगठन को शक्तिशाली बनाते चलो। सदा हर संकल्प, बोल और कर्म में दुआयें देते, दुआयें लेते रहो। बापदादा को इस ग्रुप**

में बहुतबहुत सफलता की आशाएँ हैं। अब उन आशाओं के दीपक को तीव्र करो। सदा बाप के लव में लीन रह सम्मान दो, सम्मान लो क्योंकि सम्मान देना ही सम्मान लेना है। यही संगठन की शक्ति बाप को प्रत्यक्ष करने की सहज विधि है।

4.2.2003... .. सदा सेवा के साथी बन, संगठन के लिए एगजैम्पुल बन आगे बढ़ते रहो, उड़ते रहो, यही विधि है ब्राह्मण परिवार के संगठन को निमित्त बन आगे बढ़ाने की।

2.2.2004... .. जैसे शुरू-शुरू में देखा तो संगठन में रहते आत्मिक दृष्टि, आत्मिक वृत्ति, आत्मा-आत्मा से मिल रही है, बात कर रही है, इस दृष्टि से फाउण्डेशन कितना पक्का हो गया। अभी सेवा के विस्तार में, सेवा के विस्तार के सम्बन्ध में आत्मिक भाव से चलना, बोलना, सम्पर्क में आना मर्ज हा गया है। खत्म नहीं हुआ है लेकिन मर्ज हो गया है। आत्मिक स्वमान, आत्मा को सहज सफलता दिलाता है क्योंकि आप सभी कौन आकर इक्ठुए हुए हो? वही कल्प पहले वाले देव आत्मायें, ब्राह्मण आत्मायें इक्ठुए हुए हो। ब्राह्मण आत्मा के रूप में भी सभी श्रेष्ठ आत्मायें हो, देव आत्माओं के हिसाब से भी श्रेष्ठ आत्मायें हो। उसी स्वरूप से सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ। हर समय चेक करो - मुझ देव आत्मा, ब्राह्मण आत्मा का श्रेष्ठ कर्तव्य, श्रेष्ठ सेवा क्या है? “दुआओं देना और दुआयें लेना।”

28.3.2006.....तो बापदादा बच्चों से प्रश्न पूछता है - कब तक हर एक स्वयं को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनायेंगे? दूसरे को नहीं देखो, यह अलबेलापन आ जाता है। दूसरे भी करते हैं, मैंने किया तो क्या हुआ! यह अलबेलापन है। मुझे स्व को सम्पन्न बनाना है। अब इसके लिए कितना टाइम चाहिए? इसका भी हिसाब रखें या नहीं? संगठन है, बाप जानते हैं, संगठन में बहुत कुछ सुनना भी पड़ता है, देखना भी पड़ता है, बहुत कुछ चलने में भी सामने बातें आती हैं, लेकिन यह तो आयेंगी। बातें खत्म हों तो सम्पन्न बनें, वह होना नहीं है। जितना आगे बढ़ेंगे, रूप जरूर चेंज होगा लेकिन बातें तो आयेंगी। लास्ट पेपर में ही देखो कितनी बातें हैं। बातें दिखाई न दें, बाबा दिखाई दे। बाबा ने क्या कहा, बातें क्या करती हैं, बातें क्या कहती हैं, नहीं। बाबा ने क्या कहा। बाबा को फॉलो करना है। फॉलो बातें करना है, या फॉलो फादर करना है?

31.10.2006.....**संगठन** की शक्ति बहुत कमाल करती है, करना ही है। आपस का मिलना भी हो जाता है और सेवा की वृद्धि विधि भी हो जाती और एक दो के समीप भी आ जाते हैं। तो यह जो प्रोग्राम बनाया है, बापदादा को पसन्द है। और ड्रामानुसार आपको मधुबन का भी चांस मिल जाता है। यह संगठन बहुत करके मधुबन के वायुमण्डल में होता है। और भी संगठन की शक्ति को बढ़ाते जाओ। जब शक्ति सेना अपने को प्रत्यक्ष करेगी तब बाप प्रत्यक्ष होगा क्योंकि शक्ति और पाण्डवों के द्वारा ही बाप प्रत्यक्ष होना है। तो पहले शक्तियां या पाण्डव खुद अपने को सम्पूर्ण प्रत्यक्ष करेंगे तब बाप प्रत्यक्ष होगा। हर एक के चेहरे में बाप ही दिखाई देगा। इतनी संगठन में शक्ति है।

12.2.2007.....**संगठन** की शक्ति, बाप ने भी अकेला कुछ नहीं किया, बच्चों के साथ हर कार्य किया, तो संगठन की शक्ति, उसको फिर से प्रैक्टिकल स्टेज पर लाना चाहिए। एक ने कहा और दूसरे ने किया। एक दो की बातों को न देख संगठन को मिलाना, यही आवश्यक है। आप निमित्त आत्माओं का यह काम है। संगठन को स्टेज पर प्रत्यक्ष करना। यही आवश्यकता है। ठीक है ना!

31.3.2007.....मधुबन, मधुबन ही है और आखिर में सभी को कहाँ पहुंचना है, मधुबन में ही पहुंचेंगे ना। सेवा अच्छी करते हो। ड्यूटी अपनी अच्छी बजाते हो, सिर्फ जो आज बापदादा ने कहा है ना, स्व तीव्र पुरुषार्थ और सेवा दोनों का बैलेन्स इसका आपस में संगठन कर बैलेन्स करके दिखाओ।

15.10.2007.....जो भी निमित्त बने हुए हैं, सभी मिलके एक दो में राय करके, क्योंकि संगठन की शक्ति बहुत जल्दी सहज कार्य कर लेती है। हाँ जी, हाँ जी करते विश्व को अपने चरणों में हाँ जी कराना है। तो संगठन तो अच्छा है। हर एक की विशेषता है, और विशेषता को आप लोग आपस में वर्णन भी करते हो। क्लास करते हो ना विशेषताओं का। बस विशेष हैं, विशेषतायें देखनी हैं, विशेषतायें देनी हैं। विशेष कार्य करने के लिए विशेषता देखो, विशेषता का एक दो में सहयोग दो।

31.10.2007... .. अभी ब्राह्मणों का आपस में मिलना यह होना चाहिए। तभी आपका वायुमण्डल विश्व में स्नेह, सहयोग, हिम्मत फैलायेगा। सभी ब्राह्मण जो अपने को ब्रह्माकुमार कुमारी समझते हैं, उनको ऐसे ही सेवा में बिजी रहना है। ऐसे नहीं टाइम नहीं मिला, सेकण्ड तो मिला ना। मिनट भी मिला ना। गाया हुआ है नज़र से निहाल। तो ऐसे संगठन में लहर फैलाओ फिर टाइम देने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

30.11.2007.....संगठन सभी जगह मजबूत करो, चाहे दो हैं चाहे 4 हैं, चाहे 12 हैं, लेकिन दो का भी संगठन ऐसा मजबूत हो जो दोनों एकमत हों। स्वभाव एक दो में श्रेष्ठ बनाए, मिलाने की कोशिश करो। जैसे दादी को याद करते हैं ना, क्यों याद करते हो? उसकी विशेषता सबको अपनापन दिया। है ना ऐसे? सभा को अपनापन दिया ना, तो क्यों आप सभी नहीं कर सकते हो? जैसे सभी ने अनुभव किया, हमारी दादी है। ऐसे नहीं मधुबन की दादी है, हमारी है, ऐसे सभी ब्राह्मण एक दो में अपनापन अनुभव करें। यह है दादी को याद करना। इसी को ही याद कहा जाता है। समान बनना, विशेषता धारण करना, इसको कहते हैं याद। ठीक है ना! हर एक यही सोचो सब अपने हैं। अपनापन महसूस हो, ऐसे नहीं यह तो पता नहीं कौन है, क्या है। एक परिवार है ना! दादी भी सभी सेन्टर पर तो नहीं रहती थी ना, एक ही स्थान पर रहती थी मधुबन में, लेकिन सभी को अपनापन दिया। तो आप सभी भी अपने अपने स्थान पर रहते भी अपनापन दे सकते हो। यह दिल की स्थिति है। साथ रहने की बात नहीं है, यह दिल का वायब्रेशन अपनापन लाता है। अच्छा।

2.2.2008... .. अच्छा लगता है, संगठन होता है ना तो सबको खुशी होती है। बापदादा को संगठन बहुत अच्छा लगता है।

2.2.2008... .. सभी ने जैसे एक कार्य निश्चयबुद्धि होके सफल किया तो इससे सिद्ध है कि सफलता आपके हाथ में है। जो चाहे वह कर सकते हो। यह अनुभव हुआ। खुश हुए। अभी समझा कि संगठन में एक संकल्प दृढ़ता का करने से सब पहाड़ भी राई बन सकता है, रूई बन सकता है। हो सकता है ना। हो सकता है? हुआ ही पड़ा है। शक्तियों का भी शुभ संकल्प है, बापदादा कहेंगे विशेष निमित्त थोड़े बनें लेकिन सबका जो शुभ संकल्प था ना कि करना ही है, उसने काम किया। तो जैसे अभी इंटरनेशनल फैसला मिलके किया और प्रैक्टिकल प्रत्यक्ष देखा कि हो गया, ऐसे सदा करते रहना। कोई मुश्किल नहीं है। कितनी भुजायें हैं। हैं तो एक ब्रह्मा बाप की भुजायें। तो भुजाओं ने कमाल तो दिखाई ना। ऐसे ही संगठन को बढ़ाते रहना। एक दो के सहयोगी रहना। ठीक है ना।

18.2.2008... .. बच्चों ने कहा आना ही है तो बाप ने कहा हाँ जी। ऐसे ही एक दो के बातों को, स्वभाव को, वृत्ति को समझते, हाँ जी, हाँ जी करने से संगठन की शक्ति साइलेन्स की ज्वाला प्रगट करेगी। ज्वालामुखी देखा है ना। तो यह संगठन की शक्ति शान्ति की ज्वाला प्रगट करेगी।

5.3.2008... .. संगठन की शक्ति देखो, 5 पाण्डव, तो 5 के संगठन ने क्या कमाल की? तो संगठन में शक्ति होती है। तो इतना बड़ा संगठन है तो क्या नहीं कर सकते हैं! जो चाहे वह कर सकते हैं। तो कमाल करके दिखाओ, जो अभी तक नहीं किया है वह करके दिखाओ। है हिम्मत! हिम्मत है ना टीचर्स! है हिम्मत? अच्छी हैं। देखो हिम्मत कर बड़े-बड़े प्रोग्राम्स भी तो करते हो ना। तो नम्बरवन हर सबजेक्ट में बनना ही है, यह दृढ़ संकल्प करो। बापदादा ने देखा है जो हिम्मत रखते हैं, उनको बाप की मदद का अनुभव होता जरूर है। लेकिन अलबेलापन बीच में आता है, यह तो होता ही है। तीव्र पुरुषार्थ के बजाए कभी पुरुषार्थी, कभी तीव्र पुरुषार्थी बन जाते हैं। सदा तीव्र पुरुषार्थ की लहर स्वयं में भी और सर्व को भी दिलावे, यह नहीं समझो हम तो ठीक चल रहे हैं। एक दो को सहयोग देके संगठित रूप में नम्बरवन बनें। कैसा भी गिरा हुआ हो, उसको भी साथी बनाके चलना सिखाओ। सहयोगी बनो। तो क्या करेंगे इन्दौर? संगठन को निर्विघ्न, विघ्न का नाम-निशान नहीं हो। जिसको भी देखो उसके चेहरे में बापदादा की चलन दिखाई दे। क्या समझते हैं पाण्डव? करेंगे? करेंगे। शक्तियां क्या समझती हैं? यही सोचो हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा। हम ही करेंगे। ऐसे उमंग उत्साह सदा रखो। और कर सकते हो। संगठन में बहुत ताकत होती है। अच्छा। नम्बरवन विजयी भव का वरदान सदा याद रखना।

5.3.2008... .. दादियों से:- बापदादा के दिल में तो आप एक एक रतन महान हो क्योंकि अनेक आत्माओं के उमंग उत्साह बढ़ाने के निमित्त हो। आपका उमंग देख स्वतः ही उन्हीं में उमंग आता है। दिलाना नहीं पड़ता है, नेचरल पहुंच जाता है। आपका संगठन बहुत-बहुत पक्का है। पक्का करना नहीं है, है। एक-एक रत्न संगठन का श्रृंगार है। (मनोहर दादी से) क्लास में जाती तो है, आज्ञाकारी रही, बाप ने कहा आपने किया इसीलिए आज्ञाकारी लिस्ट में है। और आप तो सारा संगठन जी हाँ, जी हाँ करने वाले हो।

18.3.2008... .. अच्छा है, यह आबू में जो संगठन करते हो ना, यह सबमें बल भर जाता है। इसीलिए अवश्य हर सीजन में आते रहो, आते रहो, यज्ञ की शोभा बढ़ाते रहो। बापदादा को इन्हीं की जो मीटिंग रखते हैं और प्रोग्राम्स रखते हैं, डायलॉग का, समय की पुकार का, अच्छा लगता है।

2.4.2008... .. दादियों से:- आप लोगों को देख सभी खुश हो जाते हैं क्योंकि आदि रत्न हो ना और निमित्त बने हुए हो। आपस में मिलकर एक दो की राय को महत्व देते हुए यह परिवर्तन का कार्य कर रहे हो और करते रहेंगे। यह छोटा सा संगठन है ना। एक दो की राय को रिगार्ड देते हुए सभी को निमित्त और निर्माण बनाने वाले विशेष कार्य के निमित्त बने हुए हो। अच्छा है। आपस में संगठन बनाया है ना। तो इस संगठन को जितना अच्छी तरह से बढ़ायेंगे, समय देंगे उतना ही सबके दिल में उमंग उत्साह बढ़ायेंगे। ठीक चल रहा है ना! चलता रहेगा। बापदादा सब देखते रहते हैं। जितना आपका संगठन सैलवेशन देने के निमित्त बनेगा उतना ही चारों ओर का वायुमण्डल शक्तिशाली बनेगा। अभी मधुवन में जो विशेष इशारा दिया है कि हर एक अपने को चेक करे, अपने को बाप समान बनाये। तो एक-एक अपने को करने से संगठन स्वतः ही बदलता रहेगा। यह स्मृति बार-बार दिलाते रहो। स्व-परिवर्तन से औरों को भी परिवर्तन और विश्व भी परिवर्तन। पहले आपस में परिवर्तन



फिर विश्व में परिवर्तन। तो सब ठीक चल रहा है ना! ठीक चल रहा है, सहज चल रहा है। एक-एक को वरदान स्वरूप बनने की स्थिति स्मृति में दिलाते रहो। वरदान अच्छा है नहीं, अच्छा बनना है। ठीक है।

एक दो के प्रति कैसे भी हो लेकिन ब्राह्मण परिवार का तो है, हर एक के प्रति शिक्षा भी हो और साथ में क्षमा भी हो। इसी विधि से संगठन को पक्का करें। क्योंकि अभी सेन्टर में, हर एक सेन्टर तो निर्विघ्न बनें। उसके लिए हर एक अपने विधि प्रमाण कोई नई नई बातें निकालें। सेन्टर पर क्या होता है, वह सब अनुभवी हैं और क्या करें, किस बात का अटेन्शन रखें जो पहले सेन्टर निर्विघ्न बनें, फिर ज़ोन निर्विघ्न बनें। स्वभाव तो भिन्न भिन्न होंगे और पेपर भी आयेंगे लेकिन इनको पास कैसे करें, यह विधि पक्की ध्यान में रहे और बीच बीच में हर ज़ोन भी आपस में रिजल्ट निकालते रहें। आगे क्या करें, आगे क्या करें..। यह हुआ, यह हुआ, इसको कम करें, आगे क्या करें उसका स्पष्टीकरण ज्यादा हो।

20.10.2008.. .. सभी ब्राह्मण परिवार को खुशी होती है कि एक ही समय 100 देशों के इकट्ठे हुए हैं। यह संगठन कितना अच्छा लगता है। कहाँ-कहाँ से आये और अपने घर और परिवार, बापदादा से भी मिलन मनाया। वैसे भी वैरायटी चीजे अच्छी लगती हैं, तो यह भी वैरायटी देशों से एक स्थान में संगठन का दृश्य भी बहुत अच्छा लग रहा है।

30.11.2008. .. जो भी ज़ोन थोड़े कमजोर हैं आपस में नहीं मिलते, वहाँ कोई न कोई हर मास जाना चाहिए, संगठन करना चाहिए। (दादी जानकी ने कहा, इसमें गुल्जार दादी का भी सहयोग चाहिए) एक दो का सहयोग तो चाहिए।

15.12.2008.. .. अभी वी.आई.पी की लाइन में हैं, सहयोगी हैं, सेवा भी करते हैं लेकिन वारिस क्वालिटी नहीं हैं। तो ऐसा सहयोगी बनें, जो जिस समय जो कार्य करने की आवश्यकता है, जो उनकी क्वालिफिकेशन है, उस क्वालिफिकेशन के कार्य में हों जी, हों जी करें। कनेक्शन अच्छे जोड़े हैं, बापदादा इस बात में खुश है लेकिन अभी वह भी एवररेडी सेवाधारी बनें। ऐसी क्वालिटी वाले सभी वर्ग वाले इकट्ठे करो, बापदादा के पास ले आना है, यह नहीं। लेकिन किसी भी स्थान पर उन्हों का संगठन इकट्ठा करो। कहाँ भी करो, जहाँ सभी को थोड़ा आने में सहज हो सके, और उनका स्पेशल कोई न कोई प्रोग्राम रखते रहो। प्रोग्राम होता है तो जाते हो, मिलते हो, सहयोग भी देते हैं लेकिन थोड़ा होमली बन जाएं, जो समय पर सहयोगी बन सकें। शुरू शुरू में भोपाल वालों ने सर्विस की है, वी.आई.पीज के कनेक्शन बनाये हैं, लेकिन अभी इसी विधि की सर्विस करके दिखाओ।

5.02.09.. .. दादी का मिसाल देते हैं क्योंकि ब्रह्मा बाप के लिए भी सोचते हैं ब्रह्मा बाबा में तो शिवबाबा था, शिव बाप के लिए भी सोचते कि वह तो है ही निराकार, न्यारा और निराकार, हम तो स्थूल शरीरधारी हैं। इतने बड़े संगठन में रहने वाले हैं, हर एक के संस्कार के बीच में रहने वाले हैं, संस्कार को मिलाना अर्थात् फरिश्ता बनना। संस्कार को देख कई बच्चे दिलशिकस्त भी हो जाते हैं, बाबा बहुत अच्छा, ब्रह्मा बाप बहुत अच्छा, ज्ञान बहुत अच्छा, प्राप्तियां बहुत अच्छी, लेकिन संस्कार स्वभाव मिलाना अर्थात् सर्व के प्यारे बनना। हर मास में टापिक और समाचार की लेन देन इससे संगठन में उमंग आता है। अलग अलग पुरुषार्थ करते हैं ना उससे अगर संगठन में नियम प्रमाण, कायदेमुजीब प्रोग्राम रखते हैं तो उससे अटेन्शन अच्छा होता है।

और जितना हो सके उतना ज़ोन या दो तीन ज़ोन मिलके, जहाँ नजदीक पड़ता हो आने जाने में, 6 मास में 3 मास में एक संगठन तो करो। और एक दो में पहले अपने अपने ज़ोन में करो, दो तीन नजदीक वाले मिलके करो और फिर एक बारी सबको इकट्ठा एक स्थान पर करें तो परिचय भी हो जावे ना, कौन कौन अनुभव कर रहा है, मानों डाक्टर्स हैं, अभी देखें तो इतने बड़े बड़े डाक्टर्स भी अभ्यास कर रहे हैं तो प्रभाव तो पड़ता है ना।

और अभी जितना-जितना संगठन होता रहा है ना, तो उससे एक दो का अनुभव सुनने से कईयों को अनुभव द्वारा भी बल मिलता है। मानों कोई दिलशिकस्त हो जाता है तो दूसरे का अनुभव सुनता, तो यह सदा खुशमिजाज रहता है इसकी शक्ल कभी मुरझाये नहीं, दिलखुश। तो एक दो का अनुभव सुनने से उल्हास में आ जाते। एक दो का अनुभव कम नहीं होता है, हर एक को ड्रामानुसार कोई न कोई विशेषता बाप द्वारा मिली हुई है। तो वह अनुभव सुनने से उमंग आता है, यह कर सकता है तो मैं क्यों नहीं कर सकता! कभी भी दिल छोटी नहीं करना। बड़ी दिल, बड़ा बाबा। छोटा बाबा है क्या, बड़े ते बड़ा बाबा है, तो बच्चों की दिल सदा बड़ी।

**22.2.09 दादियों से:-** आपस में बैठे, सभी ने अपने अपने विचार दिये, विचार तो भिन्न भिन्न होंगे, लेकिन विचारों को समझ, रिगार्ड दे, एक दो में स्पष्ट करना। बिना स्पष्ट किये अन्दर नहीं रखें। अन्दर रखने से किचड़ा हो जाता है। कोई भी चीज़ अगर अन्दर रखो और सफाई नहीं करो तो क्या होता है? तो आप निमित्त जो बच्चे हैं, उनको बापदादा कहते हैं मुरब्बी बच्चे, पाण्डव भी हैं लेकिन जो निमित्त हैं वह मुरब्बी बच्चे, **मुरब्बी बच्चों का संगठन बहुत जल्दी सभी को बहुत उमंग उत्साह में लाता है।**

07.04.09... .. कोई भी कार्य में सफलता चाहते हैं तो उसका पहला फाउण्डेशन है सबकी एकमत। सभी के दिल में उमंग उत्साह हो। तो पेपर भी अनुभवी बनाता है। तो ऐसे ही **संगठन की शक्ति सब सहज कर सकती है।**

25.10.09... .. समय नाजुक होने से इतना समय कोई निकाल नहीं सकेगा लेकिन आपके खजाने सम्पन्न चेहरे से, चलन से आपकी अलौकिकता का दूर से ही साक्षात्कार होगा। तो ऐ सा पुरुषार्थ अभी अपना प्रत्यक्ष करो। जैसे **ब्रह्मा बाप को देखा, चाहे संगठन के बीच में भी रहा तो भी दूर से वह पर्सनैलिटी चमक अनुभव हुई।**

15.11.09 हर एक सेन्टर और उसके कनेक्शन में आने वाले सेन्टर निर्विघ्न और तीव्र पुरुषार्थ की गति में नम्बरवन बनें। तो जो नम्बरवन बनेगा उसको सौगात देंगे बापदादा। खुद तो बनें लेकिन सभी को भी साथ लेके चलना है ना। **संगठन को भी मजबूत करना है।** तो देखेंगे नम्बरवन कौन लेता है! जो भी लेवे, जितने भी लेवें बापदादा को खुशी है।

15.12.2009... .. डबल पुरुषार्थी बच्चे अपनी सेवा का जो मधुवन में चांस लेते हैं भिन्न-भिन्न प्रकार से, यह **बापदादा को बहुत अच्छा लगता है क्योंकि एक दो के संगठन का बल मिलता है, कहाँ क्या प्रब्लम होती है, कहाँ क्या प्रब्लम होती है, तो एक दो के अनुभव से और बड़ों के डायरेक्शन से, पालना से सहज हो जाता है।** वायुमण्डल का भी बल मिलता है, जिम्मेवारी कम होती है, समय वहाँ कम मिलता है यहाँ समय फ्री मिलता है, एक ही काम के लिए। वहाँ भिन्न-भिन्न जिम्मेवारियां होती हैं और टाइम देना ही पड़ता है, यहाँ एक ही काम होता है, या सेवा या स्व कल्याण।

31.3.2010... आजकल बापदादा ने देखा कि जो मूल बात है, बापदादा की। हर एक को और अपने को चाहे कहाँ भी सेवा के लिए जाते हो, तो यह चेक करो कि साथी सन्तुष्ट रहे? क्योंकि सेवा की सफलता है सन्तुष्टता का फल प्राप्त हो। खुशी प्राप्त हो। साथ-साथ एक बात बापदादा इशारा देते हैं कि चलते फिरते, संगठन में भी रहते हो, कोई न कोई साथ में सेवा में होता ही है, तो एक दो को आत्मा के रूप में देखो। आत्मा के रूप में देखते भी हैं, अभ्यास भी करते हैं, लेकिन जब आत्मा देखते हो तो आत्मा के ओरी जल संस्कार से देखते हो? या जाँ मिक्स संस्कार हैं, वह भी

दिखाई देते हैं? आत्मा देखो इसमें पास हो, लेकिन किस संस्कार से देखते हो? क्या आत्मा के ओरीजल संस्कार से कनेक्शन में आते हो? या वर्तमान संस्कार भी आते हैं सामने? तो बाप कहते हैं कि आज से किसी को भी एक तो आत्मा रूप में देखो लेकिन आत्मा के जो ओरीजल संस्कार हैं उस रूप में देखो। तो कभी भी आपस में जो कभी कभी बातें हो जाती हैं, वह नहीं होंगी। अभी आत्मा रूप में देखते हो लेकिन जो साथ में वह भी आ जाता है, वर्तमान संस्कार। तो आपस में जो सम्पूर्ण स्थिति होनी चाहिए, उसमें दूरी पड़ जाती है। तो ओरीजल संस्कार वाली आत्मा देखो। तो यह जो अभी संगठन में रुकावट आती है वह रुकावट खत्म हो जायेगी।

31.3.2010... किसी की क्या भी बातें देखते हो, बापदादा ने पहले भी कहा है तो सदा आप ब्राह्मण परिवार का एक एक का फर्ज है शुभ भावना, शुभ कामना देना और शुभ भावना, शुभ कामना लेना। उस संस्कार से देखो और चलो। एक और भी बात बताते हैं - पहले भी बताया है तो कहाँ कहाँ संगठन में कभी कभी परदर्शन, परचिंतन और परमत के तरफ आकर्षित हो जाते हैं। अभी इन तीन पर को काट दो, एक पर रखो वह एक पर है पर उपकार। पर उपकार करना है, पर उपकारी हैं, ब्राह्मण का स्वभाव है पर उपकारी। परदर्शन नहीं, यह पर काट दो। यह तीनों बहुत नुकसान देते हैं। इसीलिए अपना स्वमान सदा यही याद रखो कि मुझ ब्राह्मण आत्मा का स्वमान ही है पर उपकारी।

30.11.2010... सभी संगठन में यह वायदा करें कि हम सब मिलकरके करके दिखायेंगे और रोज अपना एक दो को जो साथ में रहते हैं, सब मिल करके लेन-देन करके सोयें तो हमारा आज का दिन सम्पन्न हुआ।

2.2.11... बापदादा चाहता है कि संस्कार की सबजेक्ट में नम्बरवन जाओ, जो संस्कार चाहते हो वही कार्य में लगे। हो जायेगा। अटेन्शन में आया है ना तो हो जायेगा। लेकिन अटेन्शन देना, ऐसे नहीं हो जायेगा लेकिन अटेन्शन देना पड़ेगा। संगठन में ही यह संस्कार निकलते हैं क्यों? आपके चित्रों में जो पूजा करते हैं वह आपके संस्कार कितने अच्छे गाते हैं। तो बने हैं तभी तो वर्णन करते हैं। अपना देवताई चित्र इमर्ज करो क्या गाते हैं? ऐसे देवता तो बनना ही है ना।

19.10.2011... अगर कोई गलत भी करता है तो उसके प्रति वह गलत करता है, और आप उसकी गलती का मन में संकल्प करते हो, यह करता है, यह करता है, यह करता है... यह भी खत्म करो। उनको सहयोग दो, श्रेष्ठ भावना दो, ऐसी सेवा करते सारे संगठन को श्रेष्ठ संकल्प वाले बनाना ही है। कोई सेन्टर पर कभी भी कोई एक दो के प्रति कोई भी और भावनानहीं हो, शुभ भावना, शुभ कामना, ठीक है ना! बहुत अच्छा।

18.1.2012... अभी समय अनुसार जो उमंग है कि बाप को प्रत्यक्ष करना है, वह धीरे-धीरे आत्माओं के दिल में भी आने लगा है। समझते हैं कि ब्रह्माकुमारियों ने कुछ पाया है, परिवर्तन हो रहा है। पहले जो समझते थे पता नहीं क्या करते हैं, अभी यहाँ तक आये हैं कि अच्छा कार्य कर रहे हैं। जो हम नहीं कर सकते वह इन्होंने

**अपने संगठन में सफलतापाई है** इसलिए आज बापदादा सामने बैठे हुए बच्चों को वा चारों ओर जो भी बच्चे सुन रहे हैं, देख रहे हैं सभी बच्चोंको दिल का स्नेह, दिल का प्यार विशेष दे रहे हैं। अभी आगे क्या करना है? सेवा की मुबारक तो बापदादा ने देदी, अब बापदादा यही चाहते हैं कि अभी हर एक बच्चे को यह उमंग-उत्साह, दृढ़ निश्चय, तीव्र पुरुषार्थ करना हैकि अब बाप समान फरिश्ता बनना ही है क्योंकि अभी सभी को बाप के साथ रिटर्न जरनी करनी है। समान फरिश्ताबनना ही है क्योंकि सभी का वायदा है साथ चलेंगे, साथ राज्य करेंगे।

31.12.2012... .. चाहे सेवास्थान है, चाहे अपने प्रवृत्ति में हैं, हर स्थान निर्विघ्न सन्तुष्टता की शक्ति से सम्पन्न हो। समय की रफ्तार तो देख रहे हो। तो **बापदादा ने देखा सन्तुष्टता की शक्ति चाहे स्वयं में, चाहे संगठन में अभी अटेन्शन देने की आवश्यकता है।**

30.3.2014... .. ईश्वरीय परिवार कितना विशेष परिवार है। **ईश्वरीय परिवार का संगठन कितना विशेष है। इस संगठन के फल स्वरूप ही सारे विश्व का कल्याण होना है, यही बाबा बच्चों से चाहते हैं।** तो सभी को मुबारक हो, मुबारक हो।

यहाँ साकार वतन में जब आप थोड़ा-थोड़ा या बहुत हिलते हो तो बाप को वहाँ वतन में अनुभव होता है कि कोई हिल रहा है। इसलिए जैसे शान्तिवन की खुशी है, हाल की खुशी है ऐसे बापदादा और इतने बड़े संगठन के बीच यह वायदा करो कि इस वर्ष में हलचल से परे हो अचल- अडोल बनना ही है, बनेंगे नहीं, बनना ही है। ऐसे है? ऐसे जो समझते हैं बनना ही है, सोचेंगे, करेंगे, देखेंगे – यह नहीं, वह हाथ उठाओ। अच्छा—मुबारक हो

15.3.2015... .. बापदादा सभा को देख खुश भी हो रहे हैं क्योंकि सभी बच्चों के अन्दर अभी यह संकल्प है कुछ करना है, करना है, और यह संकल्प आपका कोई न कोई जलवा दिखायेगा। संकल्प अच्छा है। सभी के दिल में है ना, अब कुछ नया हो, नया हो। तो सबने खुशी-खुशी से संगठन में यह संकल्प किया है कि **अभी भारत में कम से कम जो एरिया रही हुई है वहाँ अपना फर्ज निभाना है।** हर एक की एरिया में जो भी मुख्य शहर है, वहाँ अभी यह प्रसिद्ध हो तो ब्रह्माकुमारियां क्या चाहती हैं। अब ब्रह्माकुमारियां जो चाहती हैं उसमें मददगार बन रहे हैं और बनना है। अभी धीरे-धीरे प्रसिद्ध हो रहा है, हो ही जायेगा इसलिए उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते चलो। आप एक-एक निमित्त हो, ऐसे नहीं जो बड़े करते हैं, हम भी करते हैं। करते हैं उसके लिए पास हो, उसके लिए मुबारक हो। परन्तु अभी आवाज थोड़ा बुलुन्द हो। भारत में भारत का पिता गुप्तवेष में आ गये हैं, यह आवाज थोड़ा स्पष्ट फैलाओ। दुख तो बढ़ रहा है। सब तंग तो हैं लेकिन कहाँ-कहाँ अल्पकाल का सुख उन्हीं को सुला देता है। तो अब सेवा में भी चेक करो किस-किस तरफ किस-किस एरिया में करना है, वह हर एक सेन्टर अपने-अपने एरिया को चेक करे और वहाँ सर्विस का आवाज फैलाये। कहाँ-कहाँ अच्छे हैं लेकिन सारे भारत को जगाना है तो अभी चेक करो और चांस लो। चारों ओर अभी आवाज फैलना चाहिए कि अभी हमें खुद भी परिवर्तन होना है और विश्व को भी परिवर्तन करने के कार्य में लगना है। तो सभी खुश है?

18.1.2015... .. जो निश्चयबुद्धि है वह तो क या समझते हैं , शुरू से लास्ट तक साथ रहेंगे भिन्न-भिन्न रूप में। बापदादा एक भी बच्चे को अलग नहीं करने चाहते हैं। हर एक बच्चा रोज़ अमृतवेले याद करो , साथ हैं , साथ रहेंगे , साथ राज्य करेंगे । अच्छा है । **बापदादा को संगठन अच्छा लगता है।** और ऐसे ही सतयुगमें भी समान बनेंगे तो वहाँ भी इकट्ठे होते रहेंगे। एक दो में आयेंगे, जायेंगे ,

मिलेंगे । सभी हैं ना साथी । साथी हैं, हाथ उठाओ । अच्छा है । आपस में साथी साथ रहेंगे , कितना अच्छा है । भले अलग रहेंगे , लेकिन दिल का साथ होगा । ड्रेस चेंज होगी लेकिन मन नहीं चेंज होगा । 10.4.2015... .. अभी बहुत पावरफुल योग की जरूरत है, सब तरफ यह बता दो और सब पुरानी बातें मिटाकरके एक बाबा के योग से पावरफुल वातावरण बनाओ और नये सेवा के कुछ प्लैन बनाओ । जब कुछ सेवा का प्रोग्राम बनता है, उसमें अगर अलग- अलग हो जाते हैं तो वह सेवा का प्लैन सफल नहीं होता है, परन्तु संगठन की शक्ति से ही वो सेवा का प्लैन सफल होगा, अभी 10 मिनट अच्छी तरफ से साइलेन्स का अनुभव करो, योग लगाओ । अच्छा ।

3.11.2015... .. आज भी अभी बापदादा वाह वाह का संगठन देख रहा है । चाहे नम्बरवार तो हैं लेकिन हैं वाह वाह! सब प्रभु प्यारे हैं । तो यह संगठन प्रभु प्यारों का है । हर एक चाहे नम्बरवार हो लेकिन मूल आधार सबका एक है । सबके दिल से मुख से क्या निकलता है? वाह बाबा वाह! और बाप के मुख से क्या निकलता है? वाह सिक्कीलधे बच्चे वाह! तो हर एक अपने को चाहे बैठने में आगे पीछे हो लेकिन हर एक बाप के सिक्कीलधे हैं । बाप भी हर एक बच्चे को उसी रूप में देख रहे हैं । हर एक के दिल में कौन? तो क्या कहेंगे? वाह वाह बाबा! और बाप की दिल में कौन? हर बच्चा है । नम्बर है लेकिन सिक्कीलधे सब हैं ।

## 5. सामना करने की शक्ति

6.2.69... .. अब तो बच्चों को बहुत सामना करना है। लेकिन समर्थ साथ है इसलिए कोई मुश्किल नहीं है। सिर्फ एक बात सभी को ध्यान में रखनी है कि सामना करने के लिए बीच में रूकावट भी आयेगी। सामना करने में रूकावट कौन सी आयेगी? मालूम है? (देह अभिमान) देह अभिमान तो एक मूल बात है लेकिन सामना करने के लिए बीच में कामना विघ्न डालेगी। कौन सी कामना? मेरा नाम हो, मैं ऐसा हूँ, मेरे से राय क्यों नहीं ली, मेरा मूल्य क्यों नहीं रखा? यह अनेक प्रकार की कामनाएं सामना करने में विघ्न रूप में आयेंगी। यह याद रखना है हमको कोई कामना नहीं करनी है। सामना करना है। अगर कोई कामना की तो सामना नहीं कर सकेंगे।

18.5.69... .. दिन प्रतिदिन पाप आत्मायें तो बहुत होते हैं। आपदायें, अकाले मृत्यु, पाप कर्म बढ़ते जाते हैं तो उन्हीं की वासनाएं जो रह जाती हैं वह फिर अशुद्ध आत्माओं के रूप में भटकती हैं। इसलिये यह भी बहुत बड़ी सम्भाल रखनी है। कोई में अशुद्ध आत्मा की प्रवेशता होती है तो उनको भगाने लिए एक तो धूप जलाते हैं और आग में चीज को तपाकर लगाते हैं और लाल मिर्ची भी खिलाते हैं। तो आप सभी को फिर योग की अग्नि से काम लेना है। हर कर्मेन्द्रियों को योगाग्नि में तपाना है तो फिर कोई वार नहीं कर सकेंगे। थोड़ा भी कहाँ ढीलापन हुआ, कोई भी कर्मेन्द्रियाँ ढीली हुई तो फिर प्रवेशता हो सकती है। वह अशुद्ध आत्माएं भी बड़ी पावरफुल होती हैं। वह माया की पावर भी कम नहीं होती। यह बहुत ध्यान रखना है। और कई प्राकृतिक आपदाएं भी अपना कर्तव्य करेंगी। **उसका सामना करने लिये अपने में ईश्वरीय शक्ति धारण करनी है।** उस समय स्नेह नहीं रखना है। उस समय शक्ति- रूप की आवश्यकता है। किस समय स्नेहमूर्त, किस समय शक्तिरूप बनना है यह भी सोचना है। इन सभी बातों में शक्तिरूप की आवश्यकता है। अगर कोई ऐसा आया और उनको ज्यादा स्नेह दिखाया तो कहाँ नुकसान भी हो सकता है। स्नेह बापदादा और दैवी परिवार से करना है। बाकी सभी से **शक्तिरूप से सामना करना है।**

9.6.69... .. जैसे विशेष फंक्शन आदि के प्रोग्राम रखते हो ना वैसे अब यही समझना है कि समय थोड़ा है। उसमें विशेष पुरुषार्थ का प्रोग्राम रखना है। यह विशेष पुरुषार्थ करने का लक्ष्य रख आगे बढ़ना है। अगर ऐसी ढीली रिजल्ट में रहेंगे तो जो आने वाली परीक्षायें हैं उनकी रिजल्ट क्या रहेगी? **परीक्षायें कड़ी आने वाली हैं। उसका सामना करने के लिए पुरुषार्थ भी कड़ा चाहिए।** अगर पुरु-षार्थ साधारण, परीक्षा कड़ी तो रिजल्ट क्या होगी?

23.7.69... .. खास जो निमित्त बने हुये पाण्डव हैं उनको भविष्य में आने वाली बातों को परखने की शक्ति चाहिए और निर्णय करने की शक्ति भी चाहिये। **निर्णय के बाद फिर निवारण की शक्ति चाहिए। तभी सामना कर सकेंगे और सामना करने के बाद यज्ञ की प्रत्यक्षता की सफलता पाओगे।**

16.10.69... .. आप गोपों को बहुत प्रकार की परिस्थितियां सामने आती है। उन्हीं का सामना करने लिये यह बुद्धि बहुत आवश्यक है। परखने की पावर कैसे आयेगी - उसके लिए मुख्य साधन कौनसा है? परखने की शक्ति को तीव्र बनाने लिए मुख्य कौन सा साधन है? परखने का तरीका कौन सा होना चाहिए? तुम्हारे सामने कोई भी आये उनको परख सकते हो? (हरेक ने अपना-अपना विचार बताया) सभी का रहस्य तो एक ही है। अव्यक्त स्थिति वा याद वा आत्मिक स्थिति बात तो वही है। लेकिन आत्मिक स्थिति के साथ-साथ यथार्थ

रूप से वही परख सकता है जिनकी बुद्धि में ज्यादा व्यर्थ संकल्प नहीं चलते होंगे। उनकी बुद्धि एक के ही याद में, एक के ही कार्य में और एक रस स्थिति में होगी। वह दूसरे को जल्दी परख सकेंगे।

16.10.69... एक सेकेण्ड में सर्विस के संकल्प में आये और एक सेकेण्ड में संकल्प से परे स्वरूप में स्थित हो जायें। इस ड्रिल की बहुत आवश्यकता है। ऐसे नहीं कि शारीरिक भान से निकल ही न सकें। एक सेकेण्ड में कार्य प्रति शारीरिक भान में आये फिर एक सेकेण्ड में अशारीरी हो जायें, **जिसकी यह ड्रिल पक्की होगी वह सभी परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं।** जैसे शारीरिक ड्रिल सुबह को कराई जाती है वैसे यह अव्यक्त ड्रिल भी अमृतबेले विशेष रूप से करना है। करना तो सारा दिन है लेकिन विशेष प्रैक्टिस करने का समय अमृतबेले है। जब देखो बुद्धि बहुत बिजी है तो उसी समय यह प्रैक्टिस करो। परिस्थिति में होते हुए भी हम अपनी बुद्धि को न्यारा कर सकते हैं। लेकिन न्यारे

तब हो सकेंगे जब जो भी कार्य करते हो वह न्यारी अवस्था में होकर करेंगे। अगर उस कार्य में अटैचमेंट होगी तो फिर एक सेकेण्ड में डिटैच नहीं होंगे। इसलिए यह प्रैक्टिस करो।

9.11.69... मिलिट्री वालों का हर समय बिस्तरा तैयार रहता है। यह संकल्पों का बिस्तरा भी बन्द करना है। बिस्तरा भी एवररेडी रहना चाहिए। एवररेडी बनने वालों का संकल्पों का बिस्तरा तैयार रहना चाहिए। कोई भी परिस्थिति हो उसका सामना करने के लिए पेटी बिस्तरा तैयार हो।

17.11.69... खुद इजी बनने से सब कार्य भी इजी, पुरुषार्थ भी इजी हो जाता है। खुद इजी नहीं बनते तो पुरुषार्थ और सर्विस दोनों इजी नहीं होती। **मुश्किलातों का सामना करना पड़ता है।** सर्विस मुश्किल नहीं लेकिन अपने संस्कार, अपनी कमजोरियां मुश्किल के रूप में देखने में आती हैं। पुरुषार्थ भी मुश्किल नहीं। अपनी कमजोरियां मुश्किल बना देती हैं। नहीं तो कोई को सहज, कोई को मुश्किल क्यों भासता। अगर मुश्किल ही है तो सभी को सभी बातें मुश्किल हो। लेकिन वही बात कोई को मुश्किल कोई को सहज क्यों? अपनी ही कमजोरियां मुश्किलात के रूप में आती हैं। इसलिये यह दो बातें धारण करनी हैं।

खुद इजी बनने से सब कार्य भी इजी, पुरुषार्थ भी इजी हो जाता है। खुद इजी नहीं बनते तो पुरुषार्थ और सर्विस दोनों इजी नहीं होती। मुश्किलातों का सामना करना पड़ता है। सर्विस मुश्किल नहीं लेकिन अपने संस्कार, अपनी कमजोरियां मुश्किल के रूप में देखने में आती हैं। पुरुषार्थ भी मुश्किल नहीं। अपनी कमजोरियां मुश्किल बना देती हैं। नहीं तो कोई को सहज, कोई को मुश्किल क्यों भासता। अगर मुश्किल ही है तो सभी को सभी बातें मुश्किल हो। लेकिन वही बात कोई को मुश्किल कोई को सहज क्यों? अपनी ही कमजोरियां मुश्किलात के रूप में आती हैं। इसलिये यह दो बातें धारण करनी हैं।

अट्रैक्टिव भी तब बन सकेंगे जब पहले अपने में विशेषताएं होंगी। आकर्षित बनने लिये हर्षित भी रहना पड़ेगा। हर्षित का अर्थ ही है अतीन्द्रिय सुख में झूमना। ज्ञान को सुमिरण करके हर्षित होना। अव्यक्त स्थिति का अनुभव करते अतीन्द्रिय सुख में झूमना। इसको कहा जाता है हर्षित। हर्षित भी मन से और तन से दोनों से होना है। ऐसा जो हर्षित होता है वही आकर्षित होता है। प्रकृति और माया के अधीन न होकर दोनों को अधीन करना चाहिए।

28.11.69... चार शक्तियों को धारण करना है। है तो एक ही ईश्वरीय शक्ति। लेकिन स्पष्ट करने के लिए कहा जाता है। 1- समेटने की शक्ति अर्थात् शार्ट करने की शक्ति, 2- समाने की शक्ति, 3- सहन करने की शक्ति, 4- सामना करने की शक्ति, लेकिन किसका सामना करना है? बापदादा व दैवी परिवार को नहीं। **माया की शक्ति का सामना करने की शक्ति।**

यह चारों शक्तियाँ धारण करेंगे तो सम्पूर्ण समर्पण को अविनाशी कायम रख सकेंगे।

6.12.69... .. जो सभी का स्नेही होता है उनको सभी द्वारा सहयोग प्राप्त होता है। इस-लिए सभी बातों का सामना करना वा समेटना सहज ही कर सकता है। और जितना सरल स्वभाव वाले होंगे उतना माया कम सामना करेगी। वह सभी को प्रिय लगता है।

सरल स्वभाव वाले का व्यर्थ संकल्प कभी नहीं चलता। समय व्यर्थ नहीं जाता। व्यर्थ संकल्प न चलने के कारण उनकी बुद्धि विशाल और दूरांदेशी रहती है। इसलिए उनके आगे कोई भी समस्या सामना नहीं कर सकती।

20.12.69... .. महीन बुद्धि वाले कैसी भी परिस्थिति में अपने को मोल्ड कर सकेंगे। जैसी परिस्थिति उसमें अपने को मोल्ड कर सकेंगे। सामना करने का उनमें साहस होगा वह कभी घबरायेंगे नहीं। लेकिन उसकी गहराई में जाकर अपने को उसी रीति चला-

येंगे। तो जब हल्के होंगे तब ही मोल्ड हो सकेंगे। नर्म और गर्म दोनों ही होंगे तब मोल्ड होंगे। एक की भी कमी होगी तो मोल्ड नहीं हो सकेंगे। कोई भी चीज को गर्म कर नर्म किया जाता है। फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ कौनसी नर्माई और गर्माई है। नर्माई है निर्माणता, गर्माई है – शक्ति रूप।

आदि से अन्त तक जो अवस्था चलती आई है उसमें कितना बारी फेल हुए हैं, पूरा पोतामेल एनाउन्स होगा। कितने बारी विजयी बने और कितने बारी फेल हुए और विजय प्राप्त की तो कितने समय में? कोई भी समस्या को सामना करने में कितना समय लगा? उनकी भी मार्क्स मिलेगी। तो सारे जीवन की सर्विस और स्व स्थिति और अन्त तक सर्विस का सबूत – यह तीन बातें देखी जाती हैं।

26.1.70... .. एक स्नेह से दूसर बेहद की वैराग वृत्ति से कोई भी परिस्थितियों को सहज ही सामना करेंगे। सफलता के सितारे बनने के लिये यह दो गुण मुख्य मधुबन की सौगात ले जाना है। जैसे कहाँ भी जाना होता है तो वहाँ जाते ही पूछा जाता है कि यहाँ की विशेष चीज़ क्या है? जो प्रसिद्ध विशेष चीज़ होती है, वह ज़रूर साथ में ले जाते हैं। तो यहाँ मधुबन के दो विशेष गुण अपने साथ ले जाना। जैसे स्थूल मधु ले जाते हो ना। वैसे यह सूक्ष्म मधुरता की मधु ले जाना। फिर सफलता ही सफलता है। असफलता आपके जीवन से मिट जायेगी। सफलता का सितारा अपने मस्तक में चमकते हुए देखेंगे।

यह माया जो शेरनी रूप में सामना करने आती है उनको अपने अधीन कर सवारी बनाना अर्थात् उनकी शक्ति को खत्म करना। ऐसी शक्तियाँ जिनकी शेर पर सवारी दिखाते हैं वही तुम हो ना।

28.5.70... .. बापदादा भी हरेक का साहस देख रहे हैं। अब कोई बात का साहस रखा जाता है तो साहस के साथ और कुछ भी करना पड़ता है कई बातें सामना करने लिए आती हैं। साहस रखा और माया का सामना करना शुरू हो जाता है। इसलिए सामना करने के लिए हिम्मत भी पहले से ही अपने में रखनी है। यह सभी सामना करने के लिए तैयार हैं? कोई भी परीक्षा किस भी रूप में आये, परीक्षा को पास करने के लिए अगर हाई जम्प देने का अभ्यास होगा तो कोई भी परीक्षा को पास कर लेंगे।

28.5.70... .. इस भट्टी से ऐसा होकर निकलना है जो जैसा भी कोई हो, जहाँ भी हो, जैसी भी परिस्थिति हो उन सभी का सामना कर सकें। क्योंकि समस्याओं को मिटाने वाले बनकर निकलना है। न कि खुद समस्या बन जाना है। कोई तो समस्याओं को मिटाने वाले होते हैं कोई फिर खुद ही समस्या बन जाते हैं। तो खुद समस्या न बनना लेकिन समस्याओं को मिटाने वाले बनना है।



जैसा नाम है वैसा ही सदैव हर कार्य शूरवीर समान करना। कब कायर नहीं बनना। कमजोरी नहीं दिखाना। काली का पूजन देखा है? जैसे वह काली दल है ना। जैसे इस सारे ग्रुप को फिर काली दल बनना है। **एक एक काली रूप जब बनेंगी तब समस्याओं का सामना कर सकेंगी।**

7.6.70... .. जैसा बाप जैसे बच्चे। यह सलोगन याद रखो। अन्तर न हो। अन्तर को अन्तर्मुख होकर मिटाना है। बाप कब निराश होते हैं? परिस्थितियों से घबराते हैं? तो बच्चे फिर क्यों घबराते हैं? **ज्यादा परिस्थितियों को सामना करने का साकार सबूत भी देखा। कभी उनका घबराहट का रूप देखा?** सुनाया था ना कि सदैव यह याद रखो कि स्नेह में सम्पूर्ण होना है। कोई मुश्किल नहीं है। स्नेही को सुध-बुध रहती है? जब अपने आप को मिटा ही दिया फिर यह मुश्किल क्यों? मिटा दिया ना। जो मिट जाते हैं वह जल जाते हैं। जितना अपने को मिटाना उतना ही अव्यक्त रूप से मिलना।

25.6.70... .. प्रवृत्ति की पालना तो करना ही है। लेकिन प्रवृत्ति में रहते वैराग्य वृत्ति में रहना है, यह भूल जाता है। आधी बात याद रहती है, आधी बात छोड़ देते हैं। बहुत सूक्ष्म संकल्पों के रूप में पहले सुस्ती प्रवेश करती है। इसके बाद फिर बड़ा रूप लेती है। अगर उसी समय ही उनको निकाल दें तो ज्यादा सामना न करना पड़े। तो अब यह चेक करना है कि तीव्र पुरुषार्थी बनने में वा हाई जम्प देने में किस रूप में माया सुस्त बनाती है। माया का जो बाहरी रूप है उनको तो चेक करते हो लेकिन इस रूप को चेक करना है।

11.7.70... .. अब लास्ट समय है। अब तक अगर विकराल रूपधारी नहीं बनेंगे तो अपने विकर्मों और विकर्मियों का सामना नहीं कर सकेंगे। अभी समाने की बात नहीं। **विकर्मों को, व्यर्थ संकल्पों को वा विकर्मियों के विकर्मी चलन को अब समाना नहीं है लेकिन संहार करना है।** अब स्नेह को समाना है। शक्तिरूप को प्रत्यक्ष करना है।

11.7.70... .. योगयुक्त और निश्चयबुद्धि बनकर के कर्तव्य करने से सफलता प्राप्त हो ही जाती है। पहले से ही अगर यह संकल्प बुद्धि में होता है कि करते हैं परन्तु मिलता मुश्किल है। तो यह संकल्प भी निश्चय की परसेन्ट को कम कर देता है। निश्चयबुद्धि हो करें तो फेल नहीं होंगे। समस्याओं का सामना करने से सफलता मिलती है। विघ्न तो आयेंगे लेकिन लगन की अग्नि से विघ्न भस्म हो जायेंगे।

24.7.70... .. जैसे आजकल जनसंख्या का हिसाब निकालते हैं ना कि एक दिन में कितनी वृद्धि होती है। यहाँ फिर यह संकल्पों की स्पीड तेज होगी। एक तरफ संकल्पों की, दूसरी तरफ ईविल स्पिट्स (आत्माओं) की भी वृद्धि होगी। **लेकिन इसके लिए एक विशेष अटेंशन रखना पड़े, जिससे सर्व बातों का सामना कर सकेंगे।** वह यह है कि जो भी बात होती है उसको स्पष्ट समझने के लिए दो शब्द याद रखना है। एक अन्तर और दूसरा मन्त्र। जो भी बात होती है उसका अन्तर करो कि यह यथार्थ है या अयथार्थ है। बापदादा के समान है वा नहीं है। बाप समान है वा नहीं? एक तो हर समय अन्तर(भेंट) करके उसका एक सेकेण्ड में नाट या तो डाट। करना नहीं है तो फिर डाट देंगे, अगर करना है तो करने लग जायेंगे। तो नाट और डाट यह भी स्मृति में रखना है। अन्तर और मन्त्र यह दोनों प्रैक्टिकल में होंगे। दोनो को भूलेंगे नहीं तो कोई भी ईविल स्पिट्स सामना नहीं कर सकेगी। एक सेकेण्ड में समस्या भस्म हो जाओगी। ईविल स्पिट्स आप के सामने ठहर नहीं सकती हैं। तो यह पुरुषार्थ करना पड़े। समझा।

24.7.70... अभी समय की बचत, संकल्पों की बचत, अपनी शक्ति की बचत यह योजना बनाकर बीच-बीच में उस बिन्दी रूप की स्थिति को बढ़ाओ। जितना बिन्दी रूप की स्थिति होगी उतना कोई भी ईविल स्पिट वा ईविल संस्कार का फोर्स आप लोगों पर वार नहीं करेगा। और आप लोगों का शक्तिरूप ही उन्हीं को मुक्त करेगा। यह भी सर्विस करनी है। ईविल स्पिट को भी मुक्त करना है क्योंकि अभी अन्त के समय का भी अन्त है तो ईविल स्पिट वा ईविल संस्कारों को भी अति में जाकर फिर उन्हीं का अन्त होगा। किचड़ा सारा बाहर निकल कर भस्म हो जायेगा। इसलिए उन्हीं का सामना करने के लिए अगर अपनी समस्याओं से ही मुक्त नहीं हुए होंगे तो इन समस्याओं से कैसे सामना कर सकेंगे। इसलिए कहते हैं बचत की स्कीम बनाओ और प्रैक्टिकल में लाओ तब अपना और सर्व आत्माओं का बचाव कर सकेंगे।

27.7.70... सफलता के सितारे हैं उसी स्मृति में रह कार्य करने से ही सफलता का अधिकार प्राप्त होता है। सफलता के सितारे बनने से सामना करने की शक्ति आती है। सफलता को सामने रखने से समस्या भी पलट जाती है और सफलता प्रैक्टिकल में हो भी जाती है।

22.10.70... आज बापदादा फिर से याद दिला रहे हैं। सम्पूर्णता को समीप लाना है। समस्याओं को दूर भगाना है और सम्पूर्णता को समीप लाना है। कहाँ सम्पूर्णता के बजाए समस्याओं को बहुत सामने रखते हैं। समस्याओं का सामना करें तो समस्या समाप्त हो जाये। सामना करना नहीं आता है तो एक समस्या से अनेक समस्याएँ आ जाती हैं। पैदा हो और वहाँ ही खत्म कर दें तो वृद्धि न हो। समस्या को फौरन समाप्त कर देंगे तो फिर वंश पैदा नहीं होगा। अंश रहता है तो वंश होता है। अंश को ही खत्म कर देंगे तो वंश कहाँ से आयेगा। तो समझा समस्या के बर्थ को कन्ट्रोल करना है। अभी इशारे में कह रहे हैं फिर सभी प्रत्यक्ष रूप में आपकी स्थिति बोलेगी। छिप नहीं सकेंगे। जैसे नारद की सूरत सभा के बीच छिप सकी? अभी तो बाप गुप्त रखते हैं लेकिन थोड़े समय के बाद फिर गुप्त नहीं रह सकेगा। उनकी सूरत सीरत को प्रत्यक्ष करेगी। जैसे साइन्स में आजकल इन्वेन्शन करते जाते हैं। कोई भी गुप्त चीज़ स्वतः ही प्रत्यक्ष हो जाये। ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति का भी स्वतः ही प्रत्यक्ष रूप हो जायेगा। कहने वा करने से नहीं होगा। समझा।

22.10.70... तो भविष्य समय की सूचना दे रहे हैं। इसलिए अब नाजुक समय का सामना करने के लिए नाजुकपन छोड़ना है। तब ही नाजुक समय का सामना कर सकेंगे।

3.12.70... स्वस्थिति को मास्टर सर्वशक्तिमान कहा जाता है। तो मास्टर सर्वशक्तिमान बने हो ना। इस स्थिति में सर्व परिस्थितियों से पार हो जाते हैं। इस स्थिति में स्वभाव अर्थात् सर्व में स्व का भाव अनुभव होता है। और अनेक पुराने स्वभाव समाप्त हो जाते हैं। स्वभाव अर्थात् स्व में आत्मा का भाव देखो फिर यह भाव-स्वभाव की बातें समाप्त हो जायेगी। सामना करने की सर्व शक्तियाँ प्राप्त हो जायेंगी। जब तक कोई सूक्ष्म वा स्थूल कामना है तब तक सामना करने की शक्ति नहीं आ सकती। कामना सामना करने नहीं देती। इसलिये ब्राह्मणों का अन्तिम सम्पूर्ण स्वरूप क्यों गाया जाता है, मालूम है? इस स्थिति का वर्णन है इच्छा मात्रम् अविद्या। अब अपने से पूछो इच्छा मात्रम् अविद्या ऐसी स्थिति हम ब्राह्मणों की बनी है? जब ऐसी स्थिति बनेगी तब जयजयकार और हाहाकार भी होगी। यह है आप सभी का अन्तिम स्वरूप।

5.12.70... .. पास विद आनर अर्थात् संकल्प में भी फेल न हो ऐसे बने हो? कल समाचार सुना था कि जी हॉ का नारा बहुत अच्छा लगाया। ऐसी प्रतिज्ञा करने वाले पास विद आनर होने चाहिए। माया को चैलेन्ज है कि प्रतिज्ञा करने वालों का खूब प्रैक्टिकल पेपर ले। सामना करने की शक्ति सदैव अपने में कायम रखना है।

जितना तृप्त बनेंगे इतना ही इच्छा मात्रम् अविद्या होंगे। कामना के बजाये सामना करने की शक्ति आयेगी।

9.12.70... .. हार्ड वर्कर्स वा रुहानी सेवाधारी ग्रुप को सदैव यह सलोगन याद रखना है। समाना और सामना करना हमारा निशाना है। यह है इस ग्रुप का सलोगन। सामना माया से करना है न कि दैवी परिवार से। समाना क्या है? अपने पुराने संस्कारों को समाना है। नालेजफुल के साथ-साथ पावरफुल भी बनना है तब ही सर्विसएबल बनेंगे।

1.3.71... .. हरेक को यह वायदा करना है कि समय-प्रति-समय मैं सर्विस में मददगार और साथ-साथ शक्ति-स्वरूप बन विघ्न-विनाशक बनकर ही प्रवृत्ति में रहेंगी। सहज वायदा है ना। विघ्नों के आने से चिल्लायेंगे नहीं, घबरायेंगे नहीं, लेकिन शक्ति बनकर सामना करेंगे। यह वायदा अपने आप से सदैव के लिए करके जाना है।

5.3.71... .. तुम मातायें भी ऐसी जादूगरी दिखा सकती हो। सिर्फ शेरनी बन जाओ, फिर वह शेर बकरी बनेंगे। तो यह अन्त का जो धर्मयुद्ध दिखाया हुआ है, आवाज़ बुलन्द होना है। तुम्हारी इस सर्विस से जब शेर बकरी बन जायेंगे फिर उनके फालोअर्स तो पीछे-पीछे हैं ही। सिर्फ एक शेर को भी बकरी बनाया तो अनेक शेर जाल में आ जायेंगे। इसलिए माताओं को इतनी ऊंची सर्विस के लिए तैयार रहना चाहिए। अगर इतना झुण्ड शक्तिदल सामना करे तो बताओ वह ठहर सकेंगे? चैलेन्ज करने की हिम्मत चाहिए।

11.3.71... .. अगर सामना करने वाले अपने स्व-स्थिति से उन परिस्थितियों को पार नहीं कर सकेंगे तो फिर वह परिस्थितियां आयेंगी कैसे। सामना करने वाले अभी तैयार नहीं हैं, इसलिए यह पर्दा खुलने में देरी पड़ रही है। अभी तक इन पुरानी आदतों से, पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से, पुरानी दुनियाँ से, पुरानी देह के सम्बन्धियों से वैराग्य नहीं हुआ है। कहाँ भी जाना होता है तो जिन चीजों को छोड़ना होता है उनसे पीठ करनी होती है। तो अभी पीठ करना नहीं आता है। एक तो पीठ नहीं करते हो, दूसरा जो साधन मिलता है उसकी पीठ नहीं करते हो। सीता और रावण का खिलौना देखा है ना। रावण के तरफ सीता क्या करती है? पीठ करती है ना। अगर पीठ कर दिया तो सहज ही उनके आकर्षण से बच जायेंगे। लेकिन पीठ नहीं करते हो। जैसे श्मशान में जब नज़दीक पहुंचते हैं तो पैर इस तरफ और मुँह उस तरफ करते हैं ना। तो यह भी पीठ करना नहीं आता है। फिर मुँह उस तरफ कर लेते हैं, इसलिए आकर्षण में कहाँ फँस जाते हैं। तो दोनों ही प्रकार की पीठ करने नहीं आती है। माया बहुत आकर्षण करने के रूप रचती है। इसलिए न चाहते हुए भी पीठ करने के बजाय आकर्षण में आ जाते हैं। उसी आकर्षण में पुरुषार्थ को भूल, आगे बढ़ने को भूल रुक भी जाते हैं; तो क्या होगा? मंजिल पर पहुँचने में देरी हो जायेगी। कुमारों की भट्टी है ना। तो कुमारों को यह खिलौना सामने रखना चाहिए। माया की तरफ मुँह कर लेते हैं। माया की तरफ मुँह करने से जो परीक्षायें माया की तरफ से आती हैं, उनका सामना नहीं कर सकते हैं। अगर उस तरफ मुँह न करो तो माया की परिस्थितियों को मुँह दे सको अर्थात् सामना कर सको। समझा?

13.3.71... .. जब बन्धनमुक्त हैं तो मन के वश अर्थात् व्यर्थ संकल्पों के वश नहीं होंगे। व्यर्थ संकल्पों पर पूरा कन्ट्रोल होगा। परिस्थितियों के वश भी नहीं होंगे। परिस्थितियों का सामना करने की सम्पूर्ण शक्ति होगी।

18.3.71... .. शक्तिवान और सम्पत्तिवान बने हो? हरेक ने अपने आप से प्रतिज्ञा भी की है। जो प्रतिज्ञा की जाती है उसको पूर्ण करने के लिए पावर भी अवश्य इकट्ठी करेंगे। कितना भी सहन करना पड़े, सामना करना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा को पूरा करना ही है। ऐसी प्रतिज्ञा की है? भले सारे विश्व की आत्माएं मिलकर भी प्रतिज्ञा से हटाने की कोशिश करें, तो भी प्रतिज्ञा से नहीं हटेंगे लेकिन सामना करके सम्पूर्ण बनकर के ही दिखायेंगे। ऐसी प्रतिज्ञा करने वालों का यादगार बना हुआ है – अचलघर। तो सदैव यह याद रखना कि जैसा हमारा यादगार है वैसा अब बनना ही है। यह तो सहज है ना। स्थूल निशानी को याद रखने से नशा और निशाना याद रहेगा। यह जरूर अपने को समझना है कि सारे विश्व से चुने हुए हम विशेष आत्मायें हैं। जितनी विशेष आत्मायें उतनी उनके हर कर्म में विशेषता होती है। विशेष आत्मा हो ना। कम नहीं हो।

25.3.71... .. जितनी समानता होगी उतनी सामना करने की शक्ति होगी। समानता लाने से सामना करने की शक्ति स्वतः आ जागी।

20.5.71... .. बाप वरदातामूर्त है ना। आप सभी भी बाप समान वरदातामूर्त बन जाते हो। तो इतनी चेकिंग करते हो? एक संकल्प भी किसके प्रति न हो, जो भी संकल्प उठता है उसमें बाप के प्रति कुर्बान का, वारी जाने का रहस्य भरा हुआ हो। ऐसी चेकिंग करते रहो तो फिर माया सामना करने का साहस रख सकेगी? सामना करने का साहस नहीं रखेगी, लेकिन बार-बार नमस्कार कर विदाई लेगी। समझा?

30.5.71... .. राजपूत ऐसे-ऐसे होते हैं, ऐसे होकर गये हैं, ऐसे ऐसे करके गये हैं, ऐसे कुल के तुम हो – यह स्मृति दिलाने से उन्हों में समर्थी आती है। सिर्फ कुल की महिमा सुनते-सुनते स्वयं भी ऐसे महान् बन जाते हैं। इस रीति आप सूर्यवंशी हो, वो सूर्यवंशी राज्य करने वाले क्या थे? कैसे राज्य किया और किस शक्ति के आधार पर से ऐसा राज्य किया? वह स्मृति और साथ-साथ अब संगमयुग के ईश्वरीय कुल की स्मृति। अगर यह दोनों ही स्मृति बुद्धि में आ जाती हैं तो फिर समर्थी आ जाती है। जिस समर्थी से फिर माया का सामना करना सरल हो जाता है। सिर्फ स्मृति के आधार से। तो हर कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए क्या साधन हुआ? स्मृति से अपने में पहले समर्थी को लाओ। फिर कार्य करो। तो भले कैसा भी कमजोर होगा लेकिन स्मृति के आधार से उस समय के लिए समर्थी आ जायेगी।

जैसी-जैसी स्मृति रहेगी वैसा स्वरूप अपने को महसूस करेंगे। स्मृति होगी कि मैं शक्ति हूँ तो शक्तिस्वरूप बनकर के सामना कर सकेंगे। अगर स्मृति में ही यह रखते हो – मैं तो पुरुषार्थी हूँ, कोशिश कर देखती हूँ, तो स्वरूप भी कमजोर बन जाता है। तो स्मृति को शक्तिशाली बनाने से स्वरूप भी शक्ति का बन जायेगा। तो यह सफलता का तरीका है। फिर यह बोल नहीं सकेंगे कि चाहते हुए भी क्यों नहीं होता।

मनन करने का अभ्यास अपने में डालते जाओ। फिर सदैव ऐसे नज़र आयेंगे जैसे अपनी मस्ती में मस्त रहने वाले हैं। फिर इस दुनिया की कोई भी चीज, उलझन आपको आकर्षण नहीं करेगी, क्योंकि आप अपने मनन की मस्ती में मस्त हो। जिस दिन मनन में मस्त होंगे उस दिन माया भी सामना नहीं करेगी, क्योंकि आप बिज़ी हो ना। अगर कोई बिज़ी होता है तो दूसरा अगर आयेगा भी तो लौट जायेगा। जैसे वह लोग अन्डरग्राउण्ड चले जाते

हैं ना। आप भी मनन करने से अन्दर अर्थात् अन्दरग्राउण्ड चले जाते हो। अन्दरग्राउण्ड रहने से बाहर के बाम्बस् आदि का असर नहीं होता है। इसी रीति से मनन में रहने से, अन्तर्मुखी रहने से बाहरमुखता की बातें डिस्टर्ब नहीं करेगी।

8.6.71... .. सहनशीलता वाले बाहरमुखता के वायब्रेशन को ही नहीं, लेकिन मन के संकल्प भी जो उत्पन्न होते हैं उन संकल्पों की उत्पत्ति को देखकर भी घबरायेंगे नहीं। अपनी सहनशीलता से सामना करेंगे।

11.7.71... .. निश्चाबुद्धि हो कल्याण की भावना रखने से दृष्टि और वृत्ति दोनों ही बदल जाते हैं। कैसा भी कोई क्रोधी आदमी सामना करने वाला वा कोई इन्सल्ट करने वाला, गाली देने वाला हो, लेकिन जब कल्याण की भावना हर आत्मा प्रति रहती है तो रोब बदलकर रहम हो जायेगा। फिर रिजल्ट क्या होगी? उसको हिला सकेंगे? वह शुभ कल्याण की भावना उसके संस्कारों को परिवर्तन करने का फल दिखायेगी।

19.7.71... .. अब निरन्तर योगी बनना। विलापों वाले वियोगी नहीं बनना। यह ग्रुप यही प्रैक्टिकल करके दिखाये। जो कहा है वही करेंगे, चाहे कितनी भी बातें सहन करनी पड़ें, लेकिन सामना करके दिखायेंगे। विजयी बनकर के ही दिखायेंगे, एक दो के मददगार, शुभ चिन्तक बनते रहें तो सहयोगी बन क्या नहीं कर सकते हैं! जब वह एक दो के सहयोगी बन घेराव डाल सकते हैं, तो क्या आप माया को घेराव नहीं डाल सकते।

28.7.71... .. आज बुद्धि को इस प्रोग्राम पर चलाना ही है – ऐसी प्रतिज्ञा करनी है। भिन्न-भिन्न समसाएं, पुरुषार्थहीन बनने के व्यर्थ संकल्प, आलस्य आदि आयेंगे लेकिन विल-पावर होने कारण सामना कर विजयी बन जायेंगे। यह भी डेली डायरी बनाओ, फिर देखो, कैसे रूहानी राहत देने वाले रूह सभी को देखने में आयेंगे।

3.10.71... .. जहाँ निर्माणता अर्थात् सरलता नेचरल रूप में रहेगी वहाँ अन्य गुण भी आटोमेटिकली आ ही जाते हैं। तो सदैव इस स्मृति-स्वरूप में स्थित रह कर फिर हर संकल्प वा कर्म करो। फिर यह जो भी छोटी-छोटी बातें सामना करने के लिए आती हैं, यह बातें ऐसे ही अनुभव होंगी जैसे कोई बुजुर्ग के आगे छोटे-छोटे बच्चे अपने बचपन के अलबेलेपन के कारण कुछ भी बोल दें वा कुछ भी ऐसा कर्तव्य भी करें तो बुजुर्ग लोग समझते हैं कि यह निर्दोष, अनजान छोटे बच्चे हैं। कोई असर नहीं होता है। ऐसे ही जब मास्टर विश्व-निर्माता अपने को समझेंगे तो यह माया के छोटे-छोटे विघ्न बच्चों के खेल समान लगेंगे।

9.10.71... .. अब स्नेह रूप में तो पास हो गये। अब किसमें पास होना है? क्योंकि अन्तिम स्वरूप है ही शक्ति का। कोई भी आत्मा आप लोगों के पास आती है तो पहले जगत्-माता का स्नेह रूप धारण करते हो, लेकिन जब वह चलना शुरू करता है और माया का सामना करना पड़ता है, तो सामना करने में सहयोगी बनने के लिए शक्ति रूप भी धारण करना पड़े।

जहाँ देखेंगे निमित्त बनी हुई आत्माएं सिर्फ स्नेह मूर्त हैं, तो उन्हीं की रचना में भी समसाओं को सामना करने की शक्ति कम होगी। यज्ञ वा दैवी परिवार के स्नेही, सहयोगी होंगे लेकिन सामना नहीं कर सकेंगे। कारण? रचता का प्रभाव रचना पर पड़ता है। अभी जो भी आत्माएं आगे बढ़ते-बढ़ते अब जहाँ तक पहुँच गई हैं, उससे आगे बढ़ाने के लिए विशेष आत्माओं को विशेष क्या करना है? जिन आत्माओं के निमित्त बने हो उन आत्माओं में भी शक्ति रूप से शक्ति भरने की आवश्यकता है।

31.11.71... .. सभी से पावरफुल स्टेज है अपना अनुभव-क्योंकि अनुभवी आत्मा में विल-पावर होती है। अनुभव के विल-पावर से माया की कोई भी पावर का सामना कर सकेंगे। जिसमें विल- पावर होती है वह सहज ही सर्व बातों का, सर्व समस्याओं का सामना भी कर सकते हैं और सर्व आत्माओं को सदा सन्तुष्ट भी कर सकते हैं। तो सामना करने की शक्ति से सर्व को सन्तुष्ट करने की शक्ति अपने अनुभव के विल- पावर से सहज प्राप्त हो जाती है।

3.5.72... .. जैसे दिखाया हुआ है – कोई भी आसुरी संस्कार शक्तियों का सामना नहीं कर सकता, आसुरी संस्कार वाले शक्तियों के सामने आंख उठाकर देख नहीं सकते। तो ऐसे संहारी रूप बनकर स्वयं में भी आसुरी संस्कारों का संहार करो और दूसरों के भी आसुरी संस्कार के संहार करने वाले संहारीमूर्त बनो।

10.5.72... .. ऐसा शक्ति स्वरूप बनना है जो माया सामना करने के पहले ही नमस्कार कर ले, सामना कर न पावे।

24.5.72... .. अधिकारी कब अधीन नहीं होता है। अपनी रचना के अधीन नहीं होता है, अपनी रचना के अधीन होना, इसको अधिकारी कहेंगे? बार-बार विस्मृति में आने से अपने आप को ही कमजोर बना देते हो। कमजोर होने के कारण छोटी-सी बात का सामना नहीं कर पाते हो। तो अब आधे कल्प के इन विस्मृति के संस्कारों को विदाई दो।

31.5.72... .. जैसे कोई के ऊपर किसका हाथ होता है तो वह निर्भय और शक्ति-रूप हो कोई भी मुश्किल कार्य करने को तैयार हो जाता है। इसी रीति जब श्रीमत रूपी हाथ अपने ऊपर सदा अनुभव करेंगे, तो कोई भी मुश्किल परिस्थिति वा माया के विघ्न से घबरोंगे नहीं। हाथ की मदद से, हिम्मत से सामना करना सहज अनुभव करेंगे। इसके लिए चित्रों में भक्त और भगवान् का रूप क्या दिखाते हैं? शक्तियों का चित्र भी देखेंगे तो वरदान का हाथ भक्तों के ऊपर दिखाते हैं। मस्तक के ऊपर हाथ दिखाते हैं।

सदा अपने को कर्मक्षेत्र पर कर्म करने वाले योद्धे अर्थात् महारथी समझो। जो युद्ध के मैदान पर सामना करने वाले होते हैं वह कभी भी शस्त्रों को नहीं छोड़ते हैं। सोने के समय भी अपने शस्त्रों को नहीं छोड़ते हैं। ऐसे ही सोते समय भी अपनी अष्ट शक्तियों को विस्मृति में नहीं लाना है अर्थात् अपने शस्त्रों को साथ में रखना है।

24.6.72... .. एवररेडी सदा समय का आह्वान करते हैं। तो जो एवररेडी होता है वह आह्वान करते हुये अपने को सदा तैयार भी रखते हैं। अन्तिम समय का सामना करने के लिए अब तैयार होना है ना? अगर समय आ जाए तो 50% समानता की प्राप्ति क्या होगी? एवररेडी अर्थात् सदा अन्तिम समय के लिए अपने को सर्व गुण सम्पन्न बनाने वाला। सम्पन्न तो होना है ना। गायन भी है सर्व गुण सम्पन्न बनाने वाला। सम्पन्न तो होना है ना। गायन भी है – सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण। तो एवररेडी अर्थात् सम्पन्न स्टेज। ऐसा प्रैक्टिकल में हो जो सिर्फ एक कदम उठाने की देरी हो। एक कदम उठाने में कितना समय लगता है? इतना सिर्फ अन्तर होना चाहिए। इसको कहेंगे 1-2 परसेंट। कहां एक-दो परसेंट, कहां 50% फर्क हुआ ना। ऐसा एवररेडी वा सर्व गुण सम्पन्न बाप के समान बनने के लिए बाप- दादा द्वारा मुख तीन चीजें हरेक को मिली हुई हैं। उन तीनों की प्राप्ति है तो बाप समान बनने में कोई देरी नहीं लगती। वह तीन चीजें कौनसी बाप ने दी हैं? (श्रीमत, समर्पण और सेवा) यह तो चलने वा करने की बातें सुनाई, लेकिन देते क्या हैं? सेवा भी कर सकते हो, समर्पण भी हो सकते हो लेकिन किसके आधार से? जन्म तो लिया लेकिन दिया क्या? वर्षों में भी मुख क्या देते हैं? (हरेक ने बताया) भले रहस तो आ जाता है, सिर्फ स्पष्ट

करने के लिए भिन्न रूप से सुनाया जाता है। पहले-पहले देते हैं लाइट, दूसरा देते हैं माइट, तीसरा देते हैं डिवाइन इनसाइट अर्थात् तीसरा नेत्र। अगर यह तीन चीजें नहीं हैं तो तीव्र पुरुषार्थी बन बाप के समान नहीं बन सकते। पहले तो जो आत्माओं बिल्कुल अज्ञान अंधेरे में आ चुकी हैं, उनको रोशनी अर्थात् लाइट चाहिए और लाइट के साथ फिर अगर माइट नहीं है तो लाइट की भी जो मदद लेनी चाहिए वह नहीं ले पाते। इस लाइट और माइट के साथ जो तीसरा नेत्र अर्थात् डिवाइन इनसाइट देते हैं उससे अपने पास्ट, प्रेजेन्ट और फ्यूचर – तीनों ही कालों को वा तीनों ही जीवन को जान सकते हो। जब यह तीनों ही चीजें प्राप्त होती हैं तब ही अपना बर्थराइट प्राप्त कर सकते हो अर्थात् वर्सा प्राप्त कर सकते हो।

जैसे देखो, इस पुरानी दुनिया में जब ब्लैक-आउट होता है तो स्पीड को ढीला कर देते हैं, तेज स्पीड अलाउ नहीं करते हैं क्योंकि एक्सीडेंट होने का डर रहता है। तो ऐसे ही अगर पूरी लाइट नहीं तो स्पीड को तीव्र नहीं कर सकते हो, स्पीड ढीली चलती रहेगी। साथ-साथ अगर माइट नहीं है तो लाइट के आधार से चल तो पड़ते हो लेकिन माइट ना होने के कारण जो विघ्न सामने आते हैं उनका सामना नहीं कर पाते। इसलिए स्पीड रुकने के कारण सामना ना कर पायेंगे तो रुक जायेंगे। बार-बार रुकने के कारण भी स्पीड तेज अर्थात् तीव्र पुरुषार्थ नहीं कर पाते हो।

26.6.72... .. जैसे सामना करने वाले दुश्मन पहले कमजोर करने की कोशिश करते हैं, फिर वार करते हैं तब विजयी बनते हैं। पहले कमजोर करने का कोई तरीका ढूँढते हैं। माया दुश्मन भी पहले से सेन्स को कमजोर कर देती है। समझ नहीं सकते कि यह राइट है वा रांग है। फिर इफेक्ट हो जाता है। इफेक्ट ही डिफेक्ट का रूप धारण कर लेता है। डिफेक्ट परफेक्ट बनने नहीं देता है। लक्ष्य क्या रखा है? परफेक्ट अर्थात् 16 कला सम्पन्न। थोड़ा-बहुत डिफेक्ट है तो 14 कला। तो क्या लक्ष्य रखा है? जो सेन्सीबल होगा वह सक्सेसफुल जरूर होगा।

14.7.72... .. किसी को आप प्रोग्राम दो कि यह-यह करो, ऐसे वो नहीं कर सकेंगे। उसमें सामना करने की इतनी शक्ति नहीं आगी। अपने दिल से जोश आवे कि मुझे यह करना है, वह प्रैक्टिकल हो सकता है। संकल्प को रचने से फिर प्रैक्टिकल में आ जायेगा।

28.7.72... .. जैसे शक्तियों का गायन है कि एक सेकेण्ड की दृष्टि से असुर संहार करती है। तो क्या अपने से आसुरी संस्कार वा अपवित्रता को सेकेण्ड में संहार नहीं किया है? वा दूसरों प्रति संहारनी हो, अपने प्रति नहीं? अब तो माया अगर सामना भी करे तो उसकी क्या हालत होनी चाहिए? जैसे छुईमुई का वृक्ष देखा है ना। अगर कोई भी मनुष्य का ज़रा भी हाथ लगता है तो शक्तिहीन हो जाती है। उसमें टाइम नहीं लगता। तो आप के सिर्फ एक सेकेण्ड के शुद्ध संकल्प की शक्ति से माया छुईमुई माफिक मूर्छित हो जानी चाहिए।

2.8.72... .. जब रमणीक एक्टिविटी से किसको सम्पर्क में लाते तो भी मन्सा जो पावरफुल होनी चाहिए वह नहीं रहती है। तो एक ही समय तीनों अगर इक्वटी हों तो सिद्धि जरूर मिलेगी। इस रीति से सर्विस करने का अभ्यास और अटेंशन होना चाहिए। सम्बन्ध में नहीं आते, डीप सम्पर्क में नहीं, ऊपर-ऊपर के सम्पर्क में आते हैं। वह ऊपर का सम्पर्क कर्मों की गृह्य गति को जान कर्म करो – तब कर्मातीत बनेंगे। अल्पकाल का रहता है। भले लव में लाते भी हो लेकिन लवफुल के साथ पावरफुल हो, उन आत्माओं में भी पावर भरे जिससे वह समस्याओं, वायुमण्डल, वायब्रेशन का सामना कर सदाकाल सम्बन्ध में रहें, वह नहीं होता। या तो नॉलेज पर अट्रैक्टिव होते हैं वा लव पर होते हैं। जादा लव पर होते हैं, सेकण्ड नम्बर नॉलेज। लेकिन पावरफुल ऐसा हो जो कोई भी बात सामने आवे तो हिले नहीं, यह कमी अजुन है। जो सर्विसएबल निमित्त बनते हैं उन्हीं में

भी नॉलेज जादा है, लव भी है लेकिन पावर कम है। पावरफुल स्टेज की निशानी क्या होगी? एक सेकेण्ड में कोई भी वायुमण्डल वा वातावरण को, माया के कोई भी समस्या को खत्म कर देंगे। कब हार नहीं खावेंगे। जो भी आत्मायें समस्या का रूप बन कर आती हैं वह उनके ऊपर बलिहार जावेंगे, जिसको दूसरे शब्दों में प्रकृति दासी कहें। जब 5 तत्व दासी बन सकते हैं तो मनुष्य आत्मायें बलिहार नहीं जावेंगी? तो पावरफुल स्टेज का प्रैक्टिकल रूप यह है। इसलिये कहा कि एक ही समय तीनों रूपों से सर्विस करने की जब रूपरेखा बन जावेगी तब हरेक कर्तव्य में सिद्धि दिखाई देगी।

22.11.72... .. विनाश के समय पेपर में पास होना है तो सर्व परिस्थितियों का सामना करने के लिये लाइट-हाऊस होना पड़े, चलते-फिरते अपना यह रूप अनुभव होना चाहिए। यह प्रैक्टिस करनी है। शरीर बिल्कुल भूल जाये। अगर कोई काम भी करना है, चलना है, बात करनी है वह भी निमित्त आकारी लाइट का रूप धारण कर करना है। जैसे पार्ट बजाने के समय चोला धारण करते हो, कार्य समाप्त हुआ चोला उतारा। एक सेकेण्ड में धारण करेंगे, एक सेकेण्ड में न्यारे हो जावेंगे। जब यह प्रैक्टिस पक्की हो जावेगी, फिर यह कर्मभोग समाप्त होगा। जैसे इन्जेक्शन लगा कर दर्द को खत्म कर देते हैं। हठयोगी तो शरीर से न्यारा करने का अभ्यास कराते हैं। ऐसे ही यह स्मृति-स्वरूप का इन्जेक्शन लगाकर और देह की स्मृति से गायब हो जायें। स्वयं भी अपने को लाइट रूप अनुभव करो तो दूसरे भी वही अनुभव करेंगे। अंतिम सर्विस, अंतिम स्वरूप यही है। इससे सारे कारोबार भी लाइट अर्थात् हल्के होंगे।

19.4.73... .. जितना ही इस वरदानी वर्ष में वरदान लेने की स्मृति में रहेंगे तो सहज वरदान भी प्राप्त होंगे, और यदि विस्मृति हुई तो विघ्नों का सामना भी बहुत करेंगे। इसलिए चारों ओर सर्व ब्राह्मण परिवार की आत्माओं के आगे सर्वप्रकार के विघ्नों को मिटाने के लिए जैसे पहले मास में याद की वा लगन की अग्नि को प्रज्वलित किया वैसे ही अभी ऐसा ही अव्यक्त वातावरण बनाना। एक तरफ वरदान दूसरी तरफ विघ्न। दोनों का एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध है। सिर्फ अपने प्रति विघ्न-विनाशक नहीं बनना है। लेकिन अपने ब्राह्मण-कुल की सर्व-आत्माओं के प्रति विघ्न-विनाश करने के लिए सहयोगी बनना है ऐसी स्पीड तेज करो। बीच-बीच में चलते-चलते स्पीड ढीली कर देते हो। इसलिए प्रत्यक्षता होने में भी ड्रामा में इतनी देर दिखाई दे रही है। तभी तो स्वयं को भी प्रत्यक्ष कर सकेंगे। अपने में सर्वशक्तिवान का प्रत्यक्ष रूप अनुभव करो।

23.1.74... .. यह तो अन्डरस्टूड (समझ) है कि अगर स्थापना की तैयारी कम है, तो विनाश की तैयारी कैसे होगी? इन दोनों का आपस में कनेक्शन (सम्बन्ध) है न? समय पर तैयार हो ही जावेंगे, यह समझना भी राँग (गलत) है। अगर बहुत समय से महाविनाश का सामना करने की तैयारी का अभ्यास न होगा तो उस समय भी सफल न हो सकेंगे। इसका बहुत समय से अभ्यास चाहिए; नहीं तो इतने वर्ष अभ्यास के क्यों दिये गये हैं? बहुत समय का कनेक्शन है, इसलिए ही ड्रामानुसार बहुत समय पुरुषार्थ के लिए भी मिला है। बहुत समय की प्राप्ति के लिये बहुत समय से पुरुषार्थ भी करना है, क्या ऐसे बहुत समय का पुरुषार्थ है? साइंस वालों को महाविनाश के लिये ऑर्डर करें? एक सेकेण्ड की ही तो बात है, इशारा मिला और किया। क्या ऐसे ही शक्ति-सेना तैयार है? एक सेकेण्ड का इशारा है -- सदा देही-अभिमानि। अल्पकाल के लिये नहीं, सदा काल के लिए हो जाओ। ऐसा इशारा मिले तो आप क्या देही अभिमानि हो जावेंगे या फिर उस समय साधन ढूँढ़ेंगे, प्वाइन्ट्स



(points) सोचेंगे या अपने को ठहराने की कोशिश करेंगे? इसलिए अभी से ऐसा पुरुषार्थ करो। मिलिट्री को तो अचानक ही ऑर्डर मिलते हैं न?

15.4.74... अब समय किस ओर बढ़ रहा है यह जानते हो? अति की तरफ बढ़ रहा है। सभी तरफ अति दिखाई पड़ रही है। अन्त की निशानी अति है। तो जैसे प्रकृति समाप्ति की तरफ अति में जा रही है वैसे ही सम्पन्न बनने वाली आत्माओं के सामने अब परीक्षाएँ व विघ्न भी अति के रूप में आयेंगे। इसलिये आश्चर्य नहीं खाना है कि पहले यह नहीं था अब क्यों है? यह आश्चर्य भी नहीं। फाइनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें क्वेश्चन के रूप में आयेंगी तब तो पास और फेल हो सकेंगे। न चाहते हुए भी बुद्धि में क्वेश्चन उत्पन्न न हों, यही तो पेपर है। और है भी एक सेकेण्ड का ही पेपर। क्यों का संकल्प चन्द्रवंशी की क्यू में लगा देगा। पहले तो सूर्यवंशी का राज्य होगा ना? चन्द्रवंशियों का नम्बर पीछे होगा। तो उनका, राज्य के तख्तनशीन बनने की क्यू में नम्बर आयेगा। इसलिए एकरस स्थिति में स्थित होने का अभ्यास निरन्तर हो। समस्या के सीट को सम्भालने नहीं लग जाओ। लेकिन सीट पर बैठ समस्या का सामना करना है। अब तो समस्या सीट की याद दिलाती है। विघ्न आता है, तो विशेष योग लगाते हो और भट्टी रखते हो ना? इससे सिद्ध होता है कि दुश्मन ही शस्त्र की स्मृति दिलाते हैं लेकिन स्वतः और सदा-स्मृति नहीं रहती। निरन्तर योगी हो या अन्तर वाले योगी हो? टाइटल तो निरन्तर योगी का है ना? दुश्मन आवे ही नहीं, समस्या सामना न कर सके। सूली से कांटा बनना यह भी फाइनल स्टेज नहीं। सूली से कांटा बने और कांटे को फिर योगाग्नि से दूर से ही भस्म कर दें। कांटा लगे अब विघ्न-विनाशक बनकर विघ्नों का अंश और वंश समाप्त करो। और फिर निकालो, यह फाइनल स्टेज नहीं है। कांटे को अपनी सम्पूर्ण स्टेज से समाप्त कर देना है—यह है फाइनल स्टेज। ऐसा लक्ष्य रखते हुए अपनी स्टेज को आगे चढ़ती कला की तरफ बढ़ाते चलो। बड़ी बात को छोटा अनुभव करना, इस स्टेज तक महारथी नम्बरवार यथा-शक्ति पहुंचे हैं। अब पहुंचना वहाँ तक है जो कि अंश और वंश भी समाप्त हो जाए।

16.5.74... इस समय सबके अन्दर सुनने की इच्छा है व समान बनने की इच्छा है? सुनने के बाद, हर बात समाने से समान बन जाते हैं और समाने से सामना करने की शक्ति स्वयं ही सहज आ जाती है। सामना करने की शक्ति से सर्व-कामनाओं से स्वतः ही मुक्ति प्राप्त हो जाती है। क्या ऐसे अपने को मुक्त आत्मा अनुभव करते हो? किसी भी प्रकार का बन्धन अपनी तरफ आकर्षित तो नहीं करता? बन्धन-मुक्त ही योग-युक्त हो सकता है। यदि कोई भी स्वभाव, संस्कार, व्यक्ति अथवा वैभव का बन्धन अपनी तरफ आकर्षित करता है, तो बाप की याद की आकर्षण सदैव नहीं रह सकती। किसी के भी वश होते समय, उस आत्मा के प्रति यही शब्द कहा जाता है कि, यह 'वशीभूत' है। वशीभूत होना, यह भी पाँच भूतों के साथ-साथ रॉयल रूप का भूत है। जैसे भूतों की प्रवेशता से अपना स्वरूप, अपना स्वभाव, अपना कर्तव्य, और अपनी शक्ति भूल जाती है, वैसे ही किसी बात के वशीभूत होने से, यही रूपरेखा बनती है। वशीकरण मन्त्र देने वाले कभी भी वशीभूत नहीं हो सकते। तो अब यह चैक करो कि कहीं वशीभूत तो नहीं हो?

26.6.74... जैसे कोई लौकिक रीति में भी जब कोई अथॉरिटी वाला होता है, तो उनके आगे कोई भी सामना करने की हिम्मत नहीं रखते हैं और अगर कोई अपनी अथॉरिटी को यूज करने के बजाय हर समय लूज रहता है, तो साधारण आदमी भी सामना करने के लिए अथवा डिस्टर्ब करने के लिए, विघ्न डालने के लिए लूज रहते हैं। तो यहाँ भी अपनी अथॉरिटीज़ को, प्राप्त हुई सर्व-शक्तियों को, वरदानों को यूज करने के बजाय लूज

रहते हो। इसलिए हर समय, माया को सामना करने की हिम्मत रहती है। मन्सा में, वाचा में, कर्मणा में, सम्बन्ध में और सम्पत्ति में सब में इन्टरफियर करने की हिम्मत रखती है। किसी भी बात में छोड़ती नहीं, क्योंकि अपनी पोजीशन से नीचे आकर साधारण बन जाते हो।

5.12.74... .. व्यक्त भाव में आना व कोई भी व्यक्त व वस्तु में भावना रहना कि यह प्रिय है व अच्छी है, यह व्यक्त-वस्तु और व्यक्ति में भावना रहना अर्थात् कामना का रूप हो जाता है। जब तक कामना है, तब तक माया से सम्पूर्ण रीति सामना नहीं कर सकते। जब तक सामना नहीं कर सकते, तब तक समान नहीं बन सकते अर्थात् वायदा नहीं निभा सकते।

16.1.75... .. कई समझते हैं कि बाप तो अव्यक्त हो गया, व्यक्त में सामना करने वाले तो हम ही हैं। लेकिन आप भी अव्यक्त हो जाओ अर्थात् कोई भी सामने आये तो व्यक्त भाव की बात उन्हें दिखाई न दे या करने की हिम्मत न हो। औरों के भी व्यक्त भाव को मिटाने वाले अव्यक्त फरिश्ते बन जाओ। ऐसी अव्यक्त-स्थिति व वायुमण्डल अर्थात् पाण्डवों का किला बनाओ तो यह हलचल समाप्त हो जायेगी। बाप-दादा अन्त तक आपके साथ है और सदा बच्चों के ऊपर स्नेह और सहयोग की छत्र-छाया के समान हैं। इसलिये घबराओ मत। बैक-बोन बाप-दादा, सामना करने के लिए किसी भी व्यक्ति द्वारा, समय पर प्रत्यक्ष हो ही जायेंगे और अब भी हो रहे हैं।

8.2.75... .. कल्याणकारी बाप की श्रीमत पर चलने वाली आत्मायें सिवाय कल्याण के, चढ़ती कला के और कोई भी संकल्प कर नहीं सकती हैं। उनका हर संकल्प, हर कार्य के प्रति समय, वर्तमान का भविष्य के प्रति समर्थ संकल्प होगा, व्यर्थ नहीं होगा। घबराते तो नहीं हो? सामना करना पड़ेगा। पेपर का सामना अर्थात् आगे बढ़ना, अर्थात् सम्पूर्णता के अति समीप होना। अब यह पेपर आने वाला है। स्वयं स्पष्ट बुद्धि वाले होंगे तो औरों को भी स्पष्ट कर सकेंगे। इसका मतलब यह तो नहीं समझते हो कि होना नहीं है। ड्रामा में जो होता रहा है, समय-प्रति-समय, उसमें माखन से बाल ही निकलता है न? कोई मुश्किल हुआ है? बाप-दादा नयनों पर बिठाये, दिल तख्त पर बिठाये पार करते ले आ रहे हैं ना? कोई क्या अन्त तक साथ निभाने का या किसी भी परिस्थितियों से पार ले जाने का वायदा व कार्य निभायेंगे। नहीं साथ ले ही जाना है न। सर्वशक्तिमान साथी होते हुए भी यह संकल्प उत्पन्न होना – उसको क्या कहेंगे? ऐसे व्यर्थ संकल्प समाप्त कर जिस स्थापना के कार्य के निमित्त हो, बाप-दादा के मददगार हो, उस कार्य में मग्न रहो। अपनी लगन की अग्नि को तीव्र करो। जिस लगन की अग्नि से ही विनाश की अग्नि तीव्र गति का स्वरूप धारण करेगी। अपने रचे हुए अविनाशी ज्ञान यज्ञ, जिसके निमित्त ब्राह्मण बने हुए हो, इस यज्ञ में पहले स्वयं की सर्व कमजोरियों व कमियों की आहुति डालो। तभी सारी पुरानी दुनिया को आहुति पड़ने के बाद समाप्ति होगी। अब दृढ़ संकल्प की तीली लगाओ। तब यह सम्पन्न होगा। अच्छा!

3.8.75... .. अब याद की यात्रा की सब्जेक्ट के ऊपर ज्यादा अटेन्शन देना है। कोई-न-कोई प्रोग्राम हर सेन्टर पर चलना चाहिए-जो आने वालों में बल भर जाये। ऐसे समय पर वह भी न्यारे रहे, साक्षी होकर समस्या का सामना करें। उसके लिये याद का बल चाहिए।

14.9.75... .. दिन-प्रतिदिन प्रकृति द्वारा विकराल रूप से परिस्थितियाँ दिखाई देती जायेंगी। अब तक यह साधारण परिस्थितियाँ हैं। विकराल रूप तो प्रकृति अब धारण करेगी जिसमें विशेष आपदाओं का वार अचानक

ही होगा। अभी तो थोड़ा समय पहले मालूम पड़ जाता है। लेकिन प्रकृति का विकराल रूप क्या होगा? एक ही समय प्रकृति के सभी तत्व साथसाथ और अचानक वार करेंगे। किसी भी प्रकार के प्रकृति के साधन बचाव के काम के नहीं रहेंगे और ही साधन समस्या का रूप बनेंगे। ऐसे समय पर प्रकृति के विकराल रूप का सामना करने के लिये किस बात की आवश्यकता होगी? अपने अकाल-तख्त नशीन अकालमूर्त बनने से महाकाल बाप के साथ-साथ 'मास्टर महाकाल' स्वरूप में स्थित होंगे तब ही सामना कर सकेंगे। महाविनाश देखने के लिये मास्टर महाकाल बनना पड़ेगा। मास्टर महाकाल बनने की सहज विधि कौन-सी है? अकालमूर्त बनने की विधि है -- हर समय अकाल-तख्त नशीन रहना। जरा-सा भी देहभान होगा, तो अकाले मृत्यु के समान अचानक के वार में हार खिला देगा!

ऐसे समय में श्रीमत कैसे लेंगे? टेलीफोन व टेलीग्राम से वायरलेस (बिना तार के विद्युत-चुम्बकीय तरंगों द्वारा समाचार भेजने का यंत्र) सेट है- चाहिये तो वायरलेस लेकिन सेट है? वायरलेस की सेटिंग कैसे होगी? बिल्कुल वाइसलेस वाइसलेस बनना ही वायरलेस सेट की सेटिंग है। जरा अंश के भी अंश-मात्र विकार, वायरलेस के सेट को बेकार कर देगा। इसलिये महीन रूप से स्वयं के स्वयं ही चेकर बनो। तब ही प्रकृति और पाँच विकारों की अन्तिम विदाई के वार को विजयी बन सामना कर सकेंगे। यही प्रकृति वार करने के बजाय बधाई के नजारे सामने लायेगी। चारों ओर जय-जयकार की शहनाइयाँ बजायगी। और बाप-दादा के विजय माला के मणके विश्व के बीच प्रसिद्ध होंगे। सारा विश्व "अमर भव!" का नारा लगायेगा।

20.9.75... सागर अखण्ड, अचल और अटल होता है। सागर की विशेष दो शक्तियाँ सदैव देखने में आयेंगी – एक समाने की शक्ति, जितनी समाने की शक्ति है उतनी सामना करने की भी शक्ति है। लहरों द्वारा सामना भी करते हैं और हर वस्तु व व्यक्ति को स्वयं में समा भी लेते हैं। तो मास्टर सागर होने के कारण अपने में भी देखो कि यह दोनों शक्तियाँ मुझ में कहाँ तक आई हैं? अर्थात् कितने परसेन्टेज में हैं? क्या दोनों शक्तियों को समय-प्रमाण योज कर सकते हो? क्या शक्तियों द्वारा सफलता का अनुभव होता है?

अब वह रीति, जो न आने के कारण प्राप्ति का अनुभव नहीं कर पाते, वह रीति कैसे आये? इसमें चाहिये – निर्णय शक्ति। निर्णय शक्ति न होने के कारण जहाँ समाने की शक्ति योज करनी चाहिये वहाँ सामना करने की शक्ति योज कर लेते हैं। जहाँ समेटने की शक्ति योज करनी चाहिये, वहाँ विस्तार करने की शक्ति योज कर लेते हैं। इसलिये संकल्प सफलता का होता है, लेकिन स्वरूप में व प्राप्ति में संकल्प-प्रमाण सफलता नहीं होती है। विशेष शक्ति की प्राप्ति का मुख्य आधार क्या है? निर्णय शक्ति को तेज करने के लिए किस बात की आवश्यकता है? कोई भी यन्त्र स्पष्ट निर्णय नहीं कर पाता तो उसका कारण क्या होता है? निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए अपनी श्रेष्ठ स्थिति – निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी और निर्विकल्पता की चाहिए। अगर इन चारों में से किसी भी बात की कमी रह जाती है, तो यह श्रेष्ठ धारणा न होने के कारण स्पष्टता नहीं होती है। श्रेष्ठ ही स्पष्ट होते हैं। यही उलझन बुद्धि को स्वच्छ नहीं बनने देती। 'स्वच्छता ही श्रेष्ठता' है। इसलिए अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। तब ही बाप के समान सर्व-गुणों में मास्टर सागर अनुभव कर सकेंगे।

9.12.75... अल्पकाल वालों को सिद्धि प्राप्त होती है और सदाकाल स्थिति में रहने वालों को सिद्धि प्राप्त न हो, यह हो नहीं सकता। तो यह संगठन की शक्ति चाहिए। एक ने कुछ बोला, दूसरे ने स्वीकार किया। सामना करने

की शक्ति ब्राह्मण परिवार के आगे यूज (Use) नहीं करनी है। वो सामना करने की शक्ति माया के आगे यूज करनी है। परिवार से सामना करने की शक्ति यूज करने से संगठन पॉवरफुल नहीं होता। कोई भी बात नहीं जंचती तो भी एक-दूसरे का सत्कार करना चाहिए। उस समय किसी के संकल्प वा बोल को कट नहीं करना चाहिए। इसलिये अब समाने की शक्ति को धारण करो।

8.2.76... .. जैसी समस्या हो, जैसा समय हो, तो वैसे अपने शक्तिशाली रूप को बना सको। अगर परिस्थिति सामना करने की है, तो सामना करने की शक्ति का स्वरूप हो जाओ। अगर परिस्थिति सहन करने की है, तो सहन शक्ति का स्वरूप हो जाओ। ऐसा अभ्यास हो।

9.2.76... .. प्रश्न :- कमल-पुष्प समान न्यारा बनने की युक्ति क्या है? उत्तर :- कोई की भी कमी देखकर के उनके वातावरण के प्रभाव में न आये, तो इसके लिए उस आत्मा के प्रति रहम की दृष्टि-वृत्ति हो और सामना करने की नहीं, अर्थात् यह आत्मा भूल के परवश है, इसका दोष नहीं है – इस संकल्प से उस वातावरण का व बात का प्रभाव आप आत्मा पर नहीं होगा। इसी को कहते हैं कमल-पुष्प समान न्यारा।

18.1.77... .. गले का श्रृंगार अर्थात् सेकेण्ड नम्बर सदैव अपने गले की आवाज़ अर्थात् मुख के आवाज़ द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने के प्रयत्न में रहते हैं। सदा बाप-दादा को अपने सामने रखते हैं; लेकिन समाए हुए नहीं रहते। सदा बाप-दादा के गुण गाते रहते लेकिन स्वयं सदा गुण मूर्त नहीं रहते। समान बनने की भावना और श्रेष्ठ कामना रखते हैं लेकिन हर प्रकार की माया के वारों का सामना नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति वाले गले का श्रृंगार हैं।

रॉयल रूप का संशय है कि 'ऐसा होना तो चाहिए था', पता नहीं बाबा ने क्यों ऐसा कहा था। पहले से ही बाप-दादा बता देते थे। अब सामने कैसे जायेंगे? यह रॉयल रूप का संशय, दुनिया वालों को भी संशय-बुद्धि बनाने के निमित्त बनेगा। "हाँ! कहा है, अभी भी कहेंगे" – इसी निश्चय और नशे में रहो तो वो नमस्कार करने आयेंगे कि धन्य है आपका निश्चय। समझा? घबराओ नहीं, क्या जेल में जाने से डरते हो? डरते नहीं, घबराते हैं। सामना करने की शक्ति नहीं है। यही कहो कि जो कुछ कहा था उसमें कल्याण था। अब भी है। हम अभी भी कहते हैं। उनको अगर ईश्वरीय नशे और रमणीकता से सुनाओ तो वो और ही हंसेंगे। लेकिन पहले स्वयं मजबूत हो। समझा?

28.1.77... .. ब्राह्मणों का धर्म और कर्म क्या है, वह जानते हो? धर्म अर्थात् मुख्य धारणा है – सम्पूर्ण पवित्रता। सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा जानते हो? संकल्प व स्वप्न में भी अपवित्रता का अंशमात्र भी न हो? ऐसी श्रेष्ठ धारणा करने वाले ही सच्चे ब्राह्मण कहलाते हैं, इसी धारणा के लिए ही गायन है 'प्राण जाँ पर धर्म न जाँ।' ऐसी हिम्मत, ऐसा दृढ़ निश्चय करने वाले अपने को समझते हो? किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपने धर्म अर्थात् धारणा के प्रति कुछ त्याग करना पड़े, सहन करना पड़े, सामना करना पड़े, साहस रखना पड़े तो खुशी-खुशी से करेंगे? पीछे हटेंगे नहीं? घबरायेंगे नहीं?.

6.2.77... .. जिसमें परिस्थितियों को सामना करने की शक्ति है, वे सदा उमंग उत्साह में रहेंगे, कनफ्यूज नहीं होंगे।

30.4.77... .. कम्बाइन्ड रूप की स्मृति समर्थी लाती है। किसी भी प्रकार के माया के विघ्नों को कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से सामना करने की अथार्टी आटोमेटिकली अनुभव करते हैं। चाहे स्वयं

कमजोर आत्मा भी हो लेकिन बाप के साथ के कारण सर्वशक्तिवान के संग वा स्मृति से मास्टर सर्वशक्तिवान अनुभव करते। तो कम्बाइन्ड रूप में स्मृति में रहेंगे तो यादगार स्वरूप सदा स्मृति में रहेगा। अलंकारी स्वरूप मायाजीत की निशानी है। अलंकारी सदा अपने को शक्तिशाली अनुभव करेंगे तो तीनों ही प्रकार के कम्बाइन्ड रूप को स्मृति में रखो।

11.5.77... .. सदा शस्त्रधारी बन माया का सामना करते चल रहे हो? जो शस्त्रधारी होते हैं वह सदा निर्भय होते हैं। किससे? दुश्मन से। जैसे पहरे वाला चौकीदार अगर शस्त्रधारी होता है और उसको निश्चय है कि – मेरा शस्त्र दुश्मन को भगाने वाला है, तो वह कितना निर्भय हो करके चलता रहता है। तो यहाँ भी माया कितना भी सामना करे लेकिन शस्त्रधारी हैं तो माया से कभी घबड़ायेंगे नहीं, डरेंगे नहीं, हार नहीं खायेंगे, अर्थात् सदा विजयी होंगे।

16.5.77.... चलते-चलते जब महावीर अर्थात् रूहानी योद्धा बन माया को चैलेंज करते हैं, विजयी बनने का अधिकार भी समझते हैं लेकिन माया के अनेक प्रकार के वार को सामना करने के लिए दो बातों की कमी हो जाती है। वह दो बातें कौन सी हैं? 'एक सामना करने की शक्ति की कमी, दूसरा परखने और निर्णय करने की शक्ति की कमी।' इन कमियों के कारण माया के अनेक प्रकार के वार से कब हार, कब जीत होने से कब जोश, कब होश में आ जाते हैं। सामना करने की शक्ति न होने का कारण? बाप को सदा साथी बनाना नहीं आता है, साथ लेने का तरीका नहीं आता। सहज तरीका है – 'अधिकारीपन की स्थिति।' इसलिए कमजोर देखते हुए माया अपना वार कर लेती है।

19.5.77... .. जैसे माया बेसमझ बच्चा है वैसे माया के वश हो, नालेजफुल को भूल बेसमझ बच्चे के समान करते हैं। क्या करते हैं? 'ऐसे थोड़े ही समझा था, यह पहले मालूम होता तो त्याग नहीं करते, ब्राह्मण नहीं बनते। इतना सामना करना पड़ेगा। सहन करना पड़ेगा। हर बात में अपने को बदलना पड़ेगा। मिटना पड़ेगा, मरना पड़ेगा। यह तो मालूम ही नहीं था।' त्रिकालदर्शी नालेजफुल होते हुए यह बहाना, बेसमझ बचपन नहीं? लेकिन यह सब क्यों होता है? क्योंकि बाप के सदा साथ का अनुभव नहीं। सदा बाप के साथ के अनुभवी ऐसा कमजोरी का संकल्प भी नहीं कर सकते। बाप के साथ के नशे का कल्प पहले वाला यादगार भी अभी तक गाया जा रहा है। कौन सा? अक्षोणी सेना के सामने होते, बड़े-बड़े महावीर सामने होते भी पांडवों को किसका नशा था? बाप के साथ का। अक्षोणी सेना अर्थात् माया के अनेक भिन्न-भिन्न स्वरूप भी बाप के साथ से अक्षोणी नहीं लेकिन एक क्षण में भस्मी भूत हुए पड़े हैं। ऐसा नशा यादगार में भी गाया हुआ है। महावीर को महावीर नहीं समझा, लेकिन मरे हुए मुर्दे समझे। यह किसका यादगार है? बाप के साथ रहने वाले अनुभवी आत्माओं का। इस कारण कहा अनुभवी कभी धोखा नहीं खाते। मुश्किल अनुभव नहीं करते। अज्ञान अनुभव नहीं करते। कल्प पहले के यादगार को प्रेक्टीकल अनुभव कर रहे हो वा सिर्फ वर्णन करते हो? बाप-दादा जब बच्चों की ऐसी स्थिति देखते हैं, जो स्वयं का कल्याण नहीं कर सकते, स्वयं को परिवर्तन नहीं कर सकते और अपनी कमजोरी को बहादुरी समझ कर वर्णन करते हैं तो बाप भी समझते हैं – समझने वाले हैं लेकिन अनुभवी नहीं। इस कारण नालेजफुल हैं, लेकिन पॉवरफुल नहीं। सुनने सुनाने वाले हैं, लेकिन समझने वाले बाप समान बनने वाले नहीं। जो समान नहीं वो सामना भी नहीं कर सकते। कभी मुरझाते कभी मुस्कराते रहते। इसलिए एकान्त वासी बनो, अन्तर्मुखी बनो। हर बात के अनुभव में स्वयं को सम्पन्न बनाओ। पहला पाठ बाप और बच्चे का है –

किसका बच्चा हूँ? क्या प्राप्ति है? इस पहले पाठ के अनुभवीमूर्त्त बनो तो सहज ही मायाजीत हो जाएंगे। अल्प समय अनुभव में रहते हो। ज्यादा समय सुनने और समझने में रहते हो। लेकिन अनुभवी मूत अर्थात् सदा सर्व अनुभव में रहना। समझा? सागर के बच्चे बने हो लेकिन सागर अर्थात् सम्पन्न का अनुभव नहीं किया है?

7.6.77... .. मायाजीत बनने की युक्तियों को समय पर कार्य में लगाने का अटेंशन खुद कम रखते हैं, लेकिन अपने आप को बचाने का साधन – बाप के बोल को यूज करते हैं, क्या कहते हैं कि आपने ही तो कहा है कि माया बड़ी दुस्तर है। ब्रह्मा बाप को भी नहीं छोड़ती, महारथियों को भी माया वार करती है। जब ब्रह्मा बाप को भी नहीं छोड़ती, महारथियों को भी नहीं छोड़ती तो हमारे पास आई और हार खाई तो क्या बड़ी बात है, यह तो होना ही है, अन्त तक यह तो चलना ही है! इस प्रकार पुरुषार्थ में रुकने के बोल, अपना आधार बनाए चढ़ती कला में जाने से वंचित हो जाते हैं। बाप कहते हैं माया आयेगी लेकिन मायाजीत जगतजीत बनना कौन गाए हुए हैं? अगर माया ही न आवे तो बिना दुश्मन का सामना करने कोई विजयी कहलाते हैं? माया आयेगी लेकिन हार खाना यह तो बाप नहीं कहते। माया पर वार करना है न कि हार खाना है। कल्प-कल्प के विजयी रत्न हैं और विजयी बनकर ही दिखायेंगे – यह समर्थ बोल भूल जाते हैं। लेकिन अपनी कमजोरी के कारण बाप के बोल को भी कमजोर बना देते हैं। जैसे ब्रह्मा बाप ने मायाजीत बन जगतजीत का पद प्राप्त कर ही लिया, जो कल्प-कल्प की नूध यादगार रूप में भी है। तो जैसे बाप ब्रह्मा ने, माया प्रबल होते हुए भी, स्वयं को बलवान बनाया; न कि घबराया। तो ऐसे फॉलो फादर (Follow Father; बाप के पद-चिन्ह पर) करो। विजयी बनने का भाव उठाओ। पुरुषार्थहीन होने का भाव, अपने अल्प बुद्धि के प्रमाण समझते हुए स्वयं को धोखा मत दो। बाप के हर बोल में हर आत्मा के तीनों काल का कल्याण भरा हुआ है। तब ही विश्व-कल्याणी गाए हुए हैं। कल्याण के बोल को स्वयं के अकल्याण अर्थ कार्य में न लगाओ।

18.6.77... .. वर्तमान समय विशेष एक लहर दिखाई देती है। कोई भी बात सामने आती तो बाप द्वारा मिली हुई सामना करने की शक्ति का स्वयं प्रयोग नहीं करते, लेकिन बाप को सामने कर देते हैं कि, आपको साथ ले जाना है, हमें शक्ति दो, मदद देना आप का काम है, आप न करेंगे तो कौन करेगा? थोड़ी सी आशीर्वाद कर दो, आप तो सागर हो, हम को थोड़ी सी अंचली दे दो। स्वयं की सामना करने की हिम्मत छोड़ देते हैं, और हिम्मतहीन बनने के कारण मदद से भी वंचित रह जाते हैं। ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार है – 'हिम्मत।' जैसे श्वास नहीं तो जीवन नहीं, वैसे हिम्मत नहीं तो ब्राह्मण नहीं। बाप का भी वायदा है – 'हिम्मते बच्चे मदत् दे बाप' सिर्फ मदत् दे बाप नहीं है। आजकल की लहर में बाप के ऊपर छोड़ देते हैं। और स्वयं अलबेले रह जाते हैं। अब करना क्या है? विशेष कमजोरी यह है जो हर शक्ति को वा हर ज्ञान की युक्ति को सुनते हुए वा मिलते हुए स्वयं के प्रति यूज नहीं करते अर्थात् अभ्यास में नहीं लाते। सिर्फ वर्णन करने तक लाते। लेकिन अन्तर्मुख हो हर शक्ति की धारणा करने के अभ्यास में जाओ। जैसे कोई नई इन्वेंशन (Invention; आविष्कार) करने वाला व्यक्ति दिन रात उसी इन्वेंशन की लगन में खोया हुआ रहता है वैसे हर शक्ति के अभ्यास में खोए हुए रहना चाहिए। जैसे सहनशक्ति वा सामना करने की शक्ति किसको कहा जाता है? सहन शक्ति से प्राप्ति क्या होती है, सहनशक्ति को किस समय यूज किया जाता है? सहनशक्ति न होने के कारण किस प्रकार के विघ्नों के वशीभूत हो जाते हैं? अगर कोई माया का रूप क्रोध के रूप में सामना करने आये तो किस रीति से विजयी बन सकते हो? कौन-कौन सी परिस्थितियों के रूप में माया सहनशक्ति के पेपर ले सकती

है? वन इन एडवान्स (One in advance; पहले से ही) विस्तार से बुद्धि द्वारा सामने लाओ। रीयल पेपर हॉल में जाने के पहले स्वयं का मास्टर बन स्वयं का पेपर लो, तो रीयल इम्तहान में कभी फेल नहीं होंगे। ऐसे एक-एक शक्ति के विस्तार और अभ्यास में जाओ।

1.12.78 .. आह्वान करो अर्थात् मालिक बन आर्डर करो। यह सर्वशक्तियाँ आपकी भुजायें समान है – आपकी भुजायें आपके आर्डर के बिना कुछ कर सकती हैं? आर्डर करो सहनशक्ति कार्य सफल करो तो देखो सफलता सदा हुई पड़ी है। आर्डर नहीं करते हो लेकिन क्या करते हो - जानते हो। **आर्डर के बजाए डरते हो – कैसे सहन होगा कैसे सामना कर सकेंगे। कर सकेंगे वा नहीं कर सकेंगे।** इस प्रकार का डर आर्डर नहीं कर सकता है। अब क्या करेंगे – डरेंगे वा आर्डर करेंगे। महाकाल के बच्चे भी डरें तो और कौन निर्भय होंगे। हर बात में निर्भय बनो। अलबेले और आलस्यपन में निर्भय नहीं बनना - मायाजीत बनने में निर्भय बनो। तो सुना जादू की चाबी। सौगात को सम्भालना सीखो और सदा कार्य में लगाओ।

3.12.78... .. जब अलौकिक जन्म लिया तो सौगात वा जन्म का वरदान बाप ने “विजयी भव” का दिया। जब यह वरदान याद रहता है तो माया विदाई ले लेती है। **माया मूर्छित बन जाती है, सामना नहीं कर सकती।** जैसे शेर के आगे बकरी क्या करेगी? देखते ही मूर्छित हो जायेगी ना। तो जब यह वरदान स्मृति में रहता तो माया सामना नहीं कर सकती। माया का राज्य तो अभी समाप्त होने वाला है, यह तो सिर्फ जैसे कोई हठ से आगे किया जाता है जैसे थोड़ा सा साँस होते हुए माया अपना हठ दिखा रही है। माया शक्तिशाली नहीं। और आप सब हैं मा. सर्वशक्तवान। मा. सर्वशक्तवान के आगे शक्तिहीन माया क्या कर सकती? जैसे कल्प पहले भी कहा यह सब मरे हुए हैं, ऐसे ही यह माया भी मरी हुई है, जिन्दा नहीं है, सिर्फ निमित्त मात्र विजयी बनना है।

16.1.79... .. अपने श्रेष्ठ भाग्य, श्रेष्ठ प्राप्तियों को बार-बार सामने लाओ – **जब सर्व प्राप्तियों को और प्राप्त कराने वाले को सदा सामने रखेंगे तो कभी भी माया से सामना करने में कमजोर नहीं बनेंगे। सिर्फ एक बात याद रखो – सर्व सम्बन्धों से हर कार्य में बापदादा सदा साथ है।**

30.1.79... .. स्नेह का सबूत है ही समान बनना। जिस स्टेज से बाप का स्नेह है ऐसी स्टेज को पाना। ऐसे स्नेही हो ना? सदा अपने सम्पूर्ण स्वरूप को सामने रखने से माया का सामना करना बहुत सहज होगा। बाप-दादा यही रिज़ल्ट देखने चाहता – इस रिज़ल्ट को प्रैक्टिकल में लाने के लिए विशेष धारणायें याद रखो – 1. मधुरता 2. नम्रता। इन विशेष दो धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी महादानी वरदानी बन जावेंगे – और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे। समझा – अभी क्या करना है? यह करना है और कुछ छोड़ना भी है। छोड़ना क्या है? ज्ञानी तू आत्मा होने के कारण भक्ति के संस्कार भिखारी बन मांगने का वा सिर्फ बाप की महिमा वा कीर्तन गाने का, मन द्वारा यहाँ वहाँ भटकने का, अपने खजानों को व्यर्थ गँवाने का यह पुराने संस्कार सदा के लिए समाप्त करो अर्थात् पुराने संस्कारों का संस्कार करो। यह है छोड़ना। तो अब समझा क्या करना है। क्या छोड़ना है। ज्ञानी तू आत्मा अर्थात् विजयी।

14.11.79... .. यथार्थ पुरुषार्थी कभी भी थकावट महसूस नहीं करते। कारण? दोनों के पुरुषार्थ में सिर्फ एक बात समझने का अन्तर है; जिससे वे मेहनत में रहते और दूसरे मोहब्बत में मस्त रहते हैं। कौन से संकल्प का अन्तर है, वह जानते हो? छोटा सा ही अन्तर है। **एक समझते हैं कि हम स्वयं चल रहे हैं, चलना पड़ता है, सामना करना पड़ता है और दूसरे हैं जो सदैव संकल्प से भी सरेन्डर हैं, इसलिए वह सदैव यह अनुभव करते कि**

हमें बाप-दादा चला रहे हैं। मेहनत के पाँव से नहीं लेकिन स्नेह की गोदी में चलते रहते हैं। इसलिए वे स्नेह के पाँव से चलते, जिसमें थकावट नहीं होती। स्नेह की गोदी वा झोली में सर्व प्राप्तियों की अनुभूति होने के कारण वह चलते नहीं, लेकिन उड़ते रहते हैं। सदा खुशी में, आन्तरिक सुख में, सर्व शक्तियों से उड़ते रहते हैं।”

अभी अपने से पूछो कि मैं कौन? संगमयुगी ब्राह्मण बच्चे जियेंगे, चलेंगे हर कदम में स्नेह की गोदी में। ब्राह्मण जीवन की निशानी है – सदा खुशी की झलक प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देगी। खुशी नहीं तो ब्राह्मण जीवन भी नहीं।

14.11.79... .. अमृतवेले स्वयं को मास्टर सर्वशक्तिवान का तिलक दो। सारा दिन तिलकधारी रहने से कभी भी माया सामना नहीं करेंगी। तिलक आपके विजय की निशानी है। अमृतवेले वरदानों का समय है, जितना अमृतवेले का महत्व रखेंगे उतना महान बनेंगे।

14.1.80... .. सामना करने की शक्ति अर्थात् अनुभव कराने की शक्ति, सभी को श्रेष्ठ चरित्र द्वारा बाप-दादा का चित्र दिखाने की शक्ति – ऐसे शस्त्रधारी हैं? क्या समझते हो – ऐसे शक्ति स्वरूप गुण है? चारों ही सबजेक्ट्स के चारों ही अलंकारधारी हों? दो भुजा वाले शक्ति स्वरूप हो या चार भुजा वाले हो? यह चार अलंकार चार सबजेक्ट्स की निशानी हैं। तो सभी अलंकार धारण किए हैं? या किसी ने दो धारण किए हैं, किसी ने तीन किये हैं या एक धारण करते हैं तो दूसरा छूट जाता है? तो इस गुण का महत्व समझा।

18.1.80... .. जैसे यहाँ भी कारोबार के निमित्त जगत् अम्बा के क्षेत्र में पहले जगत अम्बा धरनी बनाने गई और फिर बाप गये। ऐसे जगत अम्बा और मुरबी बच्चा विश्व किशोर साथी, सामना करने वाले थे। मैदान पर आगे सेवा में आने वाले रहे, वैसे ही अभी भी भिन्न रूप में कार्य के संस्कार वही हैं। दोनों स्थापना के जन्म की कहानी में हीरो पार्टधारी हैं। गर्भमहल तैयार करा रहे हैं। यहाँ भी तो कारोबार में निमित्त दोनों मूर्तियाँ रहीं। तो यह महल तैयार करने वाले भी ऐसे पॉवरफुल चाहिए। यहाँ स्थापना की तैयारी की और फिर वहाँ आप सबके लिए जो विशेष अष्ट रतन हैं, उनके लिए तैयारी कर रहे हैं, महल तैयार कर रहे हैं। जब तैयारी हो तब तो आत्मायें वहाँ जायेंगी ना। तो अब अपवित्र सृष्टि में पवित्र महल तैयार करना कितना श्रेष्ठ कार्य करना पड़े। ऐसी पॉवरफुल आत्मायें चाहिए जो यह पॉवरफुल कार्य कर सकें। ऐसी वैसी नहीं कर सकतीं।

15.3.81... .. तख्त पर बैठने के अधिकारी भी कौन बनते? जो सदा डबल लाइट रूप में रहते हैं। अगर जरा भी भारीपन आया तो तख्त से नीचे आ जायेंगे। तख्त से नीचे आये तो माया से सामना करना पड़ेगा। तख्तनशीन हैं तो माया नमस्कार करेगी। बापदादा द्वारा बुद्धि के लिए जो रोज शक्तिशाली भोजन मिलता है, उसे हजम करते रहो तो कभी भी कमजोरी आ नहीं सकती। माया का वार हो नहीं सकता।

10.1.82... .. जैसे लौकिक जीवन में माँ बच्चे को पालना द्वारा शक्तिशाली बनाती है, जिससे वह सदा किसी भी समस्या का सामना कर सके। सदा तन्दुरुस्त रहे, सम्पत्तिवान रहे। ऐसे आप श्रेष्ठ आत्मायें जगत माता बन एक दो आत्माओं की माँ नहीं, ‘जगत माँ’, बेहद की माँ बन, मन से ऐसा शक्तिशाली बनाओ जो सदा आत्मायें अपने को विघ्न विनाशक, शक्ति सम्पन्न, हेल्दी और वेल्दी अनुभव करें। अब ऐसी पालना की आवश्यकता है। ऐसी पालना वाले बहुत कम हैं। परिवार का अर्थ ही है – ‘प्रेम और पालना’ की अनुभूति कराना। इसी पालना की प्यासी आत्मायें हैं। तो समझा, इस वर्ष क्या करना है?

14.3.82... .. प्रश्न – चलते-चलते पुरुषार्थ में जब रूकावट आती है तो क्या करना चाहिए? रूकावट आने का कारण क्या होता है? उत्तर – जब कई प्रकार के पेपर्स सामने आते हैं, तो उन पेपर्स का सामना करने की



शक्ति न होने के कारण पुरुषार्थ में रूकावट आ जाती है, ऐसे समय पर दूसरों का सहयोग लेना ज़रूरी होता है। जैसे कार में बैटरी जब थोड़ी ढीली हो जाती है, कार अपने आप नहीं चलती है तो दूसरों से थोड़ा धक्का लगवाते हैं ना! तो जिस भी आत्मा में आपका फेथ हो और समझो इनसे हमको मदद मिल सकती है तो उनसे थोड़ा-सा सहयोग लेकर आगे बढ़ जाना चाहिए। पहले उसे अपनी बात स्पष्ट सुनाना चाहिए कि ऐसे है, फिर सहयोग मिलने से चल पड़ेंगे। क्योंकि होता क्या है – जिस समय ऐसी स्टेज आती है उस समय डायरेक्ट बाप से सहयोग लेने की हिम्मत नहीं होती है, इसलिए फिर साकार में थोड़ासा सहयोग लेंगे तो फिर डायरेक्ट लेने में मदद मिल जायेगी।

13.4.82... .. सम्पूर्ण त्यागी बनने के लिए दो प्रकार के विघ्न आगे बढ़ने नहीं देते। वह कौन से? एक – तो सदा हिम्मत नहीं रख सकते अर्थात् विघ्नों का सामना करने की शक्ति कम है। दूसरा – अलबेलेपन का स्वरूप आराम पसन्द बन चलना। पढ़ाई, याद, धारणा और सेवा सब सबजेक्ट में कर रहे हैं, चल रहे हैं, पढ़ रहे हैं लेकिन आराम से! सम्पूर्ण परिवर्तन करने के लिए शस्त्रधारी शक्ति-स्वरूप की कमी हो जाती है। स्नेही हैं लेकिन शक्ति स्वरूप नहीं। मास्टर सर्वशक्तिवान स्वरूप में स्थित नहीं हो सकते हैं। इसलिए महात्यागी नहीं बन सकते हैं। यह है त्यागी आत्मायें।

30.4.82... .. स्नेही सहयोगी तो यथाशक्ति बनने ही हैं लेकिन शक्तिशाली आत्मा, जो विघ्नों का, पुराने संस्कारों का सामना कर महावीर बन जाए, इस पर और विशेष अटेन्शन। स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी ऐसे वारिस क्वालिटी को बढ़ाओ। सेवाधारी बहुत बने हो, लेकिन सर्व शक्तियों धारी ऐसी विशेषता सम्पन्न आत्माओं को विश्व की स्टेज पर लाओ।

27.4.83... .. सदा हर सेकण्ड शरीर में आत्मा को देखो। नज़र ही मस्तक मणी पर जानी चाहिए। तो क्या होगा? आत्मा आत्मा को देखते स्वतः ही आत्म-अभिमानि बन जायेंगे। है तो यह पहला पाठ ना! पहला पाठ ही पक्का नहीं करेंगे, अल्फ को पक्का नहीं करेंगे तो बे बादशाही कैसे मिलेगी? सिर्फ एक बात की सदा सावधानी रखो। जो भी करना है, श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ बनना है। तो हर बात में दृढ़ संकल्प वाले बनो। कुछ भी सहन करना पड़े, सामना करना पड़े लेकिन श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ परिवर्तन करना ही है।

19.4.84... .. भावुक आत्मायें सिर्फ़ प्रेम की शक्ति से आगे बढ़ते रहते हैं। माया से सामना करने की शक्ति नहीं होती। ज्ञानी तू आत्मा समान बनने के लक्ष्य से सर्व शक्तियों का अनुभव कर सामना कर सकते हैं। अब अपने आप से पूछो कि मैं कौन! भावुक आत्मा है या ज्ञानी तू आत्मा हूँ? बाप तो भावना वालों को भी देख खुश होते हैं। मेरा बाबा कहने से अधिकारी तो हो ही गये ना!

5.12.84... .. सबसे बड़े ते बड़ी मनोकामना बाप को पाने की थी। जब वह श्रेष्ठ कामना पूर्ण हो गई तो उस श्रेष्ठ कामना में सर्व छोटी-छोटी हद की कामनायें समाई हुई हैं। श्रेष्ठ बेहद की कामना के आगे और कोई हद की कामनायें रह जाती हैं क्या? यह हद की कामनायें भी माया से सामना नहीं करा सकती। यह हद की कामना बेहद की स्थिति द्वारा बेहद की सेवा करा नहीं सकती। हद की कामनायें भी सूक्ष्म रूप से चेक करो –मुख्य काम विकार के अंश वा वंश हैं। इसलिए कामना वश सामना नहीं कर सकते। बेहद की मनोकामना पूर्ण करने वाले नहीं बन सकते। काम जीत अर्थात् हद की कामनाओं जीत। ऐसी मनोकामनायें पूर्ण करने वाली विशेष आत्मायें हो। 'मन्मनाभव' की स्थिति द्वारा मन की हद की कामनायें पूर्ण कर अर्थात् समाप्त

कर औरों की मनोकामनायें पूर्ण कर अर्थात् समाप्त कर औरों की मनोकामनायें पूर्ण करने का अभी समय है। तृप्त आत्मायें ही औरों की कामनायें पूर्ण कर सकेंगी। अभी वाणी से परे स्थिति में स्थित रहने की वानप्रस्थ अवस्था में कामना जीत अर्थात् सम्पूर्ण काम जीत के सैम्पुल विश्व के आगे बनो। आपके छोटे-छोटे भाई-बहिनें यही कामना लेकर आप बड़ों की तरफ़ देख रहे हैं। पुकार रहे हैं कि हमारी मनोकामनायें पूर्ण करो। हमारी सुख-शान्ति की इच्छायें पूर्ण करो। तो आप क्या करेंगे? अपनी इच्छायें पूर्ण करेंगे वा उन्हीं की पूर्ण करेंगे? सभी को दिल से, कहने से नहीं या वायुमण्डल के संगठन की मर्यादा प्रमाण नहीं, दिल से यह श्रेष्ठ नारा निकले कि – “इच्छा मात्रम् अविद्या”।

24.12.84... .. जहाँ सर्व शक्तिवान बाप का सहारा है तो माया स्वयं ही किनारा कर लेती है। ताकत वाले के आगे निर्बल क्या करेगा? किनारा करेगा ना। ऐसे माया भी किनारा कर लेगी, सामना नहीं करेगी। तो सभी मायाजीत हो? भिन्नभिन्न प्रकार से, नये-नये रूप से माया आती है लेकिन नालेजफुल आत्मायें माया से घबराती नहीं। वह माया के सभी रूप को जान लेती हैं। और जानने के बाद किनारा कर लेती। जब मायाजीत बन गये तो कभी कोई हिला नहीं सकता। कितनी भी कोई कोशिश करे लेकिन आप न हिलो।

7.1.85... .. लौकिक आशायें, इच्छायें तो समाप्त हो गईं। अब अलौकिक जीवन की बेहद की इच्छायें समझते हैं कि यह तो ज्ञान की हैं ना। यह तो होनी चाहिए ना। लेकिन कोई भी हद की चाहना वाला माया का सामना नहीं कर सकता है। मांगने से मिलने वाली यह चीज़ ही नहीं है। कोई को कहो मुझे रिगार्ड दो या रिगार्ड दिलाओ। मांगने से मिले यह रास्ता ही रांग है तो मंजिल कहाँ से मिलेगी। इसलिए ‘मास्टर विधाता’ बनो। तो स्वतः ही सब आपको देने आयेंगे। शान मांगने वाले परेशान होते हैं। इसलिए मास्टर विधाता की शान में रहो।

25.11.85... .. विजयी रता किसी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करेंगे। लेकिन सब कर्म करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद के वैरागवृत्ति में होंगे। जो सदाकाल का है। निश्चयबुद्धि विजयी कभी अपने विजय का वर्णन नहीं करेंगे। दूसरे को उल्हना नहीं देंगे। देखा मैं राइट था ना। यह उल्हना देना या वर्णन करना यह खालीपन की निशानी है। खाली चीज़ ज़्यादा उछलती है ना। जितना भरपूर होंगे उतना उछलेंगे नहीं। वियजी सदा दूसरे की भी हिम्मत बढ़ायेगा। नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करेगा। क्योंकि विजयी रत्न बाप समान ‘मास्टर सहारे दाता’ है।

23.1.87... .. स्थूल कार्य वा अलौकिक सेवा का कार्य अर्थात् दोनों क्षेत्र के कर्म में सफलता के निश्चयबुद्धि विजयी रहेंगे। कहाँ-कहाँ परिस्थिति का सामना भी करना पड़ेगा, व्यक्तियों द्वारा सहन भी करना पड़ेगा लेकिन वह सहन करना उन्नति का रास्ता बन जायेगा। परिस्थिति को सामना करते, परिस्थिति, स्वस्थिति के उड़ती कला का साधन बन जायेगी, अर्थात् हर बात में सफलता स्वतः, सहज और अवश्य प्राप्त होगी।

20.3.87... .. सत्यता की शक्ति वाला सदा खुशी में नाचता रहेगा। शक्तिशाली होगा, सामना करने की शक्ति होगी, इसलिए घबरायेगा नहीं।

5.10.87... .. सन्तुष्टता की निशानी – वह मन से, दिल से, सर्व से, बाप से, ड्रामा से सन्तुष्ट होंगे; उनके मन और तन में सदा प्रसन्नता की लहर दिखाई देगी। चाहे कोई भी परिस्थिति आ जाए, चाहे कोई आत्मा हिसाब-किताब चुक्त्तू करने वाली सामना करने भी आती रहे, चाहे शरीर का कर्म-भोग सामना करने

आता रहे लेकिन हृद की कामना से मुक्त आत्मा सन्तुष्टता के कारण सदा प्रसन्नता की झलक में चमकता हुआ सितारा दिखाई देगी।

30.1.88... .. दो प्रकार के सहनशीलता के पेपर सुनाये। पहला पेपर – लोगों द्वारा अपशब्द वा अत्याचार। दूसरा – यज्ञ की स्थापना में भिन्न-भिन्न आये हुए विघ्न। तीसरा – कई ब्राह्मण बच्चों द्वारा भी ट्रेटर होना वा छोटी-मोटी बातों में असन्तुष्टता का सामना करना। लेकिन इसमें भी सदा असन्तुष्ट को सन्तुष्ट करने की भावना से परवश समझ सदा कल्याण की भावना से, सहनशीलता की साइलेन्स पावर से हर एक को आगे बढ़ाया। सामना करने वाले को भी मधुरता और शुभ भावना, शुभ कामना से सहनशीलता का पाठ पढ़ाया। जो आज सामना करता और कल क्षमा मांगता, उनके मुख से भी यही बोल निकलते – ‘बाबा तो बाबा है!’ इसको कहा जाता है सहनशीलता द्वारा फेल को भी पास बनाए विघ्न को पास करना। तो दूसरा कदम सुना। किसलिए? कदम-पर-कदम रखो। इसको कहा जाता है – फ़ालो फ़ादर अर्थात् बाप समान बनना।

17.12.89... .. स्व-स्थिति की शक्ति से किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकते हो ना! स्व-स्थिति अर्थात् आत्मिक-स्थिति। पर-स्थिति व्यक्ति वा प्रकृति द्वारा आती है। अगर स्व-स्थिति शक्तिशाली है तो उसके आगे पर-स्थिति कुछ भी नहीं है। प्रकृति के भी मालिक आप हो ना! आपके परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन होता है। इस समय आप सतोप्रधान बन रहे हो तो प्रकृति भी तमो से सतो में परिवर्तन हो रही है। आप रजोगुणी बनते हो तो प्रकृति भी रजोगुणी बनती है। तो श्रेष्ठ कौन हुआ? आप हुए ना। इसलिए स्व-स्थिति में स्थित रहने वाला कभी परिस्थिति से घबराता नहीं है क्योंकि पावरफुल कभी कमज़ोर से नहीं घबराता। व्यक्ति द्वारा भी परिस्थिति आती है। तो आजकल के व्यक्ति भी तो तमोगुणी हैं ना! आप तो सतोगुणी हो। तो तमोगुण पावरफुल नहीं, सतोगुण पावरफुल है। कई ऐसा समझते हैं - और परिस्थितियों से तो पार हो जाते हैं लेकिन जब कोई ब्राह्मण आत्मा द्वारा परिस्थिति आती है तो उसमें घबरा जाते हैं, उसमें थोड़ा “क्या-क्यों” में चले जाते हैं। लेकिन जिस समय कोई भी ब्राह्मण आत्मा में माया प्रवेश होती है उस समय ब्राह्मण आत्मा नहीं है, वशीभूत है। इसलिए उससे भी घबरा नहीं सकते। कोई भी ब्राह्मण आत्माएं अगर वशीभूत हैं तो वशीभूत पर रहम आता है, तरस पड़ता है। वशीभूत पर कभी जोश नहीं आता। कोई जान-बूझकर कुछ करता है तो उस पर जोश आता है। तो जब ब्राह्मण आत्मा भी वशीभूत है तो रहम की भावना रखो। फिर घबरायेंगे नहीं, और ही उस आत्मा की सेवा करने लग जायेंगे। शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा सेवा करेंगे। तो स्व-स्थिति वाला किसी भी प्रकार की परिस्थिति से घबरा नहीं सकता क्योंकि नालेजफुल आत्मा हो गई। तीनों कालों की, सर्व आत्माओं की नालेज है। नालेजफुल वा त्रिकालदर्शी कभी घबरा नहीं सकते। सदा ही किसी भी परिस्थिति में मुस्कराते रहेंगे। हर्षित होंगे, परिस्थिति से आकर्षित नहीं होंगे।

31.12.89... .. संगठन में कभी-कभी घबरा जाते हो। सोचते हो – हमने तो वायदा किया था “बाप और मैं”, यह थोड़े ही वायदा किया था कि संगठन में रहेंगे। बाप तो बहुत अच्छा है, बाप के साथ रहना भी बहुत अच्छा है लेकिन संगठन में सबके संस्कारों में रहना, यह बहुत मुश्किल है। लेकिन यह भी बहुत सहज हो जायेगा क्योंकि मन से, दिल से हर आत्मा के प्रति दुआयें, शुभभावना, शुभकामना पावरफुल होने के कारण दूसरे के संस्कार दब

जायेंगे। वह आपका सामना नहीं करेंगे और दबते-दबते समाप्त हो जायेंगे। फिर कहेंगे – हाँ, हम 40 के साथ भी रह सकते हैं।

13.2.92... .. लव में लीन रहने वाले लवलीन हैं। तो जो लव में लीन आत्मायें हैं ऐसे लवलीन आत्माओं के आगे किसी के भी समीप आने की, सामना करने की हिम्मत नहीं है। क्योंकि आप लीन हो, किसी का आकर्षण आपको आकर्षित नहीं कर सकता। जैसे विज्ञान की शक्ति धरती के आकर्षण से दूर ले जाती है, तो यह लवलीन स्थिति सर्व हृद की आकर्षणों से बहुत दूर ले जाती है। अगर लीन नहीं है तो डगमग हो सकते हैं। लव है लेकिन लव में लीन नहीं है। अभी किसी से भी पूछेंगे - आपका बाप से लव है, तो सभी हाँ कहेंगे ना। लेकिन सदा लव में लीन रहते हैं? तो क्या कहेंगे ? इसमें हाँ नहीं कहा। सिर्फ लव है-इस तक नहीं रह जाना। लीन हो जाओ।

3.11.92... .. सदैव यह अनुभव करो कि हमारा ही यादगार विघ्न-विनाशक है। विघ्न-विनाशक बनने की विधि क्या है, कैसे विघ्न-विनाशक बनेंगे? शान्ति से या सामना करने से या थोड़ा हलचल करने से? शान्त रहना है और शान्ति से सर्व कार्य सम्पन्न करना है। ऐसे नहीं कहना कि थोड़ी हलचल करने से अटेंशन खिंचवाते हैं। ऐसे नहीं करना। यह अटेंशन नहीं खिंचवाते लेकिन टेंशन पैदा करते हैं। इसलिए विघ्न-विनाशक बनना है तो शान्ति से, हलचल करने से नहीं। सदा शान्त। शान्ति की शक्ति-कितना भी बड़ा विघ्न हो, उसको सहज समाप्त कर देती है। तो शान्ति की शक्ति जमा है ना।

18.11.94... .. कितनी भी बड़ी कैसी भी परिस्थिति हो प्यार से, स्नेह से परिस्थिति रूपी पहाड़ भी परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन सकता है। पत्थर को पानी बना सकते हो। कैसा भी माया का विकराल रूप वा रॉयल रूप सामना करे तो सेकण्ड में स्नेह के सागर में समा जाओ तो सामना करने की माया की शक्ति समाप्त हो जायेगी। आपके समाने की शक्ति छू-मन्त्र नहीं लेकिन शिव-मन्त्र बन जायेगी। सबके पास शिव-मन्त्र की शक्ति है ना कि खो जाती है? शिव स्नेह में समा जाओ, सिर्फ डुबकी मारकर नहीं निकल आओ। थोड़ा समय स्मृति में रहते हो-मीठा बाबा, प्यारा बाबा, तो डुबकी लगाकर फिर निकल आते हो तो माया की नज़र पड़ जाती है। समा जाओ, तो माया की नज़र से दूर हो जायेंगे। और कुछ भी नहीं आए तो स्नेह की शक्ति जन्म का वरदान है। उस वरदान में खो जाओ। खो जाना नहीं आता है? स्नेह तो सहज है ना!

14.4.94... .. व्यर्थ का सामना करना समाप्त करो तो सेवा की ऑफर सामने आयेगी।

17.11.94... .. जैसे शरीर की कमजोरी बीमारी बनकर सामने आती है ना, ऐसे आत्मा की कमजोरी माया बन करके सामना करती है। तो न कमजोर बनना है, न माया आनी है। लक्ष्य ही है – मायाजीत जगतजीत।

9.1.95... .. निश्चयबुद्धि अर्थात् निश्चिन्त। तो ये प्रैक्टिकल निशानियाँ अपने आपमें चेक करो। ऐसे अलबेले नहीं रह जाना-हम तो हैं ही निश्चयबुद्धि। कौनसा निश्चय कमजोर है वो चेक करो और चेंज करो। सिर्फ चेक नहीं करना। बापदादा ने कहा था ना चेकर के साथ मेकर भी हो। सिर्फ चेकर नहीं। चेक करने का अर्थ ही है सेकण्ड में चेंज होना। लेकिन चेक करो और चेंज नहीं करो तो बहुत काल से स्वयं में दिलशिकस्त के संस्कार पक्के होते जायेंगे और जो बहुतकाल के संस्कार हैं वही अन्त में अवश्य सामना करते रहेंगे। कोई सोचे अन्त में तो मैं सिवाए बाप के और कुछ नहीं सोचूंगा। लेकिन हो नहीं सकता। बहुतकाल का अभ्यास

चाहिये। नहीं तो एक सेकण्ड सोचेंगे—शिवबाबा शिवबाबा शिवबाबा.... और दूसरे सेकण्ड माया कहेगी—नहीं, तुम्हारे में शक्ति नहीं है, तुम हो ही कमजोर, तो युद्ध चलती रहेगी। यदि निश्चिन्त नहीं होंगे तो ब्राह्मण जीवन के अन्तकाल का जो लक्ष्य वर्णन करते हो वो सहज कैसे होगा और अगर अन्त तक ये व्यर्थ संकल्प होंगे तो वही भूतों के, यमदूतों के रूप में आयेंगे। और कोई यमदूत नहीं आते हैं, ये व्यर्थ संकल्प अपनी कमजोरियाँ, यही यमदूत के रूप में आते हैं। यमदूत क्या करते हैं? डराते हैं। और दूसरों के लिये कहेंगे विमान में जायेंगे अर्थात् उड़ती कला से पार हो जायेंगे। कोई विमान आदि नहीं हैं लेकिन उड़ती कला का अनुभव है। इसलिये पहले से ही चेक करके चेंज करो।

31.12.95... .. जो दृढ़ निश्चय रखते हैं तो निश्चय की विजय कभी टल नहीं सकती। चाहे पांच ही तत्व या आत्मायें कितना भी सामना करें लेकिन वो सामना करेंगे और आप समाने की शक्ति से उस सामना को समा लेंगे। क्योंकि अटल निश्चय है।

18.1.96... .. परिस्थिति आपको विशेष दो शक्तियों के अनुभवी बनाती है – एक-सहनशक्ति, न्यारापन, नष्टोमोहा और दूसरा-सामना करने की शक्ति का पाठ पढ़ाती है जिससे आगे के लिए आप सीख लो कि ये परिस्थिति, ये दो पाठ पढ़ाने आई है।

27.2.96... .. अगर कहाँ भी सामना करना पड़ता है तो ब्रह्मा बाप के जीवन को आगे रखो। ब्रह्मा बाप के आगे दुनिया की परिस्थितियां तो थी लेकिन बेराइटी बच्चों की भी परिस्थितियां रहीं लेकिन संगठन में होते, जिम्मेवारी होते सत्यता की शक्ति से विजयी हो गये। बच्चों की खिटखिट ब्रह्मा बाप ने नहीं देखी क्या? ब्रह्मा बाप के आगे भी बेराइटी संस्कार वाली आत्मायें रही, लेकिन इतनी सब परिस्थितियां होते हुए सत्यता की स्व-स्थिति ने सम्पूर्ण बना दिया।

तो आप सबको क्या बनना है? चतुराई तो नहीं है ना! बहुत अच्छा बोलते हैं – मैंने कुछ नहीं किया थोड़ा चतुराई से तो चलना ही पड़ता है। लेकिन कब तक? तो सहनशक्ति धारण कर असत्य का सामना करो। प्रभाव में नहीं आ जाओ।

कई समझते हैं कि हमने महारथियों में भी ऐसे देखा ना तो फालो तो महारथियों को करना है ना, अभी ब्रह्मा बाबा तो सामने हैं नहीं, महारथी हैं उसको फालो किया। लेकिन अगर महारथी भी मिक्स करता है, चतुराई से चलता है तो उस समय महारथी, महारथी नहीं है। उस समय ग्रहचारी में है न कि महारथी है। इसीलिए बाप ने क्या स्लोगन दिया—फालो फादर या सिस्टर ब्रदर? तो साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को आगे रखो, फालो करो और अशारीरी बनने में निराकार बाप को फालो करो। चाहे अच्छे-अच्छे बच्चे भी हैं लेकिन वह भी फालो फादर करते हैं। तो आपको क्या करना है? फालो फादर।

23.2.97... .. बापदादा तो खेल देखते हैं, बाप साथ बैठे हैं और अपनी परिस्थिति में, उसको सामना करने में इतना मस्त हो जाते हैं जो देखते नहीं हैं कि साथ में कौन हैं। तो बाप भी क्या करते? बाप भी साथी से साक्षी बनकर खेल देखते हैं। ऐसे तो नहीं करो ना। जब साथी कहते हो तो साथ तो निभाओ, किनारा क्यों करते हो? बाप को अच्छा नहीं लगता।

6.3.97... .. परिस्थिति बहुत नाजुक है लेकिन आर्डर दिया मन बुद्धि को कि न्यारे होकर खेल देखो तो परिस्थिति आपके इस अचल स्थिति के आसन के नीचे दब जायेगी। सामना नहीं करेगी। आसन नहीं छोड़ो, आसन में बैठने का अभ्यास ही सिंहासन प्राप्त करायेगा।

14.12.97.. (दिव्य सन्देश) बापदादा ने मुस्कराते हुए सुनते ही आप सभी को सूक्ष्म में इमर्ज किया और आप सबके ऊपर अति स्नेह का हाथ छत्रछाया समान रखते हुए बोले बच्चे, “हिम्मते बच्चे मददे बाप” तो है ही। आप सभी बच्चे भी अच्छी हिम्मत से अब तक वायुमण्डल का सामना करते आये हो।

दिन-प्रतिदिन ये सब बातें व ये हालातें तो अति में जानी ही हैं। ऐसे समय पर तो आप ब्राह्मण बच्चों को पावरफुल योग के कवचधारी बनना ही सेफ्टी है। जैसे वी.आई.पी. लोग चारों ओर सेक्यूरिटी के घेरे में रहते हैं। ऐसे बच्चों को अब समय अनुसार शक्तिशाली योग द्वारा चारों ओर लाईट के कार्ब में चलना है। इसमें ही सेफ्टी है।..

15.11.99... .. समय आयेगा जब यूथ ग्रुप पर गवर्मेन्ट का भी अटेन्शन जायेगा लेकिन तब जायेगा जब आप विघ्न-विनाशक बन जाओ। ‘विघ्न-विनाशक’ किसका नाम है? आप लोगों का है ना! विघ्नों की हिम्मत नहीं हो जो कोई कुमार का सामना करे, तब कहेंगे ‘विघ्न-विनाशक’।

24.6.99.. (दिव्य सन्देश)... .. समय के अनुसार आने वाली परिस्थितियों को बाप की याद से पार करते आगे बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो और कोई भी बात सामने आये तो उसका अपनी स्थिति से सामना करके आगे बढ़ो। बाबा हर पल हर कदम बच्चों के साथ है और रहेगा।

11.11.2000... .. कितनी भी बड़े ते बड़ी परिस्थिति, विघ्न, साधनों की आकर्षण सामना करे, सामना करेगी यह पहले ही बता देते हैं लेकिन कम से कम 6 मास में 75 परसेन्ट मुक्त हो सकते हो? बापदादा 100 परसेन्ट नहीं कह रहे हैं, 75 परसेन्ट, पौने तक तो आयेंगे तब पूरे पर पहुंचेंगे ना! तो 6 मास में, एक मास भी नहीं 6 मास दे रहे हैं, वर्ष का आधा। तो क्या यह डेट फिक्स कर सकते हो? देखो, दादियों ने कहा है फिक्स करो, दादियों का हुक्म तो मानना है ना! रिजल्ट देखकर तो बापदादा स्वतः ही आकर्षण में आयेंगे, कहने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। तो 6 मास और 75 परसेंट, 100 नहीं कह रहे हैं। उसके लिए फिर आगे टाइम देंगे। तो इसमें एवररेडी हो? एवररेडी नहीं 6 मास में रेडी। पसन्द है या थोड़ी हिम्मत कम है, पता नहीं क्या होगा? शेर भी आयेगा, बिल्ली भी आयेगी, सब आयेंगे। विघ्न भी आयेंगे, परिस्थितियां भी आयेंगी, साधन भी बढ़ेंगे लेकिन साधन के प्रभाव से मुक्त रहना।

18.1.2001... .. बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि वर्तमान समय, समय के अनुसार विशेष सहनशक्ति और समस्या या परिस्थिति को सामना करने की शक्ति कर्म में आवश्यक है। सिर्फ मन और वाणी तक नहीं, कर्म तक आवश्यक है। बापदादा ने रिजल्ट में देखा है कि शक्तियाँ है, शक्तियाँ नहीं हैं - यह नहीं है। हैं, लेकिन फर्क क्या पड़ जाता है? समय पर जो शक्ति जिस विधि से कार्य में लगानी चाहिए, वह समय पर और विधि पूर्वक यूज करने में, कार्य में लगाने में अन्तर पड़ जाता है। स्मृति है लेकिन स्मृति को समर्थ स्वरूप में नहीं लाते। स्मृति ज़्यादा है, समर्थी कभी कम, कभी ठीक हो जाती। स्मृति ने वर्से के अधिकारी तो बना दिया है लेकिन हर स्मृति की समर्थी विजयी बनाए विजय माला का समीप मणका बनाती है। समर्थियों को स्वरूप में लाओ। मन में है, बुद्धि में है लेकिन आपके स्वरूप में हर कार्य में, हर समर्थी प्रत्यक्ष रूप में आवे। तो स्मृति दिवस तो बहुत अच्छा मनाया। अब समर्थियों को स्वरूप में लाओ। अगर किसको भी देखते हो तो आपके नयन से समर्थ स्वरूप

का अनुभव हो। हर बोल से दूसरा भी समर्थ बन जाए। समर्थी का अनुभव करे। साधारण बोल नहीं। हर बोल में जो समर्थी का वरदान मिला है वह अनुभव कराओ। मन-बुद्धि द्वारा श्रेष्ठ संकल्प और यथार्थ निर्णय शक्ति का वायुमण्डल स्वरूप में लाओ। साधारण चलन में भी फ़रिश्ते पन के समर्थी का स्वरूप दिखाई दे। डबल लाइट का स्वयं को भी और दूसरों को भी अनुभव हो। ऐसे है? तो चलते फिरते समर्थ स्वरूप बनो और दूसरों को समर्थी दिलाओ।

24.6.2000.. .. आपके आगे बहुत सी ऐसी परिस्थितियाँ आयेंगी जिनका आपको सामना करना पड़ेगा। इसलिए सामना करने की शक्ति धारण करना।

28.6.2000.. .. अब हर एक को यह जिम्मेवारी की राखी बांधनी है कि जो भी साथी साथ रहते हैं वा जिज्ञासु हैं, सम्पर्क वाले हैं उन्हीं के संस्कारों में मन्सा-वाचा-कर्मणा में जो भी कमी कमजोरी है, मुझे अपनी हिम्मत और बाप की मदद से उसको सहयोग दे आगे बढ़ाना है, वायुमण्डल बनाना है। हर एक को समस्या समाधान स्वरूप बनना है। विघ्न-विनाशक स्वरूप बनना है, बनाना है। इसके लिए 1- समाने की शक्ति 2- सहन शक्ति और 3- समस्या का सामना करने की शक्ति, अब त्रिमूर्ति शक्तियों के लड़ियों की राखी मन में संकल्प में बाँधनी है क्योंकि अब समय, प्रकृति, आत्माओं की पुकार है कि आओ हमारे मालिक, परिवर्तक आओ, हमें अब शुद्ध स्वरूप में परिवर्तन करो। क्या यह पुकार बच्चों के कानों में नहीं गूँजती है? तो अब बाबा तीव्र से तीव्रगति देखने चाहते हैं और यही शुभ आशा हर बच्चों में रखते हैं।

1.3.2001.. .. अब स्व-मान, स्व-स्थिति, स्व-उन्नति, सम्मान इस धारणा स्वरूपों में परसेन्टेज बढ़ानी है। वर्तमान समय प्रमाण इसकी बहुत आवश्यकता है तब समय का सामना कर सकेंगे और सेवा में सहज सफलता, निर्विघ्न स्थिति में उन्नति कर सकेंगे।

25.11.2001.. .. अगर दिल से दृढ़ संकल्प करेंगे कि कारण को समाप्त कर निवारण स्वरूप बनना ही है, कुछ भी हो, सहन करना पड़े, माया का सामना करने पड़े, एक-दो के सम्बन्ध-सम्पर्क में सहन भी करना पड़े, मुझे समस्या नहीं बनना है। हो सकता है? अगर दृढ़ निश्चय है तो वह पीछे से लेकर आगे तक हाथ उठाओ।

जब भी कोई समस्या आवे तो सामने बापदादा को देखना, दिल से कहना बाबा, और बाबा हाजिर हो जायेगा, समस्या खत्म हो जायेगी। समस्या सामने से हट जायेगी बापदादा सामने हाजिर हो जायेगा। “मास्टर सर्वशक्तिवान” अपना यह टाइटल हर समय याद करो। टाइटल है “मास्टर सर्वशक्तिवान” और कर्त्तव्य है “विश्व-कल्याणकारी”। तो सदा अपना टाइटल और कर्त्तव्य याद करने से शक्तियाँ इमर्ज हो जायेंगी। मास्टर बनो, शक्तियों के भी मास्टर बनो, आर्डर करो, हर शक्ति को समय पर आर्डर करो।

11.3.2002.. .. मेरी यह विशेषता है, नहीं, परमात्म-देन है। परमात्म-देन समझने से विशेषता में परमात्म शक्तियाँ भर जाती हैं। मेरी कहने से अभिमान और अपमान दोनों का सामना करना पड़ता है। किसी भी प्रकार का अभिमान, चाहे ज्ञान का, चाहे योग का, चाहे सेवा का, चाहे बुद्धि का, चाहे कोई गुण का, जिसमें भी अभिमान होगा उसकी निशानी है - उसको अपमान बहुत जल्दी फील होगा। तो विशेष आत्मायें हो अर्थात् परमात्म-देन के अधिकारी हो।

20.9.2001(दिव्य सन्देश).... .. बच्चों को अपनी कमाई का, अपनी अवस्था का पूरा-पूरा ध्यान रखकर पुरुषार्थ करना है। अभी तो बहुत विचित्र-विचित्र सीन देखते रहेंगे। इसके लिए अपनी अवस्था साक्षी बनाओ। अन्तिम सीन देखने के लिए भी साहस चाहिए। यह सवाल न उठे क्यों, कैसे! यह होना ही है, सामना करने की शक्ति धारण करो।

14.11.2002... .. समस्या का स्वरूप, माया का स्वरूप है। जब चैलेन्ज किया है तो माया सामना तो करेगी ना! वह भिन्न-भिन्न समस्याओं के रूप में आपकी चैलेन्ज को पूरा करने के लिए आती है। आपको निश्चयबुद्धि विजयी स्वरूप से पार करना है, क्यों? नर्थिगन्यु। कितने बार विजयी बने हो? अभी एक बार संगम पर विजयी बन रहे हो वा अनेक बार बने हुए को रिपीट कर रहे हो? इसलिए समस्या आपके लिए नई बात नहीं है, नर्थिगन्यु।

28.2.2003... .. बापदादा यही इशारा देते हैं - कोई भी समस्या को सामना करने के लिए सहज विधि है पहले एकाग्रता की शक्ति। मन एकाग्र हो जाए, तो एकाग्रता की शक्ति निर्णय बहुत अच्छा करती है। इसीलिए देखो कोर्ट में भी तराजू दिखाते हैं। निर्णय की निशानी तराजू इसलिए दिखाते हैं - एकाग्र कांटा हो जाता है। तो कोई भी समस्या को जिस समय चारों ओर हलचल हो उस समय अगर मन की एकाग्रता की शक्ति हो, जहाँ मन को चाहो वहाँ एकाग्र हो जाए, निर्णय हो जाए किस परिस्थिति में कौन सी शक्ति कार्य में लायें, तो एकाग्रता की शक्ति दृढ़ता स्वतः ही दिलाती है और दृढ़ता सफलता की चाबी है। तो ऐसे अपने को एक एकजैम्पुल बनाके औरों को प्रेरणा देते रहो।

5.3.2008... .. बापदादा ने यह भी जन्मते ही बता दिया है कि माया आपके इस श्रेष्ठ जीवन का सामना करेगी। लेकिन माया का काम है आना, आप सदा पवित्रता के व्रत लेने वाली आत्माओं का काम है दूर से ही माया को भगाना।

31.12.2008... .. बाप समान बनना है तो स्थापना के आदि में ब्रह्मा बाप ने कितने आपोजी शन को पोजीशन में परिवर्तन किया? हर बात नई, चैलेन्ज थी। अभी तो बहुत जमाना बदल गया है लेकिन अकेला ब्रह्मा बाप ने स्वयं स्वमान की सीट और दृढ़ निश्चय के शस्त्रों द्वारा आपोजीशन को समाप्त किया। तो आप इस वर्ष में क्या करेंगे? समान बनना है ना, तो सदा अगर आपोजीशन होती भी है तो स्वमान की सीट पर बैठ जाओ तो आपोजीशन, पोजी शन में बदल जाये। है हिम्मत? ब्रह्मा बाप समान बनना ही है, उसमें तो हाथ उठाया, लेकिन इतनी हिम्मत है? पहले स्व के परिवर्तन का, फिर है अनेक सम्बन्ध-सम्पर्क वाली आत्मायें और फिर विश्व की आत्मायें। इन सबको अपने मन्सा शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा, दृढ़ संकल्प द्वारा परिवर्तन करना।

31.12.2008... .. समय की रफ्तार इस समय तीव्र है। तो समय को सामना कौन करेगा? आप ही तो करेंगे। बापदादा ने देखा कि दुःखियों की पुकार, भक्तों की पुकार, समय की पुकार इतना सुनते कम हैं। बिचारे हिम्मतहीन हैं, उन्हीं को पंख लगाओ तो उड़ तो सकें। हिम्मत के पंख, उमंग-उत्साह के पंख लगाओ।

15.11.2010... .. किसी भी समय किसका भी स्वभाव संस्कार तब सामना करता है जब शुभ भावना, शुभ कामना, उस आत्मा प्रति उस समय नहीं है। तो आप भी अगर अमृतवेले से यह संकल्प करो कि मुझे हर आत्मा प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखनी ही है तो जो संकल्प किया, परिवर्तन करना ही है, वह पूरा कर सकेंगे। बातें आयेंगी, बातों का काम है आना, माया है ना! और आपका काम है विजय प्राप्त करना।

19.3.2011... .. पेपर तो आने ही हैं लेकिन आपका डबल काम है। एक तो निर्भय होके सामना करो दूसरा अपने भक्त और अपने दुःखी भाई-बहिनों की सेवा भी कौन करेगा? आप प्रभु के संग में रंग लगे हुए हो, तो जो



परमात्मा के संग के रंग में प्राप्त किया है वह अपने भाई बहिनों को, भक्तों को खूब प्यार से दिल से बांटो। दुःख के समय कौन याद आता है? फिर भी परमात्मा चाहे समझें चाहे नहीं समझें, लेकिन मजबूरी से भी हे बाप, हे परमात्मा कहेंगे जरूर। तो आप परमात्म बच्चों को अभी दुःखियों का सहारा बनना है। उन्हीं को शुभ भावना शुभ कामना द्वारा, बाप द्वारा प्राप्त हुई किरणों द्वारा सहारा बनो। फिर भी आपका परिवार है ना!

15.3.2014... .. बापदादा इशारा दे रहे हैं कि अपने आपको चेक करो। बाप समान जो बाप चाहता है, जानने में तो सब होशियार हैं, तो जो बाप चाहता है मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क इन सब बातों में ऐसी अवस्था है, जो कुछ भी अचानक हो तो सामना कर सकेंगे? इन्टरनल पावर आत्मा सदा अटेन्शन में रहे, सदा तीव्र पुरुषार्थी रहे। स्व परिवर्तन और चारों ओर भी परिवर्तन में सहयोगी बनने में, दोनों बात में चेक करना।

## 6. साइन्स और साइलेन्स

22.1.70... .. जितनी-जितनी बुद्धि की लाइन अर्थात् पुरुषार्थ की लाइन क्लीयर होगी उतना- उतना क्या स्मृति में रहेगा? कोई भी बात में उनके सामने भविष्य ऐसा ही स्पष्ट होगा जैसे वर्तमान स्पष्ट होता है। उनके लिए वर्तमान और भविष्य एक समान हो जायेंगे। जैसे आजकल साइन्सदानों ने कहाँ-कहाँ की बातों को इतना स्पष्ट दिखाया है जो दूर की चीज़ भी नज़दीक नज़र आती है। इसी रीति से जिनका पुरुषार्थ क्लीयर होगा उनको भविष्य की हर बात दूर होते भी नज़दीक दिखाई पड़ेगी। जैसे आजकल टेलीविज़न में देखते हैं तो सभी स्पष्ट दिखाई पड़ता है ना। तो उनकी बुद्धि और उनकी दृष्टि टेलीविज़न की भाँति सभी बातें स्पष्ट देखेंगी और जानेंगी। और कोई भी बात में पुरुषार्थ की मुश्किलात नहीं रहेगी। तो वह अनुभव, वह अन्तिम स्थिति की परख अपने आप में देखो कि कहाँ तक अन्तिम स्थिति के नज़दीक हैं।

25.6.70... .. जैसे साइन्स द्वारा कहाँ-कहाँ बातें, कहाँ कहाँ के दृश्य कैचकर सकते हैं। वैसे आप लोग अव्यक्त स्थिति के आधार से सम्मुख की बातों को कैच नहीं कर सकते हो? तीन बातें देख रहे हैं। वह कौन सी? बापदादा आज यही देख रहे हैं कि हरेक कहाँ तक चेकर बना है और चेकर के साथ मेकर कहाँ तक बने हैं। जितना जो चेकर होगा उतना मेकर बन सकता है। इस समय आप ला मेकर भी हो और न्यू वर्ल्ड के मेकर भी हो तथा पीस मेकर भी हो। लेकिन मेकर के साथ चेकर जरूर बनना है। विशेष क्या चेक करना है? — यही सर्विस अब रही हुई है जिससे नाम बाला होना है। वह चेकर्स क्या चेक करते हैं? एडल्ट्रेशन और करप्शन। तो यही सर्विस अब रही हुई है। करप्शन और एडल्ट्रेशन करने वाले जो हैं उन्हीं के पास आलमाइटी गवर्नमेन्ट का चेकर बनकर जाओ। जैसे उस गवर्नमेन्ट के चेकर्स वा इन्सपेक्टर्स कोई के पास जाते हैं तो वह अपना भेद बता नहीं देते हैं। इस रीति से पाण्डव गवर्नमेन्ट के अर्थॉर्टी से चेकर्स बनकर जाओ। जो वह देखने से ही अपनी करप्शन, डल्ट्रेशन से घबरायेंगे और फिर सिर झुकायेंगे। अब — यह सर्विस रही हुई है। इससे ही नाम बाला होना है। एक ने भी सिर झुकाया तो अनेकों के सिर झुक जायेंगे। पाण्डव गवर्नमेन्ट की अर्थॉर्टी बनकर जाना और ललकार करना। अब समझा। अपना भी चेकर बनना है और सर्विस में भी। जो जितना चेकर और मेकर बनता है वही फिर रूलर भी बनता है। तो कहाँ तक चेकर बने हैं और मेकर्स बने हैं और कहाँ तक रूलर्स बने हैं। यह बातें एक-एक की देख रहे हैं। जब अपने को इन तीन रूपों में स्थित करेंगे तो फिर छोटी-छोटी बातों में समय नहीं जायेगा।

22.7.70... .. जैसे साइन्स में आजकल इन्वेन्शन करते जाते हैं। कोई भी गुप्त चीज़ स्वतः ही प्रत्यक्ष हो जाये। ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति का भी स्वतः ही प्रत्यक्ष रूप हो जायेगा। कहने वा करने से नहीं होगा। समझा।

28.12.79... .. जो सुख-शान्ति के भिखारी हैं उनको सुख-शान्ति देकर सम्पन्न बनाओ तो पीस मेकर हो जायेंगे। सभी दिल से आपकी शुक्रिया गायेंगे। अमेरिका में जो सेन्टर खुला है इसमें भी रहस्य है, विशेष कार्य होना है। विनाश और स्थापना दोनों का साक्षात्कार साथसाथ होगा। उस तरफ विनाशकारी और इस तरफ पीस मेकर। साइन्स और साइलेन्स, दोनों शक्तियों का मुकाबला देखेंगे। चारों ओर से अमेरिका को परिवर्तन करने का

घेराव डालो। महावीर का दिखाते हैं न कि वह सारी पहाड़ी की पहाड़ी को ले आया, तो आप अमेरिका को परिवर्तन कर साइलेन्स की शक्ति का नाम बाला करो। सदा याद रखो हम शान्ति के सागर के बच्चे शान्ति देवा हैं। जो भी सामने आये उसे पीस मेकर बन शान्ति का दान दो।

21.1.71... .. अव्यक्त स्थिति का अनुभव कुछ समय लगातार करो तो ऐसे अनुभव होंगे जैसे साइन्स द्वारा दूर की चीजें सामने दिखाई देती हैं, ऐसे ही अव्यक्त वतन की एक्टिविटी यहाँ स्पष्ट दिखाई देगी। बुद्धिबल द्वारा अपने सर्वशक्तिवान के स्वरूप का साक्षात्कार कर सकते हैं।

31.3.71... .. जैसे साइन्स की परमाणु शक्ति आज क्या से क्या दिखा रही है। वैसे ही साइलेन्स के शक्तिदल में आप प्रवृत्ति में रहने वाली प्रमाण हो। वह परमाणु शक्ति है और आप लोग सृष्टि के आगे एक प्रमाण हो। तो आप भी प्रमाण बनकर बहुत ही सर्विस कर सकती हो।

10.6.71... .. सदैव यह याद रखना कि हम आलमाइटी अर्थॉर्टी के द्वारा निमित्त बने हुए हैं। आलमाइटी गवर्नमेन्ट के मैसेन्जर हो। कोई से भी डिस्कस में अपना माइन्ड डिस्टर्ब नहीं करना है। नहीं तो वे लोग साइन्स की शक्ति से संकल्पों को भी रीढ़करते हैं। इसलिए कभी भी कोई बात का आवाज़ भी आये तो अपने को डिस्टर्ब नहीं करना। अपने चेहरे पर वा मन की स्थिति में अन्तर न लाना। मन्त्र याद रखना।

18.7.71... .. आजकल साइन्स ने भी ऐसी इन्वेन्शन की है, जो लिखा हुआ सभी मिट जाये जो मालूम ही न पड़े। तो क्या साइलेन्स की शक्ति से अपने रजिस्टर को रोज़ साफ़ नहीं कर सकते हो? इसलिए कहा हुआ है कि बाप के प्रिय वा प्रभु प्रिय वा दैवी लोक दोनों के प्रिय कौन बन सकते? सच्चाई और सफाई वाले प्रभु-प्रिय भी हैं और लोक-प्रिय भी और अपने आपको भी प्रिय लगते हैं। सच्चाई-सफाई को सभी पसन्द करते हैं। रजिस्टर साफ़ रखना-यह भी सफाई हुई ना। और सच्ची दिल पर साहेब राजी हो जाता है अर्थात् हिम्मत और याद से मदद मिल जाती है।

27.7.71... .. जैसे साइन्स वाले अपने यन्त्रों द्वारा जो भी कोई घटना जैसेकि तूफान वा बारिश का आना वा धरती का हिलना आदि पहले से ही जान लेते हैं तो क्या आप सभी भी मास्टर नालेजफुल बनने से इनएडवान्स अपनी बुद्धि-बल द्वारा नहीं जान सकते हो? दिन-प्रतिदिन जितना-जितना अपनी स्मृति की समर्थी में आते जायेंगे अर्थात् अपनी आत्मा रूपी नेत्र को पावरफुल बनाते जायेंगे, क्लीयर बनाते जायेंगे उतना-उतना कोई भी अगर विघ्न आने वाला होगा तो पहले से ही यह महसूसता आयेगी कि आज कोई पेपर होने वाला है। और जितना-जितना इनएडवान्स मालूम पड़ता जाओगा तो पहले से ही होशियार होने के कारण विघ्नों में सफलता पा लेंगे।

24.5.72... .. आजकल साइन्स द्वारा भी एक सेकेण्ड में कोई भी वस्तु को भस्म कर लेते हैं। तो नालेजफुल मास्टर सर्वशक्तिवान एक सेकेण्ड के दृढ़ संकल्प से वा प्रतिज्ञा से अपनी कमजोरियों को भस्म नहीं कर सकते हो?

23.1.73... .. जब साइन्स वाले पृथ्वी से स्पेस में जाने वालों की हर गति और हर विधि को जान सकते हैं तो क्या याद के बल से आप अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ की गति और विधि को नहीं जान सकते हो? लास्ट में जानेंगे जब आवश्यकता नहीं होगी? अभी से यह जानने का अभ्यास भी होना चाहिए-कैचिंग पॉवर चाहिए। जैसे साइन्स दूर की आवाज को कैच कर चारों ओर सुना सकती है तो आप लोग भी शुद्ध-वाइब्रेशन; शुद्ध-वृत्तियों

व शुद्ध-वायुमण्डल को कैच नहीं कर सकती हो? यह कैचिंग पॉवर प्रत्यक्ष रूप में अनुभव होगी। जैसे आजकल दूर से सीन टेलीविजन द्वारा स्पष्ट दिखाई देते हैं, वैसे दिव्य-बुद्धि बनने से, सिर्फ एक याद के शुद्ध-संकल्प में स्थित रहने से आप सभी को भी एक दूसरे की स्थिति व पुरुषार्थ की गति-विधि ऐसे स्पष्ट दिखाई देगी। यह साइन्स भी कहाँ से निकली? साइलेन्स की शक्ति से ही साइन्स निकली है। साइन्स आप लोगों की वास्तविक स्थिति और सम्पूर्ण स्टेज को समझाने के लिए एक साधन निकला है। क्योंकि सूक्ष्म शक्ति को जानने के लिये तमोगुणी बुद्धि वालों के लिए कोई स्थूल साधन चाहिये। जिस श्रेष्ठ आत्मा में ये चारों ही विशेषतायें, सम्पूर्ण परसेन्टेज में अर्थात् जिसको सेन्ट परसेन्ट कहते हैं, इमर्ज रूप में होंगी, ऐसी आत्मा में सर्व-सिद्धियों की प्राप्ति दिखाई देगी? यह सिद्धि अपने प्रेजेन्ट समय के पुरुषार्थ में दिखाई देती है? कुछ परसेन्टेज में भी दिखाई देती है या यह स्टेज अभी दूर है? कुछ समीप दिखाई देती है। यूँ तो इस मास की रिजल्ट चारों ओर की बहुत अच्छी रही। अब आगे क्या करेंगे? याद की यात्रा में रहने से कोई नये प्लान्स प्रैक्टिकल में लाने के लिए इमर्ज हुए?

30.6.74... .. जैसे साइन्स द्वारा भी स्पेस में चले जाते हैं और धरनी के आकर्षण से परे हो जाते हैं, तो धरनी उनको खींच नहीं सकती। ऐसे ही जब तक नये कल्प में, नये जन्म और नई दुनिया में पार्ट बजाने का समय नहीं आया है, तब तक यह आत्मा स्वतन्त्र है और वह व्यक्त-बन्धनों से मुक्त है। समझा?

5.12.74... .. काल अर्थात् समय। तो काल पर विजयी बने हो? अगर पाण्डव सेना की व शक्ति सेना की यह स्टेज अन्त में आयेगी तो साइलेन्स पॉवर तो साइन्स से कम हो गई। क्योंकि साइन्स ने तो अभी भी इन तत्वों पर विजय प्राप्त कर ली है।

प्रदर्शनी में, आप लोग चित्र दिखाते हो ना, कि रावण ने चार तत्वों पर विजय प्राप्त की है, उसमें काल भी दिखाते हो न? जब रावण ने अर्थात् रावण की शक्ति साइन्स ने अभी भी काफी हद तक तत्वों पर विजय प्राप्त कर ली है, तो साइन्स आपसे पॉवरफुल हुई ना? जब साइन्स की शक्ति अपना प्रत्यक्ष सबूत दे रही है तो साइलेन्स की शक्ति अपना प्रत्यक्ष सबूत क्या अन्त में देगी? समय पर विजय अर्थात् काल पर विजय। इसकी परसेन्टेज अभी कम है। अपने को निराकारी स्थिति व अव्यक्त स्थिति में स्थित तो करते हो, लेकिन जितना समय स्थित रहना चाहते हो, उतना समय उस स्थिति में स्थित नहीं हो पाते हो। स्टेज के अनुभव भी प्राप्त करते हो, मेहनत भी करते हो, लेकिन काल पर विजय नहीं कर पाते हो। इसका कारण क्या है? सोचते हो कि आधा घण्टा पॉवरफुल याद में बैठेंगे और आधा घण्टा बैठते भी हो और प्लैन भी बनाते हो लेकिन जितना-जितना जिस स्टेज के लिए सोचते हो, उतना ही समय उस समय उस स्टेज पर स्थित नहीं होते हो। सोचते हो स्विच ऑन थर्डफ्लोर पर करें, लेकिन पहुँच जाते हो सेकेण्ड फ्लोर पर वा फर्स्ट या ग्राउण्ड फ्लोर तक पहुँच जाते हो। क्योंकि काल पर विजय नहीं। इसका कारण यह है कि बार-बार सारे दिन में समय गँवाने के अभ्यासी हो। व्यर्थ के ऊपर अटेंशन देने से ही काल पर विजय प्राप्त करने में समर्थ बनेंगे। जब तक समय व्यर्थ जाता है, तब तक विजय पाने में समर्थ नहीं बन सकते। इसी कारण, जो मिलन का अनुभव करना चाहते हो व निरन्तर वायदा निभाना चाहते हो वह निभा नहीं सकते। तो अब, अपनी तकदीर की तस्वीर सर्व-तत्वों पर और काल पर सदा विजयी की बनाओ। जब एक-एक सेकेण्ड, व्यर्थ से समर्थ में चेन्ज करो, तब ही विजयी बनेंगे, अच्छा।

10.2.75... .. जब साइन्स द्वारा प्रकृति व पृथ्वी के आकर्षण से परे स्टेज पर पहुँच जाते हैं तो मास्टर सर्व-शक्तिवान् प्रकृति के आकर्षण से परे, अर्थात् व्यक्त भाव से परे, अव्यक्त व ऑलमाइटी अथॉरिटी की स्टेज को प्राप्त करना मुश्किल अनुभव करे – यह तो शोभता नहीं।

11.10.75... .. जैसे साइन्स के यन्त्र दूरबीन द्वारा दूर की चीजों को नजदीक में देखते हैं, ऐसे ही याद के नेत्र द्वारा अपने फरिश्तेपन की स्टेज द्वारा दूर का दृश्य भी ऐसे ही अनुभव करेंगे, जैसे साकार नेत्रों द्वारा कोई दृश्य देख आये। बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देंगे अर्थात् अनुभव होगा। साइन्स का मूल आधार है लाइट। लाइट के आधार से साइन्स का जलवा है, लाइट की ही शक्ति है। ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति का आधार है डिवाइन इनसाइट इन द्वारा साइलेन्स की शक्ति के बहुत वन्दरफुल अनुभव कर सकते हो। यह भी अनुभव होंगे। जैसे स्थूल साधन द्वारा सैर कर सकते हैं, वैसे ही जब चाहें, जहाँ चाहो वहाँ का अनुभव कर सकते हो। न सिर्फ इतना, जो सिर्फ आपको अनुभव हो लेकिन जहाँ आप पहुँचो उन्हीं को भी अनुभव होगा कि आज जैसे प्रैक्टिकल मिलन हुआ। यह है सफलतामूर्त की सिद्धि।

8.12.75... .. जैसे साइन्स के यन्त्रों द्वारा परसेन्टेज का मालूम पड़ जाता है। ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति के द्वारा अर्थात् आत्मा की स्थिति द्वारा यह भी समझ में आ जायेगा। इसको कहा जाता है परखने की शक्ति। संस्कारों द्वारा, वाणी द्वारा और चलन द्वारा परखना यह तो कॉमन बात है लेकिन संकल्पों के वायब्रेशन द्वारा परखना – इसको कहा जाता है परखने की शक्ति समझा? महारथियों के परखने की शक्ति यह है। यह शक्ति इतनी तब बढ़ेगी जो भले कोई सामने न भी हो-लेकिन आने वाला हो अथवा दूर भी हो, लेकिन दूर होते हुए भी परखने की शक्ति के आधार से ऐसे उनको परख सके जैसे कि कोई सामने वाले को परखा जाता है। इसी को ही दूसरे शब्दों में 'शक्तियों की सिद्धि' कहा गया है यह सिद्धि प्राप्त होगी।

14.5.77... .. आजकल के जमाने में दूरदेशी बनने का अभ्यास करना होगा। साइन्स के साधन भी दूर से परखने का प्रयत्न करते हैं। पहले या, तुफान आना और उससे बचाव करना लेकिन अभी ऐसे नहीं है। अभी तो तुफान आ रहा है, उसको जान करके भगाने का प्रयत्न करते हैं। जब साइन्स भी आगे बढ़ रही है तो साइलेन्स (शान्ति) की शक्ति कितनी आगे चाहिए? दूर से भगाने के लिए सदैव 'त्रिकालदर्शीपन की स्थिति में स्थित रहो।' हर बात को तीनों कालों से देखो – क्या बात है? वर्तमान रूप क्या है? और पहले भी इस रूप से आई थी और अब जो आई है उसको समाप्त कैसे करें? तो तीनों को देखने से कभी भी माया का वार आपके ऊपर हार खिलाने के निमित्त नहीं बनेगा।

14.6.77... .. जैसे कल्प पहले की यादगार में भी रावण राज्य की विशेषता सर्व तत्त्वों को अपने वशीभूत करना गाया हुआ है – कल्प पहले माफ़िक इसी कार्य में विदेशी आत्माएं लगी हुई हैं। साथ-साथ विज्ञानी आत्माएं आप योगी आत्माओं के लिए, आपके श्रेष्ठ योग की जो प्रालब्ध स्वर्ग के राज्य भाग की प्राप्ति होनी है; उस आने वाले राज्य में सर्व सुखों के साधन आप राजयोगी आत्मों को प्राप्त हों, ऐसे साधन न जानते हुए भी बनाने में खूब व्यस्त हैं। अर्थात् आप होवनहार देवताओं के लिए प्रकृति के सतोप्रधान श्रेष्ठ साधनों की इन्वेंशन करने में आपकी ही सेवा में लगे हुए हैं। जैसे आप को करने की एक ही लगन है। बाप द्वारा सर्व प्राप्तियों की लगन में रहते, वैसे विदेशी आत्माएं भी अपने साइन्स बल द्वारा सृष्टि को स्वर्ग बनाने के इच्छुक हैं। स्वर्ग अर्थात् जहाँ अप्राप्त कोई वस्तु न हो। इसी कार्य के लगन में लगी हुई आत्माएं ड्रामानुसार निमित्त बन अपना कार्य

बहुत अच्छी तरह से कर रही हैं। लेकिन आपके लिए ही कर रही हैं। ऐसे आप सबको अनुभव होता है कि यह सब हमारी तैयारियों में लगे हुए हैं? कितनी सच्चाई, सफ़ाई से सेवा करने वाले हैं। अगर उन्हीं का कार्य देखो और लगन देखो तो अनुभव करेंगे। सेवा के कार्य में अच्छा ही वफ़ादारी से दिन रात लगे हुए हैं। सेवाधारी तो एक ही लगन में मगन हैं। लेकिन आप आत्माएं जो सर्व सुखों के साधन प्राप्त करने वाली हैं, विश्व के राज्य के अधिकारी बनने वाली हैं, वह इसी लगन में मगन रहती हो, या विघ्न लगन को अविनाशी बनाने नहीं देते? लगन की अग्नि अविनाशी प्रज्वलित रहती है, वा अभी लगन और अभी विघ्न? विदेश के विज्ञानी आत्माओं में निरन्तर अपने कार्य के लगन की विशेषता देखी, तो जो आपके सेवाधारियों में गुण हैं – वह विश्व का मालिक बनने वाली आत्माओं में भी गुण हैं ना। अपने आपको चैक करो। दूसरी तरफ विदेश में परमात्म-ज्ञानी बच्चों को देख उन्हीं में भी वर्तमान समय एक ही दृढ़ संकल्प की लगन है, उमंग, उत्साह है कि अब जल्दी से जल्दी बाप का संदेश देवें। विदेश द्वारा निमित्त बनी हुई विशेष आत्माएं जिन आत्माओं के अनुभव के आवाज़ से भारतवासी कुम्भकरण जागेगे। ऐसे निमित्त बनी हुई आत्माओं को बाप के सम्मुख प्रत्यक्ष करें अर्थात् सम्बन्ध व सम्पर्क में लावें। समीप समय की सूचना विदेश द्वारा भारत में फैलावें। इसी एक लगन में दृढ़ संकल्प के कंगन में बंधे हुए परमात्म-ज्ञानी बच्चों को देखा। उन्हीं को भी न दिन, न रात दोनों समान हैं। इस लगन में मगन हैं।

13.1.78... .. जब साइन्स का यंत्र गर्मी का या सर्दी का वायब्रेशन वायुमण्डल बना सकते हैं तो मास्टर सर्वशक्तिवान अपने साइलेन्स अर्थात् याद की शक्ति से अपने लगन की स्थिति द्वारा जो वायुमण्डल या वायब्रेशन फैलाना चाहें वह सब बना सकते हैं। ऐसी प्रैक्टिकस करो। अभी-अभी सुख का या शान्ति का वायुमण्डल या शक्ति रूप का वायुमण्डल बना सकते हो। जिस वायुमण्डल के अन्दर जो भी आत्माएँ हों वह अनुभव करें कि यहाँ दुःख से सुख के वायुमण्डल में आ गये हैं। महसूस करें कि यहाँ बहुत सुख प्राप्त हो रहा है। जैसे एयरकण्डीशन में सर्दी व गर्मी का अनुभव करते हैं कि सचमुच गर्मी से ठण्डी हवा में आ गये हैं। ठण्डी से गर्मी में आ गये हैं। ऐसे आपकी चलन और चेहरे द्वारा आपके संकल्प शक्ति द्वारा सुख-शान्ति और शक्ति का अनुभव करें। जैसे एक सेकेण्ड में अंधकार से रोशनी का अनुभव किया ना। ऐसे आजकल के मनुष्य अपनी शक्ति से अनुभव नहीं कर सकेंगे। लेकिन आप सबको अपनी प्राप्ति के आधार से, याद के आधार से अनुभवी बनाना पड़ेगा। यह है वास्तविक सहज राजयोग या कर्मयोग की परिभाषा।

1.12.78... .. जब आसुरी रावण अपने साइन्स की शक्ति से प्रकृति अर्थात् तत्वों को आज भी अपने कन्ट्रोल में रख रहे हैं तो आप ईश्वरीय सन्तान मास्टर रचता, मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे यह प्रकृति और परिस्थिति दासी नहीं बन सकती! अपने साइलेन्स की शक्ति को अच्छी तरह से जानते हो वा बहुत शक्तियाँ मिलने के कारण उनके महत्त्व को भूल जाते हा? जब साइन्स की अणु शक्ति महान कर्तव्य कर सकती है तो आत्मिक शक्ति, परमात्म-शक्ति क्या कर सकती है उसका अनुभव अभी बहुत थोड़ा और कभी-2 करते हो। परमात्म- शक्ति को अपना बना सकते, रूप परिवर्तन करा सकते तो प्रकृति और परिस्थिति का रूप और गुण परिवर्तन नहीं कर सकते ? तमोगुणी प्रकृति को स्वयं की सतोगुणी स्थिति से परिवर्तन नहीं कर सकते हैं? परिस्थिति पर स्व-स्थिति से विजय नहीं पा सकते हैं? ऐसे मास्टर रचता शक्तिशाली बने हो? बाप-दादा बच्चों की श्रेष्ठ प्राप्ति को देख यही कहते एक-एक बच्चा ऐसी श्रेष्ठ आत्मा है जो एक बच्चा भी बहुत कमाल कर सकता है! तो इतने क्या करेंगे! चाबी तो बहुत बढ़िया मिली है – लगाने वाले लगाते नहीं है। सभी को चाबी मिली है। न कि

कोई कोई को। नये पुराने छोटे बड़े सब अधिकारी हैं जैसे आज-कल की 68 दुनिया में भी स्वागत अर्थात् कोई गेस्ट की रिसेप्शन करते हैं तो सिटी की चाबी देते हैं ना। बाप-दादा ने भी हर बच्चे की रिसेप्शन में बच्चों को स्वयं की और खज़ानों की चाबी आने से ही दे दी। ऐसी जादू की चाबी जिससे जिस शक्ति का आह्वान करो वह शक्ति स्वरूप बन सकते हो। एक सेकेण्ड में इस जादू की चाबी द्वारा जिस लोक में जाने चाहो उस लोक के वासी बन सकते हो। जिस काल को जानने चाहो उस काल को जानने वाले रूहानी ज्योतिषी बन सकते हो। संकल्प शक्ति को जिस रफ्तार से जिस मार्ग पर ले जाना चाहो उसी रीति से संकल्प शक्ति के अधिकारी बन सकते हो – ऐसी चाबी काम में क्यों नहीं लगाते? महत्त्व को नहीं जाना है क्या? किनारे रखने के संस्कार इमर्ज हो जाते। अच्छी चीज़ को सम्भाल कर किनारे रखते हैं ना कि समय पर काम में लायेंगे! लेकिन यह चाबी हर समय कार्य में लाओ। चाबी लगाओ और खज़ाना लो। इसमें एकनामी नहीं करो – लेकिन एकनामी बनो। एकनामी बनना ही चाबी को लगाने का तरीका है।

3.12.78... .. जैसे साइन्स के साधन बुरी चीज़ को परिवर्तन कर अच्छा बना देते, रूप परिवर्तन कर देते तो आप सदा शुभचिंतक, सर्व आत्माओं के बोल के भाव को परिवर्तन नहीं कर सकते ? सदा भाव और भावना श्रेष्ठ रखो तो सदा पुण्य आत्मा बन जायेंगे। स्वयं का परिवर्तन करो न कि अन्य के परिवर्तन का सोचो। स्वयं का परिवर्तन ही अन्य का परिवर्तन है। इसमें पहले मैं, ऐसा सोचो - इस मरजीवा बनने में ही मज़ा है। इसी को ही महाबली कहा जाता है। घबराओ नहीं। खुशी से मरो- यह मरना तो जीना ही है, यही सच्चा जीवदान है।

10.12.78... .. जैसे आजकल साइन्स के साधनों द्वारा संकल्पों की गति या मन्सा स्थिति को चैक कर सकते हैं वैसे मधुबन निवासियों के संकल्पों की गति या मानसिक स्थिति चारों ओर फैलती है। इसलिए हर संकल्प पर भी अटेन्शन हो। इसमें अलबेलापन न हो। मधुबन निवासी मधुबन में बैठे हुए भी किसी प्रकार के विशेष संकल्प द्वारा वायब्रेशन फैलाने चाहे तो इस एक स्थान पर बैठे हुए भी चारों ओर फैला सकते हैं – जैसे स्थूल चीज़ की खुशबू चारों ओर आटोमेटिकली फैल जाती है वैसे यह वायब्रेशन संकल्प के द्वारा चारों ओर स्वतः फैल जाएं, मधुबन निवासियों की यह विशेष सेवा है।

19.12.78... .. जैसे आजकल साइन्स द्वारा अभी-अभी बीज डाला अभी-अभी फल मिला। पहले से तीव्रगति है जो बीज डाला वह प्राप्त हो जाता है। ऐसे ही अपने साइलेन्स के बल से सहज और तीव्रगति से प्रत्यक्षता भी देखेंगे, हाई जम्प लगाने वाले हो ना। पत्थर तोड़ने वाले तो नहीं। जैसी निमित्त आत्मायें होती हैं, वैसे वायुमण्डल भी बनता है, स्वयं सहयोगी हैं तो आने वाली आत्माओं को भी सहयोगी बना देती। स्वयं उलझन में होंगे तो आने वाली आत्माओं में भी वही वायब्रेशन फैलता है। तो निमित्त आत्माओं को सदा निर्विघ्न एक बाप की लगन में मगन रहने वाले, इसी स्थिति में रहना है।

28.12.78... .. जैसे साइन्स के बाम्बस द्वारा देश का देश समाप्त हो पहला दृश्य कुछ भी नज़र नहीं आता – सब समाप्त हो जाता है ऐसे इस अन्तिम बाम्ब द्वारा सर्व अल्पकाल के साधना रूपी साधन समाप्त हो एक ही यथार्थ साधन राजयोग द्वारा हरेक के बीच बाप प्रत्यक्ष होगा। विश्व में विश्व पिता स्पष्ट दिखाई देगा। हर धर्म की आत्मा द्वारा एक ही बोल निकलेगा कि हमारा बाप हिन्दुओं वा मुसलमानों का नहीं-सबका बाप। इसको कहा जाता है परमात्म बाम्ब द्वारा अन्तिम प्रत्यक्षता।

1.1.79... जैसे विनाशकारी ग्रुप बहुत तीव्रगति से अपने कार्य को आगे बढ़ाते जा रहे हैं - बहुत रिफ़ाइन सेकेण्ड में शारीरिक बन्धन से मुक्त होने अर्थात् शारीरिक दुःख से सहज मुक्त होने, अनेक आत्माओं को बचाने के सहज साधन बना रहे हैं। किस आधार से? साइन्स की अथार्टी से। ऐसे स्थापना के कार्य में निमित्त बने हुए मास्टर आलमाइटी अथार्टी ग्रुप-आत्माओं को जन्म-जन्मान्तर के लिए माया के बन्धन से, माया द्वारा प्राप्त हुए अनेक प्रकार के दुःखों से, एक सेकेण्ड में मुक्त करने वा सदाकाल के लिए सुख- शान्ति का वरदान देने, हरेक आत्मा को ठिकाने लगाने के लिए तैयार हो! विनाशकारी ग्रुप अब भी एवररेडी है। सिर्फ आर्डर की देरी है - ऐसे स्थापना निमित्त बने हुए ग्रुप एवररेडी हो? क्योंकि स्थापना का कार्य सम्पन्न होना अर्थात् विनाशकारियों को आर्डर मिलना है। जैसे समय समीप अर्थात् पूरा होने पर सुई आती है और घण्टे स्वतः ही बजते हैं - ऐसे बेहद की घड़ी में स्थापना की सम्पन्नता अर्थात् समय पर सुई का आना और विनाश के घण्टे बजना। तो बताओ सम्पन्नता में एवररेडी हो?

10.1.79... जैसे आजकल साइन्स वाले इन्वेन्शन करते हैं दुख कम हो - और जिस कार्य अर्थ करते हैं वह सफलता भी ज्यादा हो - इसी प्रकार पुरुषार्थ के साधनों में ऐसा सहज साधन इनवैन्ट को अपने अनुभवों के आधार पर जो जैसे सेकेण्ड में साइन्स के साधन विधि को पाता है वैसे यह साइलेन्स का साधन सेकेण्ड में विधि प्राप्त हो। बाप नालेज देते हैं लेकिन जैसे साइन्स प्रयोगशालाओं में सब इन्वेन्शन प्रैक्टिकल में लाते हैं, ऐसे प्रयोग में तो आप बच्चे लाते हैं, प्रयोग में लाने वाले साधन अर्थात् अनुभव में लाने वाले साधन - उनमें से ऐसा कोई सहज साधन सुनाओ जिसमें मेहनत कम हो और अनुभव ज्यादा हो - ऐसे चारों ओर के वातावरण, चारों ओर की कमजोर आत्माओं के समाचार प्रमाण ऐसा साधन निकालो - जैसी बीमारी होती है वैसी दवाई निकाली जाती है - तो चारों ओर के समाचार अनुसार ऐसा साधन निकालो और फिर प्रैक्टिकल करके दिखायें अब महारथियों को ऐसा नया साधन इनवैन्ट करना चाहिए। ऐसा ग्रुप हो जिसको रीसर्च ग्रुप कहते हैं - अब समझा महारथियों को क्या करना है - फिर कारोबार भी हल्की हो जायेगी।

जैसे पहले-पहले मौन व्रत रखा था तो सब फ्री हो गए थे, टाइम बच गया था - तो ऐसा कोई साधन निकालो जिससे सबका टाइम बच जाए - मन का मौन हो व्यर्थ संकल्प आवे ही नहीं। यह भी मन का मौन है ना। जैसे मुख से आवाज न निकले वैसे व्यर्थ संकल्प न आयें - यह भी मन का मौन है। तो व्यर्थ खत्म हो जावेगा। सब समय बच जावेगा, तब फिर सेवा आरम्भ होगी। मन के मौन से नई इन्वेन्शन निकलेगी - जैसे शुरू के मौन से नई रंगत निकली वैसे इस मन के मौन से नई रंगत होगी। तो अभी पहले निमित्त कौन बनेंगे। महारथी ग्रुप - जो बाप द्वारा युक्तियाँ मिलती रहती हैं उनको प्रयोग करने के रूप में लाओ। वह रूप रेखा सभी को नहीं आती। वर्णन करना आता है लेकिन उसी साधन से सिद्धि को प्राप्त करें वह प्रयोग करना नहीं आता है - इसलिए योग भी नहीं लगता - तो ऐसा प्लैन बनाओ जिससे सहज ही विधि प्राप्त हो। अच्छा।

12.1.79... इतनी सिक्कीलधे श्रेष्ठ आत्मायें हो जो स्वयं भगवान आपको पढ़ाने के लिए परमधाम से आते हैं। लण्डन वा अमेरिका से नहीं आते हैं - इस लोक से भी पार जहाँ तक साइन्स वाले स्वप्न में भी पहुँच नहीं सकते ऐसे परमधाम से स्पेशल आपके पढ़ाने के लिए आते हैं। और फिर पढ़ाने की फी नहीं लेते। और ही पढ़ाई की प्रालबध स्वर्ग का स्वराज्य स्वयं नहीं लेते, आपको देते हैं। तो इससे बड़ी खुशी और क्या होती है। इस स्मृति से खज़ाने को यूज करो - इससे आगे चलो।



14.1.79... .. अभी एक जन्म थोड़े समय की आप सेवा कर ऐसे सेवाधारी तैयार करो जो अनेक जन्म आपकी सेवा करें। साइन्स वालों का भी वहाँ पार्ट है, जो वहाँ के सुख के साधनों की विशेषता है वह यहाँ से सहज मार्ग का बीज डालकर जायेंगे, यही बीज वहाँ काम में आयेगा। तो विदेश में यह सेवा अभी तीव्रगति से होनी चाहिए। राजधानी तैयार करो, प्रजा भी तैयार करो, रायल फैमली भी तैयार करो, सेवाधारी भी तैयार करो। कोई भी ऐसा वर्ग न रह जाए जो उल्हना दे कि हमें सन्देश नहीं मिला है।

30.1.79... .. जैसे साइन्स के साधनों द्वारा भी वस्तु सेकेण्ड में परिवर्तन हो जाती है वैसे साइलेन्स की शक्ति से, देही के सम्बन्ध से बंधन खत्म।

12.11.79... .. वर्तमान समय सर्व की एक ही पुकार कौन-सी है, वह जानते हो? धार्मिक नेताओं, राजनेताओं और सर्वश्रेष्ठ साइन्स वाले और साथ-साथ आम जनता की एक ही पुकार है कि अब जल्दी में कुछ बदलना चाहिए। सर्व क्षेत्र की आत्मायें अब अपने को फेल अनुभव करने लगी हैं। अब कोई सुप्रीम पावर चाहिए। इस चाहना का दीपक वा इस आवश्यकता को महसूस करने के संकल्प का दीपक जग चुका है। अब उसको और तेज़ करने के लिए आप सर्व आत्माओं के संकल्प का घृत चाहिए जिससे सर्व की पुकार के ऊपर उपकार कर सको। (आज दो-चार बार बीच-बीच में बिजली जाती रहती थी) देखो यह लाईट भी शिक्षा दे रही है। जैसे लाइट एक सेकेण्ड में आती और चली जाती है, ऐसे ही आप भी एक सेकेण्ड में पुकार वालों के पास उपकारी बन पहुँच जाओ। ऐसा अभ्यास आने और जाने का हो। अभी-अभी पुकार सुनी और अभी- अभी पहुँचे। अब सर्व की पुकार मेहनत से छूट सहज प्राप्ति करने की है। साइन्स वाले भी बहुत मेहनत कर थक गए हैं। धार्मिक आत्मायें भी साधना करके थक गई हैं। राजनैतिक लोग अनेक दल-बदलुओं के चक्र से थक गये हैं। और आम जनता समस्याओं से थक गई है। अब सबकी थकावट उतारने वाले कौन?

26.11.79... .. जैसे साइन्स के साधन एरोप्लेन जब उड़ते हैं तो पहले चेकिंग होती है फिर माल भरना होता है। जो भी उसमें चाहिए – जैसे पेट्रोल चाहिए, हवा चाहिए, खाना चाहिए, जो भी चाहिए, उसके बाद धरती को छोड़ना होता है फिर उड़ना होता है। ब्राह्मण आत्मा रूपी विमान भी अपने स्थान पर तो आ ही गये। लेकिन जो डायरेक्शन था अथवा है एक सेकेण्ड में उड़ने का, उसमें कोई चेकिंग करने में रह गये। मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ – इसी चेकिंग में रह गये और कोई ज्ञान के मनन द्वारा स्वयं को शक्तियों से सम्पन्न बनाने में रह गये। मैं मास्टर ज्ञानस्वरूप हूँ, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ – इस शुद्ध संकल्प तक रहे, लेकिन स्वरूप नहीं बन पाये। तो दूसरी स्टेज भरने तक रह गये और कोई फिर भरने में बिज़ी होने के कारण उड़ने से रह गये। क्योंकि शुद्ध संकल्प में तो रमण कर रहे थे लेकिन यह देह रूपी धरती को छोड़ नहीं सकते थे। अशरीरी स्टेज पर स्थित नहीं हो पाते थे। बहुत चुने हुए थोड़े से बाप के डायरेक्शन प्रमाण सेकेण्ड में उड़कर सूक्ष्मवतन या मूलवतन में पहुँचे। जैसे बाप प्रवेश होते हैं और चले जाते हैं, तो जैसे परमात्मा प्रवेश होने योग्य हैं वैसे मरजीवा जन्मधारी ब्राह्मण आत्मायें अर्थात् महान आत्मायें भी प्रवेश होने योग्य हैं। जब चाहो कर्मयोगी बनो, जब चाहो परमधाम निवासी योगी बनो, जब चाहो सूक्ष्मवतन वासी योगी बनो। स्वतन्त्र हो। तीनों लोकों के मालिक हो। इस समय त्रिलोकीनाथ हो। तो नाथ अपने स्थान पर जब चाहें तब जा सकते हैं।

जैसे साइन्स के साधन तूफान को, पहाड़ों के रास्ते को चेन्ज कर सकते हैं ना। वह साइन्स तो अपूर्ण है। साइन्स कभी सम्पूर्ण हो नहीं सकती क्योंकि मनुष्य-मत है। कभी नीचे कभी ऊपर होती रहती है। तो अनलॉफुल हो गई ना। बाप की श्री मत पर चलने वाले तो जो चाहें वह कर सकते हैं। तो विघ्नों को दूर करने का बहुत समय का अभ्यास चाहिए।

3.12.79... .. जैसे साइन्स के साधनों द्वारा समय और आवाज़ कितना भी दूर होते समीप हो गया है ना। जैसे प्लेन द्वारा समय कितना नज़दीक हो गया है, थोड़े समय में कहाँ से कहाँ पहुँच सकते हो। टेलीफोन द्वारा आवाज़ कितना समीप हो गया है। लण्डन के व्यक्ति का आवाज़ भी ऐसे सुनाई देगा जैसे सम्मुख बात कर रहे हैं। ऐसे ही टेलीविजन के साधनों द्वारा कोई भी दृश्य वा व्यक्ति दूर होते हुए भी सम्मुख अनुभव होता है। साइन्स तो आपकी रचना है। आप मास्टर रचयिता हो। साइलेन्स की शक्ति से आप सब भी विश्व की किसी भी दूर रहने वाली आत्मा का आवाज़ सुन सकते हो। कौन-सा आवाज़? साइन्स मुख का आवाज़ सुनाने का साधन बन सकती है लेकिन मन का आवाज़ नहीं पहुँचा सकती। साइन्स की शक्ति से हर आत्मा के मन का आवाज़ इतना ही समीप सुनाई देगा जैसे कोई सम्मुख बोल रहा है। आत्माओं के मन में अशान्ति, दुःख की स्थिति के चित्र ऐसे ही स्पष्ट दिखाई देंगे जैसे टी.वी. द्वारा दृश्य वा व्यक्ति स्पष्ट देखते हो। जैसे इन साधनों का कनेक्शन जोड़ा, स्वीच ऑन किया और स्पष्ट दिखाई और सुनाई देता है। ऐसे ही बाप से कनेक्शन जोड़ा, श्रेष्ठ भावना और कामना का स्वीच ऑन किया तो दूर की आत्माओं को भी समीप अनुभव करेंगे। इसको कहा जाता है विश्व-कल्याणकारी। ऐसी स्थिति को बनाने के लिए विशेष कौन-सा साधन अपनाना पड़े। साइलेन्स पावर बढ़ाने की विधि और सिद्धि इन सबका आधार है – साइलेन्स। वर्तमान समय साइलेन्स की शक्ति जमा करो। मन का आवाज़ संकल्पों के रूप में आवेगा। मन के आवाज़ अर्थात् व्यर्थ संकल्प का समाप्त कर एक समर्थ संकल्प में रहो। संकल्पों के विस्तार को समेट कर सार रूप में लाओ तब साइलेन्स की शक्ति स्वतः ही बढ़ती जावेगी।

19.12.79... .. जैसे आजकल साइन्स के साधनों द्वारा मन की एकाग्रता को चैक करते हैं ना। लण्डन वा अन्य स्थानों पर किया ना – ये हैं साइन्स के साधन। लेकिन आपको हर कदम में अपनी चैकिंग के साधन साथ-साथ रखने चाहिए। जैसे वह चैकिंग के औज़ार साथ में रखते हैं और चैक करते समय ऊपर डालते हैं। सर्विसएबुल बच्चों को हर समय चैकिंग का साधन साथ रखना चाहिए। तो टीचर्स बनना कोई छोटी-सी बात नहीं है, नाम ही नहीं है लेकिन नाम के साथ काम भी है।

28.12.79... .. वैसे भी आजकल की दुनिया में हलचल से तंग आ गये हैं। चाहे राजनीति की हलचल, चाहे वस्तुओं के मूल्य की हलचल, करैन्सी की हलचल, कर्मभोग की हलचल, धर्म की हलचल – ऐसे सर्व प्रकार की हलचल में तंग आ गये हैं। जितने साइन्स के साधन पहले सुख के साधन अनुभव होते थे आज वह साधन भी हलचल अनुभव कराने वाले हो गये हैं। यहाँ भी ब्राह्मण आत्मायें संकल्प में व सम्पर्क में हलचल से ही थकती हैं। इसलिए सहज विधि है – एकाग्रता को अपनाओ। इसके लिए सदा एकान्तवासी बनो। एकान्तवासी से एकाग्र सहज ही हो जायेंगे।

. अमेरिका में जो सेन्टर खुला है इसमें भी रहस्य है, विशेष कार्य होना है। विनाश और स्थापना दोनों का साक्षात्कार साथसाथ होगा। उस तरफ विनाशकारी और इस तरफ पीस मेकर। साइन्स और साइलेन्स, दोनों शक्तियों का मुकाबला देखेंगे। चारों ओर से अमेरिका को परिवर्तन करने का घेराव डालो। महावीर का दिखाते हैं न कि वह सारी पहाड़ी की पहाड़ी को ले आया, तो आप अमेरिका को परिवर्तन कर साइलेन्स की शक्ति का नाम बाला करो। सदा याद रखो हम शान्ति के सागर के बच्चे शान्ति देवा हैं। जो भी सामने आये उसे पीस मेकर बन शान्ति का दान दो।

7.1.80... .. जब साइन्स की शक्ति से बिना सीज़न के अनाज पैदा कर लेते हैं तो क्या साइलेन्स की शक्ति संगमयुग की फुल सीज़न होते हुए भी हर मास का फल नहीं दे सकती? जैसे वह लोग साधन अपनाते हैं जो असम्भव से सम्भव कर के दिखाते हैं तो साधना द्वारा पंजाब की धरती को परिवर्तित करो। प्रत्यक्ष फल देना पड़े।

5.3.84...तो अभी इसी साइन्स की शक्ति को साइलेन्स की शक्ति के आधार से बहुत ही अच्छे कार्य में लगाने के निमित्त बनो। इसमें भी नोबिल प्राइज लेंगे ना! क्योंकि आवश्यकता इसी कार्य की है। तो जब जिस कार्य की आवश्यकता है उसमें निमित्त बनने वाले को सभी श्रेष्ठ आत्मा की नजर से देखेंगे। तो समझा क्या करना है! अभी साइन्स और साइलेन्स का कनेक्शन कैसा है और दोनों के कनेक्शन से कितनी सफलता हो सकती है इसकी रिसर्च करो। रिसर्च की रुचि है ना! अभी यह करना। इतना बड़ा कार्य करना है। ऐसी दुनिया बनायेंगे ना।

5.3.85...साइलेन्स की शक्ति जितना जमा कर सको, एक सेकण्ड में स्वीट साइलेन्स की अनुभूति में खो जाओ क्योंकि साइन्स और साइलेन्स, साइंस भी अति में जा रही है। तो साइंस पर साइलेन्स के शक्ति की विजय परिवर्तन करेगी। साइलेन्स की शक्ति से दूर बैठे किस आत्मा को सहयोग भी दे सकते हो। सकाश दे सकते हो। भटका हुआ मन शान्त कर सकते हो। ब्रह्मा बाबा को देखा जब भी कोई अनन्य बच्चा थोड़ा हलचल में वा शारीरिक हिसाब-किताब में रहा तो सवेरे-सवेरे उठकर बच्चे को साइलेन्स के शक्ति की सकाश दिया और वह अनुभव करते थे। तो अन्त में इस साइलेन्स की सेवा का सहयोग देना पड़ेगा। सरकमस्टांश अनुसार यह बहुत ध्यान में रखो, साइलेन्स की शक्ति या अपने श्रेष्ठ कर्मों की शक्ति जमा करने की बैंक सिर्फ अभी खुलती है और कोई जन्म में जमा करने की बैंक नहीं है। अभी अगर जमा नहीं किया फिर बैंक ही

14.1.80...जैसे साइन्स वालों ने चन्द्रमा पर जाकर थोड़ी झलक दिखाई तो सबने प्लॉट खरीदने की तैयारी शुरू कर दी, तो कम से कम साइलेन्स की शक्ति वाले नई दुनिया में प्लॉट खरीदने की तैयारी तो करा दो। बुकिंग तो

करा लें। जैसे साइन्स की कोई भी इन्वेन्शन पहले प्रयोगशाला में लाकर अनाउन्स करते हैं, ऐसे आप लोग भी पहले अपनी एरिया की प्रयोगशाला में प्लैन का प्रयोग करो। फिर सब मानेंगे। प्लैन की प्रैक्टिकल सफलता निकले। जो प्रदर्शनी वा मेला देख चुके उनके लिए अब नया प्लैन चाहिए। नई आकर्षण चाहिए। तो प्लैनिंग बुद्धि प्लैन निकालो। ड्रामा अनुसार जो विशेषता मिली हुई है, उस विशेषता को कार्य में लगाना अर्थात् विशेष लॉटरी लेना।

21.1.80... क्योंकि आजकल साइन्स के युग में हर बात के प्रत्यक्ष प्रमाण व प्रूफ के द्वारा ही समझना चाहते हैं। सुनने-सुनाने से निश्चय नहीं करते। परमात्म ज्ञान को निश्चय करने के लिए प्रत्यक्ष प्रूफ देखना चाहते हैं। **प्रत्यक्ष प्रूफ है आप सबका जीवन**। जीवन में भी यही विशेषता दिखाई दे जो आज तक कोई भी आत्म-ज्ञानी महान आत्मायें कर न सकी हों, बना न सकी हों। ऐसी असम्भव से सम्भव होने वाली बातें परमात्म-ज्ञान का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। सबसे बड़ी असम्भव, सम्भव होने वाली बात 'प्रवृत्ति में रहते पर-वृत्ति में रहना'। प्रवृत्ति में रहते इस देह और देह की दुनिया के सम्बन्धों से परे रहना।

21.1.80... जब साइन्स वाले रेत में खेती पैदा कर सकते हैं तो क्या साइलेन्स वाले धरती का परिवर्तन नहीं कर सकते! संकल्प भी सृष्टि बना देता है। इसलिए सदा धरती को परिवर्तन करने की शुभ भावना हो। अपनी चढ़ती कला के वायब्रेशन द्वारा धरती का परिवर्तन करते चलो। स्व परिवर्तन से धरती परिवर्तन हो जायेगी। धरती में हल चलाने वाले हो ना। थकने वाले तो नहीं? हल चलाने वाले अच्छे अथक होते हैं, कलराठी जमीन को भी हरा-भरा कर देते हैं। अब दिलशिकस्त नहीं होना, दिलखुश रहना तो आपकी खुशी सबको स्वतः ही आकर्षित करेगी।

4.2.80... जो साइन्स के साधन अभी निकाल रहे हैं उसका रिफाइन रूप वहाँ पहले से ही है। यह टी.वी. तो अभी निकली है लेकिन आप बच्चों को सूक्ष्मवतन में स्थूल वतन का दृश्य स्थापना के आदि में ही दिखाकर अनुभव कराया है। साइन्स वाले मेहनती बच्चे हैं, अब सितारों तक मेहनत कर रहे हैं। चन्द्रमा में कुछ नहीं मिला तो सितारों ही सही। लेकिन आप बच्चे साइलेन्स की शक्ति से सितारों से भी परे परमधाम का अनुभव आदि से कर रहे हो फिर भी हरेक बच्चे को मेहनत का फल जरूर मिलता है। उनको भी विश्व में नाम-मान-शान और सफलता की अल्पकाल की खुशी प्राप्त हो जाती है।

4.2.80... यह जो भिन्न-भिन्न प्रकार के साधनों द्वारा सफलता अर्थात् सिद्धि को प्राप्त करते हैं यह सब सिद्धियाँ अर्थात् साइन्स का भी रिफाइन रूप, सफलता रूप सिद्धि के रूप में आपके सेवाधारी बनेंगे। अभी तो एक्सीडेन्ट भी है और प्राप्ति भी है। लेकिन रिफाइन सिद्धि रूप में दुःख का कारण समाप्त हो सदा सुख और सफलता रूप बन जायेंगे।

27.3.81..... जब मैं-पन आता है तो बोझ सिर पर आ जाता है। मैं क्या करूँ, कैसे करूँ, करना पड़ता है। क्या आप करते हो?वा सिर्फ नाम आपका है काम बाप का रहता है। उस दिन खिलौना देखा – वह खुद चल रहा था या कोई चला रहा था? साइन्स चला सकती है, बाप नहीं चला सकता? यह तो बाप बच्चों का नाम बाला करने के लिए निमित्त बना देते हैं। क्योंकि बाप इस नाम रूप से न्यारा है। जब बाप आपको आफ़र कर रहे हैं कि बोझ बाप को दे दो आप सिर्फ नाचो, उड़ो फिर बोझ क्यों उठाते हो? कैसे सर्विस होगी, कैसे भाषण करेंगे यह तो क्वेश्चन ही नहीं। सिर्फ निमित्त समझ कने-क्शन पावर हाउस से जोड़कर बैठ जाओ। फिर देखो भाषण होता है वा नहीं! वह खिलौना चल सकता है, आपका मुख नहीं चल सकता? आपकी बुद्धि में प्लैन नहीं चल सकते? कैसे कहने से जैसे तार के ऊपर रबड़ आ जाता है। रबड़ आ जाने के कारण कनेक्शन जुटता नहीं और प्रत्यक्षफल नहीं दिखाई देता। इसलिए थक जाते हो – पता नहीं क्या होगा! बाप ने निमित्त बनाया है तो अवश्य होगा।

22.10.81..... वैसे तो अन्त में यह सब साधन समाप्त हो जायेंगे। यह वीडियो नहीं काम में आयेगा लेकिन विल-पावर का सेट काम में आयेगा। लेकिन साइन्स वाले बच्चों ने जो इतना समय, एनर्जी, मनी खर्च करके साधन बनाया है, बच्चों की मेहनत बाप की सेवा में लग रही है। इसलिए बाप भी बच्चों की मेहनत देख खुश होते हैं कि सेवा के साधन अच्छे बनाये हैं! फिर भी हैं तो बच्चे ना! बाप, बच्चों की इन्वेन्शन देख खुश तो होंगे ना! जिस भी कार्य में लगे हुए हैं उसी कार्य में सफलता पा रहे हैं। चाहे अल्पकाल की हो लेकिन सफलता तो है ना! इसलिए बापदादा वीडियो सेट को नहीं देखते लेकिन उन बच्चों को देखते हैं।

31.12.81..... यह संगठन स्वतन्त्र आत्मायें अर्थात् उड़ते पंखियों का है। सभी स्वतन्त्र हो ना? आर्डर मिले अपने स्वीट होम में चले जाओ तो कितने समय में जा सकते हो? सेकण्ड में जा सकते हो ना! आर्डर मिले अपने मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज द्वारा, अपनी सर्वशक्तियों की किरणों द्वारा अंधकार में रोशनी लाओ, ज्ञान सूर्य बन अंधकार को मिटा लो, तो सेकण्ड में यह बेहद की सेवा कर सकते हो? ऐसे मास्टर ज्ञान सूर्य बने हो? जब साइन्स के साधन सेकण्ड में अंधकार से रोशनी कर सकते हैं तो हे ज्ञान सूर्य बच्चे, आप कितने समय में रोशनी कर सकते हो? साइन्स से तो साइलेन्स की शक्ति अति श्रेष्ठ है। तो ऐसे अनुभव करते हो कि सेकण्ड में स्मृति का स्विच आन करते अंधकार में भटकी हुई आत्मा को रोशनी में लाते हैं? क्या समझते हो? सात दिन के सात घण्टे का कोर्स दे अंधकार से रोशनी में ला सकते हो वा तीन दिन के योग शिविर से रोशनी में ला सकते हो?

31.12.81..... जैसे बाप की महिमा में गायन करते हैं- “निर्बल को बल देने वाला”। जैसे स्थूल में निर्बल आत्माओं को साइन्स के साधनों से बलवान बना देते हैं। लंगड़े को चलाने की शक्ति दे देते हैं। इसी प्रकार हरेक कमज़ोर को शक्ति के साधन दे देते हैं। ऐसे आप सभी भी, चाहे ब्राह्मण परिवार में, चाहे विश्व की आत्माओं में हर आत्मा को, निर्बल को बल देने वाले महाबलवान बनो। जैसे वह लोग नारा लगाते हैं- गरीबी हटाओ, वैसे आप निर्बलता को हटाओ। “हिम्मत और मद” निमित्त बन बाप से दिलाओ। तो इस वर्ष का विशेष नारा कौन-सा

हुआ? “निर्बलता हटाओ”। तब ही जो सलोगन मिला सदा उत्साह दिलाने का, वह प्रैक्टिकल में ला सकेंगे। समझा, नये वर्ष में क्या करना है?

16.4.82..... जब साइन्स वाले नये-नये यन्त्रों द्वारा धरनी से ऊपर के आकाशमण्डल के चित्र खींच सकते हैं, वहाँ के वायुमण्डल के समाचार दे सकते हैं, इनएडवांस प्रकृति के तत्वों की हलचल के समाचार दे सकते हैं तो आप सर्व शक्ति-सम्पन्न बाप के अथॉर्टी वाली श्रेष्ठ आत्मायें अपने दिव्य बुद्धि के यन्त्र द्वारा तीन काल की नॉलेज के आधार से अपना वर्तमान काल और भविष्य काल नहीं जान सकते?

21.2.83..... साइन्स की शक्ति पर साइलेन्स के शक्ति की विजय है। तो साइलेन्स की शक्ति संगठित रूप में और व्यक्तिगत रूप में कहाँ तक प्राप्त कर ली है? वह देख रहे थे। साइन्स की शक्ति द्वारा प्रत्यक्ष फल रूप में स्व-परिवर्तन वायुमण्डलपरिवर्तन, वृत्ति-परिवर्तन, संस्कार-परिवर्तन कहाँ तक कर सकते हैं वा किया है तो आज सेना के हरेक सैनिक की साइलेन्स के शक्ति की प्रयोगशाला चेक की कि कहाँ तक प्रयोग कर सकते हैं।

जैसे साइन्स की शक्ति परिवर्तन भी कर लेती, वृद्धि भी कर लेती है, विनाश भी कर लेती, रचना भी कर लेती, हाहाकार भी मचा देती और आराम भी दे देती। लेकिन साइलेन्स की शक्ति का विशेष यंत्र है – “शुभ संकल्प”, इस संकल्प के यंत्र द्वारा जो चाहो वह सिद्धि स्वरूप में देख सकते हो। पहले स्व के प्रति प्रयोग करके देखो।

1.6.83..... जैसे साइन्स वाले साइन्स के आधार से आकाश के तारामण्डल का अनुभव कराते हैं। ऐसे यह धरती का चैतन्य तारामण्डल दूर वालों को भी अनुभव हो। इस शुभ आशा को पूर्ण करने वाले आप सभी निमित्त आत्मायें हो। ऐसे बेहद के प्लैन्स बनाये हैं ना। प्लैन्स तो यथा शक्ति बनाये।

22.1.84..... जैसे हद की लड़ाई करने वाले योद्धे बाहुबल, साइन्स बल वाले योद्धे सर्व शस्त्रों से सजकर युद्ध के मैदान पर जाते हैं विजय का मैडल लेने के लिए, ऐसे आप सभी रूहानी योद्धे सेवा के मैदान पर जा रहे हो विजय का झण्डा लहराने के लिए। जितना-जितना विजयी बनते हो उतना बाप द्वारा स्नेह, सहयोग, समीपता, सम्पूर्णता के विजयी मैडल्स प्राप्त करते हो। तो यह चेक करो कि अब तक कितने मैडल्स मिले हैं।

5.3.84..... बापदादा को अशान्त बच्चों को देख रहम आता है। इतना प्रयत्न कर साइन्स की शक्ति से कहाँ से कहाँ पहुँच रहे हैं, क्या क्या बना रहे हैं, दिन को रात भी बना सकते, रात को दिन भी बना सकते लेकिन अपनी आत्मा का स्वधर्म शान्ति, उसको प्राप्त नहीं कर सकते।

शान्ति की शक्ति द्वारा साइन्स की शक्ति को भी यथार्थ रूप से कार्य में लगाने से विश्व का कल्याण करने के निमित्त बन सकते हो। साइन्स की शक्ति भी आवश्यक है लेकिन सिर्फ सतोप्रधान बुद्धि बनने से इसका यथार्थ रूप से प्रयोग कर सकते हैं। आप सिर्फ इसी नालेज की कमी है कि यथार्थ रीति से इसको कार्य में कैसे लगायें! यही साइन्स इस नालेज के आधार पर नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त बनेगी। लेकिन आप वह नालेज न होने कारण विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। तो अभी इसी साइन्स की शक्ति को साइलेन्स की शक्ति के आधार से बहुत ही अच्छे कार्य में लगाने के निमित्त बनो। क्योंकि आवश्यकता इसी कार्य की है। तो जब जिस कार्य की आवश्यकता है उसमें निमित्त बनने वाले को सभी श्रेष्ठ आत्मा की नजर से देखेंगे। तो समझा क्या करना है! अभी साइन्स और साइलेन्स का कनेक्शन कैसा है और दोनों के कनेक्शन से कितनी सफलता हो सकती है इसकी रिसर्च करो।

21.1.85..... दिव्य बुद्धि की गिफ्ट अलौकिक विमान है। जिस दिव्य विमान द्वारा सेकण्ड के स्विच आन करने से जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। स्विच है संकल्प। साइन्स वाले तो एक लोक का सैर कर सकते। आप तीनों

लोकों का सैर कर सकते हो। सेकण्ड में विश्व-कल्याणकारी स्वरूप बन सारे विश्व को लाइट और माइट दे सकते हो। सिर्फ दिव्य बुद्धि के विमान द्वारा ऊँची स्थिति में स्थित हो जाओ। जैसे उन्होंने विमान द्वारा हिमालय के ऊपर राख डाली, नदी में राख डाली, किसलिए? चारों ओर फैलाने के लिए ना! उन्होंने तो राख डाली, आप दिव्य बुद्धि रूपी विमान द्वारा सबसे ऊँची चोटी की स्थिति में स्थित हो विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति लाइट और माइट की शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के सहयोग की लहर फैलाओ। विमान तो शक्तिशाली है ना? सिर्फ यूज करना आना चाहिए। बापदादा की रिफाइन श्रेष्ठ मत का साधन चाहिए।

23.1.85 .....बापदादा द्वारा यह तीसरा नेत्र दिव्य नेत्र मिला है, जैसे आजकल साइन्स का साधन दूरबीन है जो दूर की वस्तु को समीप और स्पष्ट अनुभव कराती है, ऐसे यह दिव्य नेत्र भी दिव्य दूरबीन का काम करते हैं। सेकण्ड में परमधाम, कितना दूर है। जिसके माइल गिनती नहीं कर सकते, साइंस का साधन इस साकार सृष्टि के सूर्य चांद सितारो तक देख सकते हैं। लेकिन यह दिव्य नेत्र तीनों लोकों को, तीनों कालों को देख सकते हैं। इस दिव्य नेत्र को अनुभव का नेत्र भी कहते हैं। अनुभव की आँख, जिस आँख द्वारा 5000 वर्ष की बात इतनी स्पष्ट देखते जैसे कि कल की बात है।

जैसे साइन्स वाले शक्तिशाली ग्लासेज द्वारा सभी जर्मस को स्पष्ट देख सकते हैं। ऐसे यह शक्तिशाली दिव्य नेत्र माया की बीमारी को पहले से ही जान समाप्त कर सदा निरोगी रहते हैं। ऐसा शक्तिशाली दिव्य नेत्र है।

4.12.85..... संकल्प शक्ति सबसे श्रेष्ठ शक्ति है, मूल शक्ति है। और सबसे तीव्रगति की भाषा यह संकल्प की भाषा है। कितना भी कोई दूर हो, कोई साधन नहीं हो लेकिन संकल्प की भाषा द्वारा किसी को भी मैसेज दे सकते हो। अन्त में यही संकल्प की भाषा काम में आयेगी। साइन्स के साधन जब फेल हो जाते हैं तो यह साइलेन्स का साधन काम में आयेगा। लेकिन कोई भी कनेक्शन जोड़ने के लिए सदा लाइन क्लीयर चाहिए। जितना-जितना एक बाप और उन्हीं द्वारा सुनाई हुई नालेज में वा उसी नालेज द्वारा सेवा में सदा बिज़ी रहने के अभ्यासी होंगे उतना श्रेष्ठ संकल्प होने के कारण लाइन क्लीयर होगी। व्यर्थ संकल्प ही डिस्टर्बेन्स हैं। जितना व्यर्थ समाप्त हो समर्थ संकल्प चलेंगे उतना संकल्प श्रेष्ठ, भाषा इतनी ही स्पष्ट अनुभव करेंगे।

30.12.85..... जब साइन्स की शक्ति से एक देश से दूसरे देश तक राकेट भेज सकते हैं तो क्या साइलेन्स की शक्ति से आप शुभ भावना, कल्याण की भावना द्वारा यहाँ आबू में मन्सा द्वारा सहयोगी नहीं बन सकते? कोई साकार में वाणी से, कर्म से निमित्त बनेंगे। कोई मन्सा सेवा में निमित्त बनेंगे।

6.1.86 जैसे वह नई-नई इन्वेंशन करते हैं, वो साइन्स के साधन से इन्वेन्शन करते हैं। आप साइलेंस के साधनों से सदाकाल के लिए निरोगी बना दो। जैसे उन्हीं के पास सारी लिस्ट है – यह इन्स्ट्रुमेन्ट हैं, यह इन्स्ट्रुमेन्ट है। ऐसे ही आपकी भी लिस्ट हो लम्बी। ऐसे डाक्टर्स हो। एवरहेल्दी बनाने के इतने बढ़िया साधन हो।

8.1.86..... साइन्स वाले आकाश के सितारों की खोज करते, बापदादा अपने होली स्टार्स की विशेषताओं को देख रहे हैं। जब आकाश के सितारे इतनी दूर से अपना प्रभाव अच्छा वा बुरा डाल सकते हैं तो आप होली स्टार्स इस विश्व को परिवर्तन करने का, पवित्रता-सुख-शांतिमय संसार बनाने का प्रभाव कितना सहज डाल सकते हो! आप धरती के सितारे, वह आकाश के सितारे। धरती के सितारे इस विश्व को हलचल से बजाए सुखी संसार, स्वर्ण संसार बनाने वाले हो।

4.3.86..... विनाश और स्थापना साथ-साथ दोनों झण्डे लहरावें। एक साइंस का झण्डा और एक साइलेन्स का। साइन्स की शक्ति का प्रभाव और साइलेन्स की शक्ति का प्रभाव दोनों जब प्रत्यक्ष हों तब कहेंगे प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना।

13.3.86..... साइन्स की अथार्टी, शास्त्रों की अथार्टी, राजनीति की अथार्टी, धर्मनीति की अथार्टी, अनेक अथार्टी वाले अपनी-अपनी अथार्टी प्रमाण दुनिया को परिवर्तन करने की ट्रायल कर चुके। कितने प्रयत्न किये हैं लेकिन आप सभी के पास कौन-सी अथार्टी है? सबसे बड़ी 'परमात्म अनुभूति की अथार्टी' है। अनुभव की अथार्टी से श्रेष्ठ और सहज किसी को भी परिवर्तन कर सकते हो।

20.2.87..... जैसे साइन्स वाले शस्त्र से शस्त्र को खत्म कर देते हैं, एक विमान से दूसरे विमान को गिरा देते हैं। युद्ध करते हैं तो समाप्त कर देते हैं ना! तो आपका शुद्ध वायब्रेशन, शुद्ध वायब्रेशन को इमर्ज कर सकता है और व्यर्थ वायब्रेशन को समाप्त कर सकता है। संकल्प, संकल्प को समाप्त कर सकता है। अगर आपका पावरफुल (शक्तिशाली) संकल्प है तो समर्थ संकल्प, व्यर्थ को खत्म जरूर करेगा। समझा? सेवा में पहले स्वच्छता अर्थात् पवित्रता की शक्ति चाहिए।

14.11.87..... जब साइन्स की शक्ति अल्पकाल के लिए किसी का दुःख-दर्द समाप्त कर लेती है, तो पवित्रता की शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति दुःख-दर्द समाप्त नहीं कर सकती? साइन्स की दवाई में अल्पकाल की शक्ति है तो पवित्रता की शक्ति में, पवित्रता की दुआ में कितनी बड़ी शक्ति है? समय प्रमाण जब आज के व्यक्ति दवाइयों से कारणे-अकारणे तंग होंगे, बीमारियाँ अति में जायेंगी तो समय पर आप पवित्र देव वा देवियों के पास दुआ लेने लिए आयेंगे कि हमें दुःख, अशान्ति से सदा के लिए दूर करो। पवित्रता की दृष्टि-वृत्ति साधारण शक्ति नहीं है। यह थोड़े समय की शक्तिशाली दृष्टि वा वृत्ति सदाकाल की प्राप्ति कराने वाली है। जैसे अभी जिस्मानी डॉक्टर्स और जिस्मानी हॉस्पिटल्स समय प्रति समय बढ़ते भी जाते हैं, फिर भी डॉक्टर्स को फुर्सत नहीं, हॉस्पिटल्स में स्थान नहीं। रोगियों की सदा ही क्यू लगी हुई होती है। ऐसे आगे चल हॉस्पिटल्स वा डॉक्टर्स के पास जाने का, दवाई करने का, चाहते हुए भी जा नहीं सकेंगे। मैजारिटी निराश हो जायेंगे तो क्या करेंगे? जब दवा से निराश होंगे तो कहाँ जायेंगे? आप लोगों के पास भी क्यू लगेगी। जैसे अभी आपके वा बाप के जड़ चित्रों के सामने 'ओ दयालू, दया करो' कहकर दया वा दुआ मांगते रहते हैं, ऐसे आप चैतन्य, पवित्र, पूज्य आत्माओं के पास 'ओ पवित्र देवियों वा पवित्र देव! हमारे ऊपर दया करो' - यह मांगने के लिए आयेंगे।

18.11.87..... जैसे साइन्स की शक्ति के साधन टेलीफोन, वायरलेस हैं, ऐसे यह शुभ संकल्प सम्मुख बात करने वा टेलीफोन, वायरलेस द्वारा कार्य कराने का अनुभव करायेगा। ऐसे साइलेन्स की शक्ति में विशेषतायें हैं। साइलेन्स की शक्ति कम नहीं है। लेकिन अभी वाणी की शक्ति को, स्थूल साधनों को ज़्यादा कार्य में लगाते हो, इसलिए यह सहज लगते हैं। साइलेन्स की शक्ति के साधनों को प्रयोग में नहीं लाया है, इसलिए इनका अनुभव नहीं है। वह सहज लगता है, यह मेहनत का लगता है।

साइन्स के साधन भी गर्मी को सर्दी के वातावरण में बदल सकते हैं तो रूहानी शक्ति रूहों को नहीं बदल सकती? तो पंजाब वालों ने क्या सुना? सभी को वायब्रेशन आवे कि कोई शान्ति का पुंज, शान्ति की किरणें दे रहे हैं। ऐसी सेवा करने का समय पंजाब को मिला है। फंक्शन, प्रदर्शनी आदि, वह तो करते ही हो लेकिन इस शक्ति का



अनुभव करो और कराओ। सिर्फ अपने मन की एकाग्र वृत्ति, शक्तिशाली वृत्ति चाहिए। लाइट हाउस जितना शक्तिशाली होता है, उतना दूर तक लाइट दे सकता है।

27.11.87..... जैसे साइन्स की शक्ति धरनी की आकर्षण से परे कर लेती है, ऐसे साइलेन्स की शक्ति इन सब हृद की आकर्षणों से दूर ले जाती है। इसको कहते हैं – सम्पूर्ण सम्पन्न बाप समान स्थिति।

18.12.87..... जैसे साइन्स के साधन द्वारा बेहोश कर देते हैं तो दर्द होते भी भूल जाते हैं, दर्द फील नहीं करते हैं क्योंकि दवाई का नशा होता है। तो कर्मातीत अवस्था वाले अशरीरी बनने के अभ्यासी होने कारण बीच-बीच में यह रूहानी इन्जेक्शन लग जाता है। इस कारण सूली से काँटा अनुभव होता है। और बात – फ़ालो फ़ादर होने के कारण विशेष आज्ञाकारी बनने का प्रत्यक्ष फल बाप से विशेष दिल की दुआयें प्राप्त होती हैं। एक अपना अशरीरी बनने का अभ्यास, दूसरा आज्ञाकारी बनने का प्रत्यक्षफल बाप की दुआयें, वह बीमारी अर्थात् कर्मभोग को सूली से काँटा बना देती हैं। कर्मातीत श्रेष्ठ आत्मा कर्मभोग को, कर्मयोग की स्थिति में परिवर्तन कर देगी।

10.1.88..... जैसे साइन्स वाले भी बहुत पावरफुल बॉम्बस (शक्तिशाली गोले) ले जाते हैं। समझते हैं – बस, इससे अब तो जीत लेंगे। लेकिन यूज करने वाले को यूज करने का ढंग नहीं आता तो पावरफुल बॉम्ब होते भी यहाँ-वहाँ ऐसे स्थान पर जाकर गिरता जो व्यर्थ चला जाता। कारण क्या हुआ? यूज करने की विधि ठीक नहीं। ऐसे, एक-एक ज्ञान-रत्न अति अमूल्य है। ज्ञान रत्न वा ज्ञान की शक्ति के आगे परिस्थिति वा विघ्न ठहर नहीं सकते। लेकिन अगर विजय नहीं होती है तो समझो यूज करने की विधि नहीं आती है। दूसरी बात – मनन शक्ति का अभ्यास सदा न करने से समय पर बिना अभ्यास के अचानक काम में लगाने का प्रयत्न करते हो, इसलिए धोखा खा लेते हो। यह अलबेलापन आ जाता है – ज्ञान तो बुद्धि में है ही, समय पर काम में लगा लेंगे। लेकिन सदा का अभ्यास, बहुतकाल का अभ्यास चाहिए।

20.2.88..... जैसे साइन्स के साधन जो भी कार्य करते, वह लाइट के आधार से करते। सूक्ष्मवतन तो है ही लाइट का। साकार वतन के लाइट के साधन फिर भी प्रकृति के साधन हैं। लेकिन अव्यक्त वतन के साधन प्रकृति के साधन नहीं हैं। और प्रकृति रूप बदलती है, सतो, रजो, तमो में परिवर्तन होती है। इस समय तो है ही तमोगुणी प्रकृति, इसलिए यह साधन आज चलेंगे, कल नहीं चलेंगे। लेकिन अव्यक्त वतन के साधन प्रकृति से परे हैं, इसलिए वह परिवर्तन में नहीं आते।

28.2.88..... साइन्स वाले आवाज़ को कैच करते हैं लेकिन संकल्प को कैच करने के लिए सूक्ष्म साधन चाहिए। बापदादा हर एक बच्चे के संकल्प की भाषा सदा ही सुनते हैं अर्थात् संकल्प कैच करते हैं। इसके लिए बुद्धि अति सूक्ष्म, स्वच्छ और स्पष्ट आवश्यक है, तब ही बाप की रूह-रूहान के रेसपाण्ड को समझ सकेंगे।

11.11.81... .. जैसे वर्तमान समय साइन्स की शक्ति का कितना प्रभाव है, हर एक अनुभव करते हैं लेकिन साइंस की शक्ति निकली किससे? साइलेन्स की शक्ति से ना! जब साइंस की शक्ति अल्पकाल के लिए प्राप्ति करा रही है, तो साइलेन्स की शक्ति कितनी प्राप्ति करायेगी। तो बाप के दिव्य दृष्टि द्वारा स्वयं में शक्ति जमा करो। तो फिर जमा किया हुआ समय पर दे सकेंगे।

25.2.91... .. आजकल साइन्स की शक्ति, साइन्स के साधनों द्वारा कार्य-शक्ति कितनी तेज कर रही है! जो चैतन्य मनुष्य कार्य कर सकता है, जितने समय और जितना यथार्थ चैतन्य मनुष्य कर सकता है उतना साइन्स के साधन कम्प्यूटर कितना जल्दी काम करता है। चैतन्य मनुष्य को भी करेक्शन करता है। तो जब साइन्स के साधन कार्य-शक्ति को तीव्र बना सकते हैं, कई ऐसी इन्वेन्शन निकली भी हैं और निकल भी रही हैं, तो ब्राह्मण आत्माओं की साइलेन्स की शक्ति कितना तीव्र कार्य यथार्थ सफल कर सकती है। सेकेण्ड में निर्णय हो, सेकेण्ड में कार्य को प्रैक्टिकल में सफल करो।

जब साइन्स के साधन तीव्र गति के हो रहे हैं, एक सेकेण्ड में क्या नहीं कर लेते हैं! विनाश के साधन तीव्र गति के तरफ जा रहे हैं तो स्थापना के साइलेन्स के शक्तिशाली साधन क्या नहीं कर सकते! अभी तो प्रकृति आप मालिकों का आवाहन कर रही है। आप लोग उनको आर्डर नहीं करते तो प्रकृति कितनी धमाल कर रही है! मालिक तैयार हो जाओ तो प्रकृति आपका स्वागत करे। ऐसे तैयार हो? कि अभी तैयार कर रहे हो? सम्पूर्ण तैयारी की महिमा आपके भक्त लोग अब तक कर रहे हैं। अपनी महिमा को जानते हो? अब चेक करो कि इन सबमें सर्वगुण सम्पन्न भी हो, सम्पूर्ण निर्विकारी भी हो, सम्पूर्ण अहिंसक और मर्यादा पुरुषोत्तम भी हो, 16 कला सम्पन्न भी हो? सभी बातों में फुल है तो समझो मालिक तैयार हैं और इसमें परसेन्टेज है तो मालिक तैयार नहीं। बालक है लेकिन मालिक नहीं बने हैं। तो प्रकृति आप मालिक का स्वागत करेगी। बाप के बालक हैं। वह तो ठीक है। इसमें पास हो। लेकिन इन पांचों ही बातों में सम्पन्न बनना अर्थात् मालिक बनना।

11.12.91... .. कई बच्चे कहते हैं जैसे क्रोध नहीं आता है, लेकिन कोई झूठ बोलता है तो क्रोध आ जाता है। उसने झूठ बोला, आपने क्रोध से बोला तो दोनों में राइट कौन? सत्यता को सिद्ध करने वाला सदा सभ्यता वाला होगा। कई चतुराई करते हैं, कहेंगे हम क्रोध नहीं करते हैं, हमारा आवाज ही बड़ा है, आवाज ही ऐसा तेज है। साइन्स के साधनों से आवाज को कम और ज्यादा कर सकते हैं ना तो क्या साइलेन्स के पाँवर से अपने आवाज की गति को धीमी या तेज नहीं कर सकते हो? इससे तो ये टेप रिकार्ड और ये माइक अच्छा है जो आवाज कम ज्यादा तो कर सकते हो। तो ये चेक करो कि सत्यता के साथ सभ्यता भी है? अगर सभ्यता नहीं तो सत्यता नहीं।

18.12.91... .. जैसे साइन्स की शक्ति द्वारा कई चीजें इशारे से आटोमेटिक चलती हैं, चलाना नहीं पड़ता, चाहे लाइट द्वारा, चाहे वायब्रेशन द्वारा स्विच ऑन किया और चलता रहता है। लेकिन साइन्स की शक्ति विनाशी होने के कारण अल्पकाल के लिए चलती है। अविनाशी बाप के साइलेन्स की शक्ति द्वारा इस ब्राह्मण जीवन में सदा और स्वतः ही सहज चलते रहते हैं। ब्राह्मण जन्म मिलते ही दिव्य बुद्धि में बापदादा ने श्रीमत भर दी। ऑनेस्ट आत्मा उसी श्रीमत के इशारे से नेचुरल सहज चलती रहती है। तो ऑनेस्ट की पहली निशानी – हर सेकण्ड हर कदम श्री मत पर एक्यूरेट चलना।

18.1.92... .. साइन्स वालों ने देखो कितने भी अल्पकाल के सुख के साधन विश्व को दिया है लेकिन जितने बड़े वैज्ञानिक हैं उतना और कुछ खोज करें, और कुछ खोज करें इस खोज में ही खोये हुए हैं। सन्तुष्टता की अनुभूति नहीं है, और कुछ करें, और कुछ करें, इस में ही समय गँवा देते हैं। उन्हों का संसार ही खोज करना हो गया है। आप जैसे स्नेह-सम्पन्न जीवन की अनुभूति नहीं है। नेताएं देखो अपनी कुर्सी सम्भालने में ही लगे हुए हैं। कल क्या होगा- इस चिन्ता में लगे हुए हैं। और आप ब्राह्मण सदा परमात्म-प्यार के झूले में झुलते हो। कल का फिक्र नहीं है। न कल का फिक्र है, न काल का फिक्र है। क्यों? क्योंकि जानते हो - जो हो रहा है वह भी अच्छा और जो होना है वह और अच्छा। इसलिए अच्छा-अच्छा कहते अच्छे बन गये हो।

12.11.92... साइन्स के साधन वाटर-प्रूफ बना देते हैं, आग-प्रूफ बना सकते हैं। तो साइलेन्स की शक्ति परिवर्तन नहीं कर सकती है, प्रूफ नहीं बना सकते हैं? नॉलेज रखना और चीज है—यह दिव्य है, यह अदिव्य है। लेकिन प्रभाव में आना और चीज है। दिव्यता की शक्ति श्रेष्ठ है या अदिव्यता की शक्ति श्रेष्ठ है? तो दिव्यता का प्रभाव अदिव्यता पर पड़ना चाहिए ना। तो अभी दिव्य बुद्धि के वरदान को कार्य में लगाओ। लगाना तो आता है या कभी भूल जाते हो? आधा कल्प भूलने वाले बने लेकिन अभी अभूल बनना है। दिव्य बुद्धि ऐसा श्रेष्ठ यन्त्र है जो इस यन्त्र द्वारा व्यक्ति तो क्या, प्रकृति को भी दिव्य बना सकते हो। व्यक्ति को दिव्य बनाने से प्रकृति के ऊपर स्वतः ही प्रभाव पड़ता जायेगा। पहले अपने में देखो कि सदा दिव्य बुद्धि इमर्ज रूप में है? इतनी ताकत है जो प्रकृति को भी परिवर्तन कर दो। यह परमात्म-वरदान है। कोई महात्मा या धर्मात्मा का वरदान नहीं है। तो जैसे बाप सर्वशक्तिवान है, तो वरदान भी सर्वशक्तिवान है ना। तो जब भी कोई कार्य करते हो, पहले चेक करो कि दिव्य बुद्धि के वरदान द्वारा कार्य कर रहे हैं या साधारण बुद्धि से कार्य कर रहे हैं? आपकी दिव्यता का प्रभाव विश्व को दिव्य बना देता है। यही आपका आक्यूपेशन है ना। इन्जीनियर हूँ, डॉक्टर हूँ, क्लर्क हूँ, फलाना हूँ...—यह आक्यूपेशन तो शरीर निर्वाह के अर्थ है। लेकिन वास्तविक आक्यूपेशन है—विश्व को परिवर्तन करना। ऐसे समझकर कार्य करते हो?

जैसे—आज की साइन्स व्यर्थ को कार्य में लगा कर अच्छा बना देती है, कई वेस्ट चीजों को बेस्ट में परिवर्तन कर लेते हैं। आपकी रचना इतना फास्ट परिवर्तन कर सकती है। जैसे—देखो, खाद होती है ना, तो खाद बुरी चीज है लेकिन पैदा क्या करती है? खाद गन्दी है लेकिन जब फूल पैदा होता है तो खुशबू वाला होता है। या बदबू वाला होता है? तो खाद में परिवर्तन करने की शक्ति है ना। स्वयं कैसी भी है लेकिन पैदा क्या करती है? फल, फूल, सब्जियां....। तो आपकी रचना में कितनी शक्ति है! तो आप में उससे ज्यादा शक्ति है ना। वो गाली दे और आप उसको फूल बनाकर धारण करो। वो गुस्सा करे और आप उसको शान्ति का शीतल जल दो। यह परिवर्तन-शक्ति चाहिए। होली हंस का यही कर्तव्य है।

21.11.92... आजकल के साइन्स के साधन से भी जो वेस्ट-खराब माल होता है, उसको परिवर्तन कर अच्छी चीज बना देते हैं। तो प्रसन्नचित्त आत्मा साइलेन्स की शक्ति से—चाहे बात बुरी हो, सम्बन्ध बुरे अनुभव होते हों, लेकिन वह बुराई को अच्छाई में परिवर्तन कर स्वयं में भी धारण करेगी और दूसरे को भी अपनी शुभ भावना के श्रेष्ठ संकल्प से बुराई को बदल अच्छाई धारण करने की शक्ति देगी।

18.2.93... जैसे—साइन्स का सबसे बड़े ते बड़ा तीव्र गति का रॉकेट है। लेकिन दुआओं का रॉकेट उससे भी श्रेष्ठ है। विघ्न जरा भी स्पर्श नहीं करेगा, विघ्न-प्रूफ बन जाते। युद्ध नहीं करनी पड़ती। सहज योगयुक्त, युक्तियुक्त हर कर्म, बोल, संकल्प स्वतः ही बन जाते हैं। ऐसा यह दुआओं का खजाना है। सबसे बड़ा खजाना इस संगमयुग के समय का खजाना है।

साइन्स के साधन आपके काम में तो आ रहे हैं ना! ड्रामा अनुसार साइन्स वालों को भी टच तभी हुआ है जब बाप को आवश्यकता है। साधन यूज़ करना अलग चीज़ है और साधनों के वश होना अलग चीज़ है। तो आप साधनों को यूज़ करते हो या साधनों के वश हो जाते हो? कभी कोई साधन अपनी तरफ खींचते तो नहीं हैं? मास्टर क्रियेटर होकर के क्रियेशन से लाभ भले लो। अगर वशीभूत हो गये तो दुःख देंगे।

१८.२.९३... जैसे साइन्स के साधनों का वायुमण्डल में प्रभाव पड़ता है ना, एयरकण्डीशन चलता है तो वायुमण्डल में ठण्डाई का प्रभाव पड़ता है, ऐसे ही योगी जीवन का प्रभाव होता है। ऐसा प्रभाव है? योग माना

साइलेन्स की शक्ति है योगी जीवन अर्थात् साइलेन्स की शक्ति वाला जीवन। तो ऐसे है कि हाँ-हाँ करते रहते हो? हर रोज़ की चेकिंग हो। चेक करेंगे तो चेंज होंगे।

२५.१.९४... दुनिया में और अनेक प्रकार के बल हैं—साइन्स का भी बल है, राज्य का भी बल है, भक्ति का भी बल है लेकिन आपमें क्या बल है? ज्ञान बल और योग बल। ये सबसे श्रेष्ठ बल है। तो योग बल में जो बल होता है, शक्ति होती है वो किसलिये होती है? विजय प्राप्त करने के लिये। जैसे साइन्स का बल है तो साइन्स का बल अन्धकार के ऊपर विजय प्राप्त कर रोशनी कर देता है। ऐसे योगबल सदा के लिये माया पर विजयी बनाता है। तो माया जीत बनने का बल है? कि कभी हार होती, कभी जीत? सदा के विजयी। कभी-कभी के विजयी को विजयी नहीं कहा जायेगा। क्योंकि बाप द्वारा ये ज्ञान बल और योग बल इतना श्रेष्ठ मिला है जो माया की शक्ति उसके आगे कुछ नहीं है।

१.२.९४... बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है कि ज्ञानी-योगी आत्मायें बने हो, अब ज्ञान और योग को, शक्ति को प्रयोग में लाने वाले प्रोगशाली आत्मायें बनो। जैसे साइन्स की शक्ति का प्रयोग दिखाई देता है ना, लेकिन साइन्स की शक्ति के प्रयोग का भी मूल आधार क्या है? आज जो भी साइन्स ने प्रयोग के साधन दिये हैं, उन सब साधनों का आधार क्या है? साइन्स के प्रयोग का आधार क्या है? मैजारिटी देखेंगे लाइट है। लाइट द्वारा ही प्रयोग होता है। अगर कम्प्युटर भी चलता है तो किसके आधार से? कम्प्युटर माइट है लेकिन आधार लाइट है ना। तो आपके साइलेन्स की शक्ति का भी आधार क्या है? लाइट है ना। जब वह प्रकृति की लाइट द्वारा एक लाइट अनेक प्रकार के प्रयोग प्रैक्टिकल में करके दिखाती है तो आपकी अविनाशी परमात्म लाइट, आत्मिक लाइट और साथ-साथ प्रैक्टिकल स्थिति लाइट, तो उससे क्या नहीं प्रयोग हो सकता! आपके पास स्थिति भी लाइट है और मूल स्वरूप भी लाइट है। जब भी कोई प्रयोग करना चाहते हो तो पहले अपने मूल आधार को चेक करो। जैसे कोई भी साइन्स के साधन को जूज़ करेंगे तो पहले चेक करेंगे ना कि लाइट है या नहीं है। ऐसे जब योग का, **की** शक्तियों का, गुणों का प्रयोग करते हो तो पहले ये चेक करो कि मूल आधार आत्मिक शक्ति, परमात्म शक्ति वा लाइट (हल्की) स्थिति है? अगर स्थिति और स्वरूप डबल लाइट है तो प्रोग की सफलता बहुत सहज कर सकते हो। और सबसे पहले इस अभास को शक्तिशाली बनाने के लिये पहले अपने पर प्रयोग करके देखो। हर मास वा हर 15 दिन के लिये कोई न कोई विशेष गुण वा कोई न कोई विशेष शक्ति का स्व प्रति प्रयोग करके देखो। क्योंकि संगठन में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में पेपर तो आते ही हैं तो पहले अपने ऊपर प्रयोग में चेक करो कोई भी पेपर आया लेकिन जो शक्ति वा जो गुण का प्रयोग करने का लक्ष्य रखा, उसमें कहाँ तक सफलता मिली? और कितने समय में सफलता मिली? जैसे साइन्स का प्रयोग दिन-प्रतिदिन थोड़े समय में प्रत्यक्ष रूप का अनुभव कराने में आगे बढ़ रहा है तो समय भी कम करते जाते हैं। थोड़े समय में सफलता ज़ादा यह साइन्स वालों का भी लक्ष्य है। ऐसे जो भी लक्ष्य रखा उसमें समय को भी चेक करो और सफलता को भी चेक करो। जब स्व के प्रति प्रयोग में सफल हो जायेंगे तो दूसरी आत्माओं के प्रति प्रयोग करना सहज हो जायेगा और जब स्व के प्रति सफलता अनुभव करेंगे तो आपके दिल में औरों के प्रति प्रयोग करने का उमंग-उत्साह स्वतः ही बढ़ता जायेगा। अन्य आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में स्व के प्रयोग द्वारा उन आत्माओं को भी आपके प्रयोग का प्रभाव स्वतः ही पड़ता रहेगा। जैसे एक दृष्टान्त सामने रखो कि मुझे सहनशक्ति का प्रयोग करना है तो जब स्वयं में सहनशक्ति का प्रयोग

करेंगे तो जो दूसरी आत्मायें आपकी सहनशक्ति को हिलाने के निमित्त हैं वो भी बच जायेंगी ना, उनका भी तो किनारा हो जायेगा। और जैसे छोटे-छोटे संगठन में रहते हो, सेन्टर्स हैं तो सेन्टर्स पर छोटे संगठन हैं ना तो पहले स्व के प्रति ट्रायल करो फिर अपने छोटे संगठन में ट्रायल करो। संगठन रूप में कोई भी गुण वा शक्ति के प्रयोग का प्रोग्राम बनाओ। उससे क्या होगा? संगठन की शक्ति से उसी गुण वा शक्ति का वायुमण्डल बन जायेगा, वायुब्रेशन फैलेगा और वायुमण्डल वा वायुब्रेशन का प्रभाव अनेक आत्माओं के ऊपर पड़ता ही है। तो ऐसे प्रयोगशाली आत्मायें बनो। पहले स्वयं में सन्तुष्टता का अनुभव करो फिर औरों में सहज हो जायेगा। क्योंकि विधि आ जायेगी। जैसे साइन्स के कोई भी साधन को पहले सेम्पल के रूप में प्रयोग करते हैं फिर विशाल रूप में प्रयोग करते हैं, ऐसे आप पहले स्वयं को सेम्पल के रीति से यूज करो।

आज साइन्स की शक्ति का प्रभाव है लेकिन वह भी निकली कहाँ से? शान्ति की शक्ति से निकली ना? तो शान्ति की शक्ति द्वारा जो चाहो वह कर सकते हो। असम्भव को भी सम्भव कर सकते हो। जो दुनिया वाले आज असम्भव कहते हैं आपके लिए वह सम्भव है ना! तो सम्भव होने के कारण सहज लगता है। मेहनत नहीं लगती।

14.4.94 . . . आजकल के भिन्न-भिन्न साइन्स के साधनों के तीव्र गति से भी तीव्र गति। साइन्स के साधनों की रफ्तार फिर भी साइन्स, साइन्स द्वारा रफ्तार को कट भी कर सकती, पकड़ सकती है लेकिन आत्मा की गति को कोई अभी तक न पकड़ सका है, न पकड़ सकता है। इसमें ही साइन्स अपने को फ़ेल समझती है। और जहाँ साइन्स फ़ेल है वहाँ साइलेन्स की शक्ति से जो चाहो वो कर सकते हो। तो आत्म शक्ति की उड़ान की तीव्र गति की आदि करो। चाहे स्व परिवर्तन में, चाहे किसी की भी वृत्ति परिवर्तन में, चाहे वायुमण्डल परिवर्तन में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क के परिवर्तन में अभी तीव्र गति लाओ। तीव्रता की निशानी है सोचा और हुआ।

14.12.94 . . . जैसे साइन्स वाले नईनई इन्वेन्शन निकालते रहते हैं ना, तो थोड़े समय में प्राप्ति जादा हो तो आन्ध्र प्रदेश ऐसे ही इन्वेन्शन करो जो थोड़े समय में आत्मायें अनुभूति की प्राप्ति जादा अनुभव करें, उसका साधन क्या है जो समय कम लगे और प्राप्ति जादा हो? इसका साधन है आन्ध्र प्रदेश की हर ब्राह्मण आत्मा को लाइट हाउस, माइट हाउस बनना पड़े।

26.2.95 . . . आजकल के साइन्स द्वारा भी ऐसे साधन निकले हैं जो रफ़ माल को भी बहुत सुन्दर रूप में बदल देते हैं। देखा है ना—क्या से क्या बना देते हैं! तो आपकी वृत्ति क्या ऐसा परिवर्तन नहीं कर सकती? आवे निगेटिव रूप में लेकिन आप निगेटिव को पॉजिटिव वृत्ति से बदल दो। अगर हलचल में आते हैं तो उसका कारण है—निगेटिव सुनना, सोचना वा बोलना या करना। ये मॉडल बनाते हो ना—न सोचो, न देखो, न जहाँ दिल का स्नेह है वहाँ सबका सहयोग है। बोलो, न करो। साइलेन्स की पॉवर क्या निगेटिव को पॉजिटिव में नहीं बदल सकती! आपका मन और बुद्धि ऐसा बन जाये जो निगेटिव टच नहीं करे, सेकण्ड में परिवर्तन हो जाये।

31.3.95 . . . मैजारिटी साइन्स के साधन अभीअभी निकले हैं। कुछ वर्ष पहले े साइन्स के साधन भी नहीं थे। लेकिन किसके लिये निकले हैं? आपके लिये। बापदादा भी साइन्स वाले बच्चों को मुबारक देते हैं। कोंकि बाप के बच्चे उससे सुख तो ले रहे हैं ना।

10.3.96 . . . सेवा और स्व-पुरुषार्थ का बैलेन्स। सेवा के अति में नहीं जाओ। बस मेरे को ही करनी है, मैं ही कर सकती हूँ, नहीं। कराने वाला करा रहा है, मैं निमित्त 'करनहार' हूँ। तो जिम्मेवारी होते भी थकावट कम होगी। कई बच्चे कहते हैं – बहुत सेवा की है ना तो थक गये हैं, माथा भारी हो गया है। तो माथा भारी नहीं होगा।

और ही 'करावनहार' बाप बहुत अच्छा मसाज़ करेगा। और माथा और ही फ्रेश हो जायेगा। थकावट नहीं होगी, एनर्जी एकस्ट्रा आयेगी। जब साइन्स की दवाइयों से शरीर में एनर्जी आ सकती है, तो क्या बाप की याद से आत्मा में एनर्जी नहीं आ सकती? और आत्मा में एनर्जी आई तो शरीर में प्रभाव आटोमेटिकली पड़ता है। अनुभवी भी हो, कभी-कभी तो अनुभव होता है।

28.11.97.. . . सकाश क्या नहीं कर सकती? सभी में साइलेन्स की शक्ति है? तो अभी एक मिनट में साइन्स ने भारत का आवाज विदेश तक पहुंचाया और आप स्वप्न व संकल्प की पवित्रता ही सबसे बड़े से बड़ी पर्सनैलिटी है। अपने दिल की शुभ भावनायें आत्माओं को नहीं पहुंचा सकते हो! पहुंचा सकते हैं ना? नहीं तो साइन्स आगे चली जायेगी, साइलेन्स की पावर थोड़ा कम दिखाई देगी। इसलिए साइलेन्स की शक्ति को प्रत्यक्ष करो। सभी में है। एक ब्राह्मण भी नहीं है जो कहे कि मेरे में साइलेन्स की शक्ति नहीं है। सभी में है, कितने ब्राह्मण हैं? इतने ब्राह्मणों की सभी अपने साइलेन्स की शक्ति इमर्ज करो। एकदम साइलेन्स मन से, तन से इमर्ज करो। **(बापदादा ने डेड साइलेन्स की ड्रिल करवाई)**

31.1.98.. . . साइन्स भी सब आपके लिए ही इन्वेन्शन कर रही है। इसीलिए बापदादा साइन्स के साधन निकालने वाले बच्चों को भी स्नेह से मुबारक देते हैं। दिमाग तो चलाते हैं। साइन्स वाले भी आयेंगे, आपकी अंचली लेंगे। फिर आपकी सेवा में भविष्य में आयेंगे।

## अव्यक्त वाणी संकलित दिव्य शक्तियाँ पुस्तिका

### भाग 1

ज्ञान की शक्ति  
मनन शक्ति  
परखने की शक्ति  
निर्णयशक्ति  
समेटने की शक्ति  
सहयोग शक्ति

### भाग 2

एकाग्रता की शक्ति  
कैचिंग पावर  
कंट्रोलिंग पावर  
परिवर्तन की शक्ति  
विल पावर  
शान्ति की शक्ति

### भाग 3

महसूसता की शक्ति  
सत्यता की शक्ति  
संकल्प शक्ति  
संगठन की शक्ति  
सामना करने की शक्ति  
साइन्स और साइलेन्स

### भाग 4

एडजस्टमेंट की शक्ति  
समाने की शक्ति  
सहन शक्ति  
संग्रह शक्ति  
संग्राम करने की शक्ति  
स्नेह की शक्ति

## अव्यक्त वाणी संकलित सहज योग पुस्तिका

### भाग 1

योगी / सहजयोगी  
/ सहयोगी  
राजयोगी  
निरंतर योगी  
प्रयोगी  
ज्ञानयोगी  
बुद्धि योग  
कर्मयोगी  
रूहानी यात्रा /  
याद की यात्रा

### भाग 2

अमृतवेला  
योगबल  
ड्रिल  
प्रेक्टिस  
अभ्यास

### भाग 3

योगयुक्त स्थिति  
विदेही  
आत्म-अभिमानि स्थिति  
अव्यक्त स्थिति  
ज्वाला रूप/ज्योति  
स्वरूप  
सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप  
लाइट माइट  
बिन्दु रूप / बिन्दी रूप

### भाग 4

देही अभिमानि  
लवलीन  
कर्मातीत  
कम्बाइन्ड स्वरूप  
स्मृति स्वरूप  
बीजरूप स्थिति  
अशरीरी स्थिति

## अव्यक्त वाणी संकलित अन्य पुस्तकें

- मेरे ब्रह्माबाबा
- दिव्य गुण ( भाग 1-6)
- विकर्माजीत भव। भाग 1 – 8
- उदाहरण मूर्त भव।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क

बी. के निलिमा : ( मो ) 9869131644, 8422960681